

अथ

॥ शतकनामा पंचम कर्मग्रंथः प्रारभ्यते

॥ आर्या वृत्तम् ॥

ऐंश्रीकरपीडन, विधिसिद्धं, ध्वस्तकर्मशलजननरं ॥ कल्याणसिद्धिकरणं, जैनं ज्यो
तिर्जयतु नित्यं ॥ १ ॥ नवशतमथनं शतशो, नत्वा शतमखनतांहिशतपत्रम् ॥ श्री
वीरजिनं धीरं, लिखामि शतके टवार्थमहं ॥ २ ॥ ध्रुवबंधोदय सत्ता, नाशकृते
कर्मणांशकृद्गवान् ॥ त्रिपदीमदीदीश्यां, सा मम मतिमाद्यमपहरतु ॥ ३ ॥

नमिअ जिणं ध्रुवबंधो, दय सत्ता घाइ पुसु परिअत्ता ॥
सेअर चउह विवागा, बुहं बंधविह सामीअ ॥ १ ॥

अर्थ—(नमिअजिणं के०) नमस्कार करीने जिन प्रत्ये (ध्रुवबंध के०) एक
ध्रुवबंधिनी प्रकृति, (उदय के०) बीजी ध्रुवोदयी प्रकृति, (सत्ता के०) त्रीजी ध्रुवस
त्ता प्रकृति, (घाइ के०) चौथी घातिनी प्रकृति, (पुसु के०) पांचमी पुसुप्रकृ
ति, (परिअत्ता के०) ठी परावर्त्तमान प्रकृति, (सेअर के०) वली एना इतर
उ जेद जेवा एवं बार द्वार थयां. (चउहविवागा के०) चार जेदे विपाकिनी प्रकृति,
(बुहं के०) कहेजे. तथा (बंधविह के०) चार बंधविधि. (सामीअ के०) वली चार
प्रकारे बंधना स्वामी कहेजे एवं चोवीश द्वार थयां. च एटजे वली ॥ इत्यहरार्थः ॥ १ ॥

तिहां ग्रंथकर्त्ता श्रीदेवेन्द्रसूरि लघुशतकनामा ग्रंथने आरंभे प्रथम समुचितेष्ट
देवता नमस्कार रूप जाव मंगल निर्विघ्न पणे ग्रंथसमाप्तिने हेतुये करे ठे. (नमि
अ के०) नमस्कार करीने कोण प्रत्ये नमस्कार करीने ते कहेठे. जिया एटजे राग
द्वेषादिक अंतरंग वैरी जेणे जीत्या एवा जे श्रीजिन जगवंत तीर्थकर ते प्रत्ये सर्व
थकी अधिक गुणवंत जाणी तेने नमीने आटला द्वारे करी शतकनामा ग्रंथ कहेजे

हवे ते ग्रंथना अजिधेयजुत बडीश द्वारनां नाम कहे ठे. त्यां प्रथम जे
प्रकृति आपणा निजहेतु मयां अवश्य बंधाय पण तेहने स्थानके
ति न बंधाय. ते प्रथम ध्रुवबंधिनी प्रकृति जाणवी अने बीजी जे
पणा बंधहेतु सामग्री हुंते ठेते पण केवारेक बंधाय अने केवारे
तेनी विरोधिनी बीजी प्रकृति बंधाय. ते अध्रुवबंधिनी प्रकृति

प्रकृतिनो उदय विभेद काल पर्यंत निरंतर होय, पण तेनो उदय तेनो विभेद थया विना त्रूटे नहीं. ते त्रीजी ध्रुवोदयी प्रकृति जाणवी. चोथी जे प्रकृतिनो उदय केवारेंक होय वली केवारेंक न होय वली होय एम आंतरे उदय होय ते चोथी अध्रुवोदयी प्रकृति जाणवी. पांचमी जे प्रकृतिनी सत्ता सर्वजी वने एटले मिथ्यात्वीने पण सर्वदा पामियें परंतु जव प्रत्ययादिक कारणीक न होय. ते पांचमी ध्रुव सत्ता प्रकृति जाणवी. तथा ठछी जे प्रकृतिनी सत्ता जवप्रत्ययें तथा गुण प्रत्ययेंज होय पण अन्यथा न होय, ते ठछी अध्रुव सत्ता प्रकृति जाणवी. सातमी जे प्रकृति आपणा ज्ञानादिक घातें करी आत्माना गुणने आवरे, ते सातमी घातिनी प्रकृति जाणवी. आठमी जे प्रकृतिना उदयथी आत्मानो कशो पण गुण अचराय नहीं. ते आठमी अघातिनी प्रकृति जाणवी. नवमी जे प्रकृतिनो विष्टुष्ट परिणामें उत्कृष्ट मितो रस बंधाय तथा जेने उदयें जीव, अनुकूल पण वेदे, ते नवमी पुण्यप्रकृति जाणवी. दशमी जे प्रकृतिनो संक्लेश परिणामे उत्कृष्ट कटुक रस बंधाय, ते दशमी पाप प्रकृति जाणवी. अगीश्वरमी जे कर्मप्रकृति आपणी विरोधिनी प्रकृतिनो बंध तथा उदयने निवारिने, पोतानो बंध तथा उदय देखाडे, ते अगीश्वरमी परावर्त्तमान प्रकृति जाणवी. बारमी जे कर्मप्रकृतिनो बंध तथा उदय, अन्य प्रकृति साथें विरोधिनी नहीं तेना कारण ठते पण होय ते बारमी अपरावर्त्तमान अविरोधिनी प्रकृति जाणवी. एम ए एक ध्रुवबंधिनी, बीजी ध्रुवोदयी, त्रीजी ध्रुवसत्ता, चोथी घातिनी, पांचमी पुण्य, ठछी परावर्त्तमान, एथी इतर एटले उपरांठी एक अध्रुवबंधिनी, बीजी अध्रुवोदयी त्रीजी अध्रुवसत्ता चोथी अघातिनी, पांचमी पाप, ठछी अपरावर्त्तमान, एम ठ जेद साथें मेलवतां बार द्वार थयां.

तथा चार विपाक एटले उदय कालनां ठाम, तेनां नाम कहे ठे. एक हेत्रविपाकिनी, बीजी जवविपाकिनी, त्रीजी जीवविपाकिनी, चोथी पुजलविपाकिनी, एम जे जे कर्मप्रकृति, जे जे विपाकिनी होय, ते कहीछुं. एटले शोल द्वार कद्यां.

तथा चार बंधविधि, एटले बंधना प्रकार तेमां एक प्रकृतिबंध, बीजो स्थितिबंध, त्रीजो रसबंध, चोथो प्रदेशबंध, ए चार प्रकारना बंधने उत्कृष्ट तथा जघन्य अग्नीं कहीछुं. एवं वीश द्वार थयां.

नूयस्कारबंध, बीजो अल्पतरबंध, त्रीजो अवस्थितबंध, चोथो स्वरूप तथा प्रकृति बंधादिक जे उत्कृष्ट जघन्यपणें तेना स्वामी

एटले अधिकारी ए चार वानां कहेवो. एम चोवीश दार, शतकनामा ग्रथनां कहां।
तथा गाथाने अंतें अकारणे ते चकारने अर्थेते तेचशब्द थकी उपशमश्रेणी,
तथा बीजी रूपकश्रेणी, ए बे श्रेणीतुं स्वरूप कहेवुं. एम उवीश दारनानाम शत
कनामा कर्मग्रंथमां केवानां कहां ॥ १ ॥

तिहां प्रथम दारें सुडतालीश ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहेते.

वसु चतु तेअ कम्मा, गुरु लदु निमिणो वघाय जय कुड्डा ॥

मिड कसाया वरणा, विग्घं ध्रुवबंधि सगचत्ता ॥ २ ॥

अर्थे—(वसुचतु के०) वर्षचतुष्क, (तेअ के०) पांचमुं तैजस नाम, (क
म्मा के०) उडुं कार्मणनामकर्म, (अगुरुलदु के०) सातमुं अगुरुलघुनामकर्म,
(निमिणं के०) आठमुं निर्माणनामकर्म, (वघाय के०) नवमुं उपघातनाम
कर्म, (जय के०) दशमुं जयमोहनीय, (कुड्डा के०) अगीअरमुं जुगुप्तामो
हनीय, (मिड के०) बारमुं मिष्यात्वमोहनीय, (कसाया के०) शोल कषाय.
एवं अष्टावीश थइ तथा (वरणा के०) ज्ञानावर्ष पांच अने दर्शनावरण नव ए
चौद प्रकृति. एवं सर्व मली वेंतालीश प्रकृति थइ तथा (विग्घं के०) अंतराय पांच.
एवं (सगचत्ता के०) ए सुडतालीश ध्रुवबंधिनी प्रकृति जाणवी ॥ इत्यह्वरार्थः ॥ १॥

वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, ए चार प्रकृतिनुं नाम वर्षचतुष्क कहीयें. एक तै
जसशरीर, बीजुं कार्मणशरीर, त्रीजुं अगुरुलघुनामकर्म, चोथुं निर्माणनामक
र्म, अने पांचमुं उपघात नामकर्म. ए पांच अने पूर्वोक्त वर्ष चतुष्क ए नव ना
मकर्मनी प्रकृति ध्रुवबंधिनी कहीयें. जे जणी चार गतिना जीवने तैजस कार्मण
शरीर होय, तथा वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, ते औदारिक अने वैक्रियशरीरना बंधें
होय, तथा निर्माणनामकर्म पण अंगोपांग आश्रयी होय, वली अगुरुलघु तथा
उपघात नामकर्म पण, शरीरबंधें होय, तेथी स्व स्व गति प्रायोग्य ए नामकर्म
नी नव प्रकृति आपणा अविरति कषायादिक हेतु ठते बंधाय. तेथी ए नव प्रकृ
तिने ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें.

जयमोहनीय अने जुगुप्तामोहनीय, ए बे प्रकृतिनी बंधविरोधिनी प्रकृति नथी
तेथी ध्रुवबंधिनी कहीयें. तथा मिष्यात्वमोहनीय पण निज हेतु मिष्यात्वे ॥
सद्भावें अवश्य बंधाय ते. ते जणी एने पण ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें,
थइ. तथा अनतानुबंधिया कषायोदय हेतु सद्भावें अनंतानुबंधी क

या अने लोच, ए चार, अवश्य बंधाय. तेमज अप्रत्याख्यानोदयसद्भावें अप्रत्याख्यानीया चार बंधाय अने प्रत्याख्यानोदयरूप निज हेतु ठते चार प्रत्याख्यानीया बंधाय. संज्वलनकषायोदय रूप निज हेतु ठतां संज्वलना चार कषाय बंधाय. एवं शोल कषाय बंधाय. ए सर्व मली उगणीश प्रकृति मोहनीयनी थइ.

तथा ज्ञानावरणीयनी प्रकृति पांच अने दर्शनवरणीयनी प्रकृति नव, ए चौद आ वरण पण सर्व जीवने पोत पोताना बंध विज्ञेद स्थानक लगे अवश्य बंधाय. तेने स्थानकें बीजी विरोधिनी प्रकृतिनो बंध न थाय. ते जणी ए पण ध्रुवबंधिनी प्रकृति जाणवी. एम अंतरायकर्मनी पांच प्रकृति पण दशमा गुणताणा लगे सर्व जीवने अवश्य बंधाय. तेथी एने पण ध्रुवबंधिनी प्रकृति कहीयें. एवं ए सुढतालीश कर्म प्रकृति आपणा मिथ्यात्व, अविरति अने कषायादिक हेतुना सद्भावें सर्व जीवने अवश्य बंधाय. ते जणी एने ध्रुवबंधिनी कहीयें. तेमध्ये ज्ञानावरणीयनी पांच, दर्शनावरणीयनी नव, मोहनीयनी उगणीश, नामकर्मनी नव अने अंतराय कर्मनी पांच, एम मूल पांच कर्मनी थइने उचर प्रकृति सुढतालीश थाय ॥

अने वेदनीय तथा गोत्र ए बे कर्मनी मूल प्रकृतिनी अपेक्षायें ध्रुवबंधिनी जाणवी. परंतु उचरप्रकृतिनी अपेक्षायें अध्रुवबंधिनी जाणवी ॥ ३ ॥

हवे अध्रुवबंधिनी प्रकृति कहे ठे.

॥ अथा ध्रुवबंधिन्यः ॥

तणु वंगा गिअ संघय, ए जाइ गइ खगई पुवि जिणुसा सं ॥ उज्जो आयव परघा, तसवीसा गोअ वेयणियं ॥ ३ ॥

अर्थ—(तणुवंग के०) तनुत्रिक अने उपांगत्रिक, (आगिअ के०) आकृति ए टले संस्थान ठ, (संघयण के०) संघयण ठ, (जाइ के०) जाति पांच, (गइ के०) गतिचार, (खगई के०) विहायोगति बे, (पुवि के०) आनुपूर्वीचतुष्क, (जिणुसासं के०) जिननामकर्म अने उज्जासनामकर्म, (उज्जोआयव के०) उद्योतनाम तथा आतपनाम, (परघा के०) पराघातनाम, (तसवीसा के०) त्रस दशक अने स्थावरदशक, ए बे मलीने वीश प्रकृति जाणवी. (गोअ के०) गोत्र दिक, (वेअणिअ के०) वेदनीयदिक, एवं वाशठ प्रकृति थइ.

॥ तनु एटले शरीरनामकर्म, ते मध्ये तैजस अने कार्मेण, ए बे शरीर तो पूर्वे अध्रुबंधी अने शेष औदारिक, वैक्रिय अने आहारक, ए त्रण शरीर तथा एज त्रण

शरीरनां अंगोपांग, ते मध्ये मनुष्य तथा तिर्यचने औदारिक होय अने देव तथा नारकी प्रायोग्य वैक्रिय होय, ते अध्रुवबंधिनी प्रकृति कहियें अने आकृति एटले संस्था न ठ ठे, ते ठ मध्ये एक समयें एकज बंधाय. ते जणी एने पण अध्रुवबंधी कहियें. तथा संघयण ठ पण मनुष्य, तिर्यच प्रयोग्य बांधतां एक समयें एकज बंधाय अने देव ता तथा नारकी प्रायोग्य बांधतां संघयणनो बंध न होय माटें अध्रुवबंधिनी कहीयें. तथा एकेंद्रिय, बेंद्रिय, तेंद्रिय, चौरिंद्रिय अने पंचेंद्रिय, ए पांच जातिमध्ये एकेंद्रियादिक स्वस्व प्रायोग्य एक जातिज बंधाय, ते माटें अध्रुवबंधिज कहियें. तथा चार गतिमध्ये पण एक समयें एकज देवादिकनी गति बंधाय, ते माटें ए पण अध्रुवबंधिनी प्रकृति कहियें. तथा शुंजविहायोगति अने अशुंजविहायोगति, ए बे प्रकृति पण बंधविरोधिनी ठे. तेथी शुंजविहायोगति बंधाय, तेवारें अशुंजविहायोगति न बंधाय, तेथी ध्रुवबंधिनी कहियें. तथा देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, तिर्यचानुपूर्वी अने नरकानुपूर्वी, ए चार प्रकृति पण बंधविरोधिनी ठे माटें अध्रुवबंधिनी कहियें. एवं ए तेत्रीश प्रकृति परावर्त्तमान जणी अध्रुवबंधिनी कहियें.

जिननामकर्म सम्यक्त्व ठतां पण कोइ एकने बंधाय अने कोइ एकने न बंधाय, ते जणी अध्रुवबंधिनी कहियें तथा उच्चासनामकर्म पण पर्याप्त प्रायोग्य बांधतां बंधाय. परंतु अपर्याप्त प्रायोग्य बांधतां न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहियें तथा उद्योतनामकर्म पण तिर्यचप्रायोग्य बांधतां कोइ एकने बंधाय अने बीजानें न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहियें तथा आतपनामकर्म पण पृथ्वीकाय एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां कोइ एकने बंधाय अने कोइ एकने न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहियें तथा पराघातनामकर्म पण पर्याप्त प्रायोग्य बांधतां कोइ एकने केवारेंक बंधाय अने कोइ एकने अपर्याप्त प्रायोग्य बांधतां न बंधाय, तेथी अध्रुवबंधिनी कहियें तथा त्रसदशक अने स्थावरदशक एटले त्रस, बादर, पर्याप्त अने प्रत्येकादिक, तेमज स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त अने साधारणादिक प्रायोग्य बांधतां बंधाय, परंतु तेथी विपरीत बांधतां न बंधाय तेथी ए वीश प्रकृति पण अध्रुवबंधिनी कहियें तथा उच्चैर्गोत्र बांधतां नीचैर्गोत्र न बंधाय. अने नीचैर्गोत्र बांधतां उच्चैर्गोत्र न बंधाय माटें ए बे प्रकृति, बंधविरोधिनी जणी एने अध्रुवबंधिनी कहियें तथा शाता, आशातावेदनीय पण परावर्त्तमान बंधाय पण सायें न बंधाय तेथी ए बे प्रकृति पण अध्रुवबंधिनी कहियें. एवं उगण प्रकृति थइ. तथा तेत्रीश आगलनी मेलवतां बाशठ प्रकृति थई ॥ ३ ॥

हासाइ जुअल डग वे,अ आउ तेउत्तरी अधुवबंधो ॥
जंगा अणाइ साई, अणतं संतुत्तरा चउरो ॥ ४ ॥

अर्थ—(हासाइजुअल के०) हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए (डग के०) बे युगल (वेअ के०) त्रण वेद, (आउ के०) चार आयु, (तेउत्तरी के०) ए तहोत्तेर कर्मप्रकृति, (अधुवबंधो के०) अधुवबंधिनी जाएवी. एना (जंगा के०) चार जांगा, (अणाइसाईअणतं के०) अनादि अने सादि ए बे पदने अनंत अने (संतुत्तराचउरो के०) सांत ए बे पद, प्रत्येकेँ आगल जोडतां चार जांगा होय एटले अनादि अनंत, अनादि सांत,सादि अनंत अने सादि सांत, ए बे जोडतां चार थाय ॥ इत्यह्वरार्थः ॥ ४ ॥

हास्य अने रति, ए युगल बांधतां शोक अने अरति, ए युगल न बंधाय अने शोक अने अरति बांधतां, हास्य अने रति न बंधाय. तेथी ए चार प्रकृतिनो बंध सांतरपर्ये बंधाय, तेथी ए अधुवबंधिनी उछा गुणताणा लगेँ जाएवी अने तेथी आगले निरंतरपर्ये बंधाय माटेँ पढी धुवबंधी कहेवाय. एमज अशाता वेदनीय पण जाणी लेवी तथा एमज नीचैगोत्र पण बीजा गुणताणा लगेँ अधुवबंधी ने पढी धुवबंधी जाएवो.

स्त्रीवेद, पुरुषवेद अने नपुंसकवेद, ए त्रण प्रकृतिमर्थेँ पण एक समयेँ एकज बंधाय. तेमां नपुंसकवेद मिथ्यात्व लगेँ अने स्त्रीवेद, सास्वादन लगेँ बंधाय, तेथी आगल निरंतर पुरुषवेद बंधाय तथा एक देवायु, बीछुं नरकायु, त्रीछुं तिर्यंचायु, अने चोशुं मनुष्यायु, ए चार आयुमांहेलो एक नवमां एकज वार एक गतिनुं आयु बंधाय माटेँ अधुवबंधिनी जाएवी. ए रीतेँ ए तहोत्तेर प्रकृति अधुवबंधिनी कहियेँ. केम के केवारेंक बंधाय, केवारेंक न बंधाय, केवारेंक तेने स्थानकेँ विरोधिनी बीजी प्रकृति बंधाय, तेथी एनो बंध, निश्चल न होय तेथी एने अधुवबंधिनी कहियेँ.

अहीँआं धुवाधुवने विषे चार जांगा अवतारियेँ, अनादि ने सादि, ए बे पद आगल प्रत्येकेँ अनंत ने सांत, ए बे पद जोडियेँ, तेवारें एक अनादि अनंत, बीजो अनादि सांत, त्रीजो सादि अनंत अने चोथो सादि सांत, ए चार जंग थाय. जे कर्मप्रकृतिनी प्रवाहरूपेँ बंधनी आदि न पामीयेँ. एटले (१) जे ए आठ कर्मनी प्रकृति पूर्वेँ न हती अनेँ अमुक दिवसथी नवी अइ, एमकोइ वारें पण न कहे वाय, ते अनादि. (२) अने जे प्रकृतिनुं अबंधकपणुं थया पढी वली पहेलां बांधी

ते सादि. (३) जे प्रकृतिनो बंधविच्छेद न होय, त्या जगें अनंत. (४) तथा जेवारें बंधनो अंत करे, तेवारें सांत, ए जेम बंधमां नांगा कहा, तेम उदय अने उदोरणार्यें पण सादि, अनादि, सांत अने अनंत, ए चार नांगा जाणवा ॥ ४ ॥

पढम बिच्या धुव उदइसु, धुवबंधिसु तइअ वळ्ळ जंगतिगं ॥
मिळ्ळमि तिन्नि जंगा, डहावि अधुवा तुरिअ जंगा ॥ ५ ॥

अर्थ—(पढम के०) पहेलो अने (बिच्या के०) बीजो ए बें नांगा, (धुव उदइसु के०) धुवोदयी प्रकृतिने विपे होय अने (धुवबंधिसुतइअवळ्ळजंगतिगं के०) धुवबंधी प्रकृतिने विपे त्रीजो नांगो वर्जोने शेष त्रण नांगा होय तथा (मिळ्ळमि तिन्निजंगा के०) मिथ्यात्वमोहनीयने विपे त्रण नांगा जाजे. वली (डहाविअधुवा के०) बे प्रकारनी अधुवबंधी प्रकृति एटले एक अधुवबंधिनी, बीजी अधुवोदयी, ए बेने विपे (तुरिअजंगा के०) एक सादि सांत नामें चोथो नांगो होय ॥ ५ ॥

तेमाहे पहेलो अनादि अनंत तथा बीजो अनादि सांत, ए बे नांगा एक मिथ्यात्व मोहनीय विना शेष बढीश धुवोदयी प्रकृति आश्री जाजे. जे जणी अजव्यने निर्माणादिक बढीश प्रकृतिना उदयनीआदि न पामीयें तेम आगला गुणगणाने अजावें उदय विच्छेद पण न पामीयें, तेथी अनंत एटले अनादिअनंत नांगो जाणवो, तथा जव्यनी अपेकार्यें ए बढीशनी आदि नथी पण बारमे, तेरमे अने चौदमे, गुणगणे उदयनो अंत अशो, तेथी सांत माटें अनादि सांत, ए बीजो नांगो पामीयें.

तथा धुवबंधिनी वर्णचतुष्कादिक सुडतालीश प्रकृतिना बंधनी अपेकार्यें त्रण नांगा होय, ते आवी रीतें जे अजव्य जीव अनादिकाजनो ए, धुवबंधिनी प्रकृति सर्वदा बांधे ठे. तेथी अनादि तथा आगलां गुणगणाने अजावें बंधव्यवच्छेद पण पामशे नहीं, तेथी अनंत. ए अनादि अनंतनामा प्रथम नांगो अजव्य आश्रयी कहा तथा जव्य जीव जे अनादि मिथ्यात्वी ठे, तेने आनादि सांत नांगो जाणवो अने जे जव्य जीव अगीआरमे गुणगणो ए प्रकृतिनो अबंधक अइने वली तिहां थकी पडतो बंध आरंजे, तिहां सादि, ते वली अवश्य अबंधक अशो, तेथी सांत, ए चोथो सादि सांतनामा नांगो कहा. ए रीतें त्रण जंग कहा.

हवे मिथ्यात्व मोहनीयनो बंध तथा उदय त्रण नांगे जाजे, तिहां अजव्यने मिथ्यात्वनो बंध तथा उदय अनादि अनंत नांगो तथा अनादि मिथ्यात्वी जव्य जीवनादि सांत नांगो जाणवो. केम के ते सम्यक्त्व पामशे तेवारें मिथ्यात्वनो

तथा जे सम्यक्त्व वमीने मिथ्यात्वे जाय ते सादि मिथ्यात्वी तेनी अपेक्षायें ए चोथो सादि सांत जंग जाणवो. अने त्रीजो आदिअध्रुव जांगो शून्य जाणवो. जे नणी सादि तो नव्यनेज होय अने ते तो अवश्यमेव मुक्तियें जाय. तेवारें ति हां बंध तथा उदयनो अंत करे, तेथी सादि अध्रुव जांगो खोटो जाणवो.

अर्हीआं ध्रुवबंधिनी तथा ध्रुवोदयी प्रकृतिमध्यें मिथ्यात्वमोहनीय कष्टुं ठे प ए अर्हीआं ते बेदुषी जूडुं एटला वास्ते कष्टुं ठे के, जो पण ध्रुवबंधिनी अपेक्षा यें त्रण जांगा कह्या, ते बंधें आवे पण उदयें त्रण जांगा न आवे अने मिथ्यात्व मोहनीयना तो उदयना पण त्रण जांगा ठे ते विशेष जाणवाने अर्थें जिन कष्टुं.

तथा जे प्रकृति बंधें अने उदयें पण अध्रुव ते अध्रुव पणा नणीज एक चोथे सादिसांत जांगे कहेवाय परंतु एने विषे शेष त्रण जांगा न होय ॥ ५ ॥

॥ अथ ध्रुवोदयिन्यः निरूप्यन्ते ॥ हवे सत्तावीश ध्रुवोदयी प्रकृति कहे ठे.

निमिण थिर अथिर अगुरुअ, सुह असुहं तेअ कम्म
चउवन्ना ॥ नाणंतराय दंसण, मिहं ध्रुव उदय सगवीसा ॥ ६ ॥

अर्थे—(निमिण के०) निर्माणनामकर्म, (थिर के०) स्थिरनामकर्म, (अथिर के०) अस्थिरनामकर्म, (अगुरुअ के०) अगुरुलघुनामकर्म, (सुहअसुहं के०) शुन नामकर्म अने अशुननामकर्म, (तेअ के०) तैजसनामकर्म, (कम्म के०) कार्मण नामकर्म, (चउवन्ना के०) वर्षादिक चार, (नाणंतराय के०) ज्ञानावरणीय पांच, तथा अंतराय पांच, (दंसण के०) दर्शनावरणीय चार, (मिहं के०) मिथ्यात्वमो हनीय, (ध्रुवउदयसगवीसा के०) ए सत्तावीश कर्मप्रकृतिने ध्रुवोदयी कहीयें ॥ ६ ॥

एक निर्माण, बीजुं स्थिर, त्रीजुं अस्थिर, चोथुं अगुरुलघु, पांचमुं शुन, षट्ठुं अशुन, सातमुं तैजस, आठमुं कार्मण तथा चार वर्षे, एवं बार नामकर्मनी ध्रुवो दयी प्रकृति. एनो उदय, चारे गतिना जीवने सर्वदा होय. एना उदयनो व्यवहे द काल, तेरमा गुणगणाना प्रातें ठे. परंतु तिहां जगें तो सर्व जीवने विषे ए बार प्रकृतिनो उदय पामियें, ते नणी ध्रुवोदयी कहीयें. ए मांहे थिर, अथिर, त था शुन अने अशुन, ए चार प्रकृति विरोधिनी कही ठे. पण ते बंधनी अपेक्षा यें विरोधिनी लेवी परंतु एनो उदय विरोधी नथी, जे नणी लोही लाल मूत्रादिक पूजलनो अस्थिर बंध अस्थिर कर्मोदयथी होय तथा हाड, दांतादिकनो स्थिर बंध कर्मना उदयथी स्थिर होय. एम चारे प्रकृति उदय अविरोधिनी ठे तेमज शुन

नामोदर्ये मस्तकादिकं शुभ्र अंगं होय अने अशुभ्र नामोदर्ये पादादिकं अंगं अशुभ्र होय. ए रीते उदय अविरोधी ठे ते माटे ध्रुवोदयी कही. एवं बार प्रकृति थइ.

पांच ज्ञानावरणानो उदय पण बारमा गुणगणा सुधी निरंतर सर्व जीवने होय, तेमज दानादिक पांच अंतरायनी प्रकृति तथा चक्रादिक चार, दर्शनावरणी यकर्मनी प्रकृति, एनो उदय पण बारमा गुणगणा लगे होय, तेथी ए चौद प्रकृति पण ध्रुवोदयी कही तथा मिथ्यात्वमोहनीयानो उदयविभेद प्रथम गुणगणे ठे, ते जणी प्रथम गुणगणे वर्तता जीवने मिथ्यात्व मोहनीयानो उदय ध्रुव कहीये अने जो पण सास्वादनादिक गुणगणे मिथ्यात्व मोहनीयानो उदय न लाजे, तो पण ते अध्रुव न जाणवो. जे जणी ध्रुवोदयीतुं एज लक्षण ठे जे आपणा उदय व्यवभेद स्थानक लगे निरंतर जेनो उदय लाजे, ते ध्रुवोदयी कहेवाय. एम सत्तावीश प्रकृति कही ॥ ६ ॥

हवे एनी विपरीत अध्रुवोदयी प्रकृति कहे ठे.

धिर सुभ्र अर विणु अध्रुव, बंधी मिच्छ विणु मोह ध्रुवबंधी ॥

निदोव घाय मीसं, सम्मं पण नवइ अध्रुवुदया ॥ ७ ॥

अर्थ—(धिर के०) स्थिरनामकर्म, (सुभ्र के०) शुभ्रनामकर्म, (इअर के०) एथी इतर ते अस्थिरनामकर्म अने अशुभ्रनामकर्म, (विणु के०) ए चार प्रकृति विना शेष शरीर त्रण, उपांग त्रण, संस्थानठक, संघयणठक, जाति पांच, गति चार. एवं सत्तावीश तथा खगतिदिक, आनुपूर्वीचतुष्क. एवं तेत्रीश प्रकृति तथा जिननाम, उद्भास, उद्योत, आतप, पराघात, त्रसचतुष्क, शुभ्रगचतुष्क, एवं तेंतालीश. स्थावरचतुष्क, दौर्जाग्यचतुष्क, गोत्रदिक, वेदनीयदिक, हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, त्रण वेद अने आयुश्चतुष्क. ए उगणोतेर प्रकृति बंधविरोधिनी जणी (अध्रुवबंधी के०) अध्रुवबंधिनी कहीये. एने जेम अध्रुवबंधिनी कही, तेम उदयविरोधिनी जणी कोइक अध्रुवोदयी पण जाणवी, केम के जिननामथी पराघातपर्यतिनी पांच प्रकृति ठे तेनो उदय कोइएक जीवने होय ते जणी अध्रुवोदयी कहीये. जो पण ए अविरोधिनी ठे तो पण ए वात विचारिने अविरोधिनी न कहेवी.

तथा शोक्ष कषाय, सत्तरमुं नय, अढारमी जुगुप्सा, ए अढार मोहनीयनी प्रकृति ठे ते ध्रुवबंधिनी प्रकृतिमध्यं गणवी केमके ए मध्यं क्रोधादिकने उदर्ये मानादिकनो उदय न होय, तेथी ए उदयविरोधी ठे पण बंधविरोधी नथी, तेणे

करी बंधमां तो ध्रुवबंधिनी कही पण उदयमां अध्रुवोदयी कहीयें. तथा जय अ ने जुगुप्तानो उदय सांतर ठे केमके कोइने कोइ वारें होय, कोइने कोइ वारें न होय ते जणी ए पण अध्रुवोदयी कही. तथा (मिह्वविणुमोहध्रुवबंधी के०) मि थ्यात्व ध्रुवबंधी ठतुं पण ध्रुवोदयीमध्ये गस्युं, तेथी ते वज्युं. शेष अठार प्रकृ ति, अध्रुवोदयी जाणवी. एम सत्याशी प्रकृति अध्रुवोदयी जाणवी.

(निहोवघायमीसं के०) तथा दर्शनावरणीय कर्ममध्ये पांच निडानो उदय, केवारेंक होय अने केवारेंक न होय. तथा ए पांच निडा पण परस्परें उदयवि रोधिनी ठे. ते जणी एने पण अध्रुवोदयी कहीयें तथा उपघातनामनो पण को इएक जीवने कोइएक वारें उदय होय तेथी अध्रुवोदयी कहीयें तथा मिश्रमोह नीयजुं उदय पण विरोधी ठे. जे जणी मिथ्यात्व तथा सम्यक्त्व मोहनीयने उ दयें एनो उदय न होय, तेम वजी (सम्मं के०) सम्यक्त्व मोहनीयनो उदय पण वेदक सम्यक्दृष्टिने होय ते जणी अध्रुवबंधिनी कहीयें. एम ए जघन्य तो अंतर सुदूत अने उत्कृष्टी तो बाश्छ सागरोपम उपर त्रण पूर्वकोडी अधिक लगें होय पण तेथी वधारें न होय, ते जणी अध्रुवोदयी जाणवी. तथा जो पण सम्यक्त्वनी पेंरें सादि सांत जागे मिथ्यात्व पण ठे, तो पण ते अध्रुवोदयी न जाणवुं, जे जणी मि थ्यात्वोदय जूमि प्रथम गुणठाणुं ठे तिहांतो अवश्य मिथ्यात्वनोज उदय होय ते जणी ए ध्रुवोदयी होय. जो तेनी पोतानी जूमिमध्ये पण केवारेंक एनो उदय न होय, तो अध्रुवोदयी कहेवाय. (पणनवइअध्रुवुदया के०) ए पञ्चाणु प्रकृति, अ ध्रुवोदयी कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७ ॥

॥ अथ ध्रुवसत्ताप्रकृतिराह ॥ हवे ध्रुव सत्ता प्रकृति कहे ठे.

तस वसु वीस सगते, अ कम्म ध्रुव बंधि सेस वेय तिगं ॥

आगिइ तिग वेअणिअं, इ जुअल सग उरल सास चऊ ॥ ८ ॥

अर्थ—(तस के०) त्रसदशक तथा आवरदशक, एवं वीश प्रकृति तथा (वसुवीस के०) वर्णादिक वीश प्रकृतिनी सत्ता सर्व शरीरधारिने होय, ते जणी वर्णादि क वीश प्रकृति पण ध्रुवसत्ता कही तथा (सगतेअकम्म के०) तैजस सप्तक मध्ये तैजसशरीरनाम, कार्मेणशरीरनाम, तैजससंघातन, कार्मेणसंघातन, तैज सतैजसबंधन, कार्मेणकार्मेणबंधन, तैजसकार्मेणबंधन, ए सात प्रकृतिनी स चा, सर्व जीवने होय केम के तैजस अने कार्मेण शरीर पण सर्व जीवने होय ते

माटें तेनी ध्रुवसत्ता जाणवी अने (ध्रुवबंधिसेस के०) ए वर्षचतुष्क, तैजस त या कर्मण, ए ठ प्रकृतिने सूकी शेष ध्रुवबंधिनी एकतालीश प्रकृति रही तेनां ना म कहे ठे. शोल कषाय, १७ जय, १८ छुगुप्सा, १९ मिष्यात्व, पांच ज्ञानावरणीय, नव दर्शनावरणीय, पांच अंतराय, एवं आडत्रीश. ३९ निर्माण, ४० उपघात, ४१ अगुरुलघु, ए एकतालीश प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी जणी ध्रुवसत्ता पणें होय एनो बंध, सर्वदा होय तो सत्ता केम न होय? एवं अछाशी प्रकृति ध्रुवसत्तायें कही.

(वेद्यतिर्गं के०) वेद त्रणनो बंध तथा उदय जो पण अध्रुव कह्यो ठे, तो पण एनी सत्ता ध्रुव कही ठे, जे जणी एकेक वेदमध्ये पण त्रण वेदना संक्रांत दल पामीयें, ते जणी ध्रुवसत्ता कहीयें. एवं एकाणु प्रकृति अइ. (आगिइतिग के०) आकृतित्रिक, एटले संस्थानथी त्रिक छेवुं. तिहां “तणुवंगागि” ए गाथानी मेले प्रथम ठ संस्थान, ठ संघयण अने जाति पांच. ए सत्तर प्रकृतिनी सत्ता पण पूर्वली पेरें ध्रुव जाणवी. एटले एकशो ने आठ अइ अने (वेद्यणिअं के०) वेद नीयदिकनी सत्ता पण परस्पर संक्रांतदलीकनी अपेक्षायें ध्रुवसत्तायें जाणवी. एवं एकशो दश प्रकृति अइ तथा (डुजुअल के०) बे युगल एटले हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए चार प्रकृतिनी सत्ता पण रूपकश्रेणियें नवमा गुणस्थानक जगें सर्व जीवने होय तथा (सगठरल के०) औदारिकसप्तक एटले औदारिकशरीर, औदारिक अंगोपांग, औदारिक संघातन, औदारिक औदारिक बंधन, औदारिकतैजसबंधन, औदारिक तैजसकर्मणबंधन अने औदारिककर्मणबंधन, ए सात प्रकृतिनी सत्ता पण सर्वदा पामियें जे जणी मनुष्य तिर्यचने ए उ दयें होय ठे तथा देवता अने नारकीने बंधें होय, ते माटें चारें गतिमाहे ए नी सत्ता, ध्रुव होय. तथा (सासचक के०) एक उद्वास, बीछुं वयोत, त्रीछुं आतप, चोथुं पराघात, ए उद्वासचतुष्कनी सत्ता, सर्वदा होय ते जणी एने पण ध्रुव सत्ता कहीयें. एवं एकशो ने पच्चीश प्रकृति अइ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७ ॥

खगई तिरि डुग नीअं, ध्रुवसत्ता (॥ अथाध्रुवसत्ता निरूप्यंते ॥) सम्म मीस मणुअ डुगं ॥ विउविकार जिणाठ, हारस गुच्चा अध्रुवसत्ता ॥ ए ॥

अर्थ—(खगई के०) अज्ञविहायोगति अने अज्ञविहायोगति. ए बेदु प्रकृतिना सत्ता, जीवने सर्वदा होय. तेथी ध्रुवसत्ता जाणवी. (तिरिडुग के०) तिर्यचनी

गति अने तिर्थेचानुपूर्वीं ए वेदु नाम कर्मनी प्रकृतिनी सत्ता पण सर्वे जीवने सर्वदा होय जे जणी जीवने घणी स्थिति तिर्थेचगतिमध्ये होय ते तथा बीजी गतिमध्ये पण एनो वंध होय, ते जणी एनी ध्रुवसत्ता जाणवी. (निअं के०) नीचैर्गोत्रनी ध्रुवसत्ता, तिर्थेचगतिमध्ये नियमा निचैर्गोत्रनो उदय होय, तेथी ए एकशो ने त्रीश प्रकृतिनी सत्ता, मिष्यात्वगुणस्थानकें वर्त्तता सर्वे जीवने होय जो पण अनंतानुबंधियानी सत्ताजूमि. सातमा गुणताणा जगें ठे अने तेमध्ये पण विसंयोजना कीधे सत्ता टले तो पण एनी मिष्यात्वें ध्रुवसत्ता जाणवी. (ध्रुवसत्ता के०) सत्ता एटले ध्रुवसत्ता प्रकृति एकशो ने त्रीश कही शेष अठावीश प्रकृति रही, ते एथी विपरीत अध्रुवसत्तायें ठे, ते कहे ठे. जे प्रकृति उवेळ्ये थके तथा अबंधें मिष्यात्व गुणताणें पण कोइ एक जीवने केवारें एक सत्तायें न लाजे अने कोइ एकने लाजे एम जजनायें सत्ता होय, तेने अध्रुवसत्ता कहीयें. ते कहे ठे.

(सम्म के०) एक सम्यक्त्वमोहनीय, बीजी (मीस के०) मिश्रमोहनीय, ए वे प्रकृतिनी सत्ता, अनादि मिष्यात्वी जीवने होय तथा मिष्यात्वगुणताणे सम्यक्त्व वमी आब्या होय तेने मिष्यात्वप्रत्ययें ए वे पुंज उवेली बवीश प्रकृति सत्कर्मा होय तेने न होय बीजा जीवने होय तेथी अध्रुवसत्ता प्रकृति कहीयें.

तथा (मणुश्रुद्धुंगं के०) मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वीं ए वे प्रकृति ते ते उकाय अने वाउकायमध्ये जे घणो काल रहे, तो ते उवेळे तेने सत्तायें न होय, बीजानें होय. एम ए प्रकृति पण अध्रुव सत्ता वाली कहीयें.

तथा (विउद्विकार के०) एक वैक्रियशरीर, बीजुं वैक्रियअंगोपांग, त्रीजुं वैक्रियसंघातन, चोशुं वैक्रियबंधन, पांचमुं वैक्रियतैजस बंधन, उठुं वैक्रिय कर्मणबंधन, सातमुं वैक्रियतैजस कर्मणबंधन, आठमी देवगति, नवमी देवानुपूर्वीं, दशमी नरकगति, अगीआरमी नरकानुपूर्वीं, ए अगीआर प्रकृतिनी सत्ता, अनादि निगोदिया जीवने न होय, बंधने अजावें न होय. तथा उवेळे पण टले, तेथी ए अगीआर प्रकृतिनी अध्रुवसत्ता जाणवी.

(जिणार्ठ के०) जिननामकर्मनी सत्ता, जे सम्यक्त्वप्रत्ययें जिननामकर्म बांधी वली मिष्यात्व पामे, तेने अंतरमुदूर्त्त जगें होय, बीजानें न होय, तेथी अध्रुवसत्ता कही. एमज मनुष्यायु, देवायु, तिर्थेचायु अने नरकायु, ए चार मध्ये कोइ जीवने एकनी सत्ता, कोइ जीवने बेनी सत्ता, एम ए पण अध्रुवसत्ता कही.

(आहारसगुच्चाअध्रुवसत्ता के०) एक आहारकशरीर, बीजुं आहारकअंगो

पांचसुं आहारकसंस्थान, चोसुं आहारकबंधन, पांचसुं आहारकतैजस
बंधन, बहु आहारककर्मणबंधन, सातसुं आहारककर्मण तैजसबंधन, ए आ
हारकसप्तक. एनी सत्ता जे अप्रमत्तगुणस्थानके विद्युद् चारित्रप्रत्यये आहारक
शरीर बांधी पढी संक्लेश विशेषे मिथ्यात्वे जाय. तेने सत्ताये होय, परंतु बीजानें
न होय माटे अध्रुवसत्ता कहीये. उच्चैर्गोत्रनी सत्ता पण अध्रुव जे जणी तेउ
अने वाउमध्ये रहेतो जीव, उच्चैर्गोत्र उवेले, तेने उच्चैर्गोत्रनी सत्ता टले बीजानें
होय. एम जे प्रकृति मिथ्यात्व गुणगणो वर्त्तता पण कोइ जीवने होय कोइ जी
वने न होय, ते अध्रुवसत्तानी प्रकृति कहीये. ए अष्टावीश प्रकृति कही एटले स
म्यक्त्व, मिश्र, मनुष्यदिक, वैक्रिय एकादशक, जिननाम, चार आयुं, आहारक
सप्तक अने उच्चैर्गोत्र, एवं अष्टावीश थइ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १९ ॥

हवे गुणगणानी अपेक्षये प्रकृतिनी सत्तासुं ध्रुवाध्रुवपणुं विचारे ठे.

पढम तिगुणोसु मिठं, निअमा अजयाइ अठ गे जळं ॥

सासाणे खलु सम्मं, सतं मिडाइ दसगेवा ॥ २० ॥

अर्थ—(पढमतिगुणोसु के०) मिथ्यात्व, सास्वादन अने मिश्र, ए प्रथमनां त्रण
गुणगणाने विपे (मिठंनिअमा के०) मिथ्यात्वमोहनीयनी सत्ता निश्चयपणे
एटले ध्रुवपणे होय. जे जणी मिथ्यात्व मोहनीयना उदय विना प्रथम गुणगणुं
नज होय. तो ज्या उदय होय, त्या सत्ता तो ध्रुव होय, अने मिश्रगुणगणो प
ण मोहनीयना चोवीश, सत्तावीश अने अष्टावीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय,
त्या पण मिथ्यात्वनी सत्ता सघले स्थानके होय तेणे ध्रुवसत्ता होय.

शेष (अजयाइअठगेजळं के०) अजय एटले अविरति सम्यक्दृष्टि गुणगणा
थी मांकीने अगीअरमा उपशांत मोहगुणगणा सुधीना आठ गुणगणो नजनाये
होय. जे जणी ह्यायोपशमिक सम्यक्दृष्टिने मिथ्यात्व मोहनीय उवेले थके मोहनी
यनी त्रेवीश तथा बावीश प्रकृतिनी सत्ताये वर्त्तताने मिथ्यात्वनी सत्ता न होय
तथा ह्याधिकने पण न होय अने जेणे मिथ्यात्व उपशमाव्युं होय तेने सत्ता हो
य, तेथी ए आठ गुणगणो मिथ्यात्वमोहनीयनी अध्रुवसत्ता होय.

तथा (सासाणेखलुसम्मं के०) सास्वादन गुणगणो वर्त्ततो नियमा मोहनीय
सुं एकज अष्टावीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, परंतु मोहनीयनां बे, त्रण, सत्ता
स्थानक न होय. जे जणी उपशमसम्यक्त्वे करी त्रिपुंज करी त्याथी पढतो सा

स्वादनगुणगणो आवे, त्यां सर्व मोहनीय प्रकृतिनी सत्ता होय तेथी सम्यक्त्व मोहनीयनी सास्वादनने ध्रुव (सत्तं के०) सत्ता जाणवी.

अने (मिह्नाइदसगेवा के०) शेष मिथ्यात्व, मिश्र, अविरति, देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्ति, अनिवृत्ति, सूक्ष्मसंपराय अने उपशांतमोह, ए दश गुणगणो सम्यक्त्वमोहनीयनी सत्तानी नजना जाणवी, जे जणी सम्यक्त्व पामी पठी मिथ्यात्वं आव्युं होय ते ज्यां सुधी सम्यक्त्वपुंज उवेले नहीं, त्यां लगे सम्यक्त्व मोहनीयनी सत्ता होय, अने सम्यक्त्वपुंज उवेल्या पठी तथा अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने सम्यक्त्व मोहनीयनी सत्ता न होय तेमज त्रीजे मिश्रगुणगणो पण जो सम्यक्त्व पुंज उवेली आव्यो होय तेने सम्यक्त्वमोहनीयनी सत्ता न होय बी जाने होय तथा अविरत्यादिक आठ गुणगणो द्वायिक सम्यक्दृष्टिने सम्यक्त्व मोहनीय खपावी तेथी तेने सम्यक्त्व मोहनीयनी सत्ता न होय तथा द्वा योपशमिक अने औपशमिक सम्यक्दृष्टिने ध्रुवसत्ता होय. एम आठ गुणगणो सम्यक्त्व मोहनीयनी अध्रुवसत्ता कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १० ॥

सासण मीसेसु ध्रुवं, मीसं मिह्नाइ नवसु जयणाए ॥

आइ डग अण नियमा, जइच्या मीसाइ नव गम्मि ॥ ११ ॥

अर्थ—(सासणमीसेसु के०) सास्वादन अने मिश्र, ए बे गुणगणो (मीसं के०) मिश्रमोहनीयनी सत्ता, (ध्रुवं के०) ध्रुव जाणवी. केम के सास्वादनने सर्व अज्ञावीशें मोहप्रकृतिनी सत्ता ध्रुव होय अने मिश्रमोहनीयना उदय विना मिश्रगुणगणुं होयज नहीं, तेथी त्यां पण मिश्रनी सत्ता ध्रुव होय. एम ए बे गुण गणो मिश्रमोहनीयनी ध्रुवसत्ता जाणवी.

अने मिश्र तथा सास्वादन, ए बे गुणगणा विना शेष (मिह्नाइनवसुजयणाए के०) एक मिथ्यात्व, बीजुं अविरति, त्रीजुं देशविरति, चोयुं प्रमत्त, पांचमुं अप्रमत्त, ठणुं निवृत्ति, सातमुं, अनिवृत्ति, आठमुं सूक्ष्मसंपराय, नवमुं उपशांतमोह, ए नव गुणगणो मिश्रमोहनीयनी सत्तानी नजना जाणवी, एटले कोइए कने होय अने कोइएकने न होय, जे जणी मिश्रपुंज उवेल्या पठी मिथ्यात्वं मिश्र मोहनीयनी सत्ता न होय अने जेणे मिश्रपुंज उवेळ्यो नथी तेने मिश्र मोहनीय नी सत्ता होय अथवा अनादि मिथ्यात्वीने तो नज होय.

तथा अविरत्यादिक आठ गुणगणो द्वायिक सम्यक्दृष्टिने मिश्रमोहनीयनी

सत्ता न होय, जे जणी सात प्रकृति खपावीने ह्याधिक सम्यक्त्वी थाय तेथी मिश्र मोहनीयनी सत्ता टले ह्याधिक सम्यक्त्व होय तेमाटें. तथा बीजा ह्यायोपशमिक तथा औपशमिक सम्यक्दृष्टिने मिश्रमोहनीयनी सत्ता होय तेथी नजना कही एटले कोइएकने केवारेंक होय अने कोइएकने केवारेंक न होय. एम नव गुणठाणे मिश्रमोहनीयनी अध्रुवसत्ता होय.

(आइडुगअणनियमा के०) आदिदिक एटले पहेले तथा बीजे, ए बे गुणठाणे अनंतानुबंधिया क्रोधादिक चारे कषायनी सत्ता निश्रय होय जे जणी मिथ्यात्व तथा सास्वादन, ए बे गुणठाणे नियमा अनंतानुबंधिया बंधाय तेथी ध्रुवसत्ता जाणवी.

शेष (नइआमीसाइनवगम्मि के०) मिश्र गुणठाणाथी मांमीने उपशांतमो ह जर्गेनां नव गुणठाणाने विषे अनंतानुबंधिया कषायनी सत्ता संबंधि नजना जाणवी, जे जणी जेणे अनंतानुबंधिया विसंयोज्या तथा उवेढ्या एटले खपा व्या तेने एनी सत्ता न होय अने बीजाने होय माटें नजना जाणवी. ए स्वमर्ते कष्टं तथा कर्मप्रकृति अने पंचसंग्रहादिकने मर्ते तो अनंतानुबंधियानी सत्ता टल्या विना श्रेणी आरंजे नहीं तेथी ते कहे ठे. जे अनंतानुबंधियानी विसंयोजना करी ने, उपशमश्रेणी आरंजे तेथी तेने सातमा गुणठाणाथी उपरले गुणठाणे अनंतानुबंधियानी सत्ता न होय तथा मिश्रादिक पांच गुणठाणे तो कोइएकने अनंतानुबंधियानी सत्ता होय, अने कोइएकने न होय एम नजना जाणवी माटें अध्रुवसत्ता जाणवी, अने मिथ्यात्व तथा सास्वादन ए बे गुणठाणे अनंतानुबंधियानी ध्रुव सत्ता होय. एम बेहु मर्ते अनंतानुबंधिया कषायनी गुणस्थानकनी अपेहायें ध्रुवा ध्रुव सत्ता कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १३ ॥

हवे आहारकसप्तकनी सत्ता कहे ठे.

आहार सत्तगं वा, सव्व गुणे बि ति गुणे विणा तिठं ॥

नो जय संते मिठो, अंत मुहुत्तं जवे तिठे ॥ १२ ॥

अर्थ—(आहारसत्तगंवासव्वगुणे के०) एक आहारक शरीर, बीजुं आहारक उपांग, त्रीजुं आहारकसंघातन, चोथुं आहारकआहारक बंधन, पांचमुं आहारकतै जसबंधन, ठहुं आहारककर्मणबंधन अने सातमुं आहारकतैजसकर्मणबंधन, ए सात प्रकृति जे जीवें तथाविध विद्युःश्चारित्र प्रत्ययें अप्रमत्तगुणठाणे बांधीने तथाविध संक्लेश अध्रुवसायें मिथ्यात्व गुणठाणा जर्गे आवे तथा कोइएक विद्युःश्चारित्रप्रत्ययें केवलज्ञान पण पामे तेथी सर्व गुणठाणे एनी सत्ता होय अ

ने कोइ एक जीव, ए सात प्रकृति बांध्या विनाज सर्व गुणस्थानक स्पर्श तेने ए सात प्रकृतिनी सत्ता सर्व गुणठाणे न होय. ए रीते नजना जाणवी.

तथा जिननामकर्मनी पण ए रीतेज नजना जाणवी. जे नणी चोथा गुणठा णाथी लइने अपूर्वकरणना ब्रह्म पाया लगे जिननामनी बंधनूमि ठे त्यां वि शुद्धाध्यवसाये जिननाम बांधि पठी संक्लेशे मिथ्यात्वे जाय तेथी मिथ्यात्वे पण एनी सत्ता होय पण (बितिगुणेविणातिष्ठं के०) बीजे अने त्रीजे गुणठाणे ती र्थकरनामकर्मनी सत्तावालो न आवे तेथी ए बे गुणठाणा विना शेष बार गुणठा णे जिननामनी सत्ता पामीये उपरले गुणठाणे पण चढतां जिननामनी सत्ता होय अने जे जीव जिननाम बांध्या विना सर्व गुणठाणां स्पर्श तेनी अपेक्षायें सर्व गुणठाणे जिननामनी सत्ता न होय एटले बीजे, त्रीजे गुणठाणे जिननामनी सत्ता नज होय अने बीजा गुणठाणांने विषे नजना जाणवी.

(नोजयसंतेमिद्धो के०) तथा आहारकशरीरादिक सात प्रकृतिनी सत्ता ठतां अने जिननामनी सत्ता ठतां ए उजयनी सत्ता साथें ठतां तेने मिथ्यात्व गुणठाणं न होय जे नणी नामकर्मनुं एकशो त्रणुं तथा त्र्याणुं प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक मिथ्यात्व गुणठाणे न पामियें, माटे आहारक सप्तक तथा जिननाम, ए बेदुमांहेथी एकनी सत्ता ठतां मिथ्यात्व होय तेमध्ये (अंतमुहुत्तंनवेतिष्ठे के०) अंतर मुहुत्तं लगे जिननामनी सत्ता मिथ्यात्वे लहीये पण अधिक न पामीये जे नणी कोइएक सम्यक्दृष्टि जीवे पूर्वे नरकायु बांध्युं ठे अने ते जीव आयु बांध्या पठी ह्यायोपश मिक सम्यक्त्व पामीने तथाविध अध्यवसाये जिननाम बांधे, ते मरण समयें सम्यक्त्व वमतो नरकें जाय त्यां वली अंतर्मुहुत्तं पठी वली सम्यक्त्व पामे तो जिन नामकर्मनी सत्ता होय, अने जो नरकें गया पठी पतित परिणामें रहे तो अंतर्मुहुत्तं पठी जिननामकर्म उवेले तेथी जिननामकर्मनी सत्ता टली जाय. एटले एक ध्रुव सत्ता अने बीजुं अध्रुवसत्ता रूप एम पांचसुं अने बहुं ए बे द्वार साथें कह्या ॥ १३ ॥

हवे घातिनी प्रकृति रूप सातसुं द्वार तथा अघातिनी प्रकृति रूप आवसुं द्वार, ए वे द्वार साथें कहे ठे. हवे सर्वघातिनी प्रकृति तथा अघातिनी प्रकृति कहे ठे.

॥ अथ सर्वे घातिन्यः प्रकृतयः ॥

केवल जुअला वरणा, पणनिहा बारसाइम कसाया ॥

मिचंति सब घाई, चउ नाण ति दंसणा वरणा ॥ १३ ॥

अर्थ- तिहां जे कर्मप्रकृति, आत्माना गुणने आवरे, ते घातिनीप्रकृति जा एवी. तेमां सर्व घातिनी प्रकृतिना रस स्पर्शक तो, त्रामपत्रनी पेरें निश्चिद्ध, तथा स्फटिक ग्रहनी पेरें निर्मल, झाहानी पेरें सूक्ष्म सार प्रदेशें बहुजरस होय, तेशी ते सर्वघातिनी प्रकृति प्रदेशें अल्प होय तो पण वीर्यें अधिक जाएवी. हवे ते नां नाम कहे ठे. (केवलज्जुअलावरणा के०) केवलज्ञानावरणीय अने केवलदर्शनावरणीय, ए बे प्रकृति, पोतानो आचार जे ज्ञान, दर्शन, गुण, तेने सर्वांशें आवरे, जेम सूर्यप्रजा, मेयें करी सर्व आवरी कहेवाय तथापि कांइ एक प्रजानो अंश आवखा विनानो पण रहे ठे तेशी करी रात्री दिवसनो विजाग जणाय ठे तेम जीवनों पण ज्ञानादिक गुण सर्व घातिनी प्रकृतियें करी सर्व आवखो ठे तो पण जेणो करी जड चैतन्यनो विजाग होय, एटलो चैतन्यांश उघाडो रह्योठे (पणनिहा के०) तेणो पांच निडायें करी पण जे केवलदर्शनावरणीयें अण आवखो एवो जे दर्शनांश ते पण सर्वांशें आवरियें, ए निडापंचक पण सर्व इंडियना अवबोधने आवरे माटें सर्वघाति कहीयें. अहींआं पण मेघदृष्टांत जाववो. जेमाटें जो निडा मांहे पण शब्दादिक सांजली जागे ठे तथापि ए निडा पण सर्वघातिनी जाणवी, तथा केवलज्ञान अने केवल दर्शनना आवरण पण सर्वथा टाव्या विना केवल ज्ञान उपजे नहीं माटें सर्व घाति कहीयें. एटले एसात सर्व घातिनी प्रकृति कही.

(बारसाइमकसाया के०) एमज आदिना बार कपाय जाणवा. तेमां अनंता नुबंधीया क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए चार तो सम्यक्त्वगुणने सर्वथा आवरे ठे तेशी सर्वघाती कह्या अने अप्रत्याख्यानावरण क्रोधादिक चार पण देश विरतिगुणने सर्वथा आवरे ठे. तथा प्रत्याख्यानावरण क्रोधादिक चार सर्व विरति गुणने सर्वथा आवरे ठे माटें सर्वघाति जाणवा. अहींआं पण मेघनो दृष्टांत जलाव्यो तेशी मिथ्यात्वाने पण कोइ एक तपश्चर्यादिकनी प्रतिपत्ति जिनवचनथी अ विरुद्ध होय तथा अविरतिने पण मांसाहारादिकनी निवृत्ति होय तथा देशविरतिने पण जावचारित्र होय, एम ए बार कपायनी प्रकृति पण सर्वघातिनी ठे.

(मिहंतिसवघाई के०) मिथ्यात्वमोहनीय पण श्रीजिनजापित जीवाजीवादिक अनंतधर्मात्मक तत्वभ्रक्षण रूप सम्यक्त्व गुणने सर्वथी हणो, ठे ते जणी ए पण सर्वघाति प्रकृति कहीयें. जो पण एना केटला एक बेगणीआ तथा एक गणीआ रसस्पर्शक देशघातीआ ठे, तो पण अहींआं शुजाद्युन परिणामें वं

धनी अपेक्षायें नथी लीधा. एटजे एक केवलज्ञानावरणीय, एक केवलदर्शनावरणीय, पांच निष्ठा, बार कषाय अने एक मिथ्यात्वमोहनीय. एवं वीश प्रकृति सर्वघातिनी थई.

हवे पञ्चीश प्रकृति देशघाति कहे ठे. तिहां देशघातिनी प्रकृतिना रसस्पर्शक स्थूलबिड् कडानी परें, मध्यमबिड् कांबलानी परें अने सूक्ष्मबिड् पटवस्त्रनी परें, स्थूल प्रदेश नीरस, असार, बहुप्रदेश अल्पवीर्य, (चउनाणतिदंसणावरणा के०) एक मतिज्ञानावरणीय; बीछुं श्रुतज्ञानावरणीय, त्रीछुं अवधिज्ञानावरणीय. चोथुं मनःपर्यवज्ञानावरणीय, ए चार ज्ञानावरणीयनी प्रकृति तथा चक्रु, अचक्रु अने अवधि, ए त्रण दर्शनावरणीयनी प्रकृति, एवं सात प्रकृति देशघातिनी जाणवी. जे नणी केवलज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण ए बे प्रकृति यें अण आवसुं एतुं जे ज्ञान अने दर्शननो अनंतमो अंश तेने देशथी हणो, ते नणी देशघातिनी कहियें. जो पण अवधिज्ञानावरणीय अवधिदर्शनावरणीय अने मनःपर्यवज्ञानावरणीयना केटला एक रस स्पर्शक सर्वघातिथा पण ठे जेणे करी पोताना अवधिज्ञानादिकनो अंश मात्र नथी देखातो तो पण एनो रसोदय कृयोपशम अवरोधि ठे तेथी देशघातिनी कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १३ ॥

संजलणनोकसाया, विगंधं इअ देस घाइअ (अथ घातिन्यः प्रकृतयः) अघाइ ॥ पत्तेअ तणुघाऊ, तस वीसा गोअ डुग वसा ॥ १४ ॥

अर्थ—(संजलण के०) संज्वलनाक्रोधादिक चार कषाय देशघातिया ठे जे नणी ए सर्व विरतिरूप जीवना गुणनें देशथकी हणो ठे. केम के एना उदयथी साधुने सातिचार व्रत थाय. बीजा कषायना उदयथी भूलजंगें अतिचार होय माटें एने देशघाती कही ठे. (नोकसाया के०) हास्यषट्क तथा त्रण वेद, एनव नोकषायमोहनीय प्रकृति पण देशघातिनी ठे जे नणी ए प्रकृति चारित्रने विषे पण अतिचार मात्र उपजावे, पण एकली अनाचार जनक न होय, माटें देश घातिनी कही.

(विगंधंअदेसघाइअ के०) अंतरायकर्मनी पांच प्रकृति ए पण देशघातिनी होय जे नणी पुजलड्व्यनो अनंतमो जाग दान, जान जोगादिकने विषे होय ठे. जे नणी ग्रहण धारण योग्य जे पुजल ठे ते पुजल, ड्व्यने अनंतमे जागे ठे तेमां पण सर्वहुं दान, जान, जोग, अने उपजोगादिक, करी न शके, केम के अ

कर्म नोकर्मादिक तथा आहारादिकर्तुं दान, लाज जोगादिक सर्व जीवने होय ते थी देशघातिनी कही. सर्व जीवने एनो कृत्योपशम होयज. तथा वीर्यंतरायनो पण जो सर्वघाती रस होय तो जीवतुं सर्व वीर्य आवरे थके जीव काष्ठनी पेरें निश्चेष्टावंत आय, तेथी आहारादिकने ग्रही परिणमावी पण न शके ? ते जणी ए प्रकृति पण देशघातिनी जाणवी, तेथी सर्व जीवने वीर्यंतराय कृत्योपशम तारत म्यें, वीर्यतारतम्य होयज ठे. केवली जगवानने वीर्यंतरायनो कृत्य होय तेथी तेने अनंत वीर्य होय. एम पञ्चीश प्रकृति देशघातिनी कही.

अने जो उदयापेक्षायें लेखवीयें, तो मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्व मोहनीय, ए बे प्रकृति पण देशघातिनी गणतां सत्तावीश प्रकृति आय. तेनी साथें पूर्वोक्त सर्वघातिनी वीश प्रकृति मेलवीयें तेवारें सुढतालीश प्रकृति घातिनी आय. तेथी शेष र ही जे पञ्चोत्तेर प्रकृति ते (अघाड के०) अघातिनी कही ठे. जे प्रकृति जीवना ज्ञानादिक गुणने तो कांड पण हणो नहीं तथापि जेम चोरनी संगत करतां सा धु पण चोर कहेवाय, तेम ए प्रकृति पण घातिनी प्रकृति साथें वेदतां घातिनी केहेवाय, ते अघातीनी प्रकृतिनां नाम कहे ठे.

(पचेअतणुघ्न के०) एक पराघात, बीजी उद्वास, त्रीजी आतप, चौथी उ द्योत, पांचमी अशुरुलघु. बछी जिननाम, सातमी निर्माण, अने आठमी उपघा त, ए आठ प्रत्येक प्रकृति अघातिनी जाणवी. ए प्रकृति कोड आत्माना गुणने न हणो, तनुअष्टक एटले “तणुवंगागिड” ए गाथाने अनुक्रमें एक औदारिक, बीछुं वैक्रिय, त्रीछुं आहारक, ए त्रण शरीर तथा ए त्रण शरीरना त्रण उपांग तथा एनी सा थें कार्मण अने तैजस मेलवीयें, तेवारें तनुअष्टक आय तथा ठ संस्थान, ठ संघय ण, जाति पांच, गति चार, स्वगतिदिक, आनुपूर्वी चार, एवं पांत्रीश प्रकृति लेवी तथा (आठ के०) आयुनी चार प्रकृति, एवं उंगणचालीश अने आठ पूर्वे प्र त्येक प्रकृति कही ठे. एवं सुढतालीश प्रकृति अघातिनी थड.

तथा (तसवीसा के०) त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुज, शुजग, सु स्वर, आदेय, यशःकीर्त्ति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अथिर, अशुज, ड र्नेग, डुःस्वर, अनादेय, अयश, ए वीश प्रकृतिने त्रसविंशति प्रकृति कहीयें. (गोअ डुग के०) गोत्रदिक अने वेदनीयदिक, ए उजय दिकनी चार प्रकृति तथा (वसुा के०) वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शी, एवं सर्व मली पञ्चोत्तेर प्रकृति, अघातिनी कही एटले घातिअघाति द्वार संपूर्ण थयुं ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १४ ॥

हवे एकर्म प्रकृतिनुं घाति, अघातिपणुं रसनी अपेक्षार्थे होय, ते रस, मिष्ट तथा कटुकना चेदं करी वे प्रकारें ठे. तिहां जे प्रकृतिनो रस मीतो आनंददायक होय ते पुण्यप्रकृति जाणवी, अने जे प्रकृतिनुं रस मज्जनी परें नीबनी परें कडुनुं दुःख दायक होय, ते पापप्रकृति जाणवी. त्यां प्रथम पुण्यप्रकृति, बेंतालीश कहे ठे.

॥ अथ पुण्यप्रकृतयः ॥

सुर नर तिगुञ्च सायं, तस दस तणु वंग वइर चउरंसं ॥

परघासग तिरि आऊ, वसु चउ पणिदि सुजखगइ ॥ १५ ॥

अर्थ—ते मध्ये प्रथम (सुरनरतिगुञ्च के०) सुरत्रिक एटले देवगति, देवानुपूर्वी, अने देवायु, ए त्रण प्रकृति शुचनावें बंधाय, ते जणी तथा एमां बहुल घणीज शाता होय, ते जणी पुण्यप्रकृति कहीये अने नर एटले मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी अने मनुष्यायु, ए मनुष्यत्रिक ए त्रण चेद पण शुचनावें करी बंधाय. तथा उच्चैर्गोत्र पण पूज्यजणी पूजनीय योग्यता जणी, ए पण पुण्यप्रकृति जाणवी. तथा (सायं के०) शातावेदनीय पण शुचअध्यवसाये करी बंधाय. अनुकूल पणे वेदे ते माटें ए पुण्यप्रकृति जाणवी. तथा (तसदस के०) त्रसदशक ए नामकर्मनी पुण्यप्रकृति शुचपरिणामें बंधाय ठे. (तणुवंग के०) तणु एटले औदारिकादिक पांच शरीर तथा औदारिक, वैक्रिय अने आहारक, ए त्रण उपांग ए आठ प्रकृति पण शुच जाणवी. (वइर के०) ठ संघयणमध्ये एक वज्ररूपजनाराच संघयण ए पण शुच जाणवुं. (चउरंसं के०) ठ संस्थानमध्ये समचतुरस्रसंस्थान ए पण शुच ठे. (परघासग के०) पराघात, उद्धास, आतप, उद्योत, अशुरुलघु, जिननाम अने निर्माण, ए पराघातसप्तक पण शुच जाणवुं. (तिरिआऊ के०) तिर्यंचनुं आउ, ते पण पुण्यप्रकृति ठे. जे जणी तिर्यंच पण जीवुं वांढे ठे. तथा (वसुचउ के०) वर्षमध्ये श्वेत, पीत, अने रक्त तथा गंधमध्ये शुचगंध, रसमध्ये कषायल, आम्ल अने मिष्ट, तथा स्पर्शमध्ये लघु, कोमल, चीकट, अने उष्ण. एरीतें वर्षादिचतुष्क शुच जेवुं. (पणिदि के०) जाति पांच मध्ये एक पांचेंद्रिय जाति, शुच परिणामें बंधाय, ते पुण्यप्रकृति जाणवी. अने (सुजखगइ के०) विहायोगतिमध्ये गज तथा हंसनी परें जे चाले, ते शुचविहायोगति जाणवी. ए पण शुच परिणामे बंधाय माटें पुण्यप्रकृति जाणवी. ए बेंतालीश पुण्यप्रकृति जाणवी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १५ ॥

॥ अथ पापप्रकृतयः ॥ हवे व्याशी पापप्रकृति कहे ठे.

बायाल पुस पगइ, अपढम संताण खगइ संघयणा ॥

तिरिडुग असाय नीठ, वघाय इग विगल निरय तिगं ॥१६॥

अर्थ—(बायाजपुसपगइ के०) बेंतालीश पुण्यप्रकृति कही. जे जणी बंधयो ग्यस्थानकमध्ये ए अचुनपरिणामें बंधाय तथा संक्लेश परिणामें मंदरस बंधाय अने विद्युदपरिणामें तीव्ररस बंधाय ते जणी ए अचुन उत्तमपुण्यप्रकृति जाणवी. हवे पुण्य थकी विरोधी पापप्रकृति व्याशी कहे ठे. ए पाप प्रकृतिनो संक्लेश परिणामें तीव्ररस बंधाय अने विद्युदपरिणामें मंदरस बंधाय, ते जणी पापप्रकृति कहीयें.

(अपढमसंताणखगइसंघयणा के०) प्रथम समचतुरस्रसंस्थान विना शेष पांच संस्थान तथा प्रथम अचुनविहायोगति विना बीजी अचुनविहायोगति, अहीं आं लेवी, तथा प्रथमसंघयण विना शेष पांच संघयण एमां लेवां. ए अगीअार प्रकृति, प्रथमनां बे गुणताणां लगे बंधाय. त्यां संक्लेश परिणामें उत्कृष्ट रस बंधाय अने विद्युदपरिणामें मंदरस बंधाय, ते जणी ए पापप्रकृति कहीयें.

(तिरिडुग के०) तिर्थचनी गति, तथा तिर्थचानुपूर्वी, ए बे प्रकृति अचुन ठे. जे जणी ए गतिमध्ये अनंतो काल पण जीव रहे, ए अत्यंतमोहोदय थकी बंधाय, माटें पापप्रकृति जाणवी तथा (असाय के०) अशातावेदनीय पण उदय आवे, तेवारें जीवने प्रतिकूलपणुं देखाहे, ते जणी पापप्रकृति कहीयें तथा (नीठवघाय के०) नीचैर्गोत्रने उदयें पण नीच कुलप्रत्ये पामवे करी जीव हेलनीय होय तेथी ए पण अचुनपापप्रकृति जाणवी, उपघातनामनें उदयें पण पडजीनी, चोरदांतादिकें करी दुःख पामे, तेथी अचुन जाणवी. (इगविगल के०) एकेंडियजाति तथा विकल ए टले जेने पूर्ण पंचेंडिय नहीं होय, ते विकलेंडिय, बेंडिय, तेंडिय अने चौरिंडिय ने कहीयें. ए जातिनाम पण मिथ्यात्वे संक्लेश बंधाय, ते माटें अचुन जाणवी. (निरयतिगं के०) नरकगति, नरकानुपूर्वी अने नरकायु, ए त्रण प्रकृति पण मिथ्यात्व विना न बंधाय, ते जणी अचुन पापप्रकृति जाणवी. ए त्रेवीश पापप्रकृति कही ॥१६॥

धावर दस वसु चउ, क घाय पणयाल सहिअ वासीइ ॥

पाव पयडिति दोसुवि, वसा इगहा सुहा असुहा ॥ १७ ॥

अर्थ—(धावरदस के०) स्थावरदशकने पण अचुनपरिणामें वर्ततो थको

जीव पामे, (वस्त्रचञ्चक के०) वर्णमध्यें नील अने कृष्ण तथा गंधमध्यें डुरनिर्गंध तथा रसमध्यें तीखो अने कडवो तथा स्पर्शमध्यें गुरु, खर, जूडू अने शीत, ए चारे अश्चुज लेवा. एने संक्लेषों बांधे, तेजणी पापप्रकृति कहीयें. एवं साडत्रीश थड.

तथा (घायपणयाल के०) घाती पीस्तालीश प्रकृति एटले ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव अने मोहनीयनी ढवीश तथा अंतरायनी पांच, ए पीस्तालीश घातिनी प्रकृति अत्माना शुद्ध गुणने हणो, प्रतिकूलपणुं करे. तेथी ए पीस्तालीस घातिनी पापप्रकृति तेने आगली साडत्रीश प्रकृतियें (सहिअ के०) सहित करीयें, तेवारें (बासीड के०) व्याशी (पावपयडिति के०) पापप्रकृति थाय. एना विपाक जीव प्रतिकूलपणे वेदे, संक्लेशानी वृद्धियें एना रसनी वृद्धि होय, ते जणी एने पापप्रकृति कहीयें. ए बंधनी अपेक्षायें लेवी. अन्यथा तो सम्यक्त्व मोहनीय तथा मिश्रमोहनीय पण लेवाय, परंतु ते एटला माटें न लीधी के, तेनो बंध नथी. अर्हीआं शिष्य प्रश्न करे ठे के, हे जगवन् ! आठ कर्मनी मली बंधापेक्षायें, एकशो ने वीश प्रकृति कही ठे. अने अर्हीआं तो पुण्यप्रकृति वेंतालीश तथा पापप्रकृति व्याशी, ए बेहु मैलवतां एकशो ने चोवीश प्रकृति थाय ठे, ते केम घटे ? अर्हीआं गुरु उत्तर कहे ठे के, हे शिष्य ! एकशो ने विशोत्तर बंध प्रकृतिमध्यें सामान्य पणें वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श, ए चार प्रकृति लेखवी ठे अने अर्हीआं तो मूल चार प्रकृतिना शुजाश्चुज विजाग करतां श्वेतादिक शुज अगीआर पुण्यप्रकृतिमांहे गणी ठे. अने नीलादिक अश्चुज नव पापप्रकृतिमांहे गणी ठे. एम (दोसुवि के०) बन्ने स्थानकें (वस्त्राडगहासुहाअसुहा के०) वर्णदिक चार प्रकृतिने विशेषें शुज अने अश्चुज पणो जूदी जूदी ग्रहण करी ठे तेमाटें एकशो चोवीश थाय ठे अने सामान्यें शुजाश्चुजने एक ठामे गणतां एकशो ने वीश बंध प्रकृति थाय. अर्हीआं कांइ दोष नथी. एम पुण्यप्रकृति तथा पापप्रकृतिनां द्वार कहां ॥ इति पुण्यपापद्वार ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १४ ॥

एम पुण्य अने पापने परिणामें करी बंधनुं विरुद्ध पणुं होय तेमाटें पुण्यप्रकृति तथा पापप्रकृति कहिने हवे बंधें तथा उदयें विरोधिनी प्रकृति कहे ठे. तेमध्यें पण सूची कटाद न्यायें अल्प संख्यांक प्रकृति जणी प्रथम अपरावर्त्तमान प्रकृतिनुं द्वार कहे ठे.

॥ अथाऽपरावर्त्तमानाः प्रकृतयः ॥ हवे अपरावर्त्तमान प्रकृतियो कहे ठे.

नाम ध्रुव बंधि नवगं, दंसण पण नाण विग्घ परघायं ॥

जयं कुब्ब मिष्ठ सासं, जिणगुण तीसा अपरियत्ता ॥ १५ ॥

अर्थ—एक वर्षे, बीजो गंध, त्रीजो रस, चोथो स्पर्श, पांचमो तैजस, षष्ठो कार्मण, सातमो निर्माण, आठमो उपघात, नवमो अगुरुलघु, ए (नामध्रुवबंधिनव गं के०) नाम ध्रुवबंधिनुं नवक, ए नामध्रुवबंधिनी नव प्रकृति सर्वथा बंधाय. एना बंधने स्थानकें कोइ शुजाद्युज परिणामविशेषें बीजी प्रकृति बंधाय न हीं. केवल एना रसबंधमांहे जावनी मंदता करे, ते जणी अपरावर्त्तमान कही.

(दंसणपणनाणविग्घपरघायं के०) चक्रुदर्शनादिक चार दर्शनावरणीय तथा मतिज्ञानादिक पांच ज्ञानावरणीय ए नव प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी जणी अपरावर्त्तमान जाणवी. तथा दानांतरायादिक पांच अंतरायनी प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी जाणवी तथा पराघात नामकर्म पण, ध्रुवबंधी ठे. ए अन्य प्रकृतिनो बंध तथा उदय रुंध्या विना पोतानो बंधोदय दीपावे. एनी विजागनी प्रकृति नथी तेजणी अविरोधिनी ठे.

(जयकुलमिह्रसासं के०) जयमोहनीय तथा ज्युगुप्तमोहनीय पण पूर्वली युक्तियें अपरावर्त्तमान प्रकृति ठे तथा मिथ्यात्वमोहनीय पण ध्रुवबंधि तथा ध्रुवो दयीपणे जणी बंध उदयें अपरावर्त्तमान होय. अने उह्वासनामकर्म पण बंधें तथा उदयें कोइ प्रकृति साथें विरोधी नथी, तेथी अपरावर्त्तमान. (जिणगुणतीसाअपरिचिता के०) तीर्थकरनामकर्म पण तेमज बंधें तथा उदयें अविरोधिनी ठे ते जणी अपरावर्त्तमान कहीयें. ए सर्व, उगणत्रीश प्रकृति बंधें तथा उदयें बीजी प्रकृति साथें विरोधिनी नथी, तेथी अपरावर्त्तमान प्रकृति कहीयें. अहींआं कोइ पूढे जे सम्यक्त्वमोहनीय तथा मिश्रमोहनीयने उदयें मिथ्यात्व मोहनीयनो उदय न होय, तेथी ए तो उदयविरोधिनी ठे तो अपरावर्त्तमानमांहे केम गणी? अहीं आं उत्तर कहे ठे जे, मिथ्यात्वमोहनीयनी बंधोदय जूमि प्रथम गुणताणुं ठे. तिहां सम्यक्त्वमोहनीय अने मिश्रमोहनीय नथी जो ए मिथ्यात्वनी पोतानी जूमिमांहे एनो बंध उदय रुंधीने पोतानो बंध उदय देखाडत तो विरोधिनी कहेवात, परंतु तेम विरोधिनी नथी माटें अपरावर्त्तमान जाणवी. ए प्रकृतिनो बंध उदय, अनेरी प्रकृतिनो बंध, उदय निवारे नहीं, माटें अपरावर्त्तमान जाणवी ॥ इति स० ॥ १० ॥ हवे एहथी विपरीत जणी परावर्त्तमान प्रकृति कहे ठे.

॥ अथ परावर्त्तमानाः प्रकृतयोनिरूप्यन्ते ॥

तणु अठ वेअ ज्जुअंल, कसाय उषोअ गोय ज्जगनिहा ॥

तस बीसाउ परिता, खित्तविवागा ऽणुपुवीउ ॥ ११ ॥

अर्थ- जे एकेकी प्रत्येक प्रत्येक प्रकृतिनो बंध तथा उदय कोइएक समयें होय, जेम औदारिक, वैक्रिय अने आहारक ए त्रण शरीरमध्ये एकजनोज बंध एक वारें होय. एम उपांग, संघयण, संस्थान, जाति, गति, खगति अने आनुपूर्वी मध्ये पण जावतुं, तेथी एने परावर्त्तमान प्रकृति कहीयें, ते कहे ठे. (तणुअठ के०) तनुप्रसु ख आठनी, उचर प्रकृति तैत्रीश जाणवी. तेनां नाम कहे ठे. तनुत्रिक, उपांगत्रिक, संस्थानठक, संघयणठक, जातिपांच, गतिचार, खगतिदिक, आनुपूर्वी चार, ए तैत्रीश प्रकृति अइ. ते आठ पिंनप्रकृतिमध्ये ठे (वेद्य के०). वेदत्रिक, ए पण बंध तथा उदयें विरोधी ठे ते जणी परावर्त्तमान कहीयें. तथा (डुजुअल के०) हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए वे युगलमाहे पण एक समयें एक युगलनोज बंध तथा उदय एक जीवने होय, तेथी ए पण परावर्त्तमान प्रकृति कहीयें.

(कसाय के०) क्रोध, मान, माया अने लोच, ए चार कषायमध्ये एक जीवने एक समयें एकेकनो उदय होय. एटले जेवारें क्रोधनो उदय होय, तेवारें मानादिक त्रणनो उदय न होय, एम ए कषायनी शोल प्रकृति पण उदयविरोधिनी ठे. ते जणी परावर्त्तमान जाणवी. (उक्कोअ के०) उद्योतनामकर्म पण आतपनामकर्म साथें विरोधी ठे. जेने जे समयें आतपनामकर्मनो बंध तथा उदय होय, तेने उद्योतनामकर्मनो बंध तथा उदय ते समयें न होय, तेथी परावर्त्तमान प्रकृति कहीयें. (गोयडुग के०) गोत्रदिक तथा वेदनीयदिक, ए वे दिक पण बंधोदय विरोधी ठे. शाताने बंधें तथा उदयें अशातानो बंध तथा उदय न होय. नीचैर्गोत्रने बंधें तथा उदयें उच्चैर्गोत्रनो बंध तथा उदय न होय, तेथी परावर्त्तमान कहीयें. (निदा के०) पांच निडा पण उदय विरोधिनी ठे. जे जणी एक निदानें उदयें शेष चार निदानो उदय न होय माटें परावर्त्तमान कहीयें.

(तसवीसाठ के०) त्रसादिक दश प्रकृति तेनी साथें प्रत्येक अनुक्रमें स्थावरदिक दश प्रकृतिबंधें तथा उदयें विरोधिनी ठे केमके त्रसने बंधें तथा उदयें स्थावरनो बंध तथा उदय न होय, तेमज वादर साथें सूक्ष्मनुं विरोधिपणुं ठे अने पर्याप्त साथें अपर्याप्तनुं विरोधिपणुं ठे. एमज प्रत्येक साथें साधारणनुं विरोधिपणुं ठे. एम सर्वत्र मेलवतुं. माटें ए वीश प्रकृति पण परावर्त्तमान जाणवी तथा आशुःकर्मनी चार प्रकृति जे ठे, ते चारे बंधें तथा उदयें विरोधी ठे, जे जणी एक समयें एक आशुनो बंध तथा उदय होय तेथी एने पण (परिता के०) परावर्त्तमान कहीयें. ए रीतें तनुअष्टकनी तैत्रीश, वेद त्रण, वे युगल, शोल कषा

य, उद्योत, आतप, गोत्र वे, वेदनीय वे, पांच निष्ठा, त्रस विंशति अने चार आधु, एवं एकाणु प्रकृतिमां कोइ बंधें कोइ उदयें. कोइ बिहुं तामे परावर्ति एटले फेरस्तार होय ते जणी परावर्तमान एवुं नाम विरोधिनी पणें कहीयें. इति परावर्तमानाऽपरावर्तमान द्वारद्वयं संपूर्ण ॥ ए रीतें बार द्वार संपूर्ण वखाण्यां.

हवे तेरमुं द्वार विवरे ठे. त्यां जे विपाकना रसोदय तेनां असाधारण कारण अथवा स्थानक, ते चार प्रकारें ठे. एक क्षेत्र, बीजो जीव, त्रीजो नव अने चो थो पुजल, तेमध्ये प्रथम क्षेत्रविपाकीनी प्रकृति कहे ठे. तिहां क्षेत्र एटले आकाश प्रदेश विशेष तेनी मुख्यता पामीने जेनो उदय होय, जो पण सर्वप्रकृति नो उदय, इव्य, क्षेत्र, काल अने जावनी सापेक्षतायें होय ठे. पण अर्हीआं एनीज मुख्यता लेवी. जे जणी जीवने द्विवक्र त्रिवक्र श्रेणीयें परजव जातां आनुपूर्वीने उदयें करी, जेम बलदने नाथ साही फेरवीयें, तेम आनुपूर्वी उदय उत्पत्ति सन्मुख करे. ते जणी (खिन्नविवागाऽणुपुढीउं के०) क्षेत्रविपाकिनी प्रकृति चारे आनुपूर्वीने कहीयें. जो पण वक्रगति विना पण संक्रमण करणें देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति अने नरकगति, ए चारमध्ये पोत पोतानी आनुपूर्वी संक्रमावी उदय आणे ठे पण अर्हीआं केवल आनुपूर्वीना उदयनी मुख्यतानी अपेक्षायें वक्रगतिज लीधी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १९ ॥

हवे सर्व प्रकृति पोतानो विपाक जीवने देखाडे ठे. तो पण केटली एक क्षेत्र मुख्यतायें विपाक देखाडे, ते क्षेत्रविपाकिनी, नवनी मुख्यतायें विपाक देखाडे, ते नवविपाकिनी, जे वाह्य शरीर पुजलने विषे पोतानो विपाक देखाडे, ते पुजलविपाकीनी जाणवी. ए त्रण निरपेक्ष जे आत्माने विषे साक्षात् विपाक देखाडे, ते जीवविपाकीनी प्रकृति जाणवी. ते जीवविपाकिनी प्रकृति, हवे कहे ठे.

घण घाइ झुगोअ जिणा, तसिअर तिग सुजग झुजग चनुसासं ॥

जाइतिग जिअ विवागा, आऊ चनरो नवविवागा ॥ २० ॥

अर्थ—(घण के०) मेघ ते जेम सूर्यनी प्रज्ञानो (घाइ के०) घात करे, आवरे, तेम जे आत्मानां ज्ञान, दर्शन, अज्ञान, चारित्र, दानादिक लब्धि, इत्यादिक ने आवरे, ते जणी घनघातिनी प्रकृति कहीयें. तेनां नाम कहे ठे. ज्ञानावरणी घनी पांच, दर्शनावरणी घनी नव, मोहनीयनी अष्टावीश अने अंतरायनी पांच. ए सुदतालीश प्रकृति, शरीर पुजलादिक निरपेक्ष विपाक जीवने देखाडे. माटे ए

प्रकृति जीवविपाकिनी कहीयें. (डुगोअ के०) एक गोत्रदिक अने बीजुं वेदनी दिक, ए बे गुगल पण पोतानो विपाक जीवने विषे दीपावे, एथी यच्च, नीच तथा सुखी दुःखी, जीव कहेवाय, माटें जीवविपाकिनी कहीयें तथा (जिणा के०) तीर्थीकर नाम कर्मने उदयें एक परमेश्वर्य पूजातिशय, बीजो वचनातिशय, त्रीजो ज्ञानातिशय अने चोथो अपायापगमातिशय, ए चार अतिशय जीवने होय, जे थकी जीव, तीर्थीकर परमात्मा कहेवाय. ते जणी ए प्रकृति पण जीवविपाकीनी जाणवी.

(तसिअरतिग के०) एक त्रस, बीजो बादर अने त्रीजो पर्याप्त, ए त्रसत्रिक अने एथी इतर स्थावर, सूक्ष्म अने अपर्याप्त ए स्थावरत्रिक एने उदयें जीव, त्रस, बादर अने पर्याप्त तथा स्थावर सूक्ष्म अने अपर्याप्त, पण कहेवाय. एम ए ना उदयथी जीवनो पर्याप्त फरे, ते जणी एने जीवविपाकिनी प्रकृति कहीयें.

(सुनग के०) एक सौजाग्य, बीजुं सुस्वर, त्रीजुं आदेय, अने चोथुं यशःकीर्ति; ए चार प्रकृतिने उदयें जीव सौजागी, सुस्वरवान् आदेय वचनवालो तथा यशस्वी कहेवाय. ते जणी ए प्रकृति पण जीवविपाकीनी ठे अने (डुनगचउसासं के०) एक दौर्जाग्य, बीजुं दुःस्वर. त्रीजुं अनादेयवचन, चोथुं अयशःकीर्ति, एने उदयें जीव दुर्जागी, दुःस्वरवान्, अनादेयवचन वालो तथा यशोहीन मागो कहेवाय तेजणी ए प्रकृति पण जीवविपाकीनी ठे. अने श्वासोह्वासनामकर्म पण जीवविपाकीनी प्रकृतिठे जो पण ए श्वासोह्वासपुञ्जरूप ठे, तोपण एनी लब्धि जीवने होय. माटें जीवविपाकी कहेवाय. एवं शडशाठ प्रकृति थइ.

(जाइतिग के०) एकेंडियादिक जाति पांच, देवादिकनी गति चार, अने खगति बे, ए अगीअर प्रकृतिमां जाति नामकर्मने उदयें जीव, एकेंडिय, वेंडिय, तेंडिय, चौरिंडिय अने पंचेंडिय कहेवाय, गतिनामकर्मना उदयथी जीव देवता, मनुष्य, तिर्यच अने नारकी कहेवाय. खगतिनामकर्मना उदयथी जीवनी सुचाल. कुचाल कहेवाय. ते जणी ए जीवविपाकीनी प्रकृति जाणवी. एवं अछोत्तर प्रकृति (जी अविवागा के०) जीवविपाकीनी कही. जो पण सर्वे प्रकृति निश्चें नयथी जीवविपाकीनीज ठे जेजणी अजीव घटादिक पदार्थने विषे कोइ प्रकृति पोतानी शक्ति देखाडती नथी तोपण व्यवहारनयें चिहुं प्रकारें विपाक विचारतां ए अछोत्तर प्रकृति जीव विपाकीनी कही.

हवे (आठचउरोजवविवागा के०) देवतादिकनो जव पामीने ते जवना प्रथम समयथी मांझीने चरम समय जगें निरंतर पणो जे कर्म प्रकृति जीवने विषे

स्वशक्ति देखावे, आत्माने हेडनी पेरें रोक्री राख्ते, परजवें जावा न दीये अने जेवा रें ते प्रकृति खपावे, तेवारें परजवजुं आयु उदय आवे थके पर जवें जीव जाय, एटले बीजी गतिमां जाय, तेमाटें ए आयुं ते जवने विषेज उदय आवेढे ते कारणे जवनी मुख्यतायें करी देवायु, मनुष्यायु, तिर्थचायु अने नरकायु, ए चार प्रकृति, जवविपाकीनी कहेवाय. जो पण चारे गति पण नामकर्म पणो पोत पोता ने जवें मुख्यवृत्तियें उदय आवेज ठे, तथापि ए प्रकृति जवविपाकीनी कहेवाय. कारण के चरमशरीरी जीव पूर्वब-६ शेष त्रण गतिना वलीकने मनुष्यगतिना ए क्र आयुमां संक्रमावी उदयावलीमां आणी वेदीने खपावें जे जणी प्रदेशथी कर्म वेद्या विना ठूटे नहीं, अने आयुष्य संक्रमाव्या विना मोहें न जाय तेथी आयुं संक्रमाव्या पढी तेने कोइ प्रकारें परजवायुनो उदय न होय, स्वजवनोज उदय होय, तेथी ए चार प्रकृति जवविपाकीनी कहीयें ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५० ॥

हवे पुजलविपाकीनी प्रकृति कहे ठे. जे पोतानी शक्ति शरीरादिक पुजलने विषे दे खाडे ए प्रकृतिउनो करेजो गुण तथा अवगुण, अनुग्रह, उपघात. शरीरादिक नोकर्मपुजलने विषे होय, तेथी ए पुजलविपाकीनी प्रकृति कहीयें. जो पण अहीं कं टकादिक अष्टुज पुजल पामी अशाता वेदनीयज पोतानो विपाक देखाडे ठे. तथा फूल. चंदन. कर्पूर, कस्तुरी प्रमुख अष्टुज पुजल लइने शातावेदनीयज पोतानो विपाक देखाडे ठे. तोपण ए शाता तथा अशातावेदनीयने पुजल विपाकीनी प्रकृति न क ही. परंतु ए प्रकृतिनो कखो अनुग्रह, उपघात. जीवने होय. माटें ते कहीयें ठैयें.

नाम ध्रुवोदय चउ तणु, वधाय सादारणिय जोअतिगं ॥

पुग्गल विवागि बंधो, पयइ छिइ रस पएसति ॥ ५१ ॥

अर्थ—(नामध्रुवोदय के०) एक निर्माण, बीजी स्थिर, त्रीजी अस्थिर, चोथी अष्टुज, पांचमी अष्टुज, ठछी तैजस, सातमी कर्मण, आठमी वर्ष, नवमी गंध, दशमी रस, अगीआरमी स्पर्श अने बारमी अगुरुजधु, ए बार प्रकृति नामध्रु वोदयी कहेवाय. ए बारने अनुक्रमें अंगोपांग नोकर्मपुजलजुं. तामजुं ताम जो डवुं, हाड दांतजुं कर्मपुजलनो स्थिरबंध तथा जोही जालनो अस्थिर बंध, तेमज मस्तकादिकअष्टुज, पगप्रमुख अष्टुज, शरीर पुजलनो वर्ष, गंध, रस, स्पर्शादिक पु जलने विषे होय, ते जणी ए बार प्रकृति पुजलविपाकीनी कही, अने (चउतणु के०) तनुचतुष्कनी अठार प्रकृति, तेनां नाम कहे ठे. एकतो औदारिक, वैक्रिय

अने आहारक, ए त्रण शरीर तथा बीजा एज त्रण शरीरनां उपांग त्रण, त्री जा संघयण ठ अने चौथा संस्थान ठ, एवं तनुचतुष्कनी अठार प्रकृति पण पुज्जलविपाकीनी ठे. जे नणी ए शरीरनामकर्मना उदयथकी औदारिकादिक शरीर पणो पुज्जल परिणमे ठे. तथा अंगोपांग पणो तथा आकार पणो तथा हाडसंधि पणो पुज्जल परिणमे ठे. ए कर्मपुज्जलने विषे पोतानी शक्ति दीपावे ठे. ते नणी पुज्जलविपाकीनी प्रकृति कहीयें. एवं त्रीश प्रकृति कही.

(उवघाय के०) उपघात नामकर्मने उदयें जीवने अंगुली प्रमुख अधिक अंग होय ते पण पोतानी शक्ति पुज्जलने विषे देखाडे ठे ते नणी तथा (साधारणिय के०) साधारण नामकर्मनो उदय पण शरीर पर्याप्ति पूरी कखा पठी उदय आवे तेषी घणा जीवतुं एक साधारण शरीर होय, तेषी ए पण पुज्जलविपाकीनी प्रकृति ठे तथा ए थकी इतर प्रत्येक नाम कर्म पण शरीराश्रित ठे, ते माटें पुज्जल विपाकिनी प्रकृति ठे, अने (उजोअतिगं के०) उद्योत, आतप ने पराघात, ए उद्योतत्रिक पण शरीर पुज्जलने विषे पोतानी शक्ति दीपावे, तेषी करी जीवनां शरीर, शीत प्रकाशवान् तथा उष्मप्रकाशवान् परने दुस्सहनीय होय. ते माटें ए पण पुज्जल विपाकिनी प्रकृति जाणवी. एवं बत्रीश प्रकृति, (पुग्गलविवागि के०) पुज्जल विपाकिनी कही. एम अनुक्रमें चार प्रकृति क्षेत्रविपाकिनी, अछोतेर जीवविपाकिनी, चार नवविपाकिनी अने बत्रीश पुज्जलविपाकिनी, ए सर्व मली एकशो ने बावीश प्रकृति उदयनी अ पेह्णायें होय जे नणी विपाकिनी कहेतां रसोदय कहीयें. एम चार विपाक द्वार कहां.

हवे (बंधो के०) चार बंधनां द्वार कहे ठे. त्यां जे स्थिति, रस अने प्रदेश बंधनो समुदाय ते (पयइ के०) प्रकृतिबंध जाणवो, तथा योग प्रत्ययें गृह्यां ए वां जे कर्मपुज्जल, त्यां अथ्यवसाय विज्ञेणें कर्मपणो रहेवानी स्थितिनुं मान ते बीजो (छिइ के०) स्थितिबंध जाणवो तथा शुजाशुज अथ्यवसाय विज्ञेणें करीजे मी तो रस ते अनुकूलपणो वेदीयें अने कडवो रस ते प्रतिकूल पणो वेदीयें तेमध्ये पण वली एकठाणीठ, बेठाणीठ, त्रिठाणीठ, चवठाणीठ तथा घातिठ, अघातिठ, एवा विपाकरसनं बांधवुं, ते त्रीजो (रस के०) रसबंध जाणवो. अने जे थो गनी उत्कटतायें घणां दल मले अने योगनी मंदतायें थोडां दल मले. एम योगनी तारतम्यें करी कर्मदजनुं तारतम्यपणुं होय ते चौथो (पएसति के०) प्रदेशबंध जाणवो. इति एम विवह्णायें चार बंध ते एक बांधतां चारे बंधाय. अर्हीआं लाडवानो दृष्टांत पूर्वें कहां ठे ते जाववो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३१ ॥

ते मध्ये प्रथम प्रकृतिबंध विचारे ठे. तिहां एक, बे, त्रण इत्यादिक संख्यायें प्रकृतिनुं बांधुं, तेने प्रकृतिबंधस्थानक कहीयें. ते बंधस्थानक मूल प्रकृतिआ श्री तथा उत्तर प्रकृतिआश्री, एम बे जेदें होय. ते मध्ये पण अल्पसंख्याथी घणी संख्याने बंधस्थानकें जाय. ते प्रथम ज्यस्कार बंध जाणवो अने जे घणी संख्याथी थोडी संख्याने बंधस्थानकें आवे, ते बीजो अल्पतर बंध जाणवो. एकज संख्याने स्थानकें रहेतां बीजो अवस्थितबंध जाणवो अने अवंधक यज्ञे फरी प्रथम एकादि प्रकृति बांधे, तिहां चोथो अवक्तव्य बंध जाणवो. एम प्रसंग पणे चार बंध कहेवाय. तिहां प्रथम मूल प्रकृतिना बंधस्थानक कहे थके ज्यस्कारादिक सुखें कहेवाय. ते जणी ते मूल प्रकृतिनां बंधस्थानक, प्रथम कहीयें ठैयें. तेमज उत्तर प्रकृतिने विषे पण बंधस्थानक कहेवा पूर्वक ज्यस्कारादिक चार बंध कहेवो.

मूल पयडीण अड स, त ठेग बंधेसु तिन्नि जूगारा ॥

अपतरा तिअ चररो, अवधिआ नहु अवत्तवो ॥ ११ ॥

अर्थ—(मूलपयडीणअड के०) मूल प्रकृति ज्ञानावरणादिकथी मांमीने अंतराय कर्म पर्यंत ए आठ कर्म, जे वारें जीव बांधे, तेवारें एक आठनुं बंधस्थानक कहेवाय, ते अंतरमुहूर्त सुधी रहे, जे जणी आशुःकर्मनो बंध आखां जव मध्ये एकज वार अंतर मुहूर्त सुधी होय. ए बंध प्रथम गुणगणायी लझे सातमा गुणगणा सुधी पामीयें, तेमाहे पण मिश्रगुणगणे आशु न बंधाय, तेथी त्यां (सत्त के०) सात कर्मनुं बंधस्थानक होय. ए सात कर्मनुं बंधस्थानक पण प्रथम गुणगणायी लेझे नवमा गुणगणा सुधी होय. एनो काल जयन्य तो अंतर मुहूर्त अने उत्कृष्टयितो पूर्वकोडीने त्रीजे जागें अधिक ठ मास हीन तेत्रीश सागरापम लगे जाणवो. केमके पूर्व कोडीने त्रीजे जागें देवायु बांधे, तेनी अपेक्षायें लेवो. ए आठनुं तथा सातनुं बे बंधस्थानक थयां.

(ठेगबंधेसुतिन्निजूगारा के०) दशमे गुणगणे आशु तथा मोहनीय ए बे कर्म हीन ठ कर्मनो बंध, ए पण अंतर मुहूर्त सुधी होय अने उपशांत मोहादिक त्रण गुणगणे एक वेदनीयनो बंध जाणवो. एनो काल जयन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टो तो देशोन पूर्वकोडी प्रमाण केवलीनी अपेक्षायें जाणवो. ए चार बंधस्थानक कहां. तेने विषे त्रण ज्यस्कारबंध कहे ठे. तिहां एक बांधी पठी ठ कर्म बांधतां प्रथम समयें प्रथम ज्यस्कार बंध. ए अगीअारमे गुणगणे उपशमश्रेणीथी पडतां होय, तथा दशमे गुणगणे ठ कर्म बांधी नवमे गुणगणे मोह सहित सात कर्म बांधतां प्रथम

समयें बीजो न्युस्कार बंध. तेने वली आयु सहित आठ कर्म बांधतां प्रथम समयें त्रीजो न्युस्कार बंध एम त्रण न्युस्कारबंध कह्या. अर्दीयां कोइ पूढे जे उ पशम श्रेणीयें अगीआरमे गुणगणो आयुद्वयें मरण पामीने, अनुत्तर विमानें देवता पणो उपजे, ते प्रथम समयें चोथे गुणगणो सात कर्म बांधें, तेने प्रथम समयें न्युस्कार होय, तो ए चोथो न्युस्कार केम न कह्यो? तेनो उत्तर कहे ठे के जो पण एकबंधथी सात कर्मबंध करे, तो पण बंधस्थानक साततुं एकज ठे, ते नणी जूदो न लेखव्यो. बंधस्थानकनो नेद होय तो जूदो न्युस्कार लेखवाय.

(अप्यन्तरातिअ के०) हवे अप्यतर बंध कहे ठे. आयुबंध कह्या पढी सात कर्म बांधतां प्रथम समयें अप्यतर बंध पढेलो जाणवो तथा नवमा गुणगणाने प्रांतें सात कर्म बंध करी दशमा गुणगणाने प्रथम समयें मोहनीय हीन करी ठ कर्म बांधतां, बीजो अप्यतर बंध जाणवो. तथा ठ कर्मथी उपशांतमोहें तथा हीणमोहें एक कर्म बांधतां, त्रीजो अप्यतर बंध जाणवो.

एमज (चतुरोअवधिआ के०) चार अवस्थित बंध कहे ठे. जे नणी मूल प्रकृतिनां बंधस्थानक चार, ते चार ठामें आव्या पढी बीजे समयें अवस्थितबंध कहेवाय. जेम आठ कर्मना बंधथी सातनो बंध करतां प्रथम समयें अप्यतर बंध पढी ज्यां सुधी तेज बंधस्थानकें जीव रहे, त्यां सुधी प्रथम अवस्थित बंध कहेवाय. एम सात पढी ठ बांधतां प्रथम समयें अप्यतर बंध. अने पढी बीजो अवस्थित बंध जाणवो, अने उथी एक बांधतां प्रथम समयें अप्यतरबंध, पढी त्रीजो अवस्थित बंध जाणवो. सातथी आठनो बंध करतां प्रथम समयें न्युस्कार बंध. अने पढी चोथो अवस्थित बंध जाणवो. एम चार अवस्थित बंध कह्या.

(नदुअवत्तवो के०) मूल प्रकृतिनो अबंधक अयोगी गुणगणो होय अने त्यांथी पडतुं नथी अने अव्यक्त बंध तो अबंधक अइने वली बांधे, तेने अव्यक्त बंध कहीयें अने अयोगी गुणगणणा पढी कर्मबंधपणुं नथी माटें मूल प्रकृतिनो अव्यक्तबंध नथी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३३ ॥

हवे न्युस्कारादिक बंधनां लक्षण कहे ठे.

एगादहिगे जूठ, एगाई ऊण गम्मि अप्यतरो ॥

तम्मत्तो अवधियत, पढमे समए अवत्तवो ॥ ३३ ॥

अर्थ—(एगादहिगेजूठ के०) एक, बे, इत्यादिक पूर्वजा बंधककी आगळें अ

धिकी प्रकृति बांधे. ते न्युयस्कार बंध जाणवो, एटले पूर्वे थोडी प्रकृति बांधतो होय, अने पढी एकादि अधिक प्रकृति बांधे, ते न्युयस्कारबंध प्रथम समय जाणवो, अने (एगाङ्कणगम्भिरप्यतरो के०) पूर्वबंधथी एकादि प्रकृति उढी बांधे, एटले पूर्वे घणी प्रकृति बांधतो होय अने पढी एकादि कणी प्रकृति बांधे, ते प्रथम समयें अल्पतरबंध जाणवो. (तम्मत्तोअवच्छियउं के०) प्रथमसमयें जेटलोज बंध होय, एटले पूर्वे बांधतो होय तेटलीज प्रकृति ज्यां सुधी निरंतर बांधे, त्यां सुधी अस्थित बंध कहीयें. अने (पढमेसमएअवत्तवो के०) सर्वथा अवंधक यइने फरी पहेला बंध करे, तेवारें प्रथम संमयने विषे अवक्तव्य बंध कहीयें. ए चार बंधनां लक्षण कहां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३३ ॥

हवे सामान्यें उत्तर प्रकृतिनां बंधस्थानक उंगणत्रीश ठे, तेनां नाम कहे ठे. एक, सत्तर, अठार, आंगणीश, वीश, एकवीश, बावीश, ठवीश, त्रेपन्न, चोपन्न, पञ्चावन्न, षण्पन्न, सत्तावन्न, अष्टावन्न, उंगणशाठ, शाठ, एकशाठ, त्रेशाठ, चोशाठ, पांशाठ, षाशाठ, शडशाठ, अडशाठ, उंगणोत्तर, सीत्तर, एकोत्तर, वहाँत्तर, तहाँत्तर, अने चम्भोत्तर, ए उंगणत्रीश बंध स्थानक ठे, त्यां न्युयस्कार बंध अष्टावीश होय, ते कहे ठे.

उपशांतमोहगुणगणो एक वेदनीय बांधीने पडतो दशमे गुणगणो ज्ञान पांच, दर्शन चार, अंतराय पांच. उच्चैर्गोत्र अने यशःकीर्ति साथें वेदनीय बांधतां सत्तर प्रकृतिने बंधें प्रथम समयें प्रथम न्युयस्कार बंध. तिहांथी पडतो नवमे गुणगणो संज्वलना लोचसाथें अठार प्रकृति बांधतां वीजो न्युयस्कार. ते मध्यें संज्वलनीमाया साथें उंगणीश बांधतां त्रीजो न्युयस्कार, तेमध्यें संज्वलनामान साथें वीश बांधतां चोपो न्युयस्कार, ते संज्वलना क्रोध साथें एकवीश बांधतां पांचमो न्युयस्कार, ते मध्यें पुरुपवेद साथें बावीशानो बंध बांधतां ठठो न्युयस्कार, ते मध्यें हास्य, रति, जय अने जुगुप्सा, ए चार प्रकृतिनो अधिक बंध करतां अपूर्व करणने सातमे जागें ठवीशानो बंध करतां सातमो न्युयस्कार, तेमध्यें आठमाने ठठे जागें देवप्रायोग्य नाम कर्मनी अष्टावीश प्रकृति बांधतां त्रेपन्नो बंध, अर्दीयां यशःकीर्ति पूर्वे ठवीश प्रकृति मध्यें आठवी ठे. तेथी देवप्रायोग्य सत्तावीशने बंधें त्रेपन्न प्रकृति होय. ए आठमो न्युयस्कार, तेमध्यें जिननाम बांधतां चोपन्नना बंधें नवमो न्युयस्कार, ते त्रेपन्न आहारकदिक साथें बांधतां पञ्चावन्नना बंधें दशमो न्युयस्कार, ते पञ्चावन्न जिननाम सहित बांधतां षण्पन्नना बंधें अगीअारमो न्युयस्कार, अपूर्व

र्वकरणना प्रथम जागें उपन्नने जिननाम हीन तथा निडा, प्रचला साथें बांधतां सत्तावन्नना बंधें बारमो न्युयस्कार, ते वली जिननाम सहित अछावनना बंधें ते रमो न्युयस्कार, ते देवायु साथें अप्रमत्तें उंगणशाठ बांधतां चौदमो न्युयस्कार, दे शविरति गुणताणो देवप्रायोग्यनी अछावीश प्रकृति बांधतां ज्ञान पांच, दर्शन ठ, वेदनीय एक, मोहनीय तेर, देवायु एक, नामनी अछावीश, गोत्रनी एक, अंतराय नी पांच, एवं शाठ प्रकृति बांधतां पंदरमो न्युयस्कार, ते जिननाम सहित एकश वने बंधें शोलमो न्युयस्कार, अर्हीआं कोइ प्रकारें एक जीवने एक समयें बाशठ प्रकृतिनो बंध संजवे नहीं, तेथी तेनो न्युयस्कार पण न कह्यो. चोथे गुणताणो आ युअबंध कालें देव प्रायोग्य नामनी अछावीश प्रकृति बांधतां, ज्ञान पांच, दर्शन ठ, वेदनीय एक, मोहनीय सत्तर, गोत्रनी एक, नामनी अछावीश, अंतरायनी पांच. ए त्रेशठ प्रकृति बांधतां सत्तरमो न्युयस्कार, देवायुबंध सहित चोशठ प्रकृति बांध तां अठारमो न्युयस्कार, जिननाम सहित पांशठ बांधतां उंगणीशमो न्युयस्कार, चोथे गुणताणो देवता होय, तेने मनुष्य प्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधतां ठाशठना बंधें वीशमो न्युयस्कार, मिथ्यात्वगुणताणो ज्ञान पांच, दर्शन नव, वेदनीय एक, मोहनीय बावीश, आयुनी एक, नामनी त्रेवीश, गोत्रनी एक. अंतरायनी पांच, ए शडशठ प्रकृति बांधतां एकवीशमो न्युयस्कार, त्यां नामकर्मनी पञ्चीश अने आयु रहित अडशठ बांधतां. बावीशमो न्युयस्कार, ते आयु सहित उंगणोत्तेर बांधतां त्रेवीशमो न्युयस्कार, ते वली नामकर्मनी ठवीश प्रकृति साथें सीत्तेर बांधतां चोवी शमो न्युयस्कार, ते आयु रहित अने नामकर्मनी अछावीश साथें एकोत्तेर बांधतां पञ्चीशमो न्युयस्कार, ते उंगणत्रीश नामकर्मनी साथें बहोत्तेरना बंधें ठवीशमो नू यस्कार, ते आयु सहित तहोत्तेर बांधतां सत्तावीशमो न्युयस्कार, ते वली नाम कर्मनी त्रीश बांधतां ज्ञान पांच, दर्शन नव, वेदनीय एक, मोहनीय बावीश, आ यु एक, नामनी त्रीश, गोत्रनी एक, अंतरायनी पांच. एवं चम्मोत्तेर बांधतां अछा वीशमो न्युयस्कार, अर्हीआं प्रकारांतरें अनेक बंधस्थानक संजवे, ते आपणी बु डिशी विचारी लेवा. एम अछावीश अल्पत्तर बंध पण विपरीतपणे लेवा अने उ गणत्रीश बंधस्थानक जणी अवस्थित बंध पण उंगणत्रीश लेवा. अर्हीआं अक्कव्यबंध न संजवीयें, जे जणी सर्वत्र उत्तरप्रकृतिनो अवंधक अयोगी गुणताणो जीव होय, त्यांथी पढवुं नथी माटे अक्कव्य वंध न होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥१३॥

ए रीतें उत्तर प्रकृतिना बंध, सामान्यें कही, हवे विशेषें कहे ठे.

नव ठ चऊदंसे डड, ति ड मोहे ड इगवीस सत्तरस ॥

तेरस नव पण चउ ति ड, इको नव अठ दस डुनि ॥ १४ ॥

अर्थ— प्रथम ज्ञानावरणीय कर्मनुं एकज बंधस्थानक ठे, ते जणी त्यां नूयस्कारादिक न संजवे. अने (नवठचऊदंसे के०) दर्शनावरणीयमांहे एक नवनो बंध बीजो ठनो बंध, अने त्रीजो चारनो बंध, ए त्रण बंधस्थानक ठे. तेमध्ये सर्व दर्शनावरणीयनी नवे प्रकृति बांधतां प्रथमनां बे गुणठाणे नव प्रकृतिनुं बंधस्थानक जाणवुं. एनी जघन्यस्थिति, अंतर मुहूर्तनी अने उत्कृष्ट तो अजव्यनी अपेक्षार्ये अनादि अनंत अने जव्यनी अपेक्षार्ये अनादि सांत, तथा सादि सांत, तेमांशी थीण ही, निडानिडा अने प्रचलाप्रचला, ए त्रण प्रकृतिनो बंध विभेद थये थके मि श्रादिक गुणठाणे ठ प्रकृतिनो बंध जाणवो. ते पण जघन्यथी तो अंतरमुहूर्त अने उत्कृष्टथी तो तेत्रीश सागरोपम पूर्वकोडी पृथक्त्वे जाजेरा जाणवा. तेमांशी निडा अने प्रचला ए बे प्रकृतिनो अपूर्वकरणना प्रथम जागें बंध विभेद थये थके आठमाना शेष जागें तथा नवमे अने दशमे गुणठाणे चार प्रकृतिनो बंध जाणवो. ते जघन्यतो एक समय श्रेणी मध्ये मरण पामे, तेनी अपेक्षार्ये जाणवो अने उत्कृष्ट पणे अंतर मुहूर्त प्रमाण होय, अर्हीयां नूयस्कार तथा अल्पतर ना बंध, (डड के०) बे बे होय अने अवस्थितबंध, (ति के०) त्रण होय तथा अवक्तव्यबंध, (ड के०) बे होय, ते कही देखाडे ठे. तिहां उपशमश्रेणीथी पडतां आठमा गुणठाणाना बीजा जागें आवतां सुधी दर्शनावरणीयनी चार प्रकृति बांधतो वली अर्ही बंधविभेद कखो हतो ते फरी आवतां निडा अने प्रचला, ए बे प्रकृतिनो बंध करे, ते तेनी सार्थे मेलवतां ठ प्रकृतिनो बंध करवाना प्रथम समयें नूयस्कार बंधपहेलो जाणवो. तथा नवनो बंध करतां बीजो नूयस्कार बंध जाणवो तथा नवनो बंध करीफरी ठनो बंध करतां प्रथम समयें प्रथम अल्पतर बंध, तथा अपूर्वकरण गुणठाणाना प्रथम जागें ठ प्रकृतिनो बंध करी वली निडा अने प्रचलानो बंध विभेदी चारनो बंध करतां, प्रथम समयें बीजो अल्पतर बंध जाणवो. ए त्रणे बंध स्थानकें बीजा समयथी मांमीने ते ते बंधस्थानकना चरम समय लगे त्रण अवस्थितबंध जाणवा तथा अगीआरसे गुणठाणे दर्शनावरणीयनो अवंधक होय अने तिहांथी पडतां दशमे गुणठाणे दर्शनावरणीयनी चार प्र

कृति बांधतां प्रथम समयें प्रथम अवक्तव्यबंध. तथा जे जीव उपशांतमोह गुणताणे आयुःकृत्यें मरण पामीने अनुत्तरविमानें देव थाय, तिहां ठ प्रकृति बांधे तेने प्रथम समयें बीजो अवक्तव्य बंध होय, एटजे दर्शनावरणीयनां बंधस्थानकें, जूय स्कारबंध, अल्पतरबंध, अवस्थितबंध तथा अवक्तव्य बंध कह्या.

हवें मोहनीयनां दश बंधस्थानक ठे, ते कहे ठे.

(मोहे के०) मोहनीयनी अष्टावीश प्रकृतिमध्ये सम्यक्त्वमोहनीय तथा मिश्र मोहनीय बांधे नहीं. बाकी ठवीश प्रकृति बंध योग्य तेमां पण त्रण वेदमध्ये एक समयें एकज वेद बांधे, तथा हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए बे गुणल मध्ये पण एकज गुणल बंधाय. केमके ए प्रकृति बंधोदय विरोधिनी ठे ते जणी मिथ्यात्व गुणताणे (डुके०) बावीश प्रकृतिजुं बंधस्थानक होय. एनी स्थिति अजव्यनी अपेक्षायें तो अनादि अनंत अने जव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत तथा सादि सांत जाणवी. तेमध्ये पण सास्वादन गुणताणे मिथ्यात्वमोहनीय न बंधाय, ते वारें (इगवीस के०) एकवीश प्रकृतिजुं बंध स्थानक होय. अहींआं डु तथा इग ए बे शब्दने वीश शब्द जोडवो, एनी स्थिति जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी तो ठ आवाली प्रमाण जाणवी. तेमध्ये वली मिश्र अने अविरति, ए बे गुणताणे चार अनं तानुबंधीया न बंधाय, ते वारें (सत्तरस के०) सत्तर प्रकृतिजुं बंधस्थानक होय. एनी स्थिति जघन्यतो अंतरमुहूर्त अने उत्कृष्टतो तेत्रीश सागरोपम काल पूर्वको डी पृथक्त्व अधिक होय, जे जणी अनुत्तरवासी देव चवीने ज्यां सुधी विरतिपणुं न लहे. त्यां सुधी तेने ए बंधस्थानक होय. ते मध्येथी देशविरति गुणताणे अप्रत्या ख्यानीआ कषाय चार, न बंधाय तेथी (तेरस के०) तेर प्रकृतिजुं बंधस्थानक होय. ए पण जघन्यथी तो अंतरमुहूर्त अने उत्कृष्टथी तो देशोन पूर्वकोडी प्रमा ण जाणवी. तेमध्ये वली प्रमत्त अने अप्रमत्त गुणताणे प्रत्याख्यानावरण चार क षाय न बंधाय. माटें त्यां (नवके०) नव प्रकृतिनो बंध होय. एनो काल जघन्य एक समय जे जणी कोइ एक जीव एक समयें मात्र सर्व विरतिपणु लइ ने बीजे समयें मरण पामे, तेनी अपेक्षायें जाणवुं अन्यथा जघन्य अंतर मुहूर्त अने उ त्कृष्टो तो देशोन पूर्वकोडी प्रमाण जाणवो. तेमध्ये हास्य, रति, जय अने छुगुप्सा, ए चार प्रकृतिनो बंध विहेद थये थके नवमे गुणताणे (पण के०) पांच प्रकृतिजुं बंधस्थानक होय तेमांहेथी वली पुरुषवेदनो बंधविहेद थये थके (चउ के०) चा रजुं बंधस्थानक होय तेमांहेथी संज्वलना क्रोधनो बंध विहेद थये थके (तिके०)

त्रय प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. तेमांहेथी संज्वलनोमान विद्भेद अये अके (ड के०) बे प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय, तेमध्येथी संज्वलनी मायानो बंधविद्भेद अये अके (इको के०) एक प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. ए दश, बंधस्थानक कहां. ए श्रेणीमध्येना बंधस्थानकनी जघन्य तो एक समयनी स्थिति अने उत्कृष्ट तो अंत रमुहूर्त्त स्थिति जाणवी. केमके, कोइ एक जीव तो श्रेणीमध्ये ए बंधस्थानक एक समयमात्र स्पर्शने पण मरण पामे. तेनी अपेक्षायें समयमान जाणवुं. ए दश बंधस्थानके (नव के०) नव जूयस्कारबंध, (अठ के०) आठ अल्पतरबंध, (दस के०) दश अवस्थितबंध अने (दुन्निके०) बे अवक्तव्य बंध जाणवा, ते कहे बे.

ते मध्ये प्रथम नव जूयस्कारबंध जावियें ठैयें. त्यां जे जीव, उपशम श्रेणीयें च ढी, अगीअारमुं गुणगाणुं अंतरमुहूर्त्तनुं बे. तिहां अंतरमुहूर्त्त रद्दीने आगल च ढवातुं स्थानक नथी. केमके मोहनीयनी प्रकृति उपशमावी बे. तेनी सत्ता टली नथी, ते सत्ता टळ्या विना आगलां गुणगाणां प्राप्त थाय न्हीं. ते जणी त्यांथी पडतां दशमे गुणगाणे आवे. तिहां पण मोहनीयनो अबंधक होय, तिहांथी पडतां न वमा गुणगाणाने पांचमे जागें एक संज्वलनालोजनो बंध करतां प्रथम समयें प्रथम अवक्तव्य बंध तथा आयुःक्षयें अगीअारमे गुणगाणे मरण पामीने अनुत्तर विमानें सुर थाय. ते प्रथम सत्तर प्रकृतिनो बंध करे, तेने प्रथमसमयें बीजो अवक्तव्य बंध. एम बे अवक्तव्य बंध कहा. तथा नवमाना पांचमा जागथी पडतां चोथे जागें संज्वलनी माया साथें बे प्रकृतिनो बंध करतां तिहां प्रथम समयें प्रथम जूयस्कार, त्रीजे जागें संज्वलनी माया साथें त्रय प्रकृति बांधतां प्रथम समयें बीजो जूयस्कार, बीजे जागें संज्वलना क्रोध साथें चार प्रकृति बांधतां त्रीजो जूयस्कार, प्रथमजागें पुरुषवेद सहित पांच प्रकृति बांधतां, चोथो जूयस्कार, तिहांथी आठमाने ठेह्ले जागें हास्य, रति, जय अने छुगुप्ता, सहित नव प्रकृति बांधतां पांचमो जूयस्कार, तिहांथी देशविरति गुणगाणे प्रत्याख्यानावरण कषाय चार सहित तेर प्रकृति बांधतां षष्ठो जूयस्कार, तिहांथी चोथे गुणगाणे प्रत्याख्यानावरण कषाय चार सहित सत्तर प्रकृति बांधतां सातमो जूयस्कार, ते वली अनंतानुबंधीया चार कषाय सहित एकवीश प्रकृति बांधतां आठमो जूयस्कार, ते वली मिथ्यात्व मोहनीय सहित बावीश प्रकृति मिथ्यात्वगुणगाणे बांधतां नवमो जूयस्कार. एनव जूयस्कार कहा. हवे आठ अल्पतर कहीयें ठैयें.

तिहां मिथ्यात्व गुणगाणे बावीशनी बंध करी चोथे गुणगाणे सत्तर प्रकृतिनो

बंध करता, प्रथम समयें प्रथम अल्पतर जाणवो. वली सत्तरथी तेरनो बंध करता, बीजो अल्पतर. एम विपरीत पणो लेवा. पण एटलुं विशेष जे एकवीशना बंधनुं एक अल्पतर न होय, जे जणी मिथ्यात्वथी सास्वादनें न आवे, त्यां सास्वाद न गुणठाणुं तो सम्यक्त्वथी पडतांज होय, ते माटे बावीशना बंधथी एकवीशना बंधें न आवे, एम आठ अल्पतर बंध होय अने दश बंध स्थानकें बीजा समय थी मांतीने चरम चरम समय लगे दश अवस्थित बंध होय. एम मोहनीय कर्म ना जूयस्कारादिक बंधस्थानक कहां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३४ ॥

हवे नामकर्मने विषे जूयस्कारादिक कहेवाने अर्थें प्रथम बंधस्थानक कहे ठे.

ति पण ङ अठ नवद्विया, वीसा तीसे गतीस इग नामे ॥

ठस्सग अठ तिबंधो, सेसेसु ङाण भिक्किं ॥ ३५ ॥

अर्थे—हवे नामकर्मनी जेटली प्रकृति एक समयें जे प्रायोग्य बंधाय, तेवा बंधस्थानक आठ ठे, ते कहे ठे. (तिपणठअठनवद्वियावीसा के०) त्रण, पांच, ङ, आठ, नव, अधिक वीश एटले वीश शब्द, प्रत्येकनी साथें जोडीयें, तेवारें एक त्रेवीशनो बंध, बीजो पच्चीशनो, त्रीजो ठवीशनो, चोथो अठवीशनो, पांचमो उंग एत्रीशनो, (तीसेगतीसइगनामे के०) ठठो त्रीशनो, सातमो एकत्रीशनो, अने आठमो एकनो बंधस्थानक.

ए आठमर्थें मिथ्यात्वी जीव, मनुष्य, तिर्यंच, मिथ्यात्व गुणठाणो अपर्याप्ता ए केंद्रिय प्रायोग्य एक वर्ण, बीजो गंध, त्रीजो रस, चोथो स्पर्श, पांचमो तैजस, ठठो कामेण, सातमो अगुरुजघु, आठमो निर्माण, नवमो उपघात, दशमी तिर्यंचगति, अगीआरमी तिर्यंचानुपूर्वी, बारमी एकेंद्रियजाति, तेरमुं औदारिक शरीर, चौदमुं हुंमसंस्थान, पंदरमुं स्थावरनाम, शोलमुं बादरनाम, अथवा सूक्ष्मनाम, सत्तरमुं अपर्याप्तनाम, अठारमुं प्रत्येकनाम, अथवा साधारणनाम, उंगणीशमुं अस्थिरनाम, वीशमुं अच्युतनाम, एकवीशमुं दौर्जाग्यनाम, बावीशमुं अनादेयनाम, त्रेवीशमुं अयशनाम, ए त्रेवीशने बंधें अहींआं प्रत्येक साधारण साथें अने सूक्ष्मबादर साथें जांगा चार थाय, ए प्रथम नामकर्मनुं बंध स्थानक कहुं.

तेमर्थें पराघात अने उड्ढास, ए वे प्रकृति वधारीयें अने अपर्याप्ताने स्थानकें पर्याप्त नाम कर्म कहीयें, तेवारें पच्चीश प्रकृति, पर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य मिथ्यात्वी देव, मनुष्य तथा तिर्यंच बांधे. अहींआं जांगा वीश थाय ते सत्तरीना टबाथी जा

एवा. ए बीजुं स्थानक, ते पञ्चश प्रकृतिने आतप अथवा उद्योत सहित करीये तेवारें उद्दीश प्रकृतिनो बंध, ए पण पर्यासा एकेंद्रिय प्रायोग्य त्रण गतिना मिथ्यात्वी जीव बांधे, अर्हींआं जांगा शोल थाय, ए त्रीजुं बंध स्थानक.

तथा देवदिक, पंचेंद्रियजाति, वैक्रिय शरीर, वैक्रियांगोपाग, समचतुरस्रसंस्थान, पराघात, उद्वास, शुजखगति, त्रस, बादर, पर्यास, प्रत्येक, स्थिर अथवा अस्थिर, शुज अथवा अशुज, यश अथवा अयश, सुजग, सुस्वर, आदेय, वर्णचतुष्क, तैजस, कार्मेण, अगुरुलघु, निर्माण, उपघात, ए अष्टावीश प्रकृति, देवगति प्रायोग्य मिथ्यात्वी तथा सम्यक्दृष्टि मनुष्य अने तिर्यंच बांधे. तिहां स्थिरास्थिरादिक साधें जांगा आत थाय तथा तेमज नरकगति प्रायोग्य पण अष्टावीश प्रकृति बंधाय पण एटलुं. विशेष जे, देवदिकने स्थानकें नरकदिक तथा समचतुरस्रसंस्थान ने स्थानकें दुंसंस्थान अने अपरावर्त्तमान प्रकृति अशुज लेवी. अर्हींआं अष्टावीशनो जांगो एकज लेवाय, ए अष्टावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक चोशुं.

तथा सम्यक्दृष्टि जीव, जिननाम सहित देवप्रायोग्य अष्टावीश बांधतां उंगण त्रीश प्रकृतिनो बंध. अर्हीं जांगो एक जे जणी ए शुजज बंधाय तथा मनुष्यदिक, पंचेंद्रिय जाति, औदारिकदिक, उ संघयणमांहेलुं एक संघयण, उ संस्थान मांहेलुं एक संस्थान, त्रस, बादर, पर्यास, प्रत्येक, स्थिर अथवा अस्थिर, शुज अथवा अशुज, सौजाग्य अथवा दौर्जाग्य, सुस्वर अथवा दुःस्वर, आदेय अथवा अनादेय, यश अथवा अयश, शुजखगति अथवा अशुजखगति, पराघात, उद्वास, वर्णचतुष्क, तैजस, कार्मेण, अगुरुलघु, निर्माण, उपघात, ए मनुष्य प्रायोग्य उंगण त्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकना जांगा, उंतालीश जे ने आत थाय, तेमज पंचेंद्रिय तिर्यंच प्रायोग्य उंगण त्रीश बंध प्रकृतिना पण जांगा एटलाज जाणवा. ए पांचमुं बंधस्थानक. तथा देवगतिप्रायोग्य अष्टावीश प्रकृति ते आहारकशरीर तथा आहारक अंगोपांग सहित बांधतां त्रीश प्रकृतिनो बंध, अप्रमत्त साधुने होय. अर्हींआं जांगो एक थाय तथा मनुष्य प्रायोग्य उंगण त्रीश बंध प्रकृतिने जिननाम सहित बांधतां सम्यक्दृष्टि देवताने त्रीशनो बंध. ए उहुं बंधस्थानक. तथा जिननाम सहित देवप्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधतां, एकत्रीश प्रकृति अप्रमत्त अपूर्व करण गुणगणावाजा साधु बांधे. अर्हींआं पण जांगो एक थाय, ए सातमुं बंधस्थानक.

तथा आत्मा गुणगणाने उठे जागें नामकर्मनी त्रीश प्रकृतिनो बंध विभेद करी आगले एक यशःकीर्त्ति बांधे, त्यां आत्मुं नामकर्मनुं बंधस्थानक जाणवुं. एम

आठ बंधस्थानकें एकेंडिय, विकर्लेडिय, देवता, मनुष्य, तिर्यैच, नारकी, प्रायोग्य बंधनेदें करी तेर हजार नवशें ने पीस्तालीश जांगा थाय. ते सत्तरीना टबा मांहे सविस्तर कहीछुं. तिहांथी जोइ लेवा.

ए आठ बंधस्थानने विषे न्यूसकारबंध (ठ के०) ठ ठे, तेजावें ठे. त्रेवीशनो बंध करी तथाविध विद्युदें पञ्चीश बांधतां प्रथम समयें प्रथम न्यूसकार मिष्यात्वीने होय. ते पञ्चीश आतप अथवा उद्योत सहित ठवीशने बंधें बीजो न्यूसकार. अथवा विद्युदें तथा संक्लेशें देवप्रायोग्य अथवा नरक प्रायोग्य अष्टावीश बांधतां त्रीजो न्यूसकार. ते देवप्रायोग्य अष्टावीशने जिननाम सहित उंगणत्रीश बांधतां चोथो न्यूसकार, ते वली त्रीश प्रकृति मनुष्य प्रायोग्य अथवा देवप्रायोग्य बांधतां, पांचमो न्यूसकार. ते देवप्रायोग्य त्रीशने जिननाम सहित एक त्रीश बांधतां, ठछो न्यूसकार. एमज एक प्रकृति बांधी वली श्रेणीथी पडतो त्रीश तथा एक त्रीश बांधे खरो पण ते बंध स्थानकनुं चेद नहीं, तेथी तेतुं चूदो न्यूसकार न लेखववो. ए ठ न्यूसकार कहुया.

हवे (स्सग के०) सात अल्पतर कहे ठे. अपूर्वकरणें देवगति प्रायोग्य अष्टावीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, बांधीने श्रेणी चढतां जे बंधने व्युत्पेदी एक यशःकीर्त्तिज बांधे, ते प्रथम अल्पतर बंध, तथा कोइएक मनुष्य आहारकदिक अने जिननाम सहित देवप्रायोग्य एकत्रीश प्रकृति बांधतो मरीने देवलोकें जाय, त्यां प्रथम समयें मनुष्यप्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधे. त्यां बीजो अल्पतर बंध, तेहज देवलोक थकी चवी मनुष्य थयो थको जिननाम सहित देवगतिप्रायोग्य उंगणत्रीश बांधे, तेने आद्यसमयें त्रीजो अल्पतर, अने जेवारें कोइ मनुष्य देवगति प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतो, विद्युदपरिणामें देवगतिप्रायोग्य अष्टावीश बांधे. तेवारें आद्य समयें चोथो अल्पतर, ते अष्टावीश बांधतो संक्लिष्ट परिणामने वशें एकेंडियप्रायोग्य ठवीश बांधे, तिहां पांचमो अल्पतर. तेहिज ठवीश वालो पञ्चीश बांधे, तेवारें ठ छो अल्पतर, ते पञ्चीश वालो त्रेवीश बांधे, तेवारें सातमो अल्पतर बंध जाणवो.

तथा आठे बंधस्थानकें बीजा समयथी मांणीने चरम समय जगें (अष्ट के०) आठ अवस्थितबंध होय.

तथा (तिबंधो के०) त्रण अव्यक्त बंध कहे ठे. श्रेणीथी पडतां नामकर्मनो सर्वथा अवंधक अइने फरी यशःकीर्त्ति नामकर्म बांधे, तिहां प्रथमसमयें पहेलो अव्यक्त बंध, तथा उपशांतमोहगुणवाणे मरण पामी काल करीने अनुत्तर विमानें देवता थाय, तिहां धुर समयथी मनुष्य प्रायोग्य उंगणत्रीश प्रकृति बांधे. ते

बीजो अव्यक्तबंध तथा तिहां कोइ एक जिननाम सहित त्रीण प्रकृति बांधे, ते वारें तेनी अपेक्षायें प्रथम समयें त्रीजो अव्यक्तबंध जाणवो. ए त्रण अव्यक्तबंध कह्या. एम नामकर्मनी उत्तर प्रकृतिनां बंधस्थानक, न्यूसकारबंध, अल्पतरबंध, अवस्थितबंध, अने अव्यक्तबंध ए चारे कह्या.

(तेसेसुष्ठाणमिक्किकं के०) हवे शेष एक ज्ञानावरणीय, बीजुं वेदनीय, त्रीजुं आयु, चोथुं गोत्र, अने पांचमुं अंतराय, ए पांच कर्मतुं एक एक बंध स्थानक होय. केम के ज्ञानावरणीय अने अंतराय, ए बे कर्म ध्रुवबंधी ठे. तेमाटें दशमा गुणठाणा सुधी एनी सर्व पांचे प्रकृति जेलीज बंधाय. त्यां न्यूसकार अने अल्पतर बंध न होय अने एक अवस्थित बंध सदाय होय. अने शेष वेदनीय, आयुने गोत्र ए त्रण कर्मनी प्रकृति बंधविरोधिनी ठे तेशी ते एक समयें एकज बंधाय तेशी तेतुं बंधस्थानक पण एकज होय. अहींआं न्यूसकार तथा अल्पतरबंध न होय अने वेदनीय तो तेरमा गुणठाणा सुधी बंधाय ठे, माटें ते विना शेष चार कर्मनो अव्यक्तबंध एक होय केम के अगीअारमे गुणठाणे अबंधक होइने फरी बांधतां प्रथम समयें अव्यक्त बंध अने तेवार पठी द्वितीयादिक समयें अवस्थित बंध जाणवो. एटले सविस्तर प्रकृति बंध कह्यो.

अहींआं मूलप्रकृतिनो तो जघन्य एक, उत्कृष्टो आतनो बंध ठे अने उत्तर प्रकृतिनो जघन्य एक, उत्कृष्टो चम्पोतेरनो बंध ठे, अहींआं अनादि, सादि, अनंत अने सांत, ए चार जांगा पोतानी मतियें विचारी कहेवा. तिहां मूल प्रकृतिना बंधस्थानकें, उर्थें सादि सांत जांगो होय. जे जणी जवजवने विषे एकज वार आयु बांधे, तिहां आतनो बंध अने शेष कालें सात प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. तथा उत्तर प्रकृतिमध्ये ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीयनुं एकेक बंधस्थानक, अने वेदनीयनो एकनो बंध, तथा मोहनीयनो बाचीशनो बंध, गोत्रनो एकनो बंध, अंतरायनो पांचनो बंध, एटले बंधें अजव्यनी अपेक्षायें अनादि अनंत अने जव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत तथा सादि सांत. ए त्रण जांगा होय, अने शेष बंधस्थानकें सादिसांत जांगो एकज होय. ए सादि सांतपणुं ते स्थिति मान जाणवुं. ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १५ ॥

एम न्यूसकारादिक प्रकारें करी कर्मप्रकृतिनो बंध कह्यो. हवे मूल प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध स्वामित्व धारें करी सविस्तर पणो कहे ठे.

वीसयर कोडि कोडी, नामे गोए य सत्तरी मोहे ॥
तीसयर चउसु उदही, निरय सुराउमि तिचीसा ॥ ३६ ॥

अर्थ—(वीसयर के०) संख्याये वीश अने अयर एटले तरी शकाय नहीं, ते माटें ए अतर कहेतां सागर तेनी उपमार्ये करी मध्युं जे कालमान, तेने सागरोपम कहीयें, तिहां पव्यनी उपमार्ये पव्योपम कहीयें. ते योजन प्रमाणे कूवो असंख्यवालागें नरी शो शो वर्षे एकेक केशखंड काहाडतां कूप निर्लेप थाय, तेनो काल, तेने अद्रापव्योपम कहीयें. तेवा दश कोडाकोडी कूपमान क्षेत्र ते सागरोपम तेने निर्लेपनो काल, तेने अद्रासागरोपम कहीयें. ते अद्रासागरोपमनी (कोडिकोडी के०) वीश कोडाकोडी (नामेगोएय के०) नामकर्म अने गोत्रकर्मनी उत्कृष्टी स्थिति होय, एटले बांधेळुं कर्मदल विणजे नहीं तो एटलो काल रहे तथा परिणाम विशेषे स्थितिघात करतो अपवर्त्तन करणें करी स्थिति घटावतां घटो पण जाय, तेम उदरत्तनाकरणें करी स्थितिने वधारे पण खरी अने जो निकाचित बंध कखो होय, तो बंधें घटे नहीं. एनो अबाधाकाल, बे हजार वर्षनो जाणवो.

तथा (सत्तरीमोहे के०) मोहनीयकर्मनो उत्कृष्ट स्थितिबंध सीत्तर कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण कह्यो ठे. ए बंध उत्कृष्ट संक्षेपे मिथ्यात्व गुणवापो होय अने अबाधा काल सात हजार वर्ष हीन कर्मदलनो निषेक कहेतां ए कर्मनो रसोदय काल जाणवो. एटले त्रण कर्म कहां अने एणकी इतर एटले अन्य जे चार कर्म, एटले एक ज्ञानावरणीय, बीजुं दर्शनावरणीय, त्रीजुं वेदनीय अने चोशुं अंतराय, (चउसु के०) ए चार कर्मनी उत्कृष्टी स्थिति (तीसयर के०) त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट संक्षेपे मिथ्यात्व गुणवापो होय. ए चार कर्मनो अबाधाकाल त्रण हजार वर्षनो, ते त्रण हजार वर्ष हीन त्रीश कोडा कोडी सागरोपम रसोदय काल जाणवो.

(उदही के०) समुद्र एटले परमार्ये सागरोपम जाणवुं. तेवा (तिचीसा के०) ते त्रीश सागरोपम कालनी स्थिति आयुःकर्मनी (निरयसुराउमि के०) नारकी अने देवायुनी अपेहार्ये कहीयें. एटले अत्यंत संक्षिष्ट परिणामें मिथ्यात्वीने नरकायुनो बंध ते त्रीश सागरोपमकाल प्रमाण होय अने अत्यंत विद्युद परिणामें प्रमत्त तथा अप्रमत्तने ते त्रीश सागरोपम सुरायुनो बंध होय. अहींआं अबाधाकाल उत्कृष्ट तो पूर्व कोडीनो त्रीजो जाग अने जघन्यथी तो अंतर सुदूर्तकाल होय. अहींआं उत्कृष्ट

आयु बंधे नियत उत्कृष्टो अबाधाकाल न होय, ते जणी जिन लेखव्यो. एनो र सोदय काल, तेत्रीश सागरोपम जाणवो, परंतु पूर्वकोडीने त्रीजे जागे हीन न जा एवो. अर्हीआं आयुकर्मनी मूल प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहेवाने अवसरें नर कायु तथा देवायु ए बे उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध काल कह्यो, ते ग्रंथगौरव टालवा जणी कह्यो अथवा ए बनेनुं किंचित् अजेदपणुं जणाववाने अर्थे कह्यो ॥१६ ॥

हवे मूलप्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कहे ठे.

मुत्तूअ कसाय छिइ, बार मुहुत्ता जहन्न वेयणिए ॥

अछ छ नाम गोए, सु सेसएसु मुहुत्तं तो ॥ १७ ॥

अर्थ- (मुत्तूअकसाय के०) अकपाय एटले कपायोदय रहित एतुं अगी आरमुं. बारमुं अने तेरमुं, ए त्रण गुणवाणां मूकीने शेष सरागी गुणस्थानके (वेयणिए के०) वेदनीय कर्मनो अत्यंत (जहन्न के०) जघन्य (छिइ के०) स्थितिबंध, (बारमुहुत्ता के०) बारमुहुर्त्त प्रमाण होय, तथा ग्रंथांतरें एक मुहुत्तं पण कह्युं ठे. अर्हीआं एटनुं विशेष जे कपायोदय रहित जे अगीआरमुं, बारमुं, अने तेरमुं गुणवाणुं ठे. तिहां कपायने अजावें स्थितिबंध, तथा रसबंध न होय. परंतु केवल योग प्रत्यश्च प्रकृतिबंध तथा प्रदेश बंध होय, ते प्रथम समयें बांधे तथा बीजे समयें वेदे अने त्रीजे समयें विणजे पण कपाय प्रत्ययिक स्थितिबंध न होय. ते जणी ते गुणवाणां अर्हीआं वर्जित कखां ठे. अर्हीआं जघन्य वेदनीय स्थितिबंधें अबाधाकाल पण जघन्य अंतर मुहुर्त्तनो होय, तेथी हीन शेष रस्तोदय काल समजवो अने एक आयु विना शेष सात कर्मनो जघन्य स्थितिबंधकालें अबाधाकाल पण जघन्य जाणवो.

(अछछनामगोएसु के०) अने नामकर्म तथा गोत्रकर्म, ए बे कर्मनो जघन्य स्थितिबंधकाल अत्यंत विद्युदपयो सूक्ष्म संपरायने प्रांतें आव मुहुर्त्त प्रमाण होय. तिहां अबाधाकाल, अंतरमुहुर्त्तनो होय, ए त्रण कर्मनो स्थितिबंध कह्यो.

(सेसएसुमुहुत्तंतो के०) तेथी शेष रक्षां जे एक ज्ञानावरणीय, बीजुं दर्शना वरणीय अने त्रीजुं अतराय, ए त्रण कर्मनो सूक्ष्मसंपराय नामा दशमा गुणवाणाने प्रांतें अने एक मोहनीयकर्मनुं बादर संपरायनामा नवमा गुणवाणाने प्रांतें तथा आयुःकर्मनुं प्रथमनां बे गुणवाणे अंतरमुहुर्त्त प्रमाण जघन्य स्थितिबंध होय ॥१७॥

ए रीतें सामान्यप्रकारें मूलकृतिनो उत्कृष्टस्थितिबंध तथा जघन्य स्थितिबंध

कहीने, हवे विशेष प्रकारें एकशो ने वीश उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध क हीयें ठैयें. तथा बांधेलुं कर्म ज्यां लगें पोतानो विपाक देखाडे नहीं, तेने अबा धा कहीयें. तथा अबाधा काल पढी कर्मने वेदवाने प्रथम समयें बहु अने ते थो वली द्वितीय समयें हीन, तृतीय समयें थणुं हीन एम कर्मदल वेदवा सन्मुख जे दलरचना विशेष तेने निषेक कहीयें. एनी स्थापना कहेशे.

विग्धा वरण असाए, तीसं अठार सुद्धुम विगल तिगे ॥

पढमा गिइ संघयणे, दस डुसु चरिमेसु डुग वुड्डी ॥ १८ ॥

अर्थ—(विग्धा के०) एक दानांतराय, बीजो लाजांतराय, त्रीजो जोगांतराय, चोथो उपनोगांतराय, पांचमो वीर्यांतराय. ए पांच अंतराय कर्मनी प्रकृति तथा (वरण के०) एक मतिज्ञानावरणीय, बीजो श्रुतज्ञानावरणीय, त्रीजो अवधिज्ञानावरणीय, चोथो मनःपर्यवज्ञानावरणीय, पांचमो केवलज्ञानावरणीय, ए पांच ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति. तथा एक चक्षुदर्शनावरणीय, बीजुं अक्षुदर्शनावरणीय, त्रीजुं अवधिदर्शनावरणीय, चोथुं केवलज्ञानावरणीय, अने पांच निडा. तथा (असाए के०) अज्ञातावेदनीय, एवं वीश उत्तर प्रकृतिनुं (तीसं के०) त्रीश कोडा कोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, मिष्यात्वीने होय तिहां अबाधा त्रण ह जार वर्षनी जाणवी. त्रण हजार वर्ष हीन कर्मस्थितिनो रसोदयकाल जाणवो.

अने (अठारसुद्धुमविगलतिगे के०) अठार कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थितिबंधकाल, एक सूक्ष्म, बीजो अपर्याप्त, त्रीजो साधारण, ए सूक्ष्मत्रिक तथा विकलत्रिक, एटले वेंडियजाति, तेंडिय जाति अने चौरिंडिय जाति. एवं ष प्रकृति नो अठार कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थितिकाल जाणवो. अर्हीअं अठारशें वर्षनो अबाधाकाल जाणवो. एवं षवीश प्रकृति थइ.

तथा (पढमागिइसंघयणे के०) प्रथमाकृति एटले पहेलुं समचतुरस्रसंस्थान तथा प्रथम वज्ररूपनाराचसंघयण, ए बे प्रकृतिनी उत्कृष्टस्थिति (दस के०) दश कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी. अर्हीअं एक हजार वर्ष अबाधा काल जाणवो. अने (डुसुचरिमेसुडुगवुड्ढि के०) आगला एकेक संस्थानें तथा एकेक संघयणे एम बे वे प्रकृतिने विपे अनुक्रमें बे बे कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिबंधमां वृद्धि करीयें, एट ले ए जाव जे न्यग्रोधसंस्थानें तथा रूपनाराचसंघयणे बार कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति अने बारशें वर्ष अबाधा काल तथा सादि संस्थान अने नाराच सं

घयणे चौद कोडाकोडीनी स्थिति अने चौदशें वर्ष अबाधाकालें हीन निषेक काल जाणवो. तथा वामनसंस्थानें मतांतरें कुब्जसंस्थाने अने अर्ध नाराच संघयणे शोल कोडाकोडी सागरोपमस्थिति तथा शोलशें वर्ष अबाधाकालें हीन निषेककाल तथा कुब्ज संस्थानें मतांतरें वामन संस्थानें अने कौलिकासंघयणें अठार कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति अने अठारशें वर्षनी अबाधायें हीन निषेक काल तथा हुंमसंस्थान अने ठेवठे संघयणे वीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति अने बे हजार वर्ष अबाधाकालें हीन वीश कोडाकोडी सागरोपम रसोदय काल जाणवो. एम ठ संघयण तथा ठ संस्थाननो उत्कृष्ट स्थितिकाल कह्यो. एवं आडत्रीश प्रकृतिनो स्थितिबंध कह्यो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३७ ॥

चालीस कसाएसु, मिउ लहु निधुएह सुरहि सिय मदुरे ॥

दसदे सहु समदिया, तेहालिहं बिलाईणं ॥ ३८ ॥

अर्थ—(चालीसकसाएसु के०) अनंतानुबंधीआ चार, अप्रत्याख्यानावरण चार, प्रत्याख्यानावरण चार, संज्वलना चार, ए शोल कषायनो, बंध चालीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति बंध उत्कृष्ट संक्षेपें मिथ्यात्व गुणगणें संनिआ मिथ्यात्वीने होय, अने चार हजार वर्ष अबाधाकालें हीन निषेककाल जाणवो. एटले चोपन्न प्रकृति कही तथा एक (मिउ के०) मृडु एटले सुकमाल स्पर्श, बीजो (लहु के०) लघुस्पर्श, त्रीजो (निधुएह के०) स्निग्ध एटले चीकटस्पर्श, अने चोथो उल स्पर्श, पांचमो (सुरहि के०) सुरजिगंध, ढछो (सिय के०) श्वेत एटले उज्ज्वल वर्ण, सातमो (मदुरे के०) मधुर रस ए सात नाम कर्मनी प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति, (दस के०) दश कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी. तेनो अबाधाकाल एक हजार वर्ष एटले कालें हीन कर्मदल निषेक रसोदय काल जाणवो.

तेवार पठी नामकर्मनी प्रकृतिना एकेका वर्ण तथा एकेका रसें प्रत्येक (दो समुसमदिया के०) अठो कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति वधारीयें. (तेहालिहं बिलाईणं के०) ते केम हालिध्वर्ण अने आम्ल रस, ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति साडा बार कोडाकोडी सागरोपमनी ते साडा बारशें वर्ष अबाधा कालें हीणी स्थिति रसोदय काल जाणवो. तथा रक्तवर्ण अने कषायेलो रस ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनी पंदर कोडाकोडी सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति ते पंदरशें वर्ष अबाधाकालें हीणी कर्मदलनी स्थितिनो रसोदय काल जाणवो. तथा पीतवर्ण अने कटुक

रस, ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनी साडासत्तर कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति अने साडा सत्तरशें वर्ष अबाधा कालें हीन स्थिति कर्मदलिकनो निषेक काल जाणवो. श्यामवर्ण अने तीक्ष्ण रस ए बे नामकर्मनी प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थिति बंध, वीश कोडाकोडी सागरोपम बे हजार वर्ष अबाधाकालें हीन कर्म स्थितिकर्म निषेककाल जाणवो ॥ इति समुचयार्थः ॥ १९ ॥

दस सुह विहगइ उच्चे, सुर डग थिर ढक पुरिस रइ हासे ॥

मिच्चे सत्तरि मणु डग, इन्ही साएसु पसरस ॥ ३० ॥

अर्थ—(दस के०) दश कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्टस्थितिबंध, एटली प्रकृतिनो होय, तेनां नाम कहे ठे. (सुहविहगइ के०) एक छुजविहायोगति, (उच्चे के०) बीजी उच्चैर्गोत्र अने (सुरडग के०) त्रीजी देवगति, चोथी देवानुपूर्वी तथा (थिरढक के०) एक स्थिरनाम, बीजी छुजनाम, त्रीजी सौजाग्य नाम, चोथी सुस्वरनाम, पांचमी आदेयनाम, ढकी यशःकीर्तिनाम. एवं दश प्रकृति थइ तथा अगीआरमी (पुरिस के०) पुरुषवेद मोहनीयनी प्रकृति, बारमी (रइ के०) रतिमोहनीय, तेरमी (हासे के०) हास्यमोहनीय, ए तेर प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति होय. तिहां अबाधाकाल एक हजार वर्षनो होय तेटला वर्षें हीन दश कोडाकोडी सागर ए तेर प्रकृतिनुं कर्मदल निषेक काल उर्द्धना अपवर्तनाविना स्वाभाविक वेदनकाल जाणवो. तेमध्ये अपवर्तनायें घटे उर्द्धनोयें तथा संक्रमणादिकें करी अधिक स्थिति पण होय. एवं व्याशी प्रकृतिनी स्थितिनुं कालमान कहुं.

अने (मिच्चेसत्तरि के०) मिष्यात्वमोहनीयनी उत्कृष्टी स्थिति सीत्तर कोडाकोडी सागरोपम सात हजार वर्ष, अबाधाकालें हीन उत्कृष्टस्थिति कर्म निषेककाल जाणवो अने सम्यक्त्व मोहनीयनो स्थितिबंध नथी, तेथी स्थितिबंध तथा अबाधा काल न कह्यो. अने उदयकाल ठाशठ सागरोपम पूर्वकोडी पृथक्त्वे अधिक जाणवुं. तथा मिश्रमोहनीयनो निषेककाल अंतर मुंहूर्त्तनो, एटले पञ्चाशी प्रकृति थइ.

तथा (मणुडग के०) मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, (इन्हीसाएसु के०) स्त्रीवेद अने शातावेदनीय, ए चार प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति (पसरस के०) पंदर कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण पंदरशें वर्ष अबाधाकाल ते पंदरशें वर्ष हीन कर्मस्थिति कर्मनिषेक काल जाणवो. अर्हींआं जो पण मनुष्यानु पूर्वानो उदय तो वक्रगतियें बे त्रण समय लगें होय, तो एटलो निषेक काल केम संजवीयें? तथापि एनो उदय मनु

प्यगतिमर्ध्वं संक्रमण करणें करी संक्रमावी जोगवे, तेथी दलिक रचना विशेष नि
पेककाल जाणवो. एवं नेव्याशी प्रकृति कही ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३० ॥

जय कुह्न अरइ सोए, विउवि तिरि उरल निरय डुगनीए ॥
तेअपण अधिर ढके, तसचउ थावर इग पाणिदि ॥ ३१ ॥

अर्थ—(जय के०) जयमोहनीय, (कुह्न के०) जुंगुप्ता मोहनीय, (अरइसो
ए के०) अरति मोहनीय. शोकमोहनीय, (विउवि के०) वैक्रियशरीर, वैक्रिय
अंगोपांग तथा मतांतरें वैक्रियसंघातन वैक्रियवैक्रियबंधन, वैक्रियतैजसबंधन,
वैक्रियकार्मणबंधन, वैक्रियतैजसकार्मण बंधन, ए वैक्रिय सप्तक कहीयें. जे न
एणी वैक्रिय शरीर बांधतां ए साते जेली बंधाय. एवं अगीअर थइ तथा बार
मी (तिरि के०) तिर्यचगति, तेरमी तिर्यचानुपूर्वी, ए तिर्यचदिक (उरल के०)
चौदमुं औदारिक शरीर, पंदरमुं औदारिक अंगोपांग, ए औदारिकदिक तथा म
तांतरें औदारिकसंघातन, औदारिकऔदारिकबंधन, औदारिकतैजसबंधन, औदा
रिककार्मणबंधन, औदारिकतैजसकार्मणबंधन, ए औदारिक सप्तक जीजें केम के ए
औदारिक शरीर बांधतां साते सार्थबंधाय. एवं वीश प्रकृति थइ. (निरयडुग के०)
नरकदिक, (नीए के०) नीचैर्गोत्र (तेअपण के०) एक तैजस, बीजुं कार्मण, त्रीजुं
अगुरुलघु, चोयुं निर्माण अने पांचमुं उपघात, ए तैजस पंचक, मतांतरें तैजस
संघातन, कार्मणसंघातन, तैजसतैजसबंधन, कार्मणकार्मणबंधन, तैजसकार्म
ण बंधन. ए जेलतां तैजस दशक थाव. एवं तेत्रीश प्रकृति थइ तथा (अधिरढ
के के०) अधिरनाम, अद्युजनाम, दौर्जाग्यनाम, डुःस्वरनाम, अनादेयनाम अ
ने अयशअकीर्तिनाम, ए अधिरषट्क. एवं उंगणचालीश प्रकृति थइ. (तसचउ
के०) त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, अने प्रत्येकनाम ए त्रसचतुष्क. एवं त्रैता
लीश प्रकृति थइ. (थावर के०) स्थावरनाम, (इग के०) एकेंडियजाति, (प
णिदि के०) पंचेंडियजाति, ए ढेंतालीश प्रकृति आ गायामां कही ॥ इति ॥ ३१ ॥

नपु कुखगइ सासचउ, गुरु कखड रुक सीय डुगंधे ॥

वीसं कोडा कोडी, एवइआ बाह वास सया ॥ ३२ ॥

अर्थ—(नपु के०) नपुंसकवेद मोहनीय, (कुखगइ के०) अद्युजविदायो
गति, (सासचउ के०) उद्वासनाम, उपघातनाम, आतपनाम अने पराघातना

म, ए उच्चासचतुष्क, (गुरु के०) गुरुस्पर्शनाम, (कर्कड के०) कठोर स्पर्शना
म, (रुक् के०) रुक्स्पर्शनाम, (सीय के०) शीतस्पर्शनाम, (डुगंधे के०) ड
र्गंधनाम. एवं अगीआर प्रकृति अने पूर्वली गाथामध्ये ठेंतालीश प्रकृति कही ठे.
एम सर्व मली सत्तावन प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध काल (वीसकोडाकोडी के०)
वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण जाणवो. ए उत्कृष्ट संक्वैरें वर्ततो मिथ्यात्वी
जीव, बांधे, तेमध्ये पांच प्रकृति मोहनीयनी एक गोत्रनी अने शेष एकावन प्र
कृति नामकर्मनी जाणवी. तिहां अबाधाकाल बे हजार वर्षनो होय. त्यां
लगें तेकर्म रसथी तथा प्रदेशथी उदय न आवे अने जो संक्रम करणे करी तुल्यप्र
कृति समजातिय मध्ये संक्रमावी उदय आणे, तो एक बंधावलिका बीजी संक्रमा
वलिका व्यतित थये थके उदय आवे. जेम अनंतानुबंधीआनी विसंयोजना क
री उपशांत मोहथी अक्षाक्षये पडे तो कोइ एक प्रथम गुणगणे आवे. त्यां मिथ्या
त्व प्रत्ययें अनंतानुबंधीआ चार बांधे तेनी बंधावली गये थके अप्रत्याख्यानादिक
जे पूर्वेबांधेले तेमांहे संक्रमावी, वेदे तथा अपवर्त्तनादिक करणें करी, अल्पकालकरी
पण वेदे, तथा अबाधा अतिक्रमे थके गायना पूढनी पेरें प्रथम बहु विस्तीर्णदल
रचना, बीजे समयें विशेष हीन एम समय समय विशेष हीन हीन करतां एरीतें
अर्धमात्रस्थिति, प्रातें अर्धदल होय. ए रीतें जे उदयावलिकानुं रचतुं, ते निषेक
कहीयें. तेनो काल ते निषेक काल जाणवो. ते जे कर्मनी जेटली स्थिति, ते म
ध्येथी अबाधाकाल काढतां शेष रहे, ते निषेककाल कहीयें (एवइआबाद्वासस
या के०) जे कर्मनी जेटला कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, एटला शइकडा व
र्ष, ते कर्मनी अबाधा जाणवी. ते जघन्य अबाधाकालनी स्थिति अंतर मुहूर्त्तनी ठे ति
हां कंमक एटले अंगुलीनो असंख्यातमो जाग तेना जेटला आकाश प्रदेश तेटला
समय प्रमाण जे कर्मस्थिति विशेष, तेटली स्थितिविशेष अतिक्रमे थके प्रथ
म जे उत्कृष्ट अबाधाकालनुं स्थानक दंतुं, ते अबाधा कालना स्थानक मांहेथी
एक समय हीन अबाधा कालनुं बीजुं स्थानक थाय. एम वली पण कंमक मा
त्र हीन कर्मस्थिति होय थके समय हीन अबाधा कालनुं त्रीजुं स्थानक थाय
एम कंमक कंमक मात्र स्थितिनी हाणीयें समय समय हीन अबाधाकालनुं पण
स्थानक थाय. एम अबाधाकालनी उत्कृष्ट स्थिति थकी उतरतां जघन्य स्थिति
पर्यंत कंमकसंख्या अने अबाधा कालनां स्थानक यावत् तुल्य थाय
जे मूलप्रकृतिनी तथा उत्तर प्रकृतिनी जेटली कोडाकोडी सागरोपमनी

स्थिति होय ते प्रकृतिने तेदला शत वर्षानो अबाधाकाल होय. एटले बांध्या प
ढी पण एटला काल जगें ते कर्म उदय न आवे, तेने अबाधाकाल कहीरें. त
या पोत पोताने अबाधाकालें हीन जे कर्मस्थिति, ते कर्मनो निपेक कहेतां जो
ग्य काल होय. निपेक ते कर्म उदय कालें प्रथम बहु प्रदेशाय सामटो उदय
आवे अने पढी समय समय हीन हीनतर आय. यावत् कर्मनी स्थिति ते ठेहले
समयें अत्यंतम उदय होय. एने निपेक कहीरें ए सत्तावन प्रकृति तथा आगल
नेव्याशी प्रकृतिनुं उत्कृष्ट स्थितिवंध कसुं अने देवायु तथा नरकायु ए बे प्रकृति
नुं उत्कृष्ट स्थितिवंध तेत्रीश सागरोपम प्रमाण मूल प्रकृति मध्यें कसुंठे तेहीज
आर्हीपण लेबुं एम सर्व मली एकशोने अडतालीश प्रकृतिनुं उत्कृष्ट स्थिति
बंध कसुं ॥ इति जावार्थः ॥ ३२ ॥

गुरु कोडि कोडि अंतो, तिन्नाहाराण निन्नमुह् बाहा ॥
॥ अथ जघन्य स्थितिवंधः ॥ लहु ठिइ संख गुणूणा, नर
तिरियाणाव पद्धतिगं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(गुरुकोडिकोडिअंतो के०) उत्कृष्ट स्थितिवंध अतःकोडाकोडी सागरो
पम कालनो (तिन्नाहाराण के०) तीर्थकर नामकर्म तथा आहारकशरीर, आहा
रकअंगोपांग, आहारकसंघातन, आहारक आहारकबंधन, आहारकतैजस बंधन,
आहारककर्मण बंधन अने आहारक तैजसकर्मण बंधन ए आहारक सप्तक.
एवं नामकर्मनी आठ प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति कोडाकोडी सागरोपम मांहे होय.
अर्हीआं शिष्य पूढे ठे के, हे जगवन् ! कोडाकोडी सागरोपम जिननामनो काल
कह्यो एटलो काल तो, जीव तीर्थचगतिमां गया विना न रहे. अने तीर्थचगतिनां
जीवमध्ये तो जिननामनी सत्ता पण निपेधि ठे, तो एटलो काल क्यां पूर्ण करे ?
तथा तीर्थकर नामकर्म तीर्थकरजव थकी अर्वाक त्रिजे जवे बांधे ठे एम पण क
सुं ठे, ते पण केम घटे ? अर्हीआं गुरु उत्तर कहे ठे के “ जं मिह्निकाइअ ति
ठं, निरय जवे तनिसेहिअ संतं ॥ इयरंमि नब्बिदोसो, उवट्टणा वट्टणामक्का ॥ १ ॥ ”

ए गाथानो अर्थ कहे ठे के, तीर्थच मध्येजे जिननामनी सत्ता निपेधि तथा त्रिजे जवें
बंधाय, तेतो निकाचित जिननामनी अपेक्षार्थें जाणवो. तीर्थकरजव पहेलो. त्री
जा जवें निकाचे, ते कर्म सकल करणने असाध्य होय अने जे निकाचित न हो
य, ते कर्मनी तो अपवर्त्तना कहेतां स्थितिरसनुं घटावबुं अने उवर्त्तना एटले

स्थितिरसनुं वधारनुं तथा संक्रम एटले पर प्रकृति मांहे संक्रमावतुं, प्रत्या उवे जनुं इत्यादिक करण साथ्य होय. ते जिननाम घणा नव पहेलो पण बंधाय. तथा अंतःकोडा कोडी सागरोपम स्थिति पण अपवर्तनार्थे घटावे, तथा पर प्रकृति मांहे संक्रमावतां कांइ दूषण नथी तथा ए आठ कर्म प्रकृतिनो (जिन्नमुह वाहा के०) अबाधाकाल अंतर मुदूर्त्त ठे. ते नणी जिननाम जेणे बाध्युं होय, तेने अंतर मुदूर्त्त पठी जिनादिकनो प्रवेशोदय थाय, तेथी करी तेनो अन्यजीवनी अपेक्षार्थे महीमा विशेष होय. पूजा महत्वनी वृद्धि होय. एम एकशोने उप न्न प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति कही.

हवे ग्रंथगौरव टालवा नणी ए आठ प्रकृतिनी जघन्य स्थिति अर्हीज कहे ठे. जि ननाम अने आहारक सप्तक, एवं आठ प्रकृतिनी (जद्भुतिइसंखगुणूणा के०) जघु एटले जघन्य स्थिति उत्कृष्ट स्थितिथकी संख्यात गुणी हीणी जाणवी जे नणी अंतर मुदूर्त्तनी परें अतःकोडाकोडीना पण असंख्याता जेद होय, जे नणी संज्ञीया पंचे द्विय पर्याप्तानी स्थितिबंधथी अधिक उत्कृष्टी स्थिति साधु बंध जगें जेटला स्थितिबंध, ते सर्व अंतःकोडा कोडी सागरोपम प्रमाण कहीर्ये,

हवे शेष बे आयुनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहे ठे. (नरतिरियाणाउपल्लतिगं के०) एक मनुष्यनुं आयु अने बीछुं तिर्थेचनुं आयु, ए बेनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, त्रण पळ्योपम जाणवो. जे नणी प्रथम आरे तथा देवकुरु अने उत्तर कुरुना मनुष्यनुं त्रण पळ्योपमायु ठे. तेनो अबाधाकाल उत्कृष्टथी तो पूर्वकोडीना त्रीजा नाग प्रमाण. जे नणी संख्यातावर्षार्थुना मनुष्य विना अन्य गतिथी चवी युगलीयुं मनुष्य न थाय ते नणी तेत्रीशलाख, तेत्रीश हजार, त्रणर्जे ने तेत्रीश, पूर्व अने एक पूर्वनो त्रीजो नाग उपर एटलो उत्कृष्ट अबाधाकाल, ते त्रण पळ्योपमथी अधिक अबाधाकाल जाणवो. ए एकशो अज्ञवन प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कद्यो अने आठ प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध काल कद्यो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३३ ॥

हवे लाघवें आयुर्बंध एकेंदियादिकनुं कहे ठे.

इग विगल पुव्व कोडी, पलियाऽ संखंसआउ चउ अमणा ॥

निरुवक्रमण ठमासो, अबाह सेसाण नवंतंसो ॥ ३४ ॥

अर्थ—(इगविगलपुव्वकोडी के०) एकेंदिय जीवने तथा विकर्जेदिय कहेता बें दिय, तेदिय, चौरिंदिय, जीवने परनवायु उत्कृष्ट पूर्वकोडी प्रमाण बंधाय पण पळ्योप

म सागरोपम मान आयु न बांधे, केमके एकेंद्रियादिक जीव जे ठे, ते देव नारकी मध्ये तथा असंख्यातवर्षायु वाला मनुष्य तिर्यंचनी गति मध्ये पण अवतरे न हीं, तेथी तत्प्रायोग्य आयु न बांधे तथा (पलियाऽसंखंसंख्यावचनमण के०) पल्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण देवायु, तिर्यंगायु, नरकायु अने मनुष्यायु, ए चार आयुष्य असंखीया पंचेंद्रिय तिर्यंच बांधे केमके असंखीया पंचेंद्रिय तिर्यंच चारे गति माहें अवतरे तो खरा तथापि देवो मध्ये तो श्रुवनपति तथा व्यंतर मध्येज जाय, परंतु ज्योतषी तथा वैमानिक मध्ये न जाय अने नरकगति मध्ये पण प्रथम नरकना त्रण पाथडा लगे जाय परंतु आगले न जाय तेमाटे पल्योपम ना असंख्याशषी अधिक आयु न बांधे. तेथी तेने अबाधाकाल पूर्वकोडी त्रिजाग उत्कृष्टो जाणवो तेदजाकाले हीन पल्यासंख्यांश प्रमाण निषेककाल जाणवो.

तथा (निरुपक्रमण ठ मासो के०) निरुपक्रमायुना धणी एवा देव, नारकी तथा युगलीया मनुष्य अने तिर्यंच जेनुं आयु अथ्यवसाय प्रमुख आवलिये करी घटे नहीं तेवा आयुना धणी जे देवतादिक ठे, ते परजवायुनो बंध निजजवायु ठम्मास ठते बांधे तेथी तेने परजवायुनो ठ महीना अबाधाकाल जाणवो. तथा मतांतरें युगलिया पण पल्योपमनो असंख्यातमो जाग शेष निजजवायु अके प रजवायु बांधे तेथी तेने पल्यासंख्यांश काल प्रमाण अबाधाकाल जाणवो तथा जगवतीनी वृत्तिमध्ये नारकी अंतरमुहूर्तायु शेष परजवायु बांधे. एम कहुं ठे. ते थी नारकीने जघन्य अबाधाज होय.

हवे निरुपक्रमायुना धणी मनुष्य अने तिर्यंच मुकीने ते विना (अबाहसे साणजवंतंसो के०) शेष याकर्ता जे सोपक्रमायुना धणी मनुष्य तथा तिर्यंच ते परजवायुबंध पोताना जवना आयुनो त्रीजो जाग शेष हुंते तथा त्रीजा ना गनो त्रीजो जाग शेषहुंते एटले स्वजवायुने नवसें जागे अथवा तेने पण त्रीजे जागे एटले सत्तावीशमे जागे अथवा तेने पण त्रीजे जागे एटले एक्याशीमे जागे परजवायु बांधे तेथी तेनी अबाधा पण तेदलीज होय. एम उत्कृष्ट अ बाधा सहित उत्तरप्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति कही ॥ इति ॥ ३४ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध कहे ठे.

लहु ठिइ बंधो संजलण, लोह पण विग्घ नाण दंसेसु ॥

जिन्न मुहुत्तं तेअ ढ, जसुच्चे बारसय साए ॥ ३५ ॥

अर्थ—(लघुविबंधो के०) लघु एटले जघन्य स्थितिबंध ते (संजलणलोह के०) एक संज्वलनलोचनुं नवमा गुणगणाने पांचमें जागें चरमबंधें होय, तथा (पणविग्घ के०) पांच अंतरायकर्मनी प्रकृति अने (नाण के०) पांचज्ञानावरणीयनी प्रकृति तथा (दंसेसु के०) चार दर्शनावरणीयनी प्रकृति एवं चौद प्रकृतिनुं जघन्य बंध सूक्ष्मसंपराय गुणगणाने प्रांत समयें होय. जे जणी ए पंदर प्रकृतिना बंधकमांहे एहिज अत्यंतविद्युदि ठे अने ए पंदरनी अतिविद्युदपणें जघन्यस्थिति बंधाय, तेजणी (निन्नमुहुत्तंते के०) चरम बंध अंतर मुहुत्तनो होय. अने एनो अबाधाकाल पण अंतरमुहुत्तनो जाणवो जेजणी अंतर्मुहुत्त स्थितिबंध कालनो अंतरमुहुत्तथी संख्यातगुण हीन एवी अंतरमुहुत्तनुं अबाधाकाल होय (अठ के०) आठ अंतर मुहुत्त प्रमाण जघन्यस्थितिबंध ते (जसुचे के०) एक यशःकीर्तिनाम अने बीजो उच्चैर्गोत्र, ए बे प्रकृतिनो पण जघन्य स्थितिबंध आठ मुहुत्त प्रमाण ते सूक्ष्मसंपराय नामे दशमां गुणगणाने प्रांतें एनो चरमबंध होय एनो अबाधाकाल पण जघन्य जाणवो.

अने (बारसयसाए के०) सातवेदनीयनो जघन्यस्थितिबंध बार मुहुत्तनो तथा सिद्धांत मध्ये एक मुहुत्तनो पण कहेलो ठे. तथा अबाधाकाल अंतर मुहुत्तनो जाणवो अने ए सातानो तथा उच्चैर्गोत्रनो उदय चौदमा गुणगणालगें होय ॥३५॥

दो इग मासो पस्को, संजलण तिगे पुमठ वरिसाणि ॥

सेसाणु क्कोसाठ, मिञ्चत्त छिइए जलधं ॥ ३६ ॥

अर्थ—(दोइगमासोपस्को के०) बे मास, एक मास अने पकूनो जघन्यस्थिति बंध, अनुक्रमें (संजलणतिगे के०) संज्वलनत्रिकनो जाणवो. एटले संज्वलनाक्रोधनो जघन्य स्थितिबंध, नवमा गुणगणाने बीजे जागें चरम बंधें बेमास प्रमाण होय तथा संज्वलना माननो एक मासनो जघन्य बंध नवमा गुणगणाने बीजे जागें चरम बंधें होय. तथा संज्वलनी मायानो जघन्यस्थितिबंध, एक पखवाडानो नवमा गुणगणाने चोथें जागें चरम बंधें होय एने पोतपोताना बंधकमांहे एहिज अतिविद्युदिनुं अध्यवसाय स्थानक ठे ते जणी. तथा एनी अबाधा पण अंतर मुहुत्त प्रमाण ठे ते अबाधायें हीन जघन्यस्थितिनो निषेक काल जाणवो. एरीतें संज्वलना क्रोध मान, माया, ए त्रणनी जघन्यस्थिति अनुक्रमें कही.

अने (पुमच्चरिसाणि के०) पुरुषवेदनो जघन्य स्थितिबंध नवमा गुणगणा ने प्रथमनागे चरमबंध आठ वर्षनो होय, एना बंधकमांहे एहिज अतिविद्युदि ठे. एनी जघन्य अबाधा अंतर मुहूर्त्तकाल प्रमाण ठे. ए बावीश प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध कह्यो, तथा आयु चार, वैक्रिय षट्क, जिननाम, अने आहार कदिक, ए तेर प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध, स्वामीत्व प्रस्तावे जूदो कहेरो. एवं पां त्रीश प्रकृति विना शेष पञ्चाशी प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध कहेवाने करण कहेठे. पञ्चाशी प्रकृतिनी जघन्य स्थिति एकेंद्रिय जीवने विषे प्राप्यमाणठे ते कहे ठे (सेसाणुकोसाठ के०) शेष प्रकृतिउनो जे उत्कृष्ट स्थितिबंध ठेते (मिह्वत्तिएज लदंके०) मिथ्यात्व मोहनीयनी उत्कृष्ट स्थिति साथें वेंचता जे जाचे, ते जघन्य स्थिति कहेवी एटले ज्ञानावरणीयादिकनी उत्कृष्टी स्थिति त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनीठे ते मिथ्यात्व मोहनीयनी उत्कृष्टी स्थिति सीतेर कोडाकोडी सागरोपमनीठे तेणे जाग देतां, पूर्ण सागरोपम नावें तेशी एक सागरोपमना सातजाग करीयें, तेवारे त्रीश कोडाकोडी सागरोपमना बरो ने दश सातीआ जाग थाय. ते शीतेर कोडाकोडी साथें वेंचतां त्रण जाग थावे अने वीश कोडाकोडीना सातीआ एकशो चालीश जाग थाय तेने सीतेर कोडाकोडी साथें वेंचता सातीआ बे जाग थावे एटले ए केंद्रिय ने ज्ञानावरण पांच, दर्शनावरण नव, अंतराय पांच, अने अशातावेदनीय ए क एवं वीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, सागरोपमना सातइथा त्रण जाग जा एवा तथा शोल कषायना सातइथा चार जाग, अने मिथ्यात्व मोहनीयनो एक साग रोपम संपूर्ण जाणवो. एवं साडत्रीश प्रकृति थइ.

तथा त्रसचतुष्क, अस्थिर षट्क, औदारिकदिक, तिर्यंचदिक, एकेंद्रियजा ति, पंचेंद्रियजाति, कुखगति, निर्माण, आतप, उद्योत, स्थावर, तैजस, कर्मण, अगुरुलघु, उपघात, उन्नास, हुंफसंस्थान, ठेवहुं संघयण, कृष्णवर्ण, तीक्ष्णरस, अशुनस्पर्शी चतुष्क, दुर्गंध, अरति, शोक, नय, जुगुप्सा, पराघात, अने नपुंसकवेद ए एकतालीश प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति वीश कोडाकोडीनी ठे तेने मिथ्यात्वनी स्थिति साथें वेंचता सातइथा बे जागनो बंध होय. एवं अछोतेर प्रकृति थइ.

सूक्ष्मत्रिक तथा विकलजाति त्रिक, ए ठ प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति अठारकोडा कोडी सागरोपमनी ठे तेने मिथ्यात्व स्थिति साथें वेंचतां एक सागरोपमना पां त्रीश जाग करीयें. एवा नव जागनो बंध होय एवं चोराशी प्रकृतिथइ

स्त्रीवेद, मनुष्यदिक, शातावेदनीय, ए चार प्रकृतिनो बंध एक सागरना चौद

जाग करीये, एवा त्रण जाग अथवा सातइओ दोढ जाग एवं अछासी प्रकृति थइ.

स्थिर, शुन, शुनग, पुंवेद, सुस्वर, आदेय, यशःकीर्त्ति, हास्य, रति, शुनस्वगति, प्रथम संघयण, प्रथमसंस्थान, सुगंध, शुक्लवर्ण, मिष्टरस, शुनस्पर्शी चतुष्क, ए ओ गणीश प्रकृतिनी दश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिठे ते मिथ्यात्व मोहनीये वेंचतां बंध सातइठे एकजाग होय पीतवर्ण, ध्याम्बररस, ए बे प्रकृतिनो बंध, अठावीशीआ पांच जाग, तेवार पढी एकेका वरुं अने एकेका रसें, अछावीशीठे एकेक जाग व धारतां जहुं. एटले रक्त वर्ण अने कषायजा रसें अछावीशीआ ठ जाग एम शेष वर्ण तथा शेष रसनें विषे अनुक्रमे कहेवो एवं ११५.

तथा बीजे संघयणे अने बीजे संस्थाने पांत्रीशीआ ठ जाग, तथा त्रीजे संघ यणे अने त्रीजे संस्थाने, पांत्रीशीआ सात जाग, तथा चोथे संघयणे अने चोथे संस्थाने, पांत्रीशीआ आठ जाग, तथा पांचमेसंघयणे अने पांचमे संस्थाने, पांत्री शीआ नव जाग, ए एकेंडियने उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्टस्थितिवंध सामान्ये कह्यो. केम के एकेंडियने एकशोने नव प्रकृतिनो बंध, ठे तेमध्ये नरायुं तथा तिर्यगायु नो उत्कृष्टस्थिति बंध, पूर्वे कोडीनुं अने शेष एकशोने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिवंध अहीं कह्यो. ए एकशोने सात प्रकृति मध्ये पण पूर्वे बावीश प्रकृतिनो जघन्य स्थितिवंध सामान्य पर्णे कहुं ठे, अने शेष पच्चाशी प्रकृतिनो जघन्य स्थि तिवंध कहे ठे. एवं एकशो ने त्रेवीश प्रकृति थइ.

अहींआं वर्णादिक सविस्तर वीश प्रकृतिनो बंध कह्यो, तेथी एकशो ने त्रेवी श प्रकृति थइ परंतु ए वर्णादिक सामान्ये चार जेतां एकशो ने सात प्रकृति था य. तेमाहेली ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, अंतराय पांच, संज्वलना चार, पुंवेद एक, शातावेदनीय, उच्चैर्गोत्र, अने यशःकीर्त्ति, ए बावीश प्रकृतिनो जघन्य स्थितिवंध, सूकीने तेथी शेष रहीजे पच्चाशी प्रकृति तेनो जघन्यस्थितिवंध स्वा मी एकेंडिय ठे. ते पच्चाशीप्रकृतिनो एकेंडियने विषे उत्कृष्ट स्थितिवंध जे कह्यो तेने अक्षापत्योपमने असंख्यातमें जागे हीन करतां, एकेंडियने विषे जघन्य स्थि तिवंध थाय ते कहे ठे. निडापांच, तथा अशाता, वेदनीय ए ठ प्रकृतिनो जघन्यस्थितिवंध सातीआ बे जाग, पत्योपमने असंख्यानमें जागे हीणा जा एवा तथा मिथ्यात्वमोहनीयनो एक कोडाकोडी सागरोपम पत्योपमने असंख्या तमें जागे हीन जाणवो एम जे कर्म प्रकृतिनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृ ष्टी स्थिति ठे, तेनी जघन्यस्थिति, सातीआ बे जाग जेनी दश कोडाकोडीनी उत्कृष्टी

स्थिति तेनी जघन्यस्थिति सातीआो एक जाग अने जेनी पंदर कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति तेनी जघन्यस्थिति चौदीआा त्रण जाग ते सर्व पद्योपमने असंख्यातमें जागे कणा जाणवा तेमज जेनी अठार कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्टस्थिति, तेने सागरोपमना पांत्रीशीआा नव जाग पद्योपमना असंख्यातमें जागे कणा जाणवा. ए रीते पच्चाशी प्रकृतिनो एकेंडियने विषे जघन्यस्थितिबंध जाणवो ॥ इति ॥ ३६ ॥

अथ मुक्तोसो गिंदिसु, पलियाऽ संखंस हीण लहु बंधो ॥

कमसो पणवीसाए, पन्ना सय सहस संगुणित ॥ ३७ ॥

अर्थ—(अथमुक्तोसोगिंदिसु के०) ए अनंतरोक्त एकेंडियने एकशो ने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, ते (पलियाऽसंखंसहीणलहुबंधो के०) पद्योपमने असंख्यातमें जागे हीणो करता एकेंडियने एकशो सात प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध थाय. हवे प्रसंगागत एकेंडियना स्थितिबंध कह्या. पत्ती त्रण विकर्षेडिय तथा असंक्षिपंचें डियने उत्कृष्ट तथा जघन्य स्थितिबंध, कहे ठे. (कमसो के०) अनुक्रमें (पण वीसाए के०) पचवीश गुणो बेंडियने एटले एकेंडियने जे एकशोने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कह्यो, तेथी पच्चीशगुणो बेंडियने उत्कृष्ट स्थितिबंध होय, एट ले, ज्ञानावरणीयादिक वीश प्रकृतिनो सागरोपमना सातइथा पच्चोत्तरजाग. एम व शसागरोपस्थितिवाला कर्मेना सातइथा पचीश जाग, एम शोल कषायना सातइथा शो जाग, मिथ्यात्वमोहनीयनो बंध पच्चीश सागरोपम, एम जेनी उत्कृष्ट स्थिति वीश कोडाकोडी सागरोपमनी तेने सात सागरोपमने सातइठ एक जाग उपर, जे नी पंदर कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्टस्थिति तेने सागरोपमना चौदिया पच्चोत्तर जाग एटले पांच सागरोपमने चौदिया पांच जाग उपर, जे कर्मेनी अठार कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना पांत्रीशीआा बशेने पच्चीश जाग एटले व सागरोपमने पांत्रीशीआा पंदर जाग उपर जाणवा. ए रीते बेंडियने एकशो ने सात प्रकृतिनो उत्कृष्टस्थितिबंध जाणवो.

हवे तेंडियनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहे ठे. जेटलो एकेंडियने एकशो ने सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कह्यो, तेथी (पन्ना के०) पच्चाशगुणो अने बेंडिय नास्थितिबंध थकी बमणो जाणवो एटले ज्ञानवरणादिक वीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध एकवीशसागरोपमने सातइथा त्रण जाग उपर, तथा मिथ्यात्व मोहनीय नो पच्चाश सागरोपम एम सर्व प्रकृतिने विषे तेंडियनो उत्कृष्टस्थितिबंध जाणवो.

हवे चौरिंदियनो उत्कृष्ट स्थितिबंध ते जेटलो एकेंडियने एकशोने सात प्रकृतिनो स्थितिबंध कह्यो ते थकी (सय के०) शो गुणो अने बेंडियना स्थितिबंध थकी चार गुणो तथा तेंडियना स्थितिबंध थकी बमणो जाणवो एटले मिथ्यात्वमोह नीयनो एकशो सागरोपम, तथा ज्ञानावरणादिक वीश प्रकृतिनो बेतालीश सागरोपमने सातइया ठ जाग उपर, शोल कषायना सत्तावन सागरोपमने साताइठ एक जाग, एम जे कर्मनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति होय तेनुं अछवीश सागरोपमने सातइया चार जाग उपर स्थितिबंध होय एम सर्वत्र लेवुं.

अने असन्नीया पंचेंडियनो उत्कृष्ट स्थितिबंध एकेंडियना बंध थकी (सहस संशुषिठ के०) हजार गुणो जाणवो अने चौरिंदियना बंध थकी दशगुणो जाणवो एटले मिथ्यात्वमोहनीयना हजार सागरोपम, शोलकषायना सागरोपमना सातइया चार हजार जाग एटले पांचशो एकोत्तर सागरोपमने सातइया त्रण जाग उपर, तथा ज्ञानावरणादिक वीश प्रकृतिना सातइया त्रण हजार जाग तेना चार शें अछवीश सागरोपमने सातइया चार जाग उपर, एम जे कर्मनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना बे हजार जाग एटले बशें पच्चाशी सागरोपमने सातइया पांच जाग उपर जाणवा. जे प्रकृतिनी दश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना हजार जाग एटले एकशो बेतालीश सागरोपमने सातइया ठ जाग उपर, तथा जे कर्मनी पंद्र कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति तेना बशें चौद सागरोपमने सातइया बे जाग उपर जाणवा. एम उत्कृष्टस्थिति असन्नीठ पंचेंडिय बांधे. वैक्रिय शरीर, वैक्रिय आंगोपांग, देवगति, देवानुपूर्वी, नरकगति, नरकानुपूर्वी. एवं ठ प्रकृति एनी जघन्यस्थितिबंधनो स्वामी पण असन्नीठ पंचेंडिय जाणवो. जेजणी एकेंडिय तथा विकर्षेंडियने एनो बंध नथी तेथी देवदिकनो बंध मूल दश कोडाकोडी सागरोपमनो ठे. ते मिथ्यात्वनी स्थितियें वैचतां सातइठ एक जाग आवे, तेने हजार गुणो करतां सातइया हजार जाग आय. तेना एकशो बेतालीश सागरोपम उपर सातइया ठ जाग आवे, तेमज वैक्रियदिक अने नरकदिकना सातइया बे हजार जाग आय तेना बशें पच्चाशी सागरोपमने सातइया पांचजाग उपर स्थिति जाणवी तेवली पद्योपमने असंख्यातमें जागें उणी करीयें तेवारें ए ठ प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध होय अने चार आयुनो पद्योपमना असंख्यातमां जाग प्रमाण बंध जाणवो एटले एकशोने शोल प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कह्यो. ॥ ३४ ॥

हवे विकर्षेडिय तथा असंज्ञीया पंचेडियनो जघन्य स्थितिबंध कहे ठे.

विगल असन्निषु जिष्ठो, कण्ठिठं पल्लससंख जागुणो ॥

सुर निरयाउ समादस, सहस्स सेसाउ खुहु नवं ॥ ३८ ॥

अर्थ—(विगलअसन्निषुजिष्ठो के०) विकर्षेडिय अने असंज्ञी पंचेडियनो जे उत्कृष्ट स्थितिबंध ठे ते थकी (कण्ठिठं के०) जघन्य स्थितिबंध (पल्लससंखजागुणो के०) पल्योपमने असंख्यातमे जागे कणो एक आयु वर्ज्जने शेष प्रकृतिनो बंध जाणवो एटले बेंडियने ज्ञानावरणादिक वीश प्रकृतिना सातइया पञ्चोतेर जाग ठे ते मांथी पल्योपमने असंख्यातमें जागे कणो जघन्य स्थितिबंध जाणवो तेंडियने साती आ दोढशो जागठे ते पल्योपमने असंख्यातमे जागे कणो करतां जघन्य स्थितिबंध थाय चौरिंडियने सातीआ त्रणशो जागठे तेमांथी पल्योपमने असंख्यातमें जागे उणो जघन्य स्थितिबंध जाणवो. एम जे प्रकृतिनो जेटलो उत्कृष्ट स्थितिबंध कह्योठे तेथी पल्योपमने असंख्यातमे जागे कणो जघन्य स्थितिबंध जाणवो.

हवे आयुनो जघन्य स्थितिबंध कहे ठे तेमध्ये (सुरनिरयाउसमादससहस्स के०) देवायु तथा नरकायु, ए बे आयुनो जघन्य स्थितिबंध समान ठे केमके देवता तथा नारकी दश हजार वर्ष पर्यंत मरण नपामें माटे दश हजारवर्ष जाणवुं तथा दशहजार वर्ष थकी समय समय अधिक करतां यावत् तेत्रीश सागरोपम एक समय हीन शुधीनाजे स्थितिनां स्थानक ते मध्यमायु जाणवो. ते मध्ये परमायु एकेका स्थिति स्थानकें असंख्यात देवायु होय, एम नारकीने विषे पण जाणवो परंतु एटलुं विशेष जे नेवुं हजार वर्षेथी यावत् दश लाख वर्ष एटली स्थिति ते नरकायु नथी बीजा सर्व स्थानक वस्तां ठे. ए बे आयुथी (सेसाउखुहुनवं के०) शेष थाकतां रद्दां जे मनुष्यायु तथा तिर्यगायु, ए बे आयुनो जघन्य स्थितिबंध खुल्लकनव एटले सर्वेनी अपेक्षार्थे न्हानो नव ते बज्जोने ढपन्न आवलिका प्रमाण होय. अर्हीआं आगम मध्ये मनुष्य तिर्यचनुं जघन्यायु अंतरमुहूर्त्त प्रमाण कहुं ठे. पंण जाण्थीं ठैथे जे ए अंतर मुहूर्त्त कुल्लक नव प्रमाण जेवो, जे जणी अंतर मुहूर्त्तना पण असंख्याता चेदठे. तेमाटे. ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३८ ॥

हवे सर्व प्रकृतिना जघन्य स्थितिबंधें जघन्य अबाधाकाल कहे ठे.

सवाणवि लहु बंधे, निन्न मुहु अवाह् आउ जिद्धेवि ॥

केइ सुराउ समजिण, मंत मुहु विति आहारं ॥ ३९ ॥

अर्थ—(सवाणविलहुबंधे के०) स्वमते सर्व बंधयोग्य एकशो ने वीश प्रकृति ना जघन्य स्थितिबंधने विषे (अबाह के०) जघन्य अबाधाकाल (निन्नमुहु के०) अंतर मुहुर्त्तनो जाणवो, एटले जघन्य स्थितिये बांधुं जे कर्म, ते अंतर मुहुर्त्त सुधी पोतानो विपाक देखाडे नहीं, ते अबाधाकाले हीन निषेक काल क हीये. हवे अहीआं जे विशेष ठे ते देखाडे ठे. (आउजिष्ठेवि के०) उत्कृष्ट आयु नी स्थितिने विषे जघन्य अबाधा काल पण होय अने जघन्यस्थितिना आयु मां उत्कृष्ट अबाधाकाल पण होय. तथा उत्कृष्ट आयुखें उत्कृष्ट अबाधाकाल होय, तथा जघन्य आयुखें जघन्य अबाधाकाल होय. एम आयुःकर्मने विषे अबाधाकालनी चवचंगी आय, केम के अंतर मुहुर्त्त शेष आयुयें पण मनुष्य तथा तिर्यंच परजवायु, तेत्रीश सागरोपमनुं बांधे ठे. अने पूर्व कोडीना त्रीजाजाग शेष आयुयें पण परजवायु जघन्य बांधे ठे. तथा पूर्व कोटीनो त्रीजो जाग शेष रहे थके पण तेत्रीश सागरोपमायु बांधेठे तथा अंतरमुहुर्त्त शेषें खुलक नवायु पण बांधे. एम स्वमते सर्व प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध कह्यो

हवे मतांतरें कहे ठे. (केसुराउसमजिण के०) कोइ एक आचार्य जिनना म कर्मनो जघन्य स्थितिबंध जघन्य देवायु जेटलो होय एम कहे ठे. एटले दश हजार वर्षनो जघन्यस्थितिबंध आठमा गुणठाणाना ठाठ जागने प्रांतें चरमबंध ए टलो होय तथा दश हजार वर्ष नरकायु जोगवी पण जिन आय, तेनी अपेक्षा यें पण ए जघन्यबंध माने ठे. अहीआं तत्व केवलिगम्यठे तथा (मंतमुहुर्त्तबिति आहारं के०) आहारक शरीर अने आहारक अंगोपांग, ए बे प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध आठमा गुणठाणाने प्रांतें चरमबंधें अंतरमुहुर्त्त प्रमाण होय. ए म माने ठे. ते जाणीये. ठैयें के आगमिक मते अग्रमत्त गुणठाणे अंतर मुहुर्त्तनो बंध पंचाशक मच्चें प्रायश्चितविधि पंचाशकनी बेतालीशमी गाथायें कस्युं ठे, ते अपेक्षायें केता हशे, पण तेउने उत्कृष्ट बंधमान पण हशे ॥ इति स० ॥३९॥

हवे कुल्लकनवनुं मान कहीयें ठैयें.

सत्तरस समहिआ किर; इ गाणु पाणं मिहुंति खुमु जवा ॥

सगतीस सय तिहुत्तर, पाणू पुण इग्ग मुहुत्तंमि ॥ ४० ॥

अर्थ—(सत्तरससमहिआकिर के०) सत्तर जव जाजेरा तेरशें पंचाणु अंश, अठारमा जावना अधिक निशें (इगाणुपाणंमिहुंतिखुमु जवा के०) एक आसोह्या

स मांहे होय कुल्लक जव एटले निगोदिआना न्हाणा जव जाणवा एवा (सगती ससयतिदुत्तर के०) साडत्रीशशेने तहोंतेर (पाणू के०) श्वासोह्वास (पुण के०) वली (इगमुदुत्तमि के०) एक मुहूर्त्तमां होय, जे जणी रोग रहित बलि ष्ट निश्चित एवा तरुण पुरुषना सात श्वासोह्वासें एक थोव थाय. एवा सात. थोवें एक जव एटले उंगण पञ्चाश श्वासोह्वासें एक जव थाय. एवा सत्तोतेर जवें एक मुहूर्त्त थायतेने उंगणपञ्चाश गुणा करतां त्रण हजार सातशेने तहोंतेर श्वासोह्वास अंतर मुहूर्त्तमां थाय. कोइक आचार्य नाडीना उलाजाने पण श्वासोह्वास कहे ठे. अने ब शे उपन्न आवली प्रमाण एक कुल्लक जव होय. एवा पांशठ हजार पांचशे ने ष वीश कुल्लकजवें एक अंतर मुहूर्त्त थाय, तेथी बशे उपन्नने पांशठ हजार पांचशे ने षवीश साथें गुणतां एक क्राड, शडशडलाख, सीत्तोतेर हजार, बशेने शोल ए टली आवली थाय, तेने साडत्रीशशेने तहोंतेर श्वासोह्वासें वहेंचियें, तेवारें चुम्मालीशशेने तेंतालीश आवली एक श्वासोह्वास मांहे होय अने शेष बे हजा र चारशेने अछावन आवली रहे, तेने साडत्रीशशेने तहोंतेरनो जाग नावे, ते माटें एक आवलीना साडत्रीशशेने तहोंतेर जाग करीयें. तेवा चोवीशशेने अछा वन्नअंश चुम्मालीशशेने सडतालीशमी आवलीना उपरजाचे.

एटले एक श्वासोह्वासना कुल्लक जव सत्तर ते एकेका कुल्लक जवनी बशे उप न्न आवलीने सत्तर गुणा करतां तेंतालीशशेने बावन्न थाय. शेष चोराणुं आव ली पूर्ण अने पञ्चाणुमी आवलीना साडत्रीशशेने तहोंतेरीआ चोवीशशेने अछावं न जाग उपर एटलो अठारमा जवनो कालगये अके एकश्वास पूर्णथाय. ॥ ४० ॥

पण सठि सहस पण सय, बत्तीसा इग मुदुत्त खुद्द जवा ॥

आवलियाणंदोसय, षण्णना एग खुद्द जवे ॥ ४१ ॥

अर्थ—हवे (पणसठिसहसपणसयठत्तीसा के०) पांशठ हजार, पांचशे ने ष त्रीश, एटला (इगमुदुत्तखुद्द जवा के०) एक मुहूर्त्तना कुल्लक जव थाय, तेने सा डत्रीशशेने तहोंतेर श्वासोह्वासें वहेंचियें, तेवारें एक श्वासोह्वासमां सत्तर जव पूर्ण अने उपर साडत्रीशशेने तहोंतेरीआ तेरशेने पञ्चाणु जाग वधे, अने अठारमां जवमां (३४४३) जाग पूर्ण होय तेवारें जव पूर्ण थाय माटें शेष अठार मा जवमां (३३४०) आगला श्वासोह्वासना अंश मांहे थावे तेवारें जवपूरो थाय अने बे श्वासोह्वासमांहे चोत्रीश जव पूर्ण थाय. अने पांत्रीशमां जवना (३४४३)

तेरीआ (१७९०) अंश पांत्रीशमां जवना वधे तथा त्रण श्वासोद्वासमां वावन नव पूरा थाय, अने त्रेपनमां जवमां (३७७३) तेरीया चारणेने बार अंश पूराय अथवा वे श्वासोद्वासमां पांत्रीश नव गणीयें, तो शेष (९८३) अंश घटे एम स्वम तें विचारी कहेवा. एम निगोदिउ जीव एक श्वासोद्वासमांहे सत्तर नव जाजेरा करे.

तथा एक थोवमांहे एकशोने एकवीश कुल्लक नव अने एक नवना पांचशे ने अगणचालीश अंश करीयें, एवा (३१४) अंश (१२२) मांजवना होय, तथा एक लव मध्ये आठशो एकावन कुल्लक नव पूर्ण होय अने उपर वली वावन मांजवना सत्तोतेरीआ नव जाग होय. एक लवनी आवली बे लाख, सत्तर ह जार, आठशे ने पच्चाशी. ते उपर वली एक आवलीना सत्तोतेरीआ एकोत्तर जा ग. तथा एक थोव मांहे आवली एकत्रीश हजार, एकशो ने ठवीश उपर वली ए क लवना पांचशे उगणचालीश जाग करीयें, तेवा त्रणशेने बे जाग आवे. ॥४१॥

हवे उत्तर प्रकृति आश्रयीने उत्कृष्ट स्थितिबंधना स्वामि कहे ठे.

अविरय सम्मो तिष्ठं, आहार डगा मराउ अपमत्तो ॥

मिच्छा दिगीबंधइ, जिष्ठ छिइ सेस पयडीणं ॥ ४२ ॥

अर्थ—(अविरयसम्मोतिष्ठं के०) अविरति सम्यक्दृष्टि मनुष्य पूर्वे मिथ्यात्व प्र त्ययें नरकायु बांध्युं ठे जेणे एवो मनुष्य ह्यायोपशमिक समक्त्व लहीने, तेणे करी तीर्थिकरनामकर्म बांधी पढी ते नरकगतिमांहे जातो सम्यक्त्व वमतो ते सम्य क्त्ववमताने ठेहेले समर्थे जिननामनी उत्कृष्ट स्थिति बांधे. जे जणी ए जिननाम ना बंधक मांहे एहिज अतिसंक्लिष्टपणुं ठे अति संक्लेशे उत्कृष्ट स्थितिबंध थाय ठे तथा (आहारडुगामराउअपमत्तो के०) आहारकदिक अने अमरायु एटले देवा यु, ए त्रण प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थितिबंधनो स्वामी, अप्रमत्त साधु जाणवो. जे ज णी आहारकशरीर तथा आहारक आंगोपांग, ए बे प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध प्रमत्तगुणगणाने सन्मुख थयलो एवो अप्रमत्त यति ते अप्रमत्तगुणगणाने चरम बंधे बांधे एना बंधकमांहे एहिज अति संक्लिष्ट ठे तथा देवताना आयुनो उत्कृष्ट स्थि तिबंध स्वामी अप्रमत्तगुणस्थानक वर्त्तिसाधु जाणवो पण एटलुं विशेष जे प्रम त्त गुणस्थानके आयुबंध आरंजीने अप्रमत्ते चढतो साधु बांधे, आयुबंध स्थानकमांहे एहिज अतिविशुद्धस्थानक ठे केमके शुजायुनोबंध उत्कृष्टविद्युद्वियें करी होयठे.

ए चार प्रकृतिथी (सेसपयडीणं के०) शेष थाकती जे एकशो ने शोल प्रकृ

ति तेनो (जिहृष्टि के०) उत्कृष्ट स्थितिबंधनो स्वामी (मिह्यादिहीबंधइ के०) मिह्यादृष्टी जीव जाणवो एटले संह्री पंचेंडिय सर्व पर्याप्तिये करी पर्याप्तो मिह्या दृष्टि जीव बांधे जे नणी ए एकशोने शोल प्रकृति मध्यें मनुष्यायु अने तिर्यगायु ए बे आयुं विना शेष एकशोने चौद प्रकृतिनुं उत्कृष्ट स्थितिबंध उत्कृष्ट संक्लेश प परिणामे आय तेजणी मिह्यात्वथी अधिक कोइ अन्य संक्लेश स्थानक नथी. अर्हीआं पण असंख्याता अथ्यवसाय स्थानक ठे, पण तेमध्ये स्वस्व बंध प्रायोग्य संक्लेशस्थानक लेवा तथा तेमां पण मनुष्यायुतो विद्युदियें उत्कृष्ट स्थितिक बंधाय अ ने तेना बंधक मांहे अतिविद्युदियें अविरति सम्यक्दृष्टि देवता होय, एटले सम्यक्दृष्टी देवता अतिविद्युदियें मनुष्यगतिनो बंधक होय, पण ते देवता त्रय पद्योपमायु न बांधे केम के देव तथा नारकी मांहेथी आवेला जीव संख्याता व षीयुवाला मनुष्य, तिर्येच आय पण असंख्याता वर्षीयुवाला मनुष्य तिर्येच न आय तथा मिह्यात्वगुणगणानी अपेक्षायें सास्वादन विद्युद ठे, केम के जे जीवें सास्वादन गुणगणुं स्पर्शुं ते नियमा जव्य होय अने अर्द्धपुजलपरावर्तमांहे मोह जाय तथापि सम्यक्त्ववमता सास्वादन होय, तेथी संक्लिष्ट जाणवो तेथी तिहां म नुष्यायु अने तिर्येचायुनो बंधक संक्लिष्ट परिणामें जाणवुं ॥ इति समुच्चयार्थः ॥४३॥
 एम गुणस्थानकें स्वामित्व कहिने, हवे जीवजेदें कहे ठे.

विगल सुहुमाउग तिगं, तिरिमणुयासुर विउवि निरयडुगं ॥
 एगिदि थावरा यव, आईसाणा सुरु क्रोसं ॥ ४३ ॥

अर्थ—(विगलसुहुम के०) विकल जातित्रिक तथा सूक्ष्म, अपर्याप्ता अने सा धारण, ए सूक्ष्मत्रिक तथा (आउगतिगं के०) नरकायुं, तिर्येचायु अने मनुष्यायु, ए त्रय त्रिकनी नव प्रकृति तथा (सुर के०) देवदिक एटले देवगतिने देवायु पू र्वी तथा (विउवि के०) वैक्रियदिक तथा (निरयडुगं के०) नरकदिक एटले न रकगति अने नरकानुपूर्वी एवं पंदर प्रकृतिनुं उत्कृष्ट स्थिति बंधनास्वामी (तिरि मणुया के०) पूर्वे कोडी मध्यवर्ति आयुष्यवाला मिह्यादृष्टि संह्रीआं गर्भज मनु ष्य तथा तिर्येच पंचेंडिय होय जे नणी ए पंदर मांहेथी मनुष्यायु तिर्येचायुंविना शेष तेर प्रकृतिनो बंध नव प्रत्ययें देवता नारकीने नथी तथा विकलत्रिक अने सू क्ष्मत्रिकनो बंध, एकेंडिय बेंडियादिकने होय पण तेने उत्कृष्ट स्थितियें न बंधाय तथा मनुष्यायु अने तिर्येचायु पण देवता तथा नारकी बांधेते तो पण ते त्रय

पल्योपमनी उत्कृष्टस्थितिवालो आशु न बांधे केम के देवता तथा नारकी चवी ने पूर्वकोटी वर्षायी अधिक आयुष्यवाला मनुष्य तथा तिर्यंचमांहे जवप्रत्ययेज अवतरे नहीं तेमाटे पूर्वकोटी आयुना धणीज मनुष्य तथा तिर्यंच पूर्व कोटीना त्रीजा जागना प्रथम समये परजवाशु पूर्वकोटी त्रिजागाधिक त्रय पल्योपमनुं उत्कृष्ट स्थितिक मनुष्याशु तथा तिर्यंचाशु बांधें, तेथी ते मिथ्यात्वीज ए बे स्थितिना उत्कृष्ट बंधाधिकारी जाणवा अने सास्वादन गुणताणो पडतां जणी तेवी विद्युद्धि न होय, तेथी ते सास्वादनी पण एनो बंधाधिकारी नथी अर्हीआं स्वस्वबंधयोग संक्लेश लेवो.

(एगिंधियावरायव के०) एकेंद्रियजाति, स्थावरनाम, आतपनाम, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, वीश कोडाकोडी सागरोपमरूप तेना बंधाधिकारी (आर्षिसायासुरुक्कोसं के०) जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी ए त्रण तथा सौधर्म अने ईशान, ए आदिना बे देवलोक एटला स्थानकना मिथ्यात्वीदेवता पृथवी अप्र अने वनस्पति ए त्रण मांहे छुजस्थानमध्ये अवतरे, तेथी तेने तद्रायोग्य ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध बंधाय अने मनुष्य तथा तिर्यंच ए बे तो संक्लेश करी अठार कोडाकोडीनी स्थिति बांधें, तेथी ए एना अधिकारी न कहा अने सनत्कुमारदिक देवलोकना उपरलावेमानिक देवताने पृथवीकायादिक मध्ये अवतरतुं नथी तेथी ते ए त्रण प्रकृति न बांधे. तथा एकेंद्रिय अने विकलेंद्रिय, ए त्रण प्रकृति बांधे खरा, परंतु तेउने उत्कृष्ट स्थितिबंध नथी अने असंख्यातावर्षायुवाला मनुष्य तथा तिर्यंच ए त्रण प्रकृति न बांधें जे जणी तेने देवता विना अन्य स्थानकें अवतरतुं नथी. ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४३ ॥

तिरि उरल झगुज्जोअं, त्रिवर सुर निरय सेस चउग
इआ ॥ अथ जघन्य स्थितिबंध स्वामीनाह ॥ आहा
र जिणमपुवो, नियट्टि संजलण पुरिसलहू ॥ ४४ ॥

अर्थ—(तिरिउरलझगुज्जोअं के०) तिर्यंचगति, तिर्यंचानु पूर्वी तथा औदारिक शरीर अने औदारिक अंगोपांग, पांचसुं उद्योतनाम अने उरुं (त्रिवरके०) उवतुं संघयण, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध, वीश कोडाकोडी सागरोपमठे तेना बंधाधिकारी स्वस्वप्रायोग्य अति संक्लेशो वर्त्तता (सुरनिरय के०) मिथ्यात्वीदेवता तथा मिथ्यात्वी नारकी होय, केम के मनुष्य तथा तिर्यंच गर्भज पंचेंद्रिय ए त्रण प्रकृति ने संक्लेशो वर्त्ततां अठार कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति बांधे अने तेथी अति सं

क्लिष्ट होय तो नरक प्रायोग्य प्रकृतिनो बंध करे. अने देवता नारकीने तो नरक प्रायोग्य बांधवुंज नथी, ते माटें ते अति संक्लिष्टें ए उ प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध करे, ते मध्ये पण औदारिक अंगोपांग अने ठेवहुं संघयण, ए वे प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध चोथा, पांचमा, ठछा, सातमा अने आठमा देवलोकना देवताने होय पण नीचला देवताने न होय जे जणी नीचेना देवता तो अतिसंक्लेषों एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधे ठे तेथी तेने ए वे प्रकृतिनो अठार कोडाकोडी सागरोपमनो बंध होय, एम चोवीश प्रकृतिना उत्कृष्टी स्थितिबंध स्वामी कहा तथा आहारकदिक अने देवा युनो उत्कृष्ट स्थितिबंधस्वामी अप्रमत्त साधु कह्यो अने जिननाम कर्मनो उत्कृष्टस्थितिबंध स्वामी नरकानिमुख सम्यक्त्व वमतो मनुष्य कह्यो एम अष्टावीश प्रकृति थइ.

तेथी (सेसचउगइआ के०) शेष ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीयनी नव, अंतरायनी पांच, शोल कपाय. एवं पांत्रीश तथा जय, ज्युगुप्ता, वर्षचतुष्क, तै जस, कार्मण. अगुरुलघु, उपधात, निर्माण, मिथ्यात्व. ए सुडतालीश प्रकृति ध्रुवबंधिनी तथा अशाता, अरति, शोक, नपुंसकवेद, पंचेंद्रियजाति, हुंमसंस्थान, पराघात, उन्नास, कुखगति, त्रसचतुष्क, अथिरठक, नीचैर्गोत्र, ए वीश अध्रुवबंधिनी प्रकृति, एवं शडशत प्रकृतिना उत्कृष्ट स्थितिबंध स्वामी अतिशंक्लेषों वर्चता चतुर्गैतिक मिथ्यात्वी जीव जाणवा. तथा शाता, हास्य, रति, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नरकदिक. आदिनां पांच संस्थान, तथा आद्य संघयणपंचक, अजखगति, स्थिरषट्क, उच्चैर्गोत्र, ए पञ्चीश प्रकृति अध्रुवबंधिनी तेना उत्कृष्ट स्थितिबंधक स्वस्वबंध प्रायोग्य अति संक्लेषों वर्चता एवा चातुर्गैतिक मिथ्यात्वी जीव होय. ए रीतें बाणुं प्रकृतिना उत्कृष्ट स्थितिबंध स्वामी मिथ्यात्वी जीव कहा.

हवे सर्व प्रकृतिना जघन्य स्थितिबंध स्वामी कहे ठे. (आहार के०) आहारक शरीर, अने आहारक अंगोपांग, ए आहारकदिकनी जघन्यस्थिति अंतःकोडाकोडी अथवा अंतर मुहूर्त्त प्रमाण अने (जिण के०) जिननाम कर्मनी जघन्य स्थिति अंतःकोटीकोटी अथवा दश सहस्र वर्ष प्रमाण तेना बंधक रूपकश्रेणीयें चढतां (मपुत्रो के०) अपूर्वकरण नामा आवसुं गुणवाणुं तेना ठछा जागने चरमबंधें वर्चतां एवा मनुष्य होय, जे जणी ए त्रण प्रकृतिना बंधकमांडे एहि ज अतिविद्युदता ठे एथी अधिक विद्युदि बीजे स्थानकें नथी अने लघु स्थिति पण त्रण आयु विना शेष एकशो सत्तर प्रकृतिनी मननी विद्युदियेंज होय ठे.

(नियट्टिसंजलणपुरिसलहू के०) अनिवृत्ति करणनामा नवमा गुणस्थानकें

कृपकश्रेणीयें चढतां आप आपणा बंध व्यवहृदने चरम समयें पुरुषवेदनो आठ वर्षनो, संज्वलना क्रोधनो बे मासनो; संज्वलनमाननो एक मासनो, संज्वलनमायानो अर्द्धमासनो, संज्वलन लोजनो अंतर सुदूर्तनो, जघन्य स्थितिबंध अनुक्रमें पहेला, बीजा, त्रीजा, चौथा अने पांचमा जागने प्रातें बांधे. ए पांच प्रकृतिना बंधस्थानकमांहे एहिज अति विद्युद्धि ठे जो पण उपशमश्रेणीयें नवमा गुणस्थानकें पांचमा जागने प्रातें स्वस्वबंध व्यवहृद संजवे तथापि ते कृपकशी अति विद्युद्धि नहीं तेषी ते न लीधा. ए आठ प्रकृतिना जघन्य स्थितिबंध स्वामी कहा ॥ ४४ ॥

साय जसु च्चा वरणा, विग्घं सुदुमो विवृद्धि ठ असन्नि ॥

सन्नीवि आठ बायर, पञ्जे गिंदीठ सेसाणं ॥ ४५ ॥

अर्थ—(साय के०) शातावेदनीय, (जसुच्चावरणा के०) यशःकीर्तिनाम, उच्चैर्गोत्र, तथा आवरण एटलें पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, एवं बार तथा (विग्घं के०) पांच अंतराय, ए सत्तर प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध स्वामी (सुदुमो के०) सूक्ष्मसंपरायनामा दशमा गुणस्थानकना चरम समयवर्ति जीव होय जे नणी ए सत्तर प्रकृतिना बंधमांहे एहिज विद्युद्धि ठे जो पण शातावेदनीयनो बंध एशी विद्युद्धि बारमे गुणतापो ठे पण ते एक सामाधिक योगप्रत्ययीठ स्थितिबंधठे पण कषाय प्रत्ययीठ स्थितिबंध नशी, तेषी ते विचहयो नशी. ए पञ्चीश प्रकृति अइ.

(विवृद्धिठ के०) वैक्रिय शरीर, वैक्रिय अंगोपांग, देवगति, देवानुपूर्वी, नरकगति अने नरकानुपूर्वी, ए वैक्रियषट्क, ए ठ प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध स्वामी (असन्नि के०) असंझी पंचेंदिय तिर्यंच होय. केम के एकेंदिय अने विकलेंदियने तो देव तथा नरकगति मांहे अवतरतुं नशी, तेषी तेने तत्प्रायोग्य ए ठ प्रकृतिनो बंध न होय अने सन्निअने तो उत्कृष्ट स्थितिबंध वीश कोडाकोडी सागरोपमनो होय तेमज सन्नीअने ए ठ प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध पण अंतःकोडाकोडी सागरोपमनो होय, तेषी ते अहींअं न लीधा, केम के ए ठ प्रकृतिनाम कर्मनी ठे. ते नणी मिथ्यात्व साथें जाग देतां सागरोपमना सातइअ्या बे जाग आवे, तेनो हजार गुणो असन्निअ्या पंचेंदियनो बंध ठे ते नणी वैक्रियदिक, नरकदिक, ए चार प्रकृतिनो बंध तो सातइअ्या बे हजार जागना बरें ने पञ्चाशी सागरोपम अने उपर सातइअ्या पांच जाग जाणवा तथा देवदिकना सातइअ्या हजार जागना एकशो बेंतालीश सागरोपम उपर सातइअ्या ठ जाग ते वली पह्योपम

ने असंख्यातमे जागें हीन एटलो ए प्रकृतिनो असन्निध्या पंचेंद्रिय तिर्यच सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने जघन्य स्थितिबंध स्वामीत्वपणुं होय.

(सन्नीवि के०) संज्ञी पंचेंद्रिय गर्जज, तिर्यच अने मनुष्यने तथा अपिश द्यकी असंज्ञी पण लेवा ते माटें संज्ञी अथवा असंज्ञी ए (आउ के०) चारे प्रकारतुं जघन्य स्थितिक आयु बांधें. ते मध्यें एक मनुष्यायु, बीजुं तिर्यचायु, ए बे आयुना जघन्य स्थितिबंध स्वामी एकेंद्रियादिकथी मांणीने पंचेंद्रिय पर्यंत सर्व जीव होय अने चारे आयुना जघन्य स्थितिबंध स्वामी सन्निध्या अने अ सन्निध्या ए बे होय. एवं पात्रीश प्रकृति थइ.

(सेसाणं के०) तेथी शेष रही जे निडापंचक, कषाय बार, स्त्रीवेद, नपुं सकवेद, हास्यषट्क, मिथ्यात्व मोहनीय, मनुष्यदिक, तिर्यचदिक, जाति पंचक, औदारिकदिक, तैजस, कामेण, आतप, उद्योत, उपघात, अशातावेदनीय, अ गुरुलघु, निर्माण, संस्थानढक, संघयणढक, वर्षचतुष्क, त्रसनवक, स्थावरदशक, पराघात, उद्वास, खगतिदिक, नीचैर्गोत्र, ए पञ्चाशी प्रकृतिनो जघन्य स्थितिबंध स्वामी (बायरपङ्केर्गिंदीउ के०) लब्धिपर्याप्तो बादर एकेंद्रियपर्याप्तो स्वस्व प्रायोग्य विद्युद्दिस्थानकें वर्त्ततो मिथ्यात्वी जीव होय, जे जणी दशमा तथा नवमा गुणस्थानक वर्त्ति साधु पण जघन्यबंधनो अधिकारी होयढे परंतु तेने ए पञ्चाशी प्रकृतिनो बंध नथी तेथी ते बीजी प्रकृतिना अधिकारीढे तेथी असंख्यातगुणो बादर पर्याप्ता एकेंद्रियने जघन्य बंध स्वामीत्व जाणवो. ए तथाविध विद्युद्दि माटें बांधे अने अनेरा एकेंद्रिय तो तेवी विद्युद्दिथी रहित ढे माटें अधिकी बांधे, अने विकर्षेंद्रिय तथा पंचेंद्रिय तो स्वनावेंज अधिकी बांधे ते माटें ते न लेवा. एथी बीजा सर्वबंध अधिक ढे एम जघन्यस्थितिबंध स्वामी कहा ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४५ ॥

हवे उत्कृष्टादि स्थिति बंधने विषेज चार जांगा स्थितिबंधना कहे ढे.

उक्कोस जह णीयर, जंगासाइ अणाइ ध्रुव अधुवा ॥

चनुहा सग अजहन्ना, सेसतिगे आउ चउसु इहा ॥ ४६ ॥

अर्थ—(उक्कोसजहणीयरजंगा के०) एक उत्कृष्ट स्थितिबंध बीजो जघन्यस्थितिबंध, ए बे थकी इतर एटले बीजा विरोधिजांगा बे कहे ढे. एक अनुत्कृष्ट बीजो अजघन्य स्थितिबंध, एवं चार जंग थया. ए चार माहें सर्व स्थितिबंध संग्रह्या ति हां जे सर्व प्रकृतिनो आपआपणा स्थितिबंधमाहे अधिक स्थितिबंध ते उत्कृष्ट

स्थितिबंध जाणवो. जेम ज्ञानावरणीय कर्मनो त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनो संपूर्ण बंध, ते उत्कृष्टस्थितिबंध कहीयें अने ते थकी एक समय हीन, बे समय हीन करतां करतां यावत् अंतर मुहूर्त्त स्थितिलगें जेटला स्थितिबंधनां स्थानक बंधाय, ते सर्व अनुत्कृष्ट स्थितिबंधनां स्थानक जाणवां. ते स्थानक असंख्यातां होय एटले एक उत्कृष्ट थकी निन्न ते सर्व अनुत्कृष्ट स्थितिबंधनां स्थानक जाणवां एम ए बे बंधमांहे सर्व स्थितिबंधनां स्थानक संग्रहां तथा जे स्थितिबंध स्थानकथी उबुं बीजुं कोइ स्थितिबंधनुं स्थानक न होय ते जघन्य स्थितिबंध स्थानक जाणवुं अने तेथी समयाधिक समयाधिक स्थानक लेतां यावत् उत्कृष्ट स्थिति पर्यंत जे असंख्यातां स्थानक थाय. ते सर्व अजघन्य स्थितिबंधनां स्थानक जाणवां. एम ए बे बंधमांहे पण सर्व स्थिति बंधनां स्थानक संग्रहां, ए रीतें जेवारें उत्कृष्ट स्थिति निन्न विवहीयें, तेवारें तेथी बीजां सर्व अनुत्कृष्ट बंध स्थानक होय अने जेवारें जघन्य स्थितिबंध एक निन्न लेखवीयें तेवारें तेथी बीजां सर्व अजघन्य स्थितिबंधनां स्थानक होय. ए रीतें ए चार बंध कह्या.

हवे तिहां वली सादि अनादि प्रकारें चार जांगा कहे ठे. जे बंधव्यवहेद थया पठी फरी बंधाय, ते प्रथम (साइ के०) सादिबंध अने जे बंधना प्रवाहनी आदि न पामीयें, ते बीजां (अणाइ के०) अनादि बंध अने जे बंधनो प्रवाह केवारें पण विहेद नहीं पामशे, ते त्रीजां (ध्रुव के०) ध्रुवबंध एटले अनंत ए अजघन्य अपेक्षायें जाणवो तथा जे प्रकृतिनो बंध प्रवाह विहेद पामशे ते (अध्रुवा के०) अध्रुव एटले सांत ते जघन्य अपेक्षायें जाणवो. एम ए चार जांगा ते जघन्य अजघन्यादिक स्थितिबंधने विपे विचारें ठे.

(चउहासगअजहन्ना के०) त्यां एक आयु विना बीजा सात कर्मना अजघन्य स्थितिबंध चार जांगे होय, ते कहे ठे. एक मोहनीय कर्मनुं जघन्य नवमा गुणगणानें चरम समयें होय, तथा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, नाम कर्म, गोत्रकर्म, अने अंतराय, ए ठ कर्मनो जघन्यबंध दशमा गुणगणाने ठेहले समयें होय, माटें ते स्थानक जे जीवें लहुं नथी तेने सधला अजघन्य स्थितिबंध जाणवा जे जणी तेणे जघन्यस्थितिबंध लह्यो नथी तेथी तेने अजघन्य अनादि जांगो पहेलो जाणवो. अने जे जीवें उपशम श्रेणीयें ते स्थानकें जघन्य स्थितिबंध करी अथवा अवंधक यइने पठी फरी अजघन्य स्थितिबंध करे ते सादि नामें बीजां जांगो जाणवो अने जे जघ्य हशे ते अवश्य मोहें जाशे, तेवारें ते कृपकश्रेणीयें

जघन्य बंध करशे, तिहां अजघन्य स्थितिबंधनुं सांतपणुं यशे ते सांत नामा त्री जो जांगो जाणवो तथा अजघन्य केवारें पण श्रेणी करशे नहीं ते माटें ते जघन्य स्थितिबंध करशेज नहीं तेषी तेने अजघन्य स्थितिबंध अनंत नामे चोथे जांगे जाणवो. एम सात कर्मनो अजघन्य स्थितिबंध, चार जेदें कह्यो.

तथा ए सात कर्मना अजघन्यबंधथी (सेसतिगे के०) शेष रह्या जे जघन्य. उत्कृष्ट अने अनुत्कृष्ट ए त्रण बंध तथा (आउचउसु के०) आयुःकर्मना चार बंध तिहां सादि अने सांत, ए (डुहा के०) बे बे जांगा होय, ते कहे डे. ते मध्यें सात कर्मनो उत्कृष्ट बंध तो अति संक्लिष्ट मिष्यादृष्टि संझी पंचेंद्रिय पर्याप्तानें होय, ते उत्कृष्ट बंध सादि जाणवो. तथा ते उत्कृष्ट बंध तो बे समय लगे होय अने त्रीजे समयें ते उत्कृष्ट बंधथकी समयादिक हीन अनुत्कृष्ट बंध करे ते जणी उत्कृष्ट बंध सांत जाणवो अने वली अनुत्कृष्टबंधथकी समयादिक हीन बंध करतां अनुत्कृष्ट बंधनी सादि अने वली पण अनुत्कृष्ट बंध करे तथा अबंधक होय तेवारें अनुत्कृष्टबंधनुं सांतपणुं तथा जघन्यबंध एक समयमात्रनो ते नवमा, दशमा गुणगणाने प्रांत समयें होय, ते एक समय मात्र जणी सादि सांत जाणवो एम सात कर्मना त्रण स्थितिबंधें सादि अने सांत ए बे जांगा कह्या तथा आयुःकर्मजव मध्यें एकवार बंधाय, तेषी तेना उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य अने अजघन्य ए चारे स्थितिबंध सादि अने सांत, ए बे जांगे होय. केम के आयु बांधवा माने, तेवारें सादि अने अंतर मूहूर्त्त बांधी रह्या पढी सांत ए बे जांगा होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४६ ॥

एम मूल प्रकृतिना चार स्थितिबंधना सादि, बीजो अनादि, सांत अने अनंत ए चार जांगा विचारीने हवे ते चार जांगा उत्तर प्रकृतिने विषे विचारियें ठैयें.

चउ जेउ अजह्नो, संजलणा वरण नवग विग्घाणं ॥

सेस तिगिसाइ अधुवो, तह चउहा सेस पयडीणं ॥ ४७ ॥

अर्थ— (संजलण के०) संज्वलनो क्रोध, संज्वलनो मान, संज्वलनी माया अने संज्वलनो लोभ. ए चार कषायनो जघन्य स्थितिबंध, बे मास, एक मास, अर्धमास अने अंतरमुहूर्त्तरूप अनुक्रमें जाणवो. ते नवमा गुणगणे स्व स्वबंध विद्भेदने प्रथम समयें होय, तथा (आवरणनवगविग्घाणं के०) पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, पांच अंतराय, ए चौद प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध, अंतरमुहूर्त्त मान दशमा गुणगणाने. चरमबंधें होय ते विना बीजा सर्व स्थितिबंध अजघन्य जा

एवा. ए अढार प्रकृतिनो (चउनेउअजहन्नो के०) अजघन्य स्थितिबंध चार जेदें होय, ते कहे ठे. के जे जीवें नवसुं अने दशसुं गुणगणुं लखुं नथी, तो तेणे जघन्य स्थितिबंध नथी कखो. तेने अजघन्य बंध अनादि जाणवो ए प्रथम जंग. तथा जेणे जघन्यबंध करी वली श्रेणीषी पढतां समयाधिक स्थितिबंध अजघन्य करे, तिहां सादि. ए बीजो जंग जाणवो. तथा जे नव्य हरो ते अवश्यश्रेणी कररो, तेवारें तेने अजघन्यस्थितिबंधनुं सांत पणुं यरो ए त्रीजो जंग जाणवो अने अजघन्य जीव ए अढार प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध केवारें पण नहीं कररो, तेथी तेने ए अढार प्रकृतिनो अजघन्य स्थितिबंध अनंत, ए चोथो जंग जाणवो. एम ए अढारं प्रकृतिनो अजघन्य स्थितिबंध चार जांगे होय.

(सेसतिगि कें०) ए अढार प्रकृतिना शेष उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट अने जघन्य ए त्रण स्थितिबंध (साइअध्रुवो के०) सादि अने अध्रुव एटले सांत ए बे जांगे होय. जे जणी ए अढार प्रकृतिमां चार प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध चालीश कोडाकोडी सागरोपमनो ठे अने चौद प्रकृतिनो त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट बंधठे. ए सर्व संक्लिष्ट पंचेंद्रिय पर्याप्तो जीव बांधे. ए एक समय बे समयजगें बांधे वलतो समयादिक हीन स्थिति बांधे, ते अनुत्कृष्ट जाणवो. वली अनुत्कृष्टथी उत्कृष्ट करे तेथी ए बे बंधें सादि अने सांत, ए बे जांगा जाणवा तथा जघन्यबंध पण एनो नवमे अने दशमे, गुणगणो एक समय मात्र होय ते जणी सादि सांत होय.

(तह के०) तेमज (सेसपयडीणं के०) ए अढार प्रकृतिथकी शेष रहीजे एक शो ने बे प्रकृति तेना (चउहा के०) जघन्यादिक चार प्रकारना स्थितिबंध तेपण सादि अने सांत, ए बे जांगे चारे बंध होय तेमध्ये निडापंचक, प्रथम कषाय बार, मिष्यात्व, जय, ज्युप्ता, तैजस, कार्मेण, वर्णचतुष्क, अशुरुलघु, उपघात, निर्माण, ए उंगणत्रीश प्रकृतिनो जघन्यस्थितिबंध, स्वप्रायोग्यविद्युदियें करी ए केंद्रिय पर्याप्तानें होय. ते वली कथंचित् हीनाध्यवसायें समयादिक अधिक अजघन्य बंध करे, वली विद्युदियें जघन्य बंध करे तेथी जघन्य अने अजघन्यपणे बेदु स्वस्व प्रकृतिना स्थितिबंध सादि अने सांत पणे जाणवा.

तथा एहिज उंगणत्रीश प्रकृतिना उत्कृष्ट बंध संज्ञी पंचेंद्रियपर्याप्ता मिष्यात्वाने संक्लिष्ट परिणामें होय ते बे समय जगें होय तेवार पढी अध्यवसाय परावर्तियें समयादिक हीन अनुत्कृष्ट बंध करे, एम उत्कृष्ट अने अनुत्कृष्ट बंध संक्लेश तथा विद्युदिनी परावर्तियें होय तेथी सादि अने सांत ए बे जांगा होय.

अने ए उगणत्रीश प्रकृतिथी शेष रही जे तहोंतेर अध्रुवबंधिनी प्रकृति तेनो बंध केवारेंक होय, अने केवारेंक न होय तेथी तेना उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य अने अजघन्य ए चारे स्थितिबंधें सादि अने सांत, ए बे जांगा होय. केम के जे वारें बंध होय तेवारें सादि अने जेवारें बंध न होय तेवारें सांत. एम बे जांगा होय एम उत्तर प्रकृतिना चार स्थितिबंधने विषे सादि, अनाद्यादि जांगा विचाखा ॥४९॥

हवे गुणगणा आश्रयिने उत्कृष्ट तथा जघन्य स्थितिबंध विचारे ठे.

साणाइ अपुवंतो, अयरंतो कोडि कोडिनु नहिगो ॥

बंधो नहु हीणो नय, मिच्छे जवियर सन्निमि ॥ ४८ ॥

अर्थ- प्रथम निन्नग्रंथिने अंतःकोटाकोटी सागरोपमथी अधिको स्थितिबंध न होय, ते कहे ठे. (साणाइअपुवंतो के०) सास्वादन गुणगणाथी मांदिने अपूर्व करणनामा आत्मा गुणगणा सुधी (अयरंतोकोडिकोडिउ के०) अंतःकोडाकोडी सागरोपम प्रमाण स्थितिबंध संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताने होय पण तेथकी (नहिगोबंधो के०) अधिक बंध न होय तेमज अंतःकोडाकोडी सागरोपमथी हीन एटजे उठो बंध पण (नहु के०) न होय. अहींआं कोइ पूठे जे सास्वादनथी आत्मा गुणगणा सुधी जो बंधनुं हीनाधिकपणुं नथी, तो जिहां स्थितिबंधनुं अल्प बहुत्व कहेरो, तिहां साधुनी उत्कृष्ट स्थितिबंधथी देशविरतिनो जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणो होय ते थकी देश विरतिनो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यात गुणो होय ते थकी अविरति सम्यक्दृष्टि पर्याप्ता अपर्याप्ताना जघन्य उत्कृष्ट स्थितिबंध असंख्यात गुणा होय. तो ए अल्प बहुत्वपणु हीनाधिकने अनावें केम घटे ? अहींआं गुरु उत्तर कहे ठे के, जेम अंतर मुहूर्त्त नव स मयथी मांदिने एक समय ऊण मुहूर्त्त पर्यंत होय ठे, तेना असंख्याता जेद थाय. तेम साधुना उत्कृष्ट स्थितिबंधथी लइने अपर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रियना उत्कृष्ट स्थितिबंध पर्यंत समयाधिक समयाधिक करतां वचलां असंख्यातां स्थितिबंध स्थानक जे होय, ते सर्व अंतःकोडाकोडी प्रमाण स्थितिबंध कहींएने अंतःकोडाकोडी सागर एवी संज्ञा कहींए. एम असंख्याता जेद अंतःकोडाकोडीमां होय, तेथी संख्यातगुणा तथा असंख्यातगुणा कहेतां थकां कांइ विघटे नहीं. एम ममरुक मणिन्यायें करी ठे. (हिणोनयमिच्छे के०) तेमज हीनो बंध एटजे अंतःकोडाकोडी सागरोपमथी उठो बंध सिष्यात्वीनें पण न होय.

तथा सिद्धांतने मते जेणे ग्रंथिजेद कीथो होय अने ते वली सम्यक्त्व व

मीने मिथ्यात्वे जाय तोपण अंतःकोडाकोडी सागरोपमथी स्थितिबंध वोले नहीं तेथी तेने अपूर्व बंधक कहीये अने कर्मग्रंथने मते ग्रंथिचेद कखा पठी पण मिथ्यात्वे सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपमनो उत्कृष्ट स्थितिबंध करे पण एटलुं विशेष जे ते स्थितिबंध, तीव्रसे न बांधे ए (नद्वियरसन्निमि के०) नव्य संज्ञी पंचेंडिय नी अपेहाये लेतुं. बीजुं तो एकेंडियने मिथ्यात्वगुणठाणे मिथ्यात्वमोहनीयतुं ए क सागरोपम, बेंडियने पञ्चीश सागरोपम, तेंडियने पञ्चाश सागरोपम, चौरिंडियने शो सागरोपम, अने असंज्ञीया पंचेंडियने हजार सागरोपमनी स्थिति ठे, एम साखादने पण अपर्यासा एकेंडियादिकनो उत्कृष्टस्थितिबंध सरखो जेवो. ए नव्य, अनव्य, सन्निआ पंचेंडियने स्थितिबंध कहा ॥ ४८ ॥

हवे एकेंडियादिकने विषे हीना धिक स्थितिबंधतुं अल्प बहुत्व कहे ठे.

जइ लढु बंधो बायर, पळ असंख गुण सुढुम पळहिगो ॥

एसि अपळाण लढू, सुढुमे अरअपळ पळ गुरु ॥ ४९ ॥

अर्थ—(जइ के०) (१) यति एटले साधुनो (जढुबंधो के०) सर्वथकी हीन स्थितिबंध सूक्ष्मसंपराय नामा दशमे गुणठाणे वर्चता साधुनो होय, जे जणी ज्ञाना वरणादिक उ कर्मनो विद्युद्विपणे अंतर मुदूर्त्त प्रमाण जघन्य स्थितिबंध चरम समये होय, तेथी हीणो स्थितिबंध कोइ जीवने नथी. जो पण आगले गुणठाणे एक समयिक बंध ठे, तो पण अकषायी जणी तिहां स्थितिबंध विवक्ष्यो नहीं.

(२) साधुनो जघन्य स्थितिबंध अंतर मुदूर्त्त प्रमाण अने बादर पर्यासा एकेंडियनो जघन्य स्थितिबंध, सागरोपमनो सातइठ एक जाग पळ्योपमने असंख्यातमे जागे होय ते मध्ये तो असंख्याता अंतर मुदूर्त्त आय, तेथी साधुना जघन्य स्थितिबंधथी (बायरपळअसंखगुण के०) बादर एकेंडिय पर्यासानो जघन्य स्थितिबंध पण असंख्यात गुणो जाणवो.

(३) बादर पर्यासा एकेंडियथकी सूक्ष्म पर्यासा एकेंडियनां योगस्थानक मंद ठे, तेथी अध्यवसाय स्थानक पण थोडां होय. तेथी स्थिति स्थानक पण बादरनी अपेहाये थोडां होय तेणे जघन्यस्थिति बादरनी जघन्य स्थितिथकी उत्कृष्टी उठी होय तो स्थितिविशेष पण उठा होय आतरुं थोडुं ते जणी बादर पर्यासा एकेंडियना जघन्य स्थितिबंध थकी (सुढुमपळहिगो के०) सूक्ष्म एकेंडिय पर्यासाना जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक कहा. एटले कांइक जाजेरा जाणवा.

४ (एसिअपक्काणलहू के०) तैथकी ए बन्ने अपर्याप्तानो लघु एटले जघन्य स्थितिबंध आवी रीतें होय, ते कहे ठे. सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ताना जघन्य योग्यी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्ताना योग स्थानक थोडां होय तैथी अथ्यवसाय स्थानक तथा स्थितिस्थानक पण थोडां होय केम के जघन्य अने उत्कृष्ट स्थितिनी व चालें आंतरुं थोडुं तैथी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ताना, जघन्य स्थितिबंधयकी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक जाणवो. (५) तैथकी सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होय जे नणी बादर अपर्याप्तानी स्थितिविशेषथी सूक्ष्म अपर्याप्तानी स्थिति विशेष थोडी ठे. (६) (सुदुमेअरअपक्का के०) सूक्ष्म अपर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंधयकी उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक होय. (७) ते थकी इतर तें बादरअपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक जाणवो. जेनणी बादर पर्याप्तानी जघन्य स्थिति सागरोपमनो सातइउ एक जाग पढ्योपमने असंख्यातमे जागें ऊणो होय ते थकी समयधिक समयधिक पढ्योपमना असंख्यातमा जागना असंख्य समय जाग प्रमाण स्थितिविशेष, ते सर्वस्तोक तेहने गर्भें सूक्ष्म अपर्याप्तानो स्थिति विशेष तेहने गर्भें बादर अपर्याप्तानो स्थिति विशेष तेने गर्भें सूक्ष्म पर्याप्तानो स्थिति विशेष तेसर्व स्तो क ते नणी सूक्ष्म अपर्याप्ताना उत्कृष्ट स्थितिबंधयकी बादर अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक. (८) तैथकी (पक्कागुरु के०) सूक्ष्म पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक होय. (९) तैथकी बादर पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक. ॥४९॥

लहु बिअ पक्का अपक्को, अपक्कि अर बिअ गुरु अदिगो एवं ॥

ति चउ असन्निसु नवरं, संखगुणा बिअ अमणपक्के ॥ ५० ॥

अर्थ—(१०) बादर एकेंद्रिय पर्याप्ताने मिथ्यात्व मोहनीयनो उत्कृष्ट स्थितिबंध सागरोपम प्रमाण ठे ते थकी (बिअ पक्का के०) बेंद्रिय पर्याप्तानो (लहु के०) जघन्य स्थितिबंध पुरुष वेदादिकनो पण सातइआ पच्चीश जाग एटले त्रण सागरोपम उपर सातइआ चार जाग पढ्योपमने असंख्यातमे जागें ऊणा होय ते माटें संख्यात गुणो जाणवो. जे नणी एकथी त्रिगुणो जाजेरो थयो.

(११) बेंद्रिय पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंध थकी (अपक्को के०) बेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होय. जे नणी बेंद्रिय पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंध विशेष पढ्योपमना संख्यातजागना समय जेटला असंख्याता स्थिति विशेष तेने

गर्भे बेंडिय अपर्याप्ताना स्थिति विशेष स्तोक होय तेणे जघन्य स्थिति उत्कृष्ट स्थितिना बंध आंतरं स्तोक होय, एटले अग्नीधर स्थानक थयां.

१२ (अपक्विअग्रुख्यहिगो के०) ते थकी बेंडिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक होय. १३ ते थकी (इयर के०) इतर एटले बीजा जे बेंडिय पर्याप्ता जीव ठे तेनो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक एटले कांइ एक जाजेरुं होय.

१४ (एवंतिचउअसन्निसु के०) एम तेंडिय, चौरिंडिय अने असंझी पंचेंडिय ने विपे पण चार चार बोल कहेवा परंतु एमां (नवरं के०) एटलुं विशेष ठे जे (बिअ के०) बेंडिय पर्याप्ताने विपे अने (अमणपळे के०) असंझी पंचेंडिय पर्याप्ताने विपे पहेले बोलें (संखगुणो के०) संख्यातगुणो बंध कहेवो. एटले बेंडिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध पंचीश सागरोपम प्रमाण ठे तेथकी तेंडिय पर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होय जे जणी बेइंडियथी बमणो बंध तेंडियने ठे अने जो त्रिगुणो होय तो संख्यात गुणोकहीयें. परंतु तेथी हीन ठे, माटें विज्ञो पाधिक कहुं अहींआं जो पण तेंडियने पुरुष वेदादिकनो जघन्य स्थितिबंध सागरोप मना सातइआ पञ्चाश नाग पलयोपमने असंख्यातमे नागें कणा ठे ते बंध बेंडियना मिथ्यात्व मोहनीयना बंधथी हीन पण होय, तथापि ते अहींआं विवक्ष्यो नहीं परंतु अहींआं तो स्वस्व प्रकृतिनी अपेक्षायें उत्कृष्टी तथा जघन्य स्थिति लेवी एटले प्रत्येक एकेकी प्रकृतिनी स्थितिमां एक बीजा जीवोना बंधने विपे उत्कृष्टी तथा जघन्य स्थिति लेवी तेणे करीने स्थिति बंधनुं अल्पबहुत्व जाणवुं. एवं चौद स्थानक कहां.

१५ तेंडिय पर्याप्ताना जघन्य स्थितिबंधथकी तेंडिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध विशेषाधिक होय जे जणी तेंडियना जघन्य उत्कृष्ट स्थिति विशेषने गर्भे पर्याप्ताना सर्वे स्थितिविशेष ठे, १६ तेथकी तेंडिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक. १७ तेथकी वली तेंडिय पर्याप्तानो उत्कृष्टस्थितिबंध विशेषाधिक ठे.

१८ ते थकी चौरिंडिय पर्याप्तानो जघन्यबंध विशेषाधिक बमणा ठे. ते जणी. १९ ते थकी चौरिंडिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध कांइ एक अधिक ठे.

२० ते थकी चौरिंडिय अपर्याप्तानो उत्कृष्टबंध विशेषाधिक. २१ ते थकी चौरिंडिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेषाधिक. अहींआं विशेषाधिकने स्थानकें कोइ एक स्थलें संख्यात नागादिक लेवा. कोइ एक स्थलें असंख्यात नागाधिक लेवा. २२ तेथकी चौरिंडिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध एकशो सागरोपमनो विशेषाधिक ठे. ते थकी (असन्नि के०) असन्निआ पंचेंडिय पर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणो

जे जणी चौरिंडियथी एनो दश गुणो बंध कह्यो ठे तेमाटे. १३ ते थकी असन्नि
 आ पंचेंडिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध, विशेषाधिक एटले संख्यात जाग अ
 धिक ठे जे जणी हजार सागरोपमनी स्थितिना पण संख्याता पव्योपम होय, ते
 पण वली पव्योपमने संख्यातमे जागें कणो जघन्य बंध ठे. तो पण संख्या
 तमे जागें अधिक होय. १४ ते थकी वली असन्निआ अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थि
 तिबंध विशेषाधिक ठे एटले संख्यात जागाधिक ठे. १५ ते थकी असन्निआ पंचें
 डिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यात जागाधिक होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥५०॥

तो जइ जिष्ठो बंधो, संखगुणो देस विरय हस्सिअरो ॥

सम्म चउ सन्नि चउरो, छिइ बंधाऽणु कम संखगुणा ॥ ५१ ॥

अर्थ-१६ (तो के०) ते असन्निआ पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंधथकी (जइ
 के०) यति एटले प्रमत्तसंयत एटले साधु स्वप्रायोग्य संक्लेश परिणामें वर्ततो तेनो
 (जिष्ठोबंधो के०) उत्कृष्ट स्थितिबंध (संखगुणो के०) संख्यातगुणो जाणवो.
 जे जणी असन्निआने ज्ञानावरणनो स्थितिबंध, चारज्ञें अक्षावीश सागरोपम उ
 पर सातीआ चार जाग प्रमाण ठे, अने प्रमत्तने अंतःकोडाकोडी सागरोपम प्र
 माण ठे ते माटे संख्यातगुणो अधिको स्थितिबंध होय. १७ ते साधुना उत्कृष्ट
 स्थितिबंधथकी (देसविरय के०) देशविरतिनो (हस्स के०) हस्स एटले जघन्य
 स्थितिबंध संख्यातगुणो जाणवो. १८ (इअरो के०) तेथकी इतर एटले देशविरतिनो
 उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यातगुणो जाणवो. देशविरति जीवने पर्याप्तावस्थायेंज बंध
 होय. पण अपर्याप्तावस्थायें देशविरतिपणुं न होय, तेमाटे अपर्याप्तावस्थानो
 बंध न कह्यो. १९ तेथकी (सम्म के०) अविरति सम्यक्दृष्टि पर्याप्तानो जघन्य
 स्थितिबंध, संख्यातगुणो. २० तेथकी अविरति अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध सं
 ख्यातगुणो. २१ तेथकी अविरति अपर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यातगुणो. २२
 तेथकी अविरति पर्याप्तानो उत्कृष्ट स्थितिबंध संख्यातगुणो केम के सम्यक्दृष्टिपणुं
 अपर्याप्तावस्थायें पण होय ठे, तेथी एना (चउ के०) चार बंध कह्या. तेमज
 (सन्निचउरो के०) सन्निआ पंचेंडिय मिथ्यात्वीना पण चार बंध जाणवा, एटले
 तेथकी २३ सन्निआ पंचेंडिय पर्याप्ता मिथ्यात्वीनो जघन्य स्थितिबंध संख्यातगुणो.
 २४ तेथकी सन्निआ पंचेंडिय अपर्याप्तानो जघन्य स्थितिबंध संख्यातगुणो. २५ ते
 थकी सन्निआ पंचेंडिय अपर्याप्तानो उत्कृष्टस्थितिबंध संख्यातगुणो. २६ तेथकी स

त्रिआ पंचेंद्रिय पर्याप्ता मिथ्यात्वीनो उत्कृष्टस्थितिवंध, संख्यातगुणो (छिद्वंधा
ऽणुकमसंखगुणा के०) इहां साधुना उत्कृष्ट स्थितिवंध थकी लेइने नव वंधना
स्थानकपर्यंत अनुक्रमे संख्यातगुणा करतां पण कोडाकोडी सागरोपममांहे होय.
तेथी ए सर्व वंध अंतःकोडाकोडीना कहीयें. ए परिज्ञापा जाणवी.

एक सत्रिआ पर्याप्ता मिथ्यात्वीनो उत्कृष्ट स्थितिवंध अंतःकोडाकोडी सागरो
पमथी अधिक होय. एम साधुना उत्कृष्ट स्थितिवंधथी लेइ सत्रिआ पंचेंद्रिय पर्याप्ता
मिथ्यात्वीना स्थितिवंध जगें सघला स्थितिवंध संख्यात गुणा लेवा. ए स्थितिवंधनां
अल्पबहुत्व कहेवे करी उत्कृष्ट तथा जयन्य स्थितिवंधना स्वामी पण कह्या. ॥५१॥

हवे कोइ एक कहेशे के स्थितिवंध अने रसबंध तो कपाय प्रत्ययिआ ठे, तेथी
शुज प्रकृतिनो रस, कपायनी मंदतायें उत्कृष्ट होय अने कपायनी तीव्रतायें जघ
न्य होय तथा अशुज प्रकृतिनो रस कपायनी तीव्रतायें उत्कृष्ट होय अने कपाय
नी मंदतायें जयन्य होय, तेवीज रीतें शुज प्रकृतिनी स्थिति पण कपायनीमं द
तायें उत्कृष्ट होय अने कपायनी तीव्रतायें मंद होय तथा अशुज प्रकृतिनी
स्थिति पण कपायनी मंदतायें उत्कृष्टी होय अने कपायनी तीव्रतायें मंद होय.
एम न कहेवुं जोइयें, माटें अहींआं जे विशेष फेर ठे, ते कहे ठे ॥

सवाणवि जि षष्ठि, असुहा जं साइ संकिलेसेणं ॥

इअरा विसोहितं पुण, मुत्तं नर अमर तिरि आउ ॥ ५२ ॥

अर्थ—(सवाणविजि षष्ठि के०) सर्व कर्मप्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति स्वस्वबंध प्रा
योग्य संक्षेप परिणामें बंधाय, ते नणी (असुहा के०) अशुज एटले मेलें परिणामें
बंधाय. (जंसाइसंकिलेसेणं के०) जे कारणें उत्कृष्टस्थिति अतिसंक्षेपें तीव्रकपायो
दयें बंधाय ठे तेमाटें शुज तथा अशुज प्रकृतिनी जे उत्कृष्टस्थिति बंधाय. ते सर्व
अशुज जाणवी. जे नणी स्थितिवंध, सर्व प्रकृतिनो संक्षिणनी वृद्धियें बंधाय
ठे अने जेम जेम विद्युद्धि होय, तेम तेम स्थितिवंध हीन थातो जाय, पण रस
बंधनी परें स्थितिवंध शुजाशुज न लेवो जे उत्कृष्ट स्थितिवंध ठे ते संक्षेपनुं कार्य
ठे, ते माटें एकशो ने सत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिवंध, पोतपोताना बंधाथ्य
वमायस्थानकमध्यें मलीन अथ्यवसाय स्थानकें बंधाय, तेथी ए एकशोने सत्तर
प्रकृतिनो उत्कृष्ट स्थितिवंध, ते अशुज कहीयें अने ए उत्कृष्टी स्थितिथकी (इअ
रा के०) इतर एटले बीजां जे जयन्य स्थितिवंध ठे ते (विसोहितं के०) विद्युद्धिनुं

कार्य ठे, एटले जेम जेम उज्ज्वल परिणामनी वृद्धि थाय, तेम तेम हीन हीन स्थिति बंधाय, तेथी पोताना बंधस्थानक मांहे जे अत्यंत विच्छेद बंधाध्य वसायस्थानक होय. तिहां जघन्य स्थितिबंध होय तेथी एने शुज कहीयें. (पुण के०) वली (नर के०) मनुष्यायु तथा (अमर के०) देवायु अने (तिरि आव के०) तिर्यंचायुं, ए त्रण आयुने (मुक्तं के०) मूकीने शेष ए एकशो सत्तर प्रकृतिनी अपेक्षायें ए लेवुं.

हवे शेष त्रण आयुनी स्थितिबंधनो विशेष कहे ठे. मनुष्यायु, देवायु अने तिर्यंगा यु, ए त्रण आयुनी उत्कृष्ट स्थिति आपणा बंधाध्यवसाय स्थानकमध्ये विच्छेदाध्य वसायें बंधाय अने मलीन परिणामें जघन्य स्थिति बंधाय ए विशेष जाणवुं ॥ ५३ ॥

हवे बंधनुं विषमतापणुं योगनी विपमतापणे थाय ठे. तेथी योगस्थान क निरूपवाने योगनो अर्थ कहेवाने, अंतर गाथा लखीयें ठैयें. “ परिणामा लं बण गह्ण साहणं तेण लद्धनामतिगं ॥ कण्णइसान्नुत्तसा,प्पवे सवि समीकयपए सं ॥२॥ ” हवे ए गाथानो अर्थ कहे ठे. जे वीर्यविशेषें करी औदारिकादिक पुजल ग्रहण करे तथा तेने श्वासोद्ध्वासादिकपणे परिणमावीने निःसर्ग एटले स्वानाविक हेतुक शक्ति विशेषनी सिद्धिने अर्थें अवलंबे, जेम कोइ एक आजारी माणस, नगरमां जमवा निमित्तें लाकडी जालीने उठे पठी जेवारें सामर्थ्य थाय, तेवारें लाकडीने मूकी आपे. तेम जीव पण जापादिक पुजल अवलंबी तळ्ळन्य करणवीर्य थये थकें तेने मूकी आपे तेथी परिणाम अवलंबन ग्रहण हेतु जे वीर्य, तेने योग कहीयें. ते योगना मन, वचन अने कायाने जेदें करी त्रण नाम होय ठे. तिहां योग, बल, वीर्य, उत्साह, शक्ति, चेष्टा करण ए सर्व एना पर्याय नाम जाणवां, अने ते जीवने वीर्यांतरायने ह्योपशमं करी सर्व प्रदेशों सरखुं ठे पण जे प्रदेश, कार्यने हूकडा होय तिहां घणुं वीर्य जणाय अने बीजा प्रदेशों थोडुं जणाय जेम हाथे करी घडो उपाडतां हाथ मात्रना प्रदेश हूकडा ठे तिहां घणुं चलाचलपणुं होय अने खंजाने प्रदेशों तेथी थोडुं होय अने पादादिकने प्रदेशों तो वली घणुं ज थोडुं होय तेथी वीर्यनुं विपम पणुं होय. संसारी जीवने वीर्यांतराय देश घातीने विचित्र ह्योपशमं करीने अनेक जातनुं ह्यायोपशमिक वीर्य, उन्नस्थनुं होयठे तेमध्ये मन चिंतना पूर्वक आहार विहारादिक जे करण व्यापार ते अनिसंधिज वीर्य कहीयें अने जे मन चिंतना विना केवल वचन अने कायाना व्यापार एकेंडि यादिकने ठे तथा पंचेंडियने पण शुक्त आहारनुं धरनुं धातु मल पणे परिणमावुं.

ते अन्नजितंधिज वीर्य कहियें. तथा क्लायिक जावें जे करणवीर्य केवलीजुं ते पण वे जेदें ठे. एक सलेश्य वीर्यते सयोगीजुं ग्रहण परिणमन अवलंबन रूप ते त्रण योगना जेदें त्रिविधें ठे तथा बीजुं अयोगीजुं अलेश्य वीर्य जाणवुं. तथा ब्रह्मस्थ जुं अजलेश्या वंतने विद्युदियें वीर्य वधे अने अगुज लेश्यावंतने संक्तेवें वीर्य वधे अन्यथा मंदता होय, ए रीतें योगनी उत्कृष्ट मंदता होय.

तिहां जघन्यवीर्य जे जीवनो प्रदेश तेवली केवलीना तीव्रण बुद्धिरूप शस्त्रं करी ठेदतां जे वीर्यांश निरंश होय नहीं एटले जे वीर्यांशानो अंश केवती पण कल्पी न शके तेवीर्यविजाग तथा जावाणु पण तेने कहियें. तेवा लोकाकाशथी असंख्या त गुणा जे वीर्याणु, तेणे करी सहित जे प्रदेश, तेनो समुदाय एटले जीव प्रदेश नी श्रेणी, ते प्रथमवर्गणा. तेथी एक वीर्य विजागें अधिक एवी जे जीव प्रदेशनी श्रेणी ते बीजा वर्गणा. वे वीर्यविजागें अधिक वीर्य एवी जे जीव प्रदेशनी श्रेणी, ते त्रीजा वर्गणा. एम एकेक वीर्य विजागें अधिक वीर्यवंत जे जीव प्रदेशनी श्रेणी, ते घनीकृत लोकनी एक प्रादेशिक सूची श्रेणीने असंख्यातमे जागें जेटला आकाश प्रदेश होय, तेटली वर्गणायें एक स्पर्धक होय ते प्रथम स्पर्धकनी उत्कृष्ट वीर्यांश वर्गणाथी एटले ठेली वर्गणाथी एक, वे अथवा संख्याते वीर्यविजागें अधिका कोइ जीव प्रदेश नथी परंतु असंख्य लोकाकाश प्रमाण वीर्यांशें अधिक जे जीव प्रदेशनी श्रेणी, ते बीजा स्पर्धकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. वली तेथी एक एक वीर्य विजागें चढता चढता जीव प्रदेशनी श्रेणीनी वर्गणायें करी बीजो स्पर्धक थाय, तेथी वली असंख्यलोकाकाश प्रदेश जाग प्रमाण वीर्यांशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेशनी श्रेणी ते त्रीजा स्पर्धकनी प्रथम वर्गणा. एणी पेरें श्रेणी प्रदेश असंख्येय जाग प्रमाण स्पर्धकें पहिलुं जघन्य योगस्थानक होय, ते थकी अंगुलना असंख्या तमा जागना आकाशप्रदेश प्रमाण स्पर्धकें वधतुं बीजुं योगस्थानक होय, तेथी वली तेटलेज स्पर्धकें वधतुं वली त्रीजुं योगस्थानक होय. एम अंगुलने असंख्या त जाग प्रदेश प्रमाण स्पर्धक वधतां वधतां एवा घनीकृत लोकनी सूची श्रेणीना असंख्यात जाग प्रदेश प्रमाण योग स्थानक गये थके, ठेहुं जे योग स्थानक आवे, तेवारें प्रथम योग स्थानकथी वमणा स्पर्धक होय, तेथी वली तेटला योगस्थानक गये थके तेथी वली वमणा स्पर्धक होय. एम वमणा वमणा स्पर्धक होय ते पण योगस्थानक सूक्ष्म अक्षापल्पोपमने असंख्यातमे जागें जेटला समय होय तेटजा वमणा स्पर्धक वालां पण योग स्थानक होय. प्रथम योग स्थानक

घणा अल्पवीर्यं प्रदेशों होय बीजुं योग स्थानक तेथी थोडे अल्पवीर्यं प्रदेशों होय. एम स्पर्शक बंधें. कोइ एक आचार्य कहे ठे. जघन्य योग जीवथी जे वीर्याधिक जीव तेनुं बीजुं योगस्थानक, एम वीर्यं वधतां वधतां योग स्थानक नीपजे ते मध्यें जघन्य योग स्थानकें जीव, चार समय सुधी रहे, मध्यम योगस्थानकें जीव, आठ समय सुधी रहे अने उत्कृष्ट योगस्थानकें जीव, बे समय सुधी रहे, इत्यादि क जघन्य मध्यम प्ररूपणा सर्व कर्म प्रकृतिथी जाणवी ॥ इति

हवे योगस्थानकना स्वामी कहे ठे.

सुदुम निगोआइ खण, पजोग बायरप विगल अमण मणा ॥

अपङ्क लहु पढम ड गुरु, पजहस्सि अरो असंख गुणो ॥ ५३ ॥

अर्थ—योग ते वीर्यस्थान व्यापार पराक्रम कहीर्यें. वीर्यांतरायना व्यापारथी उपनुं जे कायादिकनुं परिस्पंद ते योग कहीर्यें. (सुदुमनिगोआइखणपजोग के०) १ सूक्ष्म निगोदिआ, लब्धि अपर्याप्ताने आदिहूणो एटले नव प्रथम समयें अल्प जघन्य योगते स्तोके. २ तेथकी (बायरप के०) बादर निगोदिउ लब्धि अपर्याप्तो तेने नव प्रथम समयें जे योग ते असंख्यात गुणो जाणवो. (३) तेथकी (विगल के०) बेंडिय, तेंडिय, अने चौरिंडिय एटले अनुक्रमें बेंडिय अपर्याप्ताने नव प्रथम समयें योग असंख्यात गुणो जाणवो. (४) तेथकी तेंडिय अपर्याप्तानो जघन्य योग, असंख्यात गुणो जाणवो. (५) तेथकी लब्धि अपर्याप्ता चौरिंडिय जीवने नव प्रथम समयें जघन्ययोग असंख्यात गुणो. (६) तेथकी (अमण के०) जेने मन नथी एवा असन्नीआ पंचेंडिय लब्धि अपर्याप्ताने नव प्रथम समयें जघन्य योग, असंख्यात गुणो. (७) तेथकी (मणा के०) मनःपर्याप्ताना आरंजक एवा सन्नीआ पंचेंडिय लब्धि अपर्याप्ताने नव प्रथम समयें जघन्य योग असंख्यात गुणो, ए सात (अपङ्क के०) लब्धि अपर्याप्ताना नव प्रथम समयें (लहु के०) जघन्ययोग लेवा तेथकी (पढमडु के०) प्रथमना बे एटले अपर्याप्ता, सूक्ष्म अने बादर निगोदीआनो (गुरु के०) उत्कृष्ट योग कहेवो एटले (८) सूक्ष्मनिगोदीआ लब्धि अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग, असंख्यातगुणो. (९) तेथकी बादर निगोदीआ एकें डिय लब्धि अपर्याप्तानो उत्कृष्टयोग, असंख्यात गुणो. (पजहस्सिअरो के०) तेथकी एज बे पर्याप्तानो न्हस्व एटले जघन्य योग लेवो एटले (१०) तेथकी सूक्ष्मनिगोदीआ पर्याप्तानो जघन्य योग असंख्यात गुणो. (११) तेथकी बादर एकें

द्विप पर्याप्तानो जघन्ययोग असंख्यात गुणो. तेषकी इतर एटले एज बे
 सूक्ष्म पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग केवो एटले (१३) सूक्ष्मनिगोदीआ पर्याप्तानो उ
 त्कृष्ट योग असंख्यात गुणो. (१३) तेषकी बादर पर्याप्ता एकेंद्वियनो उत्कृष्ट
 योग असंख्यातगुणो. एटले ए तेर योग स्थानक कह्यां. तेमध्ये एकेंद्वियना नेद
 चार ठे, ते जघन्य तथा उत्कृष्ट नेदें करी आठ नेद तथा तथा विकलेंद्वियना त्रण
 अने असन्नीआ तथा सन्नीआ अपर्याप्ता एवं पांचना जघन्य योग कह्या. एवं
 तेर योगस्थानकजुं अल्प बहुत्व अनुक्रमे (असंखगुणो के०) असंख्यातगुणुं जा
 एवुं. अर्द्धीआं सधले गुणाकार, सूक्ष्म क्षेत्र पत्योपमना असंख्यातमा जागें वर्त्तता
 समय प्रमाण जाणवो. एम आगले योगस्थानकें पण एहिज गुणाकार लेवो॥५३॥

असमत्त तमुक्कोसो, पळ जहन्निअर एव तिइ ठाणा ॥

अपजेयर संखगुणा, परमऽपज विए असंख गुणा ॥ ५४ ॥

अर्थ—(असमत्तमुक्कोसो के०) असमाप्त एटले अपर्याप्ता ते पांच त्रस लेवा एट
 ले विकलेंद्विय त्रण तथा असन्नीआ, सन्नीआ, ए पांच आर्याप्ता एटले जेणे आरंजी
 पर्याप्ती पूरी नथी करी, ते जीव अपर्याप्ता जाणवा. ते पांचेना उत्कृष्ट योग, अनुक्रमें
 असंख्यात गुणा ठे. ते कहे ठे. (१४) ते थकी बेंद्विय अपर्याप्तानो उत्कृष्टयोग असं
 ख्यातगुणो. (१५) तेषकी तेंद्विय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. (१६)
 तेषकी चौरिंद्विय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. (१७) तेषकी
 असन्नीया पंचेंद्विय अपर्याप्तानो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (१८) तेषकी स
 न्नीआ-पंचेंद्विय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. एम वली (पळ के०)
 ए पांच पर्याप्तानो (जहन्निअर के०) जघन्य योग स्थानक अनुक्रमें लेवां. एटले
 (१९) तेषकी बेंद्विय पर्याप्तानो जघन्य योग असंख्यात गुणो. (२०) तेषकी
 तेंद्विय पर्याप्तानो जघन्य योग असंख्यातगुणो. (२१) तेषकी चौरिंद्विय पर्याप्ता
 नो जघन्य योग असंख्यातगुणो. (२२) तेषकी असन्नीआ पंचेंद्विय पर्याप्तानो
 जघन्ययोग असंख्यातगुणो. (२३) तेषकी सन्नीआ पंचेंद्विय पर्याप्तानो जघन्य
 योग असंख्यातगुणो हवे ए थकी (इअर के०) इतर एटले ए पांचे पर्याप्ताना उ
 त्कृष्ट योग अनुक्रमें कहेवा. (२४) तेषकी बेंद्विय पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्या
 तगुणो. (२५) तेषकी तेंद्विय पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुणो. (२६) ते
 थो चौरिंद्विय पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग, असंख्यात गुणो. (२७) तेषकी असन्नी

आ पंचेंद्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग, असंख्यातगुणो. (३८) तेथकी सन्नीध्या पंचेंद्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (३९) तेथकी अनुत्तरसुरनो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो. (३०) तेथकी त्रैवेयक सुरनो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (३१) तेथकी युगलियानो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. (३२) तेथकी आहारक शरीरनो उत्कृष्टयोग असंख्यातगुणो. तेथकी शेषदेव, नारक, तिर्यंच अने मनुष्यनो यथोत्तर उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो जाणवो. एम योगस्थानक कह्यां.

(एव के०) एमज ए सात पर्याप्ता अने अपर्याप्ताना जेदें करी चौद जातिना जीव, तेना कर्मबंधना जघन्य अने उत्कृष्ट स्थितिना वचमाना अंतरें जेटला समय तेटला (विज्ञाणा के०) स्थितिबंधनां स्थानक, तेजुं अल्पबहुत्व कहे ठे.

(अपजेयरसंखगुणा के०) (१) तिहां सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानुं स्थितिस्थानक स्तोत्र. (२) तेथकी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (३) तेथकी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (४) तेथकी बादर एकेंद्रिय पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (५) तेथकी बेंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक असंख्यातगुणां. जे जणी बेंद्रियनी उत्कृष्ट स्थितिथी पढ्योपमने संख्यातमे जागें ऊणी जघन्यस्थिति होय, तेथी पढ्योपमना संख्यातमा जागना जेटला समय एटला बेंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक होय अने चार एकेंद्रियनां स्थितिस्थानक पढ्योपमना असंख्यातमा जागनां समयमा त्र ठे. असंख्या एटले पढ्योपम असंख्याज्ञें एक पढ्योपमना संख्यातांश होय ते माटें बादर एकेंद्रिय पर्याप्ताना उत्कृष्ट स्थितिस्थानकथी बेंद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक असंख्यात गुणां जाणवां. (६) तेथकी वली तेहीज बेंद्रिय पर्याप्तानां उत्कृष्ट स्थिति स्थानक संख्यात गुणां जाणवा. (७) तेथकी तेंद्रिय अपर्याप्ताना स्थिति स्थानक संख्यातगुणां (८) तेथकी तेंद्रिय पर्याप्ताना स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (९) तेथकी चौरिद्रिय अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (१०) तेथकी चौरिंद्रिय पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. (११) तेथकी असन्नीध्या अपर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यात गुणां. (१२) तेथकी असन्नीध्या पर्याप्तानां स्थिति स्थानक संख्यातगुणां, (१३) तेथकी सन्नीध्या पंचेंद्रिय अपर्याप्ताना स्थितिस्थानक संख्यातगुणां (१४) तेथकी सन्नीध्या पंचेंद्रिय पर्याप्तानां स्थितिस्थानक संख्यातगुणां. अर्हीयां सत्तर कोडाकोडी सागरोपममध्ये पण पढ्योपमना संख्यातांश संख्याता होय, तेथी

संख्यातगुणा कहीर्ये. ए सर्व पदने विषे संख्यातगुणा कहेवा. किंवा कोइक पदने विषे विशेष ठे, ते कहे ठे. (परमपजबिएअसंखगुणा के०) परं केवलं अपर्याप्त कींइय पदने विषे असंख्यातगुणां स्थिति स्थानक कहेवा ॥ इति समुच्चयार्थः ५४ हवे जेटली अपर्याप्ता वस्थार्ये योग वृद्धि होय, ते कहे ठे.

पइखिए मसंखगुण विरि, य अपज्ज ङइ असंख लोग समा ॥

अंशवंसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंखगुणा ॥ ५५ ॥

अर्थ—(पइखिए के०) प्रतिक्षण एटले समय समय प्रत्ये अपर्याप्तावस्थार्ये जे. योगस्थानक होय, तेथी बीजे समयें (असंखगुणविरिय के०) असंख्यात गुण वृद्धि योगस्थानक होय, तेथी त्रीजे समय वली असंख्यात गुणवृद्धि योग स्थानक होय. एम (अपज्ज. के०) अपर्याप्ताने चरमसमय लगे असंख्यातगुण वृद्धि योगस्थानकनी होय, अने पर्याप्ति पूर्ण कच्चा पढी पर्याप्ताने संख्यातगुण वृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुण हीन, असंख्यातगुण हीन, कोइ तुल्य योग स्थानके पण होय. एम अनियमें होय, तो कोइ जीव वधते, कोइ घटते, कोइ तुल्य योग स्थानके पण वत्ते पण निर्धार न होय. “ सवो विअपज्जतो, पइखिए मसंखगुणाए जोगवुडीए ” इति बृहत्तकचूर्णौ. एम योगवृद्धिये करी कर्मना प्रवेशनी तथा (ङइ के०) स्थितिनी वृद्धि होय.

हवे जीवने प्रत्येके एकेक स्थितिस्थानक विशेषे अथ्यवसायस्थानके बंधाय, ते कहे ठे. स्थिति, स्थानक स्थानक प्रत्ये तीव्र, तीव्रतर. मंद, मंदतर. मंदतमादिक, असंख्याते. अथ्यवसाय स्थानके बंधाय तिहां जघन्यस्थिति (असंखलोगसमा के०) असंख्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणे काषाधिक अथ्यवसाय स्थानके बंधाय. ते थकी वलीसमयाधिक स्थिति बंधाय, ते वली विशेषाधिक अथ्यवसाय स्थानके बंधाय. एम द्विसमयाधिक. त्रिसमयाधिक स्थितिस्थानके विशेषाधिक विशेषाधिक स्थितिस्थानक वधारतां, वधारतां एक पल्योपमनी असंख्यात जाग मात्र स्थिति स्थानक अतिक्रमे थके, जघन्य स्थितिना अथ्यवसाय स्थानकथी बमणां अथ्यवसायस्थानक थाय. एम वली पण तेटलांज स्थितिस्थानक अतिक्रमे थके, बमणां बमणां अथ्यवसाय स्थानक थाय, ते पण एक पल्योपम मात्र स्थिति वृद्धिये असंख्याता दिगुण वृद्धिनां स्थितिस्थानक पण थाय, एम एक आयुःकर्म विना शेष (सत्तसु के०) सात कर्मनां जघन्य स्थितिस्थानक थकी मांढीने (अ

व्यवसायाअहिया के०) विशेषाधिक, विशेषाधिक, अथ्यवसाय स्थानक वधतां होय.

(आयुःकर्मनी जघन्यस्थितियें जे सर्वस्तोक अथ्यसाय स्थानक होय तेथी द्वितीयस्थितियें (असंख्यगुणा के०) असंख्यातगुणां होय. तृतीयस्थिति असंख्यातगुणा अथ्यवसाय स्थानकें होय. एम असंख्यात गुणां अथ्यवसाय स्थानकें करीने समयाधिक समयाधिक स्थिति वधारतां उत्कृष्टस्थिति सुधी जइयें.

एम कषायोदयजेदें करी आत्मानो जे अशुद्ध स्वभावविशेष, ते अथ्यवसायस्थानक जाणवां. ते अथ्यवसायस्थानक, रस विशेषना हेतु जाणवां. इष्य, क्षेत्र, काल, नाव, प्रतिबंध, रस, विपाक, नियामक, ते सात कर्मनी जघन्य स्थितियें असंख्याता अथ्यवसाय, ते थकी समयाधिक समयाधिकस्थितियें विशेषाधिक विशेषाधिक अथ्यवसायस्थानक वधतां होय. ते उत्कृष्ट स्थिति पर्यंत विशेषाधिक, विशेषाधिक, वधतां लेवाय. अने आयुःकर्मनां स्थिति स्थानकें स्थानकें थद्यपि अथ्यवसायस्थानक असंख्यात गुणां वधे ठे, तथापि ते सर्व कर्मथी थोडां जाणवां.

अने नामकर्म तथा गोत्रकर्मना संख्यातां तथा असंख्यातां पण स्थितिस्थानक होय, तोपण आयुःकर्मनी जघन्य स्थिति थ्य ठे माटें अथ्यवसाय स्थानक थोडां होय ते माटें आयुष्यना अथ्यवसाय स्थानकथी नामकर्म अने गोत्रकर्मनां स्थितिबंधाथ्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां जाणवां.

तेथकी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय अने अंतराय, ए चार कर्मनां स्थितिबंधाथ्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां जाणवां. जे जणी नामकर्म अने गोत्रकर्मथकी दश कोडा कोडी सागरापमनी स्थिति एनी अधिक ठे अने पल्योपमना असंख्यांश मात्र स्थिति वृद्धियें अथ्यवसाय स्थानक, बमणां वधे अने दश कोडा कोडी सागरापममध्ये तो असंख्याता पल्योपमना असंख्यांश होय, तेथी असंख्यातगामें अथ्यवसायस्थानकनी द्विगुण वृद्धि करतां नामकर्म अने गोत्रकर्मथकी ए चार कर्मनां असंख्यातगुणां अथ्यवसाय स्थानक होय. अने ए चारे कर्मना मांहोमांहे अरस परस अथ्यवसायस्थानक तुल्य बराबर होय.

तेथकी वली चारित्र मोहनीयनी स्थितिनां अथ्यवसाय स्थानक असंख्यातगुणां जाणवां, जे जणी ज्ञानावरणीयनी स्थितिथकी कषाय चारित्र मोहनीयनी स्थिति, दश कोडाकोडी सागरापमनी वधती ठे. तिहां असंख्यातां पल्यासंख्यांशें असंख्याती द्विगुण वृद्धि होय, ते माटें असंख्यात गुणां अथ्यवसाय स्थानक जाणवां.

ते थकी दर्शन मोहनीयनां असंख्यात गुणां अथ्यवसाय स्थानक, स्थितिबंध

संख्यातगुणा कहीयें. ए सर्वे पदने विषे संख्यातगुणा कहेवा. किंवा कोइक पदने विषें विशेष ठे, ते कहे ठे. (परमपजबिएअसंखगुणा के०) परं केवलं अपर्याप्तं द्विंदिय पदने विषे असंख्यातगुणां स्थिति स्थानक कहेवा ॥ इति समुच्चयार्थः ५४
हवे जेटली अपर्याप्ता वस्थायें योग वृद्धि होय, ते कहे ठे.

पइखिए मसंखगुण विरि, य अपक षड् असंख लोग समा ॥

असंखसाया अहियां, सत्तसु आउसु असंखगुणा ॥ ५५ ॥

अर्थ—(पइखिए के०) प्रतिहण एटले समय समय प्रत्यें अपर्याप्तावस्थायें जे योगस्थानक होय, तेथी बीजे समयें (असंखगुणविरिय के०) असंख्यात गुण वृद्धि योगस्थानक होय, तेथी त्रीजे समय वली असंख्यात गुणवृद्धि योग स्थानक होय. एम (अपक के०) अपर्याप्ताने चरमसमय लगें असंख्यातगुण वृद्धि योगस्थानकनी होय, अने पर्याप्ति पूर्ण कखा पठी पर्याप्ताने संख्यातगुण वृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुण हीन, असंख्यातगुण हीन, कोइ तुल्य योग स्थानकें पण होय. एम अनियमें होय, तो कोइ जीव वधते, कोइ घटते, कोइ तुल्य योग स्थानकें पण वर्ते पण निर्दरि न होय. “ सवो विअपकत्तो, पइखए मसंखगुणाए जोगवुडीए ” इति बृहत्तकचूर्णौ. एम योगवृद्धियें करी कर्मेना प्र देशनी तथा (षड् के०) स्थितिनी वृद्धि होय.

हवे जीवने प्रत्येकें एकेक स्थितिस्थानक विशेषें अध्येवसायस्थानकें बंधाय, ते कहे ठे. स्थिति, स्थानक स्थानक प्रत्यें तीव्र, तीव्रतर. मंद, मंदतर. मंदतमादिक, असंख्याते अध्येवसाय स्थानकें बंधाय तिहां जघन्यस्थिति (असंखलोगसमा के०) असंखलोकाकाशप्रदेशप्रमाणे काषायिक अध्येवसाय स्थानकें बंधाय. ते थकी वलीसमयाधिक स्थिति बंधाय, ते वली विशेषाधिक अध्येवसाय स्थानकें बंधाय. एम. द्विसमयाधिक. त्रिसमयाधिक स्थितिस्थानकें विशेषाधिक विशेषाधिक स्थितिस्थानक वधारतां, वधारतां एक पल्योपमनी असंख्यात जाग मात्र स्थिति स्थानक अतिक्रमे थके, जघन्य स्थितिना अध्येवसाय स्थानकथी बमणां अध्येवसायस्थानक थाय. एम वली पण तेटलांज स्थितिस्थानक अतिक्रमे थके, बमणां बमणां अध्येवसाय स्थानक थाय, ते पण एक पल्योपम मात्र स्थिति वृद्धियें असंख्याता द्विगुण वृद्धिनां स्थितिस्थानक पण थाय, एम एक आयुःकर्म विना शेष (सत्तसु के०) सात कर्मेनां जघन्य स्थितिस्थानक थकी मांदिने (अ

घवसायाअहिया के०) विशेषाधिक, विशेषाधिक, अथ्यवसाय स्थानक वधतां होय.

(आठसु के०) आयुःकर्मनी जघन्यस्थितियें जे सर्वस्तोक अथ्यसाय स्थानक होय तेथी द्वितीयस्थितियें (असंखगुणा के०) असंख्यातगुणां होय. तृतीयस्थिति असंख्यातगुणा अथ्यवसाय स्थानकें होय. एम असंख्यात गुणां अथ्यवसाय स्थानकें करीने समयाधिक समयाधिक स्थिति वधारतां उत्कृष्टस्थिति सुधी जइयें.

एम कषायोदयजेदें करी आत्मानो जे अष्टु-६ स्वभावविशेष, ते अथ्यवसायस्थानक जाणवां. ते अथ्यवसायस्थानक, रस विशेषना हेतु जाणवां. इष्य, क्षेत्र, काल, जाव, प्रतिबंध, रस, विपाक, नियामक, ते सात कर्मनी जघन्य स्थितियें असंख्याता अथ्यवसाय, ते थकी समयाधिक समयाधिकस्थितियें विशेषाधिक विशेषाधिक अथ्यवसायस्थानक वधतां होय. ते उत्कृष्ट स्थिति पर्यंत विशेषाधिक, विशेषाधिक, वधतां जेवाय. अने आयुःकर्मनां स्थिति स्थानकें स्थानकें यद्यपि अथ्यवसायस्थानक असंख्यात गुणां वधे ठे, तथापि ते सर्व कर्मथी थोडां जाणवां.

अने नामकर्म तथा गोत्रकर्मना संख्यातां तथा असंख्यातां पण स्थितिस्थानक होय, तोपण आयुःकर्मनी जघन्य स्थिति अल्प ठे माटें अथ्यवसाय स्थानक थोडां होय ते माटें आयुष्यना अथ्यवसाय स्थानकथी नामकर्म अने गोत्रकर्मनां स्थितिबंधाथ्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां जाणवां.

तेथकी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय अने अंतराय, ए चार कर्मनां स्थितिबंधाथ्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां जाणवां. जे नणी नामकर्म अने गोत्रकर्मथकी दश कोडा कोडी सागरोपमनी स्थिति एनी अधिक ठे अने पत्योपमना असंख्यांश मात्र स्थिति वृद्धियें अथ्यवसाय स्थानक, बमणां वधे अने दश कोडा कोडी सागरोपममध्ये तो असंख्याता पत्योपमना असंख्यांश होय, तेथी असंख्यातगामें अथ्यवसायस्थानकनी द्विगुण वृद्धि करतां नामकर्म अने गोत्रकर्मथकी ए चार कर्मनां असंख्यातगुणां अथ्यवसाय स्थानक होय. अने ए चार कर्मना मांहोमांहे अरस परस अथ्यवसायस्थानक तुल्य बराबर होय.

तेथकी वली चारित्र मोहनीयनी स्थितिनां अथ्यवसाय स्थानक असंख्यातगुणां जाणवां, जे नणी ज्ञानावरणीयनी स्थितिथकी कषाय चारित्र मोहनीयनी स्थिति, दश कोडाकोडी सागरोपमनी वधती ठे. तिहां असंख्यातां पत्यासंख्यांशें असंख्याती द्विगुण वृद्धि होय, ते माटें असंख्यात गुणां अथ्यवसाय स्थानक जाणवां. ते थकी दर्शन मोहनीयनां असंख्यात गुणां अथ्यवसाय स्थानक, स्थितिबंध

धना हेतु जाणवा. जे जणी चारित्र मोहनीयनी स्थितिकी त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, दर्शनमोहनीयनी बधती ठे. तेमाटें तेना पण पूर्वोक्त युक्तियें करी असंख्यातगुणां अध्यवसायस्थानक होय. ए रीतें आठ कर्मनां स्थितिना अध्यवसाय स्थानकनां अल्पबहुत्व पण प्रसंगें कहां.

तथा एकेक अध्यवसाय स्थानकें वर्त्तता त्रस जीव, जघन्यपदें एक, बे, त्रण अने उत्कृष्टा तो आवलीना असंख्यांश समय प्रमाण जाणवा अने स्थावर जीव अनंता जाणवा. तथा त्रसजीव युक्त निरंतरपणे जघन्यपदें बे अध्यवसाय स्थानक अने उत्कृष्टपदें आवलीना असंख्याता समय मात्र प्रमाण होय तेथी उपरांत अवश्य शून्य होय, उत्कृष्टपदें असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण होय, अने स्थावर शून्य अध्यवसायस्थानक न होय, जे जणी अनंतानंतनिगोदीया जीव, ते सद्गु स्थावर ठे. एम अध्यवसायस्थानकें जीव प्ररूपणा कही.

तथा जघन्यस्थितिने जघन्य अध्यवसायस्थानकें अनंता रसविजाग जाणवा. तेथकी वली एज प्रथम स्थितिने उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें अनंतगुणा रस विजाग जाणवा, तेथकी वली द्वितीयस्थितिने. जघन्य अध्यवसाय स्थानकें अनंतगुणो रस जाणवो. तेथकी तेज द्वितीयस्थितिना उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें वली अनंतगुणो रस जाणवो. एम स्थितिभिन्नै जघन्य उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानकें अनंतगुणो अनंतगुणो रस वधारतां उत्कृष्टस्थितिना उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानक लगे कहेवुं. ए रीतें प्रसंगें अध्यवसायस्थानकें रस पण विचाखो ॥ इति स० ॥५५॥ हवे उत्तर प्रकृति न बंधाय, तो केटलो काल न बंधाय? तेनो अबाधाकाल कहे ठे. तिहां सर्व प्रकृतिमां जघन्यथीतो एक समय अबाधाकाल होय अने उत्कृष्ट पणे मिथ्यात्व तथा सास्वादन गुणवाणे बंधविभेद पामेली एकतालीश प्रकृतिनो पंचेंद्रियने विषे अबाधाकाल कहे ठे. प्रथम ते एकतालीश प्रकृतिनां नाम कहे ठे. नरकत्रिक, जातिचतुष्क, स्थावरचतुष्क हुंफसंस्थान, ठेवहुं, संघयण, आतप, मिथ्यात्व, नपुंसक, ए शोल प्रकृति, मिथ्यात्व व्यवहिन बंध अने पञ्चीश प्रकृति सास्वादन व्यवहिनबंध एवं एकतालीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट बंधांतर कहे ठे.

अथोत्कृष्ट स्थित्यंतरबंधमाह ॥ तिरि निरय त जोयाणं,
नरभवजुअ सचउपल्ल तेसठं ॥ थावर चउ इगविगला,
यवेसु पणसीइ सयमयरा ॥ ५६ ॥

अर्थ—(तिरिनिरयति के०) तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वीं अने तिर्यंचायु, ए तिर्यंच त्रिक तथा नरकगति, नरकानुपूर्वीं अने नरकायु, ए नरकत्रिक, सातसुं. (जोया एं के०) उद्योतनामकर्म, ए सात प्रकृतिनो बंध पंचेंद्रिय जीवने जो न होय, तो केटला काल लगे न होय ? ते कहे ठे. (नरजवज्जुअ के०) मनुष्यना पूर्व को डी आयुना सांत जव, (स के०) सहित (चउपल्ल के०) चार पल्योपम अने (तेसठं के०) एकशो त्रेशठ सागरोपम होय, एनी विशेष जावना कहे ठे. कोइ ए क त्रय पल्योपमायुंवालो युगलीठ जवप्रांते सस्यक्त्व लहीने एक पल्योपमायु वालो देव थाय. हवे तिहां युगलीठ्याना जवप्रत्ये ए सात प्रकृतिनो बंध नथी. केम के, युगलीठ तो देवता योग्य नामकर्मनी प्रकृति बांधे. पण बीजी प्रकृति न बांधे अने देवता थया पठी ते देवताना जवें सस्यक्त्व प्रत्यये तिर्यंग प्रायोग्य नामकर्मनी प्रकृति न बांधे. पठी ते देवता सस्यक्त्व सहितज संख्यात वर्षाशुष्क मनुष्य थयो तिहां पण सस्यक्त्व प्रजावें ए सात प्रकृति न बांधी अने अंतें चारित्र लइ नवमे त्रैवेयके देव थयो. तिहां कदापि मिथ्यात्वी पण थयो तो पण ज वप्रत्यये एकत्रीश सागरोपम लगे ए सात प्रकृति न बांधे, जे जणी आठमा देवलोकथी उपरला देवलोकना देवता तिर्यंचमाहे न आवे, ते वली प्रांत समये सस्यक्त्व लहीने संख्यातायुष्य वाला मनुष्यमां सस्यक्त्वदृष्टिपणे आवी उपजे. वली ते मनुष्य चारित्र पाली तेत्रीश सागरोपमायु अनुत्तर विमाने विजयादिकने विषे देव थाय. वली मनुष्यजव पामीने वली बीजी वार तेत्रीश सागरोपमायु वालो सुर थाय. एम बे वार विजयादिक गमने करी ढाशठ सागरोपम सस्यक्त्व काल पूरी, वली अंतर मुहूर्त्त मिश्र गुणगणे जइ, फरी सस्यक्त्व लही, त्रण वेला बावीश सागरोपमायुष्क अच्युतदेवलोकमां गमन करी, बीजी वार पण ढाशठ सागरोपम सस्यक्त्व काल स्पर्श. एम एकशो ने बत्रीश सागरोपम पूर्व कोटी सप्तक अधिक सस्यक्त्व अने मिश्र प्रत्यये ए सात प्रकृति न बांधे, अने एकत्रीश सागरोपम त्रैवेयकना तथा चार पल्योपम युगलीथा तथा देवायुना मली एकशो त्रेशठ सागरोपम चार पल्योपम अने पूर्व कोडी सप्तक सुधी, ए सात प्रकृतिनो पंचेंद्रियने विषे अबाधा काल होय.

(थावरचउ के०) स्थावर, सूक्ष्म. अपर्याप्त अने साधारण, ए स्थावर चतुष्क अने (इगविगल के०) एकेंद्रिय जाति तथा बेंद्रिय अने तेंद्रिय, चौरिंद्रिय, ए विकलजातित्रिक अने (आयवेसु के०) आतपनामकर्म, ए नव प्रकृतिना बंधने वि

पे पंचेडियपणे ठतां जो उत्कृष्ट बंध न होय तो (पणसीइसयं के०) एकशो ने पञ्चाशी (अचरा के०) सागरोपम तथा चार पल्योपम अने पूर्व कोटी पृथक्त्वे अधिक बंधांतर होय. एनी विशेष जावना कहे ठे.

कोइ एक जीव, ठगी नरक पृथिवीयें बावीश सागरोपमायु जोगवी, तिहां नव प्रत्ययें ए नव प्रकृति न बांधे, तिहां अंतसमयें सम्यक्त्व सहित चवीने मनुष्य थयो. ते तिहां देशविरति लह्नीने त्रण पल्योपमायुयें युगलीक थइ तिहांथी एक पल्योपमायु वालो सुर थाय, तिहांथीपण सम्यक्त्व सहित चवी संख्याता वर्षायु मनुष्यमां उपजे, तिहांथी संघम लइ एकत्रीश सागरोपमायुयें त्रैवेयकमां देवपणे उपजे. तिहां मिथ्यात्व लह्नी, ठेळे सम्यक्त्व पामी मनुष्य थइ वली विशेष संघम पाली विजयादिक विमानें तंत्रीश सागरोपमायुयें देव थाय. वली मनुष्य नवने आंतरें वीजी वार विजयादिक विमानें अवतरी. त्राशठ सागर सम्यक्काल पुरो करी, मित्रें आवी पूर्वोक्त रीतें त्रण वार अच्युतें जाय. एम एकशो त्रेशठ सागरोप माधिकमांहे बावीश सागर नरकायु जेततां एकशो पञ्चाशी सागरोपम चार प ल्यने पूर्वकोटी पृथक्त्व एटला काल सुधी ए नव प्रकृतिनी स्थितिनो अबंधकाल होय. किहांएक सम्यक्त्व प्रत्ययें, किहां एक नवप्रत्ययें, अबंधकाल होय, एटले बंधनुं आंतरं होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५६ ॥

अपढम संघयणा गिइ, खगई अण मिठ डुजग थीणतिगं ॥

निअ नपु इठि इतीसं, पणिंदि सुअबंधठिइ परमा ॥ ५७ ॥

अर्थे—(अपढमसंघयणागिइ के०) पहेला संघयण विना शेष पांच संघयण अने आकृति एटले प्रथमसंस्थान विना शेष पांच संस्थान, एवं दश अने (ख गई के०) अष्टजविहायोगति (अण के०) अनंतानुबंधी क्रोधादिक चार, (मिठ के०) मिथ्यात्वमांहनीय, (डुजग के०) दौर्जाग्य, दुःस्वर, आनादेय, ए दौर्जाग्यत्रिक, (थी णतिगं के०) थीणडीत्रीक, (निअ के०) नीचैर्गोत्र, (नपु के०) नपुंसकवेद, (इठि के०) स्त्रीवेद, ए पञ्चाश प्रकृतिनो अबंधकाल (इतीसं के०) एकशो ने वत्रीश सागरोपममनुष्यनव सप्तक सहित होय, तेनी जावना कहे ठे. कोइएक जीव, ह्यायोपशमिक सम्यक्त्व प्रत्ययें ए पञ्चीश प्रकृति मध्ये हुंमसंस्थान, ठेवहुं संघय ण, मिथ्यात्वमांहनीय अने नपुंसकवेद, ए चार प्रकृति, मिथ्यात्वोदय विना न वं धाय अने शेष एकवीश प्रकृति अनंतानुबंधिया कपायोदय विना न बंधाय, अ

ने मिश्रादिक आगला गुणठाणे ए बेनो रसोदय नथी, तेमाटें तिहां ए पञ्चीश प्रकृति न बंधाय, ते आवी रीतें जे कोइ एक मनुष्य, पूर्वकोडी परमायुं जोगवी, अच्युतदेवलोकें बावीश सागरोपमायुयें सम्यक्दृष्टि देवता थाय. वली तिहांथी सम्यक्त्व सहित चवीने मनुष्य थाय. तिहां पूर्वकोटी आयु जोगवी, वली अच्युत देवलोकें बावीश सागरायु जोगवे. फरी पूर्व कोडी आयु वालो मनुष्य थइ सम्यक्त्व सहित मरण पामी, अच्युतें उत्कृष्टायु पामी, तिहांथी चवी मनुष्य थाय. एम त्रण चार अच्युत देवलोकें बावीश सागरोपमायुना अने चार जव मनुष्योना पूर्व कोडी आयुना जेलतां ठाशठ सागरोपम चार पूर्व कोडी अधिक, उत्कृष्ट सम्यक्त्व काल स्पर्शी तिहांथी अंतर सुदूर्त सुधी मिश्र गुणठाणुं स्पर्शी, वली बीजी वखत ठाशठ सागरोपमायु विजयादिक विमानें बे वखत जावे करी पूराय. ठेजे मनुष्य थइ छुट्ट चारित्र पामी मोहें जाय. अहीआं पांच देवताना जव अने सात मनुष्यना जव लगें मिथ्यात्व तथा सास्वादन गुणठाणुं न स्पर्शें. तेथी ए पञ्चीश प्रकृति पण न बंधाय. अहीआं अच्युत देवलोकें त्रण वखत जावे करी, ठाशठ सागर अने विजयादिक विमानें बे वखत जावे करी, ठाशठ सागर सम्यक्त्वकाल अंतर सुदूर्त मिश्रने आंतरें करी ऐकशो बत्रीश सागरोपम पूर्व कोडी पृथक्त्वे अधिक एटला काल लगें मिथ्यात्व तथा अनंतानुबंधीया कषायना उदयने अनावें ए पञ्चीश प्रकृति न बांधें. अहीआं तत्त्वार्थज्ञाप्ये द्विचरमा अनुत्तर सुर कहा. जे वली अनुत्तर सुर होय, ते चरम शरीरी होय, तेनी अपेक्षायें मुक्ति कही. अहीआं सम्यक्त्वथी मिश्रें आवयुं कथुं, ते पण स्वमते कथुं. केम के सिद्धांतमते तो सम्यक्त्वथकी मिथ्यात्वे आवे, पण मिश्रें न आवे. एवी व्याख्या ठे. (पणिंदिसुअबंधविपरमा के०) ए सत्रीआ पंचेंद्रिय जीवनी अपेक्षायें परम अबंधकालनी स्थिति लेवी, पण बीजा जीवनेदें ए न संजवे. यदुक्तं “ मिह्नतासंकंती, अविरुद्धा होइ सम्म मीसेसु ॥ मीसा उवा दोसु, सम्मा मिह्नं उमीसंति ” ॥ १ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५७ ॥

हवे ए एकतालीश प्रकृतिनो अबंधकाल पूरवानो उपाय कहे ठे. विजयाइसु गेविळे, तमाइ दहि सय इतीस तेसठं ॥ पण सीइ ॥ अय त्रिसप्ततीनामध्रुवबंधिनीनामुत्कृष्टं संततबंधमा ह ॥ सयय बंधो, पल्लतिगं सुरविउवि छुगें ॥ ५८ ॥

अर्थ—(विजयास्तु के०) विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित, ए चार, अनुत्तर विमानें बेवार ढाशठ सागरोपम मनुष्य नवें जाजेरो सम्यक्त्व काल पूरे. वली अंतर मुहूर्त्त मिश्रें रही त्रण वेला अच्युत देवलोके बावीश सागरोप मायु नोगवतां ढाशठ सागरोपम मनुष्य नवें अधिक बीजी वेला सम्यक्त्व काल पूरतां, (सयडुतिस के०) एकशो बत्रीश सागरोपम अने (गेविल्ले के०) अवेय कना एकत्रीश सागरोपम जेततां (तेसठ के०) एकशो ने त्रेशठ सागरोपम मनुष्य नवना पूर्व कोडी पृथक्त्वे अधिक जाणवा. तेमां वली (तमाइदहि के०) तमःप्रज्ञानामा ढही नरक पृथ्वीना नारकीनुं बावीश सागरोपमायु जेततां, (पण सीइ के०) एकशो ने पच्चाशी सागरोपम पूराय, अहींआं सघले स्थानके वचला मनुष्य नवतुं आयु साधिक जाणवुं. अहीं केटलेक स्थानके सम्यक्त्व प्रत्ययें ए प्रकृति न बंधाय, अने किहां एकतो नव प्रत्ययें न बंधाय. एम एकतालीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट अबंधकाल, पंचेंद्रियमध्ये पामीयें, तेमां तिर्थचत्रिक, नरकत्रिक अने उद्योतनाम, ए सात प्रकृतिनो एकशो त्रेशठ सागरोपम प्रमाण अबंधकाल अने स्थावर चतुष्क तथा जातिचतुष्क. अने आतप ए नव प्रकृतिनो एकशो पच्चाशी सागरोपम अबंध काल अने शेष पच्चीश प्रकृतिनो एकशो बत्रीश सागरोपम अबंधकाल ते सर्व पूर्व कोडी पृथक्त्वे अधिक लेवुं तथा बे ठेकाणे चार पदयोपम अधिक लेवुं. एम बंधांतर कहुं.

हवे (सयचबंधो के०) सतत एटले निरंतर पणे बंध लखीयें ठैयें. औदारिक द्विक, वैक्रियद्विक, आहारकद्विक, ष संघयण, ष संस्थान, पांच जाति, चार गति, चार आनुपूर्वी, जिननाम, श्वासोद्वास, उद्योत, आतप, पराघात, त्रसदशक, स्थावर दशक, वेदनीयद्विक, गोत्रद्विक, हास्यादिचतुष्क, वेद त्रण, खगतिद्विक, अने आयुचतुष्क, ए अध्रुवबंधिनी तहोंचेर प्रकृतिनो जघन्यपदें तथा उत्कृष्टपदें निरंतर पणे बांधवानो काल कहे ठे. ते माहे जिननाम, आहारकद्विक अने आयु चतुष्क, ए सात प्रकृतिनो जघन्यपदें निरंतर पणे बांधवानो काल, अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जाणवो. जे नणी उपशमश्रेणीशी पडतो अंतर मुहूर्त्त लगें, जिननाम तथा आहारकद्विक, ए त्रण प्रकृति बांधी, वली बीजी वार श्रेणी पडिवजतो अपूर्व कारणे सातमे जागें एनो अबंधक आय, ते अपेहायें लेवुं. तथा आयु चारनो तो निरंतरपणे अंतर मुहूर्त्त बंध होय, अने शेष ढाशठ प्रकृतिनो जघन्य तो

एक समयबंध पण होय. एम तहोत्तेर प्रकृतिनो जघन्य सतत बंध कही, हवे उत्कृष्टजागें निरंतर बंध कहे ठे.

(पल्लतिगंसुरविउविडुगे के०) देवगति, देवानुपूर्वी तथा वैक्रियशरीर अने वैक्रिय अंगोपांग, ए चार प्रकृतिनो सतत बंध जघन्य एक समयनो होय जे जणी शुज परिणामें एक समय, ए चार प्रकृति देव प्रायोग्य बांधीने परिणामचेदें समयांतरें वली मनुष्या दिक प्रायोग्य बांधतां जाणवो अने एनो उत्कृष्टो निरंतर बंध त्रण पद्योपमायुना धणी युगलीयाने जव प्रथम समयथी देवप्रायोग्य नामकर्मनी अज्ञावीश प्रकृति बांधतां जाणवो. केम के, तेने जवप्रत्ययें नरक, तीर्थेच अने मनुष्य, ए त्रण गति प्रायोग्य नामकर्मनो बंध नथी तेशी परिणाम चेदें पण अन्य एनी विरोधि प्रकृतिनो एने बंधें नथी, ते माटें जव प्रथम समयथी लइने त्रण पद्योपमना चरम समय लगें ए चार प्रकृतिनो सतत बंध होय. एटले एक, बे, त्रण, संख्याता, असंख्याता समय लगें निरंतरपणे एचार प्रकृतिनो बंध होय ॥ इतिसमु० ॥ ५० ॥

समया दसंख कालं, तिरि डुग नीएसु आउ अंतमुदू ॥

उरलि असंख परट्टा, साय छिइ पुव कोडूणा ॥ ५१ ॥

अज—(तिरिडुग के०) तीर्थेचदिक, (नीएसु के०) नीचैगोत्र, ए त्रण प्रकृतिनो तीर्थेच प्रायोग्य बंधाध्यवसायें समय मात्र रहीने वली तथाविध संक्लेश विज्ञोर्षे नरक प्रायोग्य पण बांधे, अने विद्युदि विज्ञोर्षे देव, मनुष्य प्रायोग्य पण बांधे, तेनी अपेक्षायें जघन्यथी एक समय बंध होय, अने उत्कृष्ट पदें तो तेउ, वाउ मांहे असंख्यातो काल रहे तो थको तिहां ए त्रण प्रकृतिनी विरोधिनी बीजी प्रकृति न बांधे, केमके? तेउ अने वायु मांहेथी एक तीर्थेचगतिमांहेज अवतरे पण बीजी त्रण गतिमां अवतरे नहीं तथा तिहां उच्चैगोत्र पण न बांधे, तेशी (समयादसंखकालं के०) असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण समय लगें ए त्रण प्रकृतिनो निरंतर बंध लाचे, ए व्यवहार राशि जीवनी अपेक्षायें लेखववो. बी जा आश्रयी तो अनंत काल पण संजवे.

(आउअंतमुदू के०) चार आयुनो बंध जघन्य तथा उत्कृष्टथी अंतर्मुदूर्चनो होय. अहींआं परिणामचेदें पण एक समधिक बंध न होय, जे जणी आयुनो तो आखा जवमध्ये एकज वार बंध होय. अहींआं जघन्यथी उत्कृष्टोअधिक जाणवो (उरलिअसंखपरट्टा के०) औदारिक शरीरनामकर्मनो निरंतर पणे बंध उ

कृष्टो तो आवलिना असंख्यातमा जागना समय प्रमाण असंख्याता पुञ्ज परावर्त्त जेटजुं जाणवुं, अने जघन्यतो एक समयनो जाणवो. जे जणी एक समय औ दारिक शरीर बांधी वली समयांतरें परिणामे जेदें तद्विरोधिनी वैक्रियादिकने बांध तो होय, अने उत्कृष्टथी तो व्यवहारराशियें आवेलो जीव, जो थावरकाय पणो रहेतो उत्कृष्टो आवलीने असंख्यातमे जागे जेटला समय थाय, तेटला पुञ्ज परावर्त्त सुधी थावरपणुं जोगवे, तिहां निरंतरपणो औदारिकशरीर नामकर्मनो बंध करे, तेने वैक्रियादिक विरोधि प्रकृतिनो बंध नथी. ते जणी तिहां सततबंध कह्यो.

(सायछिद्रपुव्वकोडूणा के०) एक शातावेदनीयनो सतत बंध, जघन्यथी तो एक समय जगे होय. केम के वली समयांतरें परिणामजेदें अशाता पण बांधे, ते अपेक्षायें कहेवुं. तथा उत्कृष्टपणो निरंतर बंधतो आठ वर्षे जणी पूर्वकोडी जाणवी. केमके कोडूक पूर्वकोडी आयुवालो जीव, आठ वर्ष उपरांत सर्व विरति पणुं लइने, हेपकश्रेणी पडिवजे. केवलज्ञान पामे, तेने प्रमत्तगुणवाणा उपरांत एनी विरोधिनी अशातावेदनीय प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी तिहां निरंतर पणो एटला काल जगे एकज शातावेदनीय बांधे. ते अपेक्षायें जाणवुं. अन्यथा शाता अशातानो बंध तो अंतरमुहूर्त्ते परावर्त्त होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५९ ॥

जलहि सयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदितस चउगे ॥

बत्तीसं सुदु विदगइ, पुम सुजगतिगुञ्चचउरंसे ॥ ६० ॥

अर्थ—(सयंपणसीयं के०) एम उकशोने पञ्चाशी (जलहि के०) सागरोपम उपर चार पद्योंपम पूर्वकोडी पृथक्त्वे अधिक, (परघुस्सासेपणिंदितसचउगे के०) पराघातनाम, उड्वासनाम, पंचैडियजाति, तथा त्रसनाम, बादरनाम, पयासनाम अने प्रत्वेकनाम. ए त्रस चतुष्क. एवं सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट निरंतर बंधकाल जाणवो. जे जणी जातिचतुष्क तथा स्थावरचतुष्क ए आठ एनी विरोधिनी प्रकृति ते एटला काल पर्यंत न बंधाय. ते वारें ए प्रकृति बंधाय, ते आवीरितें के कोइ एक जीव उची नरक पृथवीना बावोश सागरोपमायु जोगवी, अंतें सम्यक्त्व लही, मनुष्य-जवें देशविरति लही, त्रण पद्योंपम युगलीयानुं तथा तिहांथी एक पद्योंपम देवायु जोगवी फरी, मनुष्यपणो संयम लइने पैवेयके मिथ्यात्वीपणो एकत्रीश सागरोपम देवायु जोगवी अंत समयें सम्यक्त्व लही, फरी मनुष्यजवें चारित्र्य लही, विजयादिक विमानें बे वखत तेत्रीश तेत्रीश सागरोप

मायु जोगवतां ढाशठ सागरोपम पर्यंत सम्यक्त्व स्पर्शी, पढी मिश्रजावें अंतर सुहूर्त्त रही वली बीजी वेला ढाशठ सागरोपम सम्यक्त्व काल, त्रण वखत बावीश सागरोपमायुयें अब्युत देवमांहे उपजवे करी पूर्ण करे. एम एकशो पच्चाशी सागरोपम, चार पढ्योपम अने पूर्वे कोडी पृथक्त्वे अधिक एटलो सात प्रकृतिनो सततबंध जाणवो. अहीं किहांएक तो नव प्रत्ययें किहांएक सम्यक्त्व प्रत्ययें ए सात प्रकृति बंधाय पण एनी विरोधिनी प्रकृति न बंधाय.

(वचीस के०) एकशो ने बत्रीश सागरोपम उत्कृष्टो सततबंध, आटली प्रकृतिनो करे,तेनां नाम कहे ठे. (सुहविहगइ के०) एक अच्युतविहायोगति, (पुम के०) पुरुषवेद, (सुजगतिग के०) सौजाग्य, सुस्वर अने आदेय, ए सौजाग्यत्रिक. (उच्चवरसे के०) उच्चैर्गोत्र, समचतुरस्रसंस्थान, ए सात प्रकृतिनो निरंतर बंध. जाणवो. जे नणी एनी विरोधिनी अच्युतविहायोगति, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, दौर्जाग्यत्रिक, नीचैर्गोत्र, ए सात प्रकृतिनो मिश्रादिक गुणगणे बंध न होय, तेथी मिथ्यात्वहुं आंतरं उत्कृष्टं एकशो बत्रीश सागरोपमहुं होय. तेटलो काल. ए सात प्रकृतिनो बंध निरंतरपणे होय. तिहां प्रथम ढाशठ सागरोपम जाजेरां त्रण वेला अब्युत देवलोकना गमनें करी सम्यक्त्व काल पूर्ण करे. वली अंतर सुहूर्त्त मिश्र गुणगणे रही, बीजी वेला ढाशठ सागरोपम तेत्रीश सागरोपमायुयें विजयादिक अनुत्तर विमानें बे वेला अवतरवे करी, सम्यक्त्व काल पूर्ण करे, एम एकशो बत्रीश सागरोपम अने मनुष्यायु पूर्वे कोडी पृथक्त्वे अधिक काल लगे, मिथ्यात्व अने अनंतानुबंधीने अजावें एनी अच्युत विहायोगत्यादिक विरोधिनी प्रकृतिना बंधने अजावें अच्युतविहायोगत्यादिक सात प्रकृतिनो सततबंध होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६० ॥

असुहखगइ जाइ आगिइ, संघयणाहार निरयुजोय छगं ॥

धिर सुज जस आवर दस, नपु इढी डजुअल मसायं ॥ ६१ ॥

अर्थ—(असुहखगइ के०) एक अच्युत विहायोगति अने (जाइ के०) अच्युतजजाति चार, एटले एकेंडिय, बेंडिय, तेंडिय अने चौरिंडिय ए पांच प्रकृति, मिथ्यात्व गुणगणे अंतर सुहूर्त्तने आंतरे एनी सप्रतिपक्ष प्रकृति बंधाय, तेथी अंतर सुहूर्त्तनो सततबंध जाणवो, तेमज (आगिइ के०) न्यग्रोध, सादि, वामन, कुब्ज अने हुंम, ए पांच अच्युत आकृति एटले संस्थान अने (संघयण के०) रूपननाराच, नाराच, अर्दननाराच, कीलिका अने ठेवहुं, ए पांच अच्युत संघयण, (आहार के०)

कृष्टो तो आवलिना असंख्यातमा जागना समय प्रमाण असंख्याता पुञ्ज परावर्त्त जेटलुं जाणवुं, अने जघन्यतो एक समयनो जाणवो. जे जणी एक समय औदारिक शरीर बांधी वली समयांतरें परिणामे जेदें तद्विरोधिनी वैक्रियादिकने बांध तो होय, अने उत्कृष्टथी तो व्यवहारराशियें आवेलो जीव, जो थावरकाय पणे रहेतो उत्कृष्टो आवलिने असंख्यातमे जागें जेटला समय थाय, तेटला पुञ्ज परावर्त्त सूधी थावरपणुं जोगवे, तिहां निरंतरपणे औदारिकशरीर नामकर्मनो बंध करे, तेने वैक्रियादिक विरोधि प्रकृतिनो बंध नथी. ते जणी तिहां सततबंध कह्यो.

(सायन्दिपुत्रकोडूणा के०) एक शातावेदनीयनो सतत बंध, जघन्यथी तो एक समय लगें होय. केम के वली समयांतरें परिणामजेदें अशाता पण बांधे, ते अपेक्षायें कहेवुं. तथा उत्कृष्टपणे निरंतर बंधतो आठ वर्षे कणी पूर्वकोडी जाणवी. केमके कोइक पूर्वकोडी आयुवालो जीव, आठ वर्षे उपरांत सर्व विरति पणुं लडने, हेपकश्रेणी पडिवजे. केवलज्ञान पामे, तेने प्रमत्तशुणवाणा उपरांत एनी विरोधिनी अशातावेदनीय प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी तिहां निरंतर पणे एटला काल लगें एकज शातावेदनीय बांधे. ते अपेक्षायें जाणवुं. अन्यथा शाता अशातानो बंध तो अंतरंमुहूर्त्ते परावर्त्त होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५९ ॥

जलहि सयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदितस चउगे ॥

वत्तीसं सुहु विद्गइ, पुम सुजगतिगुञ्चचउरंसे ॥ ६० ॥

अर्थ—(सयंपणसीयं के०) एम उकशोने पञ्चाशी (जलहि के०) सागरोपम उपर चार पल्योपम पूर्वकोडी पृथक्त्वे अधिक, (परघुस्सासेपणिंदितसचउगे के०) पराघातनाम, उद्धासनाम, पंचेंद्रियजाति, तथा त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम अने प्रत्वेकनाम. ए त्रस चतुष्क. एवं सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट निरंतर बंधकाल जाणवो. जे जणी जातिचतुष्क तथा स्थावरचतुष्क ए आठ एनी विरोधिनी प्रकृति ठे ते एटला काल पर्यंत न बंधाय. ते वारें ए प्रकृति बंधाय, ते आवीरितें के कोइ एक जीव उठी नरक पृथवीना बावीश सागरोपमायु जोगवी, अंतें सम्यक्त्व लही, मनुष्य जवें देशविरति लही, त्रण पल्योपम युगलीयानुं तथा तिहांथी एक पल्योपम देवायु जोगवी फरी, मनुष्यपणे संयम लडने त्रैवेयकें मिथ्यात्वीपणे एकत्रीश सागरोपम देवायु जोगवी अंत समयें सम्यक्त्व लही, फरी मनुष्यजवें चारिः३ लही, विजयादिक विमानें बे वखत तेत्रीश तेत्रीश सागरोप

माद्यु जोगवतां ढाशठ सागरोपम पर्यंत सम्यक्त्व स्पर्शी, पढी मिश्रजावें अंतर सुहूर्त्त रही वली बीजी वेला ढाशठ सागरोपम सम्यक्त्व काल, त्रण वखत बावीश सागरोपमायुयें अच्युत देवमांहे उपजवे करी पूर्ण करे. एम एकशो पच्चाशी सागरोपम, चार पढ्योपम अने पूर्वे कोडी पृथक्त्वे अधिक एटलो सात प्रकृतिनो सततबंध जाणवो. अहीं किहांएक तो नव प्रत्ययें किहांएक सम्यक्त्व प्रत्ययें ए सात प्रकृति बंधाय पण एनी विरोधिनी प्रकृति न बंधाय.

(बचीसं के०) एकशो ने बत्रीश सागरोपम उत्कृष्टो सततबंध, आटली प्रकृतिनो करे,तेनां नाम कहे बे. (सुहविहगइ के०) एक अश्चुनविहायोगति, (पुम के०) पुरुषवेद, (सुजगतिग के०) सौजाग्य, सुस्वर अने आदेय, ए सौजाग्यत्रिक. (उच्चचरसे के०) उच्चैर्गोत्र, समचतुरस्रसंस्थान, ए सात प्रकृतिनो निरंतर बंध. जाणवो. जे नणी एनी विरोधिनी अश्चुनविहायोगति, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, दौर्जाग्यत्रिक, नीचैर्गोत्र, ए सात प्रकृतिनो मिश्रादिक गुणवाणे बंध न होय, तेशी मिथ्यात्वहुं आंतरं उत्कृष्टं एकशो बत्रीश सागरोपमहुं होय. तेटलो काल. ए सात प्रकृतिनो बंध निरंतरपणे होय. तिहां प्रथम ढाशठ सागरोपम जाजेरां त्रण वेला अच्युत देवलोकना गमनें करी सम्यक्त्व काल पूर्ण करे. वली अंतर सुहूर्त्त मिश्र गुणवाणे रही, बीजी वेला ढाशठ सागरोपम तेत्रीश सागरोपमायुयें विजयादिक अनुत्तर विमानें बे वेला अवतरवे करी, सम्यक्त्व काल पूर्ण करे, एम एकशो बत्रीश सागरोपम अने मनुष्याद्यु पूर्वे कोडी पृथक्त्वे अधिक काल लगे, मिथ्यात्व अने अनंतानुबंधीने अजावें एनी अश्चुन विहायोगत्यादिक विरोधिनी प्रकृतिना बंधने अजावें अश्चुनविहायोगत्यादिक सात प्रकृतिनो सततबंध होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६० ॥

असुहस्वगइ जाइ आगिइ, संघयणाहार निरयुजोय हुगं ॥

धिर सुज जस यावर दस, नपु इढी हुजुअल मसायं ॥ ६१ ॥

अर्थ—(असुहस्वगइ के०) एक अश्चुन विहायोगति अने (जाइ के०) अश्चुनजाति चार, एटले एकेंडिय, बैडिय, तेंडिय अने चौरिंडिय ए पांच प्रकृति, मिथ्यात्व गुणवाणे अंतर सुहूर्त्तने आंतरे एनी सप्रतिपह प्रकृति बंधाय, तेशी अंतर सुहूर्त्तनो सततबंध जाणवो, तेमज (आगिइ के०) न्यग्रोध, सादि, वामन, कुब्ज अने हुंम, ए पांच अश्चुन आकृति एटले संस्थान अने (संघयण के०) रूपननाराच, नाराच, अर्दनाराच, कीलिका अने बेवहुं, ए पांच अश्चुन संघयण, (आहार के०)

आहारक शरीर अने आहारकांगोपांग, ए आहारकदिक. (निरयुजोयडुगं के०) नरकगति, नरकानुपूर्वी, ए नरकदिक तथा उद्योतनाम अने आतपनाम ए उद्योत दिक ए सर्व एकवीश प्रकृतिनो सततबंध, अंतर मुहूर्त्त लगे मिथ्यात्व अने सास्वादन गुणगणो होय. अर्द्धां आहारकदिकनो बंध मिथ्यात्व तथा सास्वादन, ए वे गुण गणो न जाणवो तथा (थिर के०) एक स्थिर. बीजी (सुज के०) शुज, त्रीजी (जस के०) यशःकीर्ति, (थावरदस के०) स्थावर दशको, ए तेर प्रकृति पण सप्रतिपद्द मिथ्यात्वे वंधाय, तेषी एनो अंतरमुहूर्त्त लगे उत्कृष्टो सततबंध जाणवो. तथा (नपुड डी के०) नपुंसकवेद अने स्त्रीवेद, ए वे मोहनोयनी प्रकृति पण अंतर मुहूर्त्त अंतर मुहूर्त्त परावर्त्त मिथ्यात्वे वंधाय. एवं तत्रीश प्रकृति थड तथा (डुजुअल के०) हास्य अने रति तथा शोक अने अरति, ए वे युगलनी प्रकृति पण बंधविरोधिनी जणी ठछ गुणगणा लगे परावर्त्त अंतर मुहूर्त्त प्रमाण बांधे, जो पण सातमे अने आठमे गुणगणो निःप्रतिपद्दपणे हास्य अने रति ए एक युगल वंधाय ठे. तो पण ए वे गुणगणानो काल अंतर मुहूर्त्तनो होय. तथा (मसार्य के०) अशातावेदनीय पण शातावेदनीयने परावर्त्त अंतर मुहूर्त्त प्रमाण, ठछ गुणगणा सुधी वंधाय. ए एकतालीश प्रकृतिनो एक समयधी मांमीने उत्कृष्टो अंतर मुहूर्त्त लगे सततबंध होय. जे जणी ए अध्रुवबंधिनी परावर्त्त मान प्रकृतिठे ते बीजो पोतानी विरोधिनी प्रकृतिना बंधसामग्रीने सद्भावें अंतर मुहूर्त्त परावर्त्त वंधाय.

एमां स्थिर, शुज अने यश, ए त्रणनी विरोधिनी अस्थिर, अशुज अने अय श. ए त्रणनो बंध ठछ गुणगणा सुधी होय. तिहां लगे परावर्त्त अंतरमुहूर्त्त पर्यंत सततबंध जाणवो. आगळे गुणगणो जो पण ए विरोधिनी प्रकृतिनो बंध न थी, तो पण दशमा गुणगणा लगे केवल यशःकीर्तिनो बंध ठे. ते पण अंतर मुहूर्त्त लगे जाणवो. तेषी सर्व गुणगणो एकज अंतर मुहूर्त्त पर्यंत बंध होय ॥६१॥

समया दंत मुहुत्तं, मणु डुग जिण वडर उरलुवंगेसु ॥ तिती सय
रा परमो, अंत मुहुलहुवि आठ जिणा ॥६१॥ इति स्थितिबंधः ॥

अर्थ- ए पूर्वोक्त एकतालीश प्रकृतिनो (समयादंतमुहुत्तं के०) एक समयधी लडने अंतर मुहूर्त्त लगे सततबंध होय. तेमज (मणुडुग के०) मनुष्यदिक, (जिण के०) जिननाम, (वडर के०) वज्ररूपनाराचसंधयण, (उरलुवंगेसु के०) औदारिकांगोपांग, ए पांच प्रकृतिनो (तितीसयरापरमो के०) तेत्रीश सागराप

म उत्कृष्ट सततबंध होय, तथा (अंतमुहूर्त्तद्वि के०) अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जघन्यथी पण सततबंध (आउजिणा के०) चार आयुःकर्मनी प्रकृति अने पांच मुं जिननामकर्मनुं पण होय ॥ इत्यह्वरार्थः ॥ ६३ ॥

ए पूर्वोक्त, एकतालीश प्रकृतिनो एक समयथी मांद्दीने अंतर मुहूर्त्त लगे निरंतरबंध होय जे जणी अध्रुवबंधिनी ठे ते माटे ते पढी अवश्य परावर्त्त थाय.

मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, जिननामकर्म, वज्ररूपजनाराचसंघयण अने औदारिकांगोपांग, ए पांच प्रकृतिनो निरंतरपणे बंध होय तो उत्कृष्टथी तेत्रीश सागरोपम पर्यंत होय, जे जणी कोइ अनुत्तर सुरने मनुष्य प्रायोग्य प्रकृति नो बंध ठे, तेथी ते सदा काल चोथे गुणताणे होय. ते जणी तेहने नव प्रथम समयथी मांद्दीने तेत्रीश सागरोपमना ठेह्ला समय लगे एनी विरोधिनी नरकदिक, तिर्यचदिक, देवदिक, वैक्रियदिक, अने पांच अद्भुत, संघयणादिकनो नव प्रत्ययेज बंध न होय तथा जिननामनी विरोधिनी प्रकृति कोइ नथी. तेथी ते पण सम्यक्प्रत्यये करी, तेत्रीश सागरोपम लगे निरंतरपणे बंधाय. अर्द्दीआं पण एक जिननाम विना शेष चार प्रकृतिनो जघन्य बंध समय मात्र ठे. उपरांत परिणाम जेदें विरोधिनी प्रकृति बांधे, ते अपेक्षायें जेवो. तथा पूर्वे चार आयुनो निरंतर बंध कह्यो ठे. ते मते चार आयुनो तथा जिननामनो जघन्यपदे पण अंतर मुहूर्त्तमात्र सतत बंध होय, पण ते उत्कृष्टनी अपेक्षायें तो जघन्यबंध मुहूर्त्त विशेष हीन पणे जाणवो. जे जणी अंतर मुहूर्त्तना असंख्याता जेद ठे. माटे जिननामनो जघन्य सतत बंध अक्षाह्यें उपशम श्रेणीथी पडतां आतमा गुणताणाने उपात्य जागें आततो जिननाम बंध करतो आतमुं, सातमुं गुणताणुं स्पर्शी वली श्रेणी चढतां आतमाने अंत्यजागें जिननामनो अबंधक थाय तेनी वचमानो अंतर मुहूर्त्त बंधक होय. ए रीतें उत्कृष्ट तथा जघन्यथी मूल प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिनो स्थितिबंध अने ए स्थितिबंधना स्वामी तथा सादि अनाद्यादिक चार जेद, चौद जीवजेदें स्थितिस्थानकनुं अल्पबहुत्व, योगस्थानकनुं अल्पबहुत्व, स्थितिबंधनुं जघन्य अने उत्कृष्ट आंतरुं तथा अध्रुवबंधिनी प्रकृतिना जघन्य उत्कृष्ट सततबंध कह्या ॥६३॥

हवे अनुजाग एटजे रसबंध कहेवानो अवसर ठे, ते माटे तेनी व्याख्या करे ठे. तिहां प्रथम अनुजागनुं स्वरूप कहे ठे. तिहां सर्व जघन्य कर्म वर्गणाने विपे पण सर्व जीवथी अनंत गुणा परमाणु होय. वली एकेका परमाणुअने विपे पण जघन्य पदे सर्व जीवथी अनंत गुणा रसविजाग पलिबेद होय जे रसनो जा

ग केवलीनी वृद्धिरूप शस्त्रं करी पण आय नहीं, एटले केवली पण जे रसनो विजाग कल्पी न शके, ते अविजाग पलीहेद एने जावाणु कहियें. तिहां एक इव्य परमाणु सर्व जीवथी अनंत गुणा रसाविजागें युक्त तेना सरखाज जे बीजा परमाणु तेनो समुदाय ते समान जातिय माटें प्रथम एक वर्गणा कहियें. ते थकी वली एक रसाविजागें अधिक परमाणुनो समुदाय तेनी बीजी वर्गणा जाएवी. एम एकेका रसाविजागें चढता चढता परमाणु तेना समुदाय समुदायनी एकेकी वर्गणा करता जइयें, ते अजव्य जीवथी अनंत गुणी अने सिद्धजीवना अनंतमा जाग परिमाण निरंतर वर्गणानो समुदाय ते प्रथमस्पर्दक होय. जे नणी प्रथम स्पर्दकनी उत्कृष्टी वर्गणायें जे रसाविजाग ठे. ते थकी एक बे त्रण संख्याता तथा असंख्याता अविजाग पलीहेद वधतां परमाणु न पामीयें. परंतु सर्व जीव थकी अनंतगुणे रसाविजागें वधता परमाणु तेनो समुदाय ते बीजा स्पर्दक नी प्रथम वर्गणा जाएवी. वली तेथी एक रसाविजागें वधती बीजी वर्गणा. एम वली एकेका रसाविजागें वधती वधती जेवारें अजव्य जीवथी अनंत गुणी वर्गणानो समुदाय थाय, तेवारें बीजो स्पर्दक होय. ते बीजा स्पर्दकनी उत्कृष्ट वर्गणायी वली सर्व जीवथकी अनंतगुणा रसाविजागें वधता परमाणुनो समुदाय ते बीजा स्पर्दकनी प्रथम वर्गणा. ते थकी वली एक रसाविजागें वधता परमाणुना समुदायनी बीजी वर्गणा. एम वली पण अजव्य जीवथकी अनंत गुणी वर्गणानो समुदाय थाय, तेवारें बीजो स्पर्दक थाय, एवा अजव्य जीव थकी अनंतगुणा स्पर्दकें एक अनुजाग एटले रसजुं स्थानक होय. अहीं सघला स्पर्दकने आंतरे सर्वजीवथी अनंतगुणी शून्य वर्गणा ठे.

ते हवे सूक्ष्म अग्निकायना जीवथी तेनो कायस्थिति काल असंख्यातगुणो ठे. ते थकी पण असंख्यात गुणां अनुजाग स्थानक थाय. तिहां एक कंमक मात्र अनंतजाग वृद्धि स्थानक (१) पढी बीजो वली असंख्यात जाग वृद्धिस्थानक. (२) एम कंमक मात्र स्थानकने आंतरे, आंतरे, एकेक असंख्यात जाग वृद्धिस्थानक जेतां कंमक वर्ग प्रमाण स्थानकें संख्यात जाग वृद्धिस्थानक. (३) कंमक घन प्रमाण स्थानकें संख्यात गुणवृद्धिस्थानक. (४) कंमकवर्ग वर्ग प्रमाण स्थानकें असंख्यात गुणवृद्धिस्थानक. (५) कंमक घन घन प्रमाण स्थानकें अनंतगुण वृद्धि स्थानक. (६) तेवे कंमकें पटस्थान वृद्धिपणे होय. अहींआं सूढमतिने समजा वया नणी कल्पनायें सर्व जीवथी अनंत गुणाने एकशो लेखवीयें, ते एकादि

कें वधती अन्नव्यथकी अनंत गुणाने पांच, लेखवीये. एटले एकशो उपर एकादिथी पांच पर्यंत प्रथम स्पर्धक, पढी बजें उपर एकादिथी पांच पर्यंत बीजो स्पर्धक, त्रणजें उपर एकादिथी पांच पर्यंत त्रीजो स्पर्धक, चारजें उपर एकादिथी पांच पर्यंत चोथो स्पर्धक, एनी स्थापना सविस्तर कर्म पयडीथी जाणवी.

अहींआं रागादिकने वश थको जीव, सिद्धने अनंतमे जागें अने अन्नव्य थ की अनंतगुणा एटला परमाणुयें निष्यन्न कर्मस्कंधना दलिया जूदा जूदा समय, समय ग्रहण करे ठे. ते दलीयाने विपे परमाणु दीठ कपाय विशेषथकी सर्व जीवथकी अनंत गुणा अनुनाग एटले रस विनागना पलिभेद होय. तेनी सद्दे प व्याख्या करी. हवे आगल सूत्रें कहे ठे.

तिवो असुह सुहाणं, संकेस विसोद्धित विवक्तयनु ॥

मंदरसो गिरि महिरय, जलरेहा सरिस कसाएहिं ॥६३॥

अर्थ—(असुह के०) अश्चुज जे पाप प्रकृति तेनो मागे कडवो रस लींबडादिकनो रस जेम सहेजनो एक ठाणीठ ते कटुक रस होय, ते अग्नि उपरें काढतां शेरनो अर्धशेर रहे, ते कटुकतर वेठाणीठ रस जाणवो, अने शेरनो त्रीजो जाग रहे, ते त्रिठाणीठ रस, कटुकतम जाणवो अने शेरनो पाशेर रहे, ते (तिवो के०) तीव्ररस चोठाणीठ अति कटुकतम होय. तेमज (सुहाणं के०) शुच जे पुण्य प्रकृति तेनो रस, शेलडीनी परें मधुर. जेम शेलडीनो एकठाणीठ रस सहेजनो मिष्ट, वेठाणीठ मिष्टतर, त्रिठाणीठ मिष्टतम, चोठाणीठ अत्यंत मिष्टतम. वली तेहीज मीठा रस मांहे एक च्लु पाणी घालतां मंद थाय. पशली नर पाणी घालतां मंदतर थाय. करवो, मोरीठ मात्र पाणी घालतां मंदतम थाय. घडो पाणी जेलतां अत्यंत मंदतम थाय. एम कडवामां पण कटुक पणुं मंद, मंदतर, मंदतम, तथा अत्यंत मद होय. एम अनेक जेद रसने बंधें तथा उदयें होय. ए रसतुं तरतम पणुं कषा थने तारतम्यपणे होय जेजणी मंद कषायें पाप प्रकृति मंदरस पणे बांधी होय. तेने वली कपायनी तीव्रतायें, तीव्ररस पणे अश्चुज अथ्यवसायें करी जोगवे. तेमज वली शुच अथ्यवसायें करी जोगवे तो जे प्रकृति तीव्ररसपणे बांधी होय, तेने पण मंदरसें करी जोगवे, एटले ब्याशी पाप प्रकृतिनो उत्कृष्ट कटुकरस चोठाणीठ ते (संकेस के०) अत्यंत संक्षेपें तीव्र कषायोदयें करी अत्यंत कटुक चोठाणीठ रस वंधाय अने शुच बेतालीश पुण्यप्रकृतिनो रस, कषायोदय मंदतारूप

(विसोहित के०) अतिविद्युद्वाध्यवसायें करी चोठाणीउं रस अति मीठो बंधाय, अने (विवक्लयउं के०) एथी विपरीत पणो एटले संक्लेशनी मंदतायें अने विद्युदिनी वृद्धियें ब्याशी पाप प्रकृतिनो (मंदरसो के०) मंद, मंदतर, मंदतम, अने अतिमंदतरस बंधाय अने विद्युद्वाध्यवसायनी हाणीयें मलिनपरिणामनी वृद्धियें बेंतालीश पुण्यप्रकृतिनो रस, मंद, मंदतर, मंदतम बंधाय. तथा तेमज शुन प्रकृतिनी उदर्र्चना पण विद्युद्वाध्यवसायें होय अने अशुनप्रकृतिनी उदर्र्चना संक्लेशाध्यवसायें होय. तेम शुनप्रकृतिनी रसापवर्तना शुनपरिणामें होय अने अशुन प्रकृतिनी रसापवर्तना अशुनपरिणामें होय.

(गिरि के०) पर्वतनी राय सरखो अनंतानुबंधीउं क्रोध, तेम अनंतानुबंधी आ मानादिक पण लेवा. तेना उदयें अतिसंक्लिष्ट मिलन परिणामी जीव, पाप प्रकृतिनो अतिकटुक चोठाणीउं रस बांधे तो पण बेंतालीश पुण्यप्रकृतिनो बेठाणीउं रस बांधे. जे जणी शुन प्रकृतिनो एकठाणीउं रस बंधाय नहीं, माटें बेठाणीउं कह्यो, अने उदयमां एकठाणीउं पण होय. ते वारें अतिसंक्लेशें करी बेठाणीउं रस, तेने एकठाणीउं करी उदीरे वेदे.

तथा (महि के०) तलावमध्ये पाणी शुकाणा पढी माटीनी राय ते सरखी अत्रत्याखनीउं क्रोध जाणवो. तेमज अत्रत्याख्यानीआ मानादिक त्रण पण लेवा. तेना उदयें संक्लेशपरिणामें शुन तथा अशुन प्रकृतिनो रस त्रिठाणीउं बंधाय पण एटलुं विशेष जे, चढते परिणामें शुन प्रकृतिनो रस बंधाय, अने पढते परिणामें अशुन प्रकृतिनो रस बंधाय. एक स्थानकमध्ये पण चढतां पढतां रसस्थानक असंख्यातां असंख्यातां ठे.

तथा (रय के०) रज एटले धूलमांहेली रेखा ते सरखो प्रत्याख्यानीउं क्रोध जाणवो. तेमज प्रत्याख्यानीआ मानादिक त्रण पण लेवा. तेना उदयथी पाप प्रकृतिनो बेठाणीउं अने पुण्यप्रकृतिनो चोठाणीउं रस बंधाय, तेमध्ये मंदरस बांधे.

तथा (जलरेहासरिस के०) पाणीनी रेखा सरखो संज्वलन क्रोध तेमज मानादिक पण लेवा. एना उदयें पुण्यप्रकृतिनो तीव्र चोठाणीउं रस बंधाय अने पापप्रकृतिनो एकठाणीउं रस बंधाय. ए रीतें अशुन प्रकृतिनुं अनंतानुबंधीये अत्रत्याख्यानीए, प्रत्याख्यानीए तथा संज्वलनें (कसाएहिं के०) कषायें करी अनुक्रमें चोठाणीउं, त्रिठाणीउं, बेठाणीउं, एकठाणीउं, रसबंध थाय. तथा शुन प्रकृतिनो

संज्वलने प्रत्याख्यानीए, अप्रत्याख्यानीए, अनंतानुबंधीए, करी चोटाणीआदिक अनुक्रमे रस बंधाय, ते कहे ठे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६३ ॥

चउ ठाणाई असुहो, सुहन्नहा विग्घ देस आवरणा ॥

पुम संजलणिग ड ति चउ, ठाण रसा सेस डगमाई ॥ ६४ ॥

अर्थ—(चउठाणाईअसुहो के०) गिरिरेखा समान अनंतानुबंधीआ कषायें करीने अशुच प्रकृतिनो रस चोटाणीठ बंधाय, पृथवीरेखा समान अप्रत्याख्यानीया कषायें करी अशुच प्रकृतिनो रस, त्रिठाणीठ बंधाय, रजरेखा समान प्रत्याख्यानीया कषायें करी अशुच प्रकृतिनो रस बेठाणीठ बंधाय, जलरेखा समान संज्वलन कषायें करीने अशुचप्रकृतिनो रस एक ठाणीठ बंधाय, अने (सुहन्नहा के०) शुच प्रकृतिनो रस, एथी अन्यथा कहेवो, एटले जलरेखा अने रजारेखा समान संज्वलन तथा प्रत्याख्यानीआ कषायें करीने शुचप्रकृतिनो रस चोटाणीठ बंधाय, पृथवीरेखा समान अप्रत्याख्यानीआ कषायें करीने शुच प्रकृतिनो रस त्रिठाणीठ बंधाय, गिरिराय समान अनंतानुबंधीया कषायें करीने शुचप्रकृतिनो रस बेठाणीठ बंधाय. अने एकठाणीठ रसतो शुच प्रकृतिनो नज बंधाय. हवे जे प्रकृतिनो जेटले प्रकारें रस बंधाय, ते कहे ठे.

(विग्घ के०) पांच अंतराय, (देसआवरणा के०) केवलदिक वर्जीने शेष चार ज्ञानावरणीय तथा त्रण दर्शनावरणीय, एवं सात. (पुम के०) पुरुषवेद, (संजलण के०) चार संज्वलना कषाय, एवं सत्तर प्रकृतिनो रस (इग के०) एकठाणीठ, (ड के०) बेठाणीठ, (ति के०) त्रिठाणीठ, (चउठाणरसा के०) चार ठाणीठ रस पण बंधाय. एटले ए सत्तर प्रकृतिनो रस, चार प्रकारें बंधाय. तेमध्ये एनो एकठाणीठ रस तो नवमा गुणठाणाना संख्याता जाग गया पढी बंधाय. अने तेथी नीचेना गुणठाणो बेठाणीआ, त्रिठाणीआ, अने चोटाणीआ रस बंधाय अने ए सत्तर प्रकृतिथी (सेसडगमाई के०) शेष रही जे एकशो त्रण प्रकृति, तेनो बेठाणीआदिक रस बंधाय पण एकठाणीठ रस, न बंधाय. जे जणी तेमध्ये अशुच पा प प्रकृति पांशठ ठे, ते तो नवमे गुणठाणो बंधातीज नथी, तेथी तेनो एकठाणीठ रस न होय. एमांथी जो पण केवल ज्ञानावरणीय तथा केवल दर्शनावरणीय, ए बे प्रकृतिनो नवमे अने दशमे गुणठाणो वंध ठे. तथापि ते बे प्रकृति, सर्व धातिनी ठे तेनो रस, एकठाणीठ न होय अने बेतालीजा पुए प्रकृतिनो रस तो एकठाणीठ नज बंधाय. जे

जणी असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण संक्लेशनां स्थानक ठे तेथकी कांइ एक जा जेरां विद्युदिनां स्थानक ठे. ए बे यद्यपि तुदय ठे तथापि तेमांहे विद्युदि स्थानक कां इक अधिक ठे जे माटें उपशमश्रेणीयें विद्युदि स्थानकें चढे ठे अने पडतो पण ते टलेज संक्लेश स्थानकें पाठो उतरे ठे एटले तुदय ठे. चडवानां जेटलां विद्युदि स्थान क, तेटलांज उतरतां संक्लेशस्थानक होय, जेम प्रासाद उपर चडवानां जेटलां पगथी आं तेटलांज उतरवानां पण पगथीआं होय पण कूपकश्रेणीना जे विद्युदिना अ ध्यवसाय स्थानकें चढे ठे, ते पाठो उतरतो नथी. तेथी संक्लेशस्थानक तेटलां उठां होय, अने विद्युदिस्थानक अधिक ठे तिहां अतिविद्युदिस्थानकें शुन प्रकृ तिनो चोठाणीं रस बंधाय अने अत्यंत संक्लेशस्थानकें शुन प्रकृतिनो बंध न होय, अने नरकप्रायोग्य बांधतां अत्यंत संक्लेशो वैक्रिय, तैजस अने कार्मेणादि क जे शुन प्रकृति बंधाय ठे ते पण तथा स्वजावें बेठाणीआरसें बंधाय, पण ए कठाणीआ रसें न बंधाय, तथा पूर्वे संज्वलन कपायोदये करी पाप प्रकृतिनो एकठा णीं रस बंधाय. एम कथुं ते पण स्थूलनये कथुं. जे जणी संज्वलने उदये पाप प्रकृतिनो बेठाणीं पण रसबंध होय. ए रीतें स्थानक, प्रत्यय, प्ररूपणा कही ॥६४॥

दवे शुजाशुन रसनं स्वरूप कहे ठे.

निबु इबुरसो सहजो, उ ति चउ जाग कढि इक जागं तो ॥

इग ठाणाई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥ ६५ ॥

अर्थ—(निबुइबुरसोसहजो के०) लींबडानो रस सहजे कडवो होय अने इहु एटले शेलडीनो रस, सहजे स्वजावें मीठो होय तेम पापप्रकृतिनो रस सहजे क डवो अति उदगेहेतु होय, ते एकठाणीं कहीयें अने बेतालीश पुख्य प्रकृतिनो रस सहजे इष्ट आनंदहेतु होय ते एकठाणीं कहीयें. तिहां दृष्टांत कहे ठे. (उतिचउजागकढिइकजागंतो के०) बे जागनो रस काढी उकालीने एक जागनो राखीयें तेने बे ठाणीं कहीयें, त्रण जागनो काढी उकालीने एक जागनो राखी यें तेने त्रिठाणीं कहीयें अने चार जागनो काढी उकालीने एकजागनो राखीयें, तेने चोठाणीं कहीयें. एटले लींबडाना सहजेना एक शेर रसने अग्नि उपर का ढतां अर्धशेर रहे ते घणो कडवो होय. तेम व्याशी पापप्रकृतिनो बे ठाणीं रस कटुकतर अनिष्टतर होय, शेलडीनो रस काढतां एकठाणीं अर्धशेर मात्र रहे ते मिष्टतर इष्टतर, होय. ते बे ठाणीं रस जाणवो तथा जे काढतां शेरनो त्रीजो

नाग मात्र रहे ते त्रिगणीठ रस होय ते व्याशी पाप प्रकृतिनो रस कटुकतम, अनिष्टतम होय. बैतालीश पुण्य प्रकृतिनो रस मिष्टतम इष्टतम चित्त प्रसन्नतानो हेतु होय. ते त्रिगणीठ रस जाणवो तथा जे रस काढतां थकां शेरनो पा शेर मात्र रहे ते चोगणीठरस होय, ते पुण्य प्रकृतिनो तो शुच अत्यंत मिष्टतम, अत्यंत इष्टतम, आनंदहेतु होय. अने पाप प्रकृतिनो अत्यंत कटुकतम, अत्यंत अनिष्टतम, महाउद्वेग हेतु चोगणीआ रसनो उद्वेग होय. ए मूढमतिने समजाव वा हेतुयें दृष्टांत कर्हा. अन्यथा कर्मदलने विषे तो अनंत रसज्ञेद होय ठे.

(इगुणार्णवसुहोके०) ए रीतें अशुच प्रकृतिनो रस, एकगणीआदिक ते (असुहाणके०) अशुच पणे वधतो लेवो अने (सुहोसुहाणंतुके०) शुच प्रकृतिनो रस, शुच मीठो वधतो जाय माटें शुचपणे वधतो लेवो. अहींआं तु शब्दें विशेषण कहे ठे.

पुरुषवेदादिक सत्तर प्रकृतिना एकगणीआ रस स्पर्शक असंख्याता ठे. तेमध्ये जघन्य रस स्पर्शक पण असंख्याता ठे. तेह सहज जघन्यरस स्पर्शक ते लींबडाना रस समान जाणवा. तेथकी बीजो रस स्पर्शक अनंतगुण रसाविनागें अधिक जाणवो. एम अनंतगुण रसाविनागें वधतां वधतां असंख्याता रस स्पर्शक एकगणीआ रसना होय. ते थकी अनंतगुणवीर्य वाला बे गणीआ रसना असंख्याता स्पर्शक होय, तेथकी अनंतगुणवीर्यवाला त्रिगणीआ रसना असंख्याता रस स्पर्शक होय, तेथकी अनंतगुणवीर्यवाला चोगणीआ रसना असंख्याता रसस्पर्शक होय.

केवलज्ञानावरणीय प्रमुख सर्व घातिनी वीश प्रकृतिना रस स्पर्शक, एकगणी आ न होय अने देशघातिनी प्रकृतिना चोगणीआ तथा त्रिगणीआ रसवाला ते सर्वघातिआ रसस्पर्शक जाणवा. अने बेगणीआ रसवाला पण केटलाएक उत्कृष्ट रसवाला ते सर्व घातिआ जाणवा. तथा मंद रसवाला ते देशघातीआ रस स्पर्शक जाणवा तथा एकगणीआ रसवाला जे स्पर्शक होय, ते देशघाति ज जाणवा. ते स्पर्शक स्वरूपें कडानी परें स्थूल त्रिद्वंत होय अने कोइएक कं बलना विवरनी परें मध्य त्रिद्वंत होय अने कोइएक, सूक्ष्मवस्त्रनी परें त्रिद्वंत लूखा मलीन होय अने जे सर्वघातीआ रस स्पर्शक होय, ते त्रांवाणा पत्रानी परें निश्चिद्विद्वंत घृतनी परें चीकणा होय. ते अबरस्वनी परें निर्मल एवा जे ज्ञानादिक आत्माना गुण आवरवा योग्य ठे. ते सर्व आवरे.

अने बैतालीश पुण्यप्रकृतिनो रस जघन्य पणे एक गणीठ न होय माटें बे गणीठ सदेजें शोलडीना रस सरखो जघन्य रसस्पर्शक होय तेथी अनंतगुण वृ

द्विगत रसें बीजो स्पर्द्धक एम अनंते अनंतगुणवृद्धिये वेगणीए रस स्पर्द्धके असंख्यात स्थानक पूर्ण थाय. तेथकी वली अनंतगुणवीर्य वधतां वधतां असंख्याता रस स्पर्द्धक त्रिगणीआना जाणवा तेथकी अनंतगुण वीर्य वृद्धिगत चउगणीआ रसस्पर्द्धक, तेपण असंख्याता जाणवा. ए सौ अघातिआ जाणवा. एम घाति तथा अघाति ए एक स्थानकादिक रसनी अपेहार्ये होय ॥ इति ॥६५॥
॥ अथोत्कृष्टरसबंधस्वामिन आह ॥ हवे उत्कृष्ट रसबंधना स्वामी देखाडे ठे.

तिव मिग थावरायव, सुर मिह्ना विगल सुद्धम निरय तिगं ॥

तिरि मणु आउ तिरिनरा, तिरिडुग ठेवठ सुर निरया ॥ ६६ ॥

अर्थ—(मिगथावरायव के०) एकेंद्रियजाति, स्थावरनाम अने आतपनाम, ए त्रय प्रकृतिनो (तिव के०) तीव्र एटले चोठाणीउं उत्कृष्ट रसबंध (सुरमिह्ना के०) ईशान देवलोक पर्यंतना मिथ्यात्वी देवताने होय, ते मध्ये आतपनामकर्म, पुण्य प्रकृति ठे. अने तेनो बंध मिथ्यात्वेज ठे तथा तेनुं संक्लेशपणुं अने विद्युदपणुं ए बेद्दु मिथ्यात्वेज ठे. जे नणी आतपनो तीव्ररस बंध, मिथ्यात्वी देवताने तत्प्रायोग्य विद्युदिये लेवो. बीजी प्रकृतिना बंधक अति संक्लिष्ट लेवा, जे नणी एवा संक्लेशे वर्चता जो मनुष्य तथा तिर्येच होय तो ते नरक प्रायोग्य बांधे, तेथी ते नलीधा तथा नारकी अने सनत्कुमारादिक देवलोकना देवता तो नव प्रत्ययेज एकेंद्रिय प्रायोग्य ए प्रकृति नथी बांधता, तेथी ते पण एना अधिकारी नथी. अने सौधर्म, ईशानना सम्यक्दृष्टि देवता तो मनुष्य प्रायोग्य बांधे ठे. तेथी ते पण एना बांधाधिकारी नहीं अने नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी. सौधर्म अने ईशान देवलोकना मिथ्यात्वी देवता, आतपनी लघुस्थिति बांधतां एकेंद्रियजाति तथा स्थावरनाम कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति बांधतां तीव्ररसें बांधे.

(विगल के०) विकलत्रिक, (सुद्धम के०) सूद्ध, अपर्याप्त अने साधारण, ए सूद्धत्रिक, (निरयतिगं के०) नरकत्रिक अने (तिरिमणुआउ के०) तिर्येचाशु अने मनुष्याशु, ए अगीआर प्रकृतिना उत्कृष्टरस बंधना अधिकारी सन्निआ पंचेंद्रिय पर्याप्ता मिथ्यादृष्टि संख्याता वर्षाशुवाला तत्प्रायोग्य संक्लेशे वर्चता एवा (तिरिनरा के०) मनुष्य अने तिर्येच होय. जे नणी ए मांहेजी पहेजी नव प्रकृतिनो बंध, देवता नारकीने तो नव प्रत्ययेज नथी, अने मनुष्य तिर्येचाशुनो जो पण देवता नारकीने बंध ठे, तो पण एनी उत्कृष्टी स्थिति, त्रय पडोपम प्र

माण बांधतां उत्कृष्ट रस बांधाय. तेवो बांध तो देव तथा नारकीने युगलीआना आयुनो बांध नथी तेथी न बांधाय अने सास्वादन गुणठाणे पण घोळना परिणामे ए वही स्थिति न बांधाय, तेथी ते सास्वादन विना मिथ्यात्वीज उत्कृष्ट रसना बांधाधिकारी लीधा. तथा युगलीआ पण उत्कृष्ट त्रण पव्योपम मनुष्यायु न बांधे, माटे ते पण न लीधा अने मिश्रादिक गुणठाणे मनुष्य तथा तिर्येच संख्याता वर्षायु वा जाने पण ए वे आयुनो बांध नथी ते माटे मिथ्यात्वीज लीधा तथा अति संक्लिष्ट आयुःकर्म न बांधे, तेथी तत्प्रायोग्य संक्लेषो वर्त्तताज ग्रहण कखा एटले चौद प्रकृतिना उत्कृष्ट रस, बांधाधिकारी कखा अर्ही नरकदिकनो उत्कृष्टरस सर्व संक्लिष्ट मनुष्य तिर्येच मिथ्यात्वी बांधे, ते अति संक्लिष्टपणुं उत्कृष्ट वे समय लगे र हे, अने शेष ठ प्रकृतिना बांधक तत्प्रायोग्य संक्लिष्ट परिणामी लेवा, जे जणी अति संक्लिष्ट जीव, नरक प्रायोग्य बांधे ठे, तथा नरकायु पण अति संक्लेषो बांधाय ठे.

(तिरिङ्ग के०) तिर्येचगति, तिर्येचानुपूर्वी, ए तिर्येचदिक अने (वेवठ के०) वेवठुं संघयण, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट रसबांध तो अतिसंक्लिष्टे मिथ्यात्वी (सुर के०) देवताने होय, जे जणी एवा संक्लिष्ट परिणामे वर्त्तता मनुष्य, तिर्येच तो नरक प्रायोग्य बांधे अने देवताने जव प्रत्यये नरक प्रायोग्यनो बांध नथी, तेथी ते ठेकाणे ए तिर्येच गति प्रायोग्य बांधे, तेथी मिथ्यात्वी देवता तथा मिथ्यात्वी (निरया के०) नारकी एना बांधाधिकारी लीधा. तेमध्ये पण वेवठा संघयणना उत्कृष्ट रसबांधना स्वामी सनत्कुमारादिकथी मांमीने सहस्रारांत देवता होय जे जणी छु वनपति, व्यंतर, ज्योतिपी अने सौधर्मे, ईशान देवलोकना देवता, मिथ्यात्वे एवे संक्लेषो वर्त्तता एकेन्द्रिय प्रायोग्य नामकर्मनी प्रकृति बांधे, परंतु ते वेवठा संघयणना अनुत्कृष्ट रसबांधक होय, तेथी ते न लीधा. तथा सम्यक्दृष्टि देवने ए त्रण प्रकृतिनो बांध नथी, तेजणी ते पण न लीधा ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६६ ॥

विजुवि सुरा हारग ड्ग, सुख गइ वन्न चउ तेय जिण सायं ॥

सम चउ परघा तस दस, पणिदि सासुच्च खव गाउ ॥ ६७ ॥

अर्थ—(विजुवि के०) वैक्रियशरीर, वैक्रियअंगोपांग, ए वैक्रियदिक तथा (सुराहारगड्ग के०) देवगति, देवानुपूर्वी, ए सुरदिक अने आहारकदिक तथा (सुखगइ के०) छुनखगति, (वन्नचउ के०) छुन वर्ष चतुष्क, (तेय के०) तैजस, कार्मण, अशुरुलघु अने निर्माण, ए तैजसचतुष्क, (जिण के०) जिननामक

मै, (सायं के०) शातावेदनीय, (समचउ के०) समचतुरखसंस्थान, (परघा के०) पराघात, (तसदस के०) त्रसदशक, (पणिंदि के०) पंचेन्द्रियजाति, (सामुञ्च के०) श्वासोद्वास, उच्चैर्गोत्र, ए बत्रीश पुण्यप्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंधक (खवगाउ के०) कृपक एटले कृपकश्रेणीयें चढतो मनुष्य तेने कृपक कहीयें. जेम राज्य योग कुंवरने राजा कहीयें, तेम चारित्र मोहनीय कृपणी कृपकश्रेणी जेणे आ रंजी, तेने कृपक कहीयें, ते मध्ये पण शातावेदनीय, उच्चैर्गोत्र अने त्रसद शक माहेली यशःकीर्ति, ए त्रण प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंधक सूद्धा संपरायने च रम जाग वर्ति कृपक होय. जे जणी ए त्रण प्रकृतिना बंधकमाहे एहिज अति विद्युद्धि ठे अने पुण्यप्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंध अतिविद्युद्धियें होय. जेवारे आ पणा रस बंधस्थानक अनंत गुणविद्युद्धियें होय, तेवारे ए प्रकृति बंधाय तेजणी कही. तथा ए त्रण प्रकृतिविना शेष रही जे उगणत्रीश पुण्यप्रकृति, तेना उत्कृष्ट रसबंध अपूर्व करणना सात जागमध्ये ठेजे जागे त्रीश प्रकृतिनो बंध विभेद थाय ठे. तेमध्ये एक उपघात विना शेष उगणत्रीश प्रकृतिने चरम बंधे कृपकने अति विद्युद्धि जणी चोगणित रस बंधाय ए उगणत्रीश प्रकृतिना बंधक माहे एहज अति विद्युद्धि ठे तेथी कृपक मनुष्य, एना उत्कृष्ट रसबंधना स्वामी जाणवा. जे जणी देवता, नारकी तथा तीर्थचने आठसुं गुणगणुं न होय, तेथी ते एना अधिकारी न कह्या. अने जो पण उपशमश्रेणीयें अपूर्वकरण तथा सूद्धासंपराय, ए बे गुणगणां होय ठे अने तिहां ए प्रकृतिनो बंध विभेद पण संजवे तथापि कृपकश्रेणीना अथ्यवसायस्थानकथकी कषायनी सत्ता सहित उपशमश्रेणीना अथ्यवसाय स्थानक विद्युद्धिनी अपेक्षायें अनंतगुणांहीन होय अने शुन प्रकृति नो सर्वोत्कृष्ट रस बंधतो अतिविद्युद्धियें बंधाय ठे. तेथी कृपकश्रेणीना मनुष्य ज एना उत्कृष्ट रसना बंधाधिकारी कह्या. एवं (४९) प्रकृतिना उत्कृष्ट रस बंधस्वामी कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६७ ॥

तमतमगा उज्जोयें, सम्मसुरा मणुय उरल डग वडरं ॥

अपमतो अमराउ, चउ गइ मिह्ठाउ सेसाणं ॥ ६८ ॥

अर्थ—(तमतमगा के०) तमतमा एवे गोत्रें अने माघवती नामें सातमी नर क पृथवी, तेना नारकी तथाविध अकाम निर्झारयें करी, कर्म स्वपावतां यकां विद्युद्ध परिणामें करी सम्यक्त्व पामवाने अर्थे यथा प्रवृत्तिकरण करे तिहां अपूर्व

करणें करी अनंत गुणविद्युदियें बहुल कर्म स्वपावर्तांश्रिजेदे अने अनिवृत्तिकरणें करी मिथ्यात्वनी स्थितिना बे जाग करे, ते अंतर करण्यी प्रथम स्थिति, ने चरम समयें जेथकी आगळे समयें सम्यक्त्व लेशे ते मिथ्यात्व स्थितिने चरम समयें (उक्तोयं के०) उद्योतनाम कर्मनो उत्कृष्ट रस बंध करे, तथा बीजा देवता नारकी तो एवी विद्युदियें वर्त्तता मनुष्य प्रायोग्य बांधे तथा तिर्थचतो मनुष्य अने देवता प्रायोग्य बांधे अने सातमी नरकना नारकीने तो जव प्रत्ययें देवता तथा मनुष्य प्रायोग्यनो बंध नथी, ते स्थानकें ए उद्योतनामनी पुण्य प्रकृति तिर्थचगति सहचारी बांधे. एना बंधकमांहे एहज अत्यंत विद्युदि ठे.

(सम्मसुरा के०) सम्यक्त्वदृष्टि देवता तो (मणुयउरलडुग के०) मनुष्यदिक तथा औदारिकदिक अने (वडूरं के०) वज्ररूपननाराच संघयण, ए पांच पुण्यप्रकृति मनुष्यगति प्रायोग्य अति विद्युद सम्यक्दृष्टि देवता, उत्कृष्टरसें बांधे, तेथी ते एना स्वामी जाणवा. जे जणी तिर्थच तथा मनुष्य एवी विद्युदियें वर्त्ततो देव प्रायोग्यज बांधे अने देवता एवी विद्युदियें मनुष्य प्रायोग्यज बांधे. तेथी देवताज एना बंधाधिकारी लीधा अने मिथ्यात्वनीने पण एवी विद्युदि न होय तेथी सम्यक्दृष्टि देवताने नंदीश्वरें चैत्यबंधन, जिन कव्याणक महोत्सवादिक, जिनव्याख्यान श्रवणादिक अनेक सम्यक्त्व उज्ज्वलतानां कारण होय अने नारकी सम्यक्दृष्टिने पण एवा कारणेने अजावें ए पांच प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंध न होय, तेथी ते एना उत्कृष्टरसबंधाधिकारी न कह्या. परंतु देवताज कह्या.

(अप्रमत्तो के०) अप्रमत्त गुणस्थानकें वर्त्ततो साधु प्रमत्त गुणगणायी (अमराउ के०) देवायु बंध करतो अप्रमत्तें चढे ते अतिविद्युदियें देवायुनी उत्कृष्टस्थिति तेत्रीश सागरोपमनी बांधतो उत्कृष्टरस पणो बांधे देवायुनी उत्कृष्टी स्थिति अने उत्कृष्टरस ए बेहु अतिविद्युदपणो बंधाय, देवायुना बंधकमांहे एहिज अति विद्युदबंधस्थानक ठे एम बेंतालीश पुण्य प्रकृति अने चौद पाप प्रकृति मली ढप्पन्न प्रकृतिना उत्कृष्ट रसबंधस्वामी कह्या.

(चउगड्मिड्ढाउसेसाणं के०) ते अकी शेष ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय नव, कषाय शूल, मिथ्यात्वमोहनीय, नोकषाय नव, प्रथम संघयण विना शेष पांच संघयण, प्रथम संस्थान विना शेष पांच संस्थान, अशुचवर्णचतुष्क, अस्थिर षट्क, उपघात, कुखगति, नीचैर्गोत्र, पांच अंतराय. एवं अडशठ प्रकृतिना उत्कृष्ट रसबंधस्वामी चार गतिना पंचेंडिय पर्याप्ता मिथ्यादृष्टि जीव जाण

वा, ते मांहे पण वचला संघयण चार अने वचला संस्थान चार, स्त्रीवेद, पुरुष वेद, हास्य, रति, ए बार प्रकृति विना शेष उप्पन्न प्रकृतिना उत्कृष्ट बंधाध्यवसाय स्थानकमांहे जे अत्यंत मलिन संक्लिष्ट अथ्यवसायस्थानक होय, तिहां उ उत्कृष्ट रस बंध करे अने हास्य तथा रतिनो उत्कृष्टरस मध्यम संक्लेर्षो बंधाय जे जणी उत्कृष्टसंक्लेर्षो तो वेदमध्ये नपुंसकवेद अने हास्यादिकमध्ये शोक तथा अरति बांधे ठे. संस्थानमध्ये हुंमसंस्थान अने संघयणमध्ये ठेवहुं संघयण ए उत्कृष्टरसे बंधाय, तेथी ए बार प्रकृतिनो रसबंध मध्यम संक्लेर्षो होय तेथी ए बार प्रकृतिना उत्कृष्टरसबंधाधिकारी मध्यम संक्लेर्षी चतुर्गतिक जीव जाणवा. एम अडशत प्रकृतिना उत्कृष्ट रस बंधाधिकारी कह्या अने उप्पन्न प्रकृतिना पूर्वे कह्या. एवं सर्व मली एकशो ने चोवीश प्रकृति थइ. तेना उत्कृष्ट रस बंधाधिकारी कह्या. ते मध्ये बेंतालीश पुण्य प्रकृति अने ब्याशी पापप्रकृति जाणवी ॥ इति० ॥ ६० ॥

हवे ए एकशो ने चोवीश प्रकृतिना जघन्यरस बंधाधिकारी कहे ठे. जे जणी उत्कृष्टरस तथा जघन्य रस केवाथकी वचलां सर्व मध्यम रसस्थानक सुखे जाण्यां जाय, ते जणी जघन्यरस बंधना स्वामी कहे ठे ॥

थीण तिगं अण मिहं, मंद रसं संजमुम्मुहो मिहो ॥

विय तिय कसाय अविरय, देस पमतो अरइ सोए ॥ ६१ ॥

अर्थ—(थीणतिगं के०) थीण-क्षीत्रिक, (अण के०) अनंतानुबंधीआ क्रोधा दिक चार, (मिहं के०) मिथ्यात्वमोहनीय, ए आठ प्रकृतिनो (मंदरसं के०) मंद एटले अत्यंत जघन्यरसना बंधाधिकारी (संजमुम्मुहो के०) जे मनुष्य चारित्रने सन्मुख थयलो एटले जे मनुष्य आगले समयें संयम सहित सम्यक्त्व पाम शे एवो अनिवृत्ति करणना चरम समयवर्ति (मिहो के०) मिथ्यात्वी मनुष्य जा एवो. जे जणी ए आठ प्रकृतिना बंधकमांहे एवी विद्युद्धि बीजा स्थानकें न पा मिथें, जो पण मिथ्यात्वीथी सास्वादनीना अथ्यवसाय उज्ज्वल ठे, तथापि सास्वाद न गुणठाणुं तो पडतां होय ठे. ते अपेकार्यें संक्लिष्ट कहीथें, तेणे थीण-क्षीत्रिक अने अनंतानुबंधीआ चारनो बंध, सास्वादने मध्यमरसे बंधाय पण मंदरसें तिहां न बंधाय. ए आठ पाप प्रकृति ठे. तेजणी एनो जघन्यरस विद्युद्धि बंधाय ते विद्युद्धाध्यवसाय तो ग्रंथिजेद करतां होय तेमांहे पण वली चारित्र सहित सम्यक्त्व पडिवजनारनी विद्युद्धि अधिक होय ठे. तेथी तेनेज लीधा अने सम्यक्त्व लह्या

पढी तो ए आठ प्रकृतिनो बंध नज होय, तेमाटें सम्यक्त्व प्राप्तिथी पूर्वजो सम य कह्यो तथा चारित्र सहित सम्यक्त्व अंगीकार करवाना अधिकारी मनुष्यज होय, तेषी मनुष्यज लीधा पण देवादिक न लीधा.

(बिय के०) बीजा अप्रत्याख्यानावरण कषायमोहनीयनी चोकडीना ज घन्यरस बंधाधिकारी जे आगळे समयें संयम पडिवजशे, एवा (अविरय के०) अविरति गुणस्थानकनें चरम समयवर्ति मनुष्य जाणवा. एना बंधकमांहे ए थ की अधिक विद्युद्विस्थानक बीजुं कोइ नथी. अहींआं कोइ एक देशविरति संय मने सन्मुख थयेजो जीव पण कहे ठे. तथापि देशविरति संयमने सन्मुखनी विद्युद्विषकी सर्व विरति संयमने सन्मुखनी विद्युदि अधिकी होय. एम बहुश्रुतें विचारबुं, तत्व केवलीगम्य. एनो मंदरस, अतिविद्युद्वियें बंधाय ठे.

तथा (तियकसाय के०) त्रीजा कषायनी चोकडी एटले प्रत्याख्यानावरण चार कषाय मोहनीयनो मंदरसबंध, संयमने सन्मुख थयेजो जे आगळें समयें चारित्र अवश्य पामशे, एवो (देसे के०) देशविरति मनुष्य जाणवो जे जणी ए ना बंधक मांहे एहिज अत्यंत विद्युदि ठे अहींआं संयम सन्मुख कह्यो माटें ति र्थेच न होय, तथा प्रमत्तादिक गुणवाणे प्रत्याख्यानीआनो बंध नथी, ते जणी देशविरति कह्यो तथा अप्रत्याख्यानीआनो बंध अविरतिने होय, ते जणी ते न लीधा संयमसन्मुख अविरति सम्यक्दृष्टिथी पण संयमसन्मुख देशविरति सम्यक्दृष्टिनी अनंतगुण विद्युदि होय, ते माटें अप्रत्याख्यानीआना मंदरसथी प्रत्याख्यानीआनो मंदरस हीन होय.

(पमत्तो के०) प्रमत्त गुणस्थानक वर्ति साधु जे आगळे समयें अप्रमत्त था शे एवो साधु, प्रमत्त गुणवाणाना चरम समयें एक (अरइ के०) अरतिमोह नीय, बीजी (सोए के०) शोकमोहनीय, ए बे प्रकृतिनो जघन्यरस बंधाधिकारी होय जे जणी ए बे प्रकृतिना बंधक मांहे एहिज अति विद्युदि होय. एवी बीजे स्थानकें विद्युदि न होय, अप्रमत्तादिकने विवे ए बे प्रकृतिनो बंध नथी, माटें प्र मत्तज कह्यो. एवं अठार प्रकृति थइ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६९ ॥

अपमाइ हारग डुगं, झनिह असुवन्न हासरइ कुडा ॥

जयमुवघाय मपुवो, अनियट्टी पुरिस संजलणे ॥ १० ॥

अर्थ—(अपमाइ के०) अप्रमादि साधु अप्रमत्त गुणवाणा थकी प्रमत्तें आव

तो होय, एटले आंगले समयें प्रमत्त अवश्य अज्ञो एवो अप्रमत्त साधु, संक्षिप्त थको (हारगडुंगं के०) आहारक शरीर अने आहारकांगोपांग, ए बे नामकर्मनी प्रकृति नो जघन्यरसबंध करे. जे जणी ए बे पुण्य प्रकृति ठे, माटे एनो मंदरस संक्षेपें बंधाय. आहारकना बंधकमांहे एवो संक्षेप बीजे कोइ स्थानकें नथी, ते माटें. तथा मिथ्यात्वादिक प्रमत्तांत गुणठाणे तो ए आहारक दिकनो बंधज नथी, अने सा तमे तथा आठमे गुणठाणे एनो बंध ठे ते गुणठाणां तो एथी विच्छेद ठे. केम के प्रमत्तथी अप्रमत्तें चढतो पण विच्छेद ठे. एवं वीश प्रकृति अइ.

(इनिद के०) एक निडा, बीजी प्रचला, ए निडादिक. (असुवन्न के०) अशुच वर्ण, अशुचगंध, अशुचरस अने अशुचस्पर्श, (हासरइकुठा के०) हास्य, रति अने जुगुप्सा तथा (जयमुवधाय के०) जय मोहनीय अने उपधात, ए अगीआर प्रकृति अइ. तेमां नव प्रकृतिनो मंदरस तो (मपुवो के०) अपूर्वकरणना मा आवुं गुणठाणुं तेना सात जाग ठे, ते मांहेला बछ जागने प्रांतें चर म समयें जघन्यरस बांधे अने निडा तथा प्रचला ए बे निडानो जघन्यरस अपूर्वकरणना प्रथमजागें आपणा बंधना प्रबंधव्यवहेदथी प्रथम समयेंज जघन्यरस बांधे. ए अगीआर पाप प्रकृति ठे. ते जणी अति विच्छेदें मंदरसैं बंधाय. एना बंध कमां एहिज अति विच्छेदि ठे केम के एथी अतिविच्छेदि आंगले गुणठाणे ठे खरी, पण तिहांतो ए अगीआर प्रकृतिनो बंधज नथी तथा अहींआं पाठमां कह्यो न थी तथापि ए अपूर्वकरण रूपकश्रेणीनो लेवो केम के उपशम श्रेणीना अपूर्वकरण थकी रूपक श्रेणीनुं अपूर्वकरण अनंतगुणुं विच्छेद ठे अहींआं कोइएक कहे ठे के, एम कहेशो तो एना अजघन्य बंधने सादिसांत पणुं न संजवे? केम के रूपक श्रेणीथी पडवुं नथी अने ते तो जघन्य बंधथी पडतो जेवारें अजघन्य रस बांधे, ते वारें अजघन्यनी सादि होय अने रूपक श्रेणीथें तो जघन्यरस बांधीने वलतो अ बंधक थाय ते जणी ए वात विचारवो योग्य ठे. एवं एकत्रीश प्रकृति अइ.

(अनिघट्टीपुरिससंजलणे के०) अनिवृत्तिकरण एवे नामे नवमुं गुणठाणुं ठे. जीव चारित्र मोहनीय खपाववाने पण त्रण करण करे. तिहां अप्रमत्त गुणठाणुं यथा प्रवृत्तिकरण अने आवुं गुणठाणुं अपूर्वकरण तथा नवमुं गुणठाणुं अनिवृत्तिकरण, ते नवमा गुणठाणाना पांच जाग करीथें, तिहां एकेका जागें अनुक्रमें पुरु पवेद, संज्वलन क्रोध, संज्वलनमान, संज्वलनी माया अने संज्वलनो लोभ, ए पांच मोहनीयनी प्रकृतिनो वंध व्यवहेद करे, तिहां पोतपोताना बंधने ठेहले बंधें, मं

दरस बंध होय. ए पांच पाप प्रकृतिनो विद्युद्विद्ये मंदरस बंधाय ठे. ए पांचना बंधक मांहे एहिज अतिविद्युदता ठे. एवं बत्रीश प्रकृति अइ ॥ इति समुच्चयार्थः ॥७०॥

विग्धावरणे सुदुमो, मणुतिरिञ्चा सुदुम विगल तिगञ्चाउ ॥
वेउवि ठक ममरा, निरया उज्जोय उरल जुगं ॥ ७१ ॥

अर्थ—(विग्धावरणे के०) दानांतरायादिक पांच अंतरायनी प्रकृति, तथा आ वरण एटले पांच ज्ञानावरणीय अने चार दर्शनावरणीय, ए चौद प्रकृतिनो जघन्य रसबंध स्वामी, (सुदुमो के०) सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानकर्वात्ति कूपकश्रेणीवालो पो ताना बंधने चरम बंधे होय ए चौद प्रकृतिना जघन्यरस बंधमांहे एथी अधिक वि द्युदि, बीजे कोइ स्थानके नथी. ए पापप्रकृति ठे, माटे विद्युद्विद्ये मंदरस बांधे.

(सुदुम के०) सूक्ष्म, अपर्याप्त अने साधारण, ए सूक्ष्मत्रिक तथा (विगलति ग के०) विकलजातित्रिक, (आउ के०) चार गतिनां आयु, एवं दश प्रकृति त था (वेउविठक के०) वैक्रियशरीर, वैक्रिय अंगोपांग, देवगति, देवानुपूर्वी, न रकगति, नरकानुपूर्वी, ए वैक्रिय पटक कहीये. ए शोल प्रकृतिना मंदरस बंध स्वामी (मणुतिरिञ्चा के०) मनुष्य अने तिर्येच होय. ए शोल प्रकृतिमां देवत्रि क, वैक्रियदिक, मनुष्यायु अने तिर्येगायु, ए सात पुस्यप्रकृति ठे, ते जणी एनो मंदरस पोताना बंधाध्यवसायस्थानकमांहे जे मलीनाध्यवसाय स्थानक ठे तेणे करी पोताना बंधकमांहे जे अतिसंक्लिष्ट होय ते बांधे अने नरकत्रिक, सूक्ष्मत्रिक तथा विकलजातित्रिक, ए नव पाप प्रकृति ठे ते जणी एना मंदरस बंधस्वामी पोताना बं धाध्यवसाय स्थानक मध्ये जेने घणुं विद्युदिपणुं होय ते एनो जघन्यरस बंध स्वामी होय, ए शोले प्रकृतिना मंदरस बंधाधिकारी मनुष्य अने तिर्येच तत्प्रायो ग्य विद्युदि तथा संक्लेशे वर्त्तता होय जे जणी ए शोल प्रकृतिमध्ये मनुष्यायु अ ने तिर्येगायु, ए बे आयु विना शेष चौद प्रकृतिनो बंध तो नव प्रत्ययेज देवता तथा नारकीने न होय, तेथी ते, एना बंधाधिकारी नथी, तथा मनुष्यायु अने तिर्येगायुनो पण जघन्य स्थितिबंध करतां मंदरस बंधाय ते जघन्यस्थिति तो कृ ल्मकनवरूप ठे तेनो बंध देवता तथा नारकीने न होय, तेथी तेने मंदरस न बंधाय.

(उज्जोय के०) उद्योतनामकर्म अने (उरलजुगं के०) औदारिक शरीर अने औ दारिक अंगोपांग, ए त्रण प्रकृतिना जघन्यरस बंधाधिकारी (ममरा के०) मिथ्या त्वी देवता तथा (निरया के०) नारकी होय. जे जणी एना बंधाध्यवसायस्था

नक मध्ये संक्लेश स्थानकें वर्त्तता तिर्यग्गति प्रायोग्य बांधता थका एवा जीव होय, तेमांहे पण औदारिक अंगोपांगना मंदरस बंधक त्रीजा देवलोकथी मांतीने सह स्वारांत लग्नेना देवता होय, जे जणी जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म अने ई शान, देवलोकना देवता तो एवे संक्लेशें वर्त्तता एकेंद्रियप्रायोग्य बांधे, ते मध्ये औदारिक अंगोपांगनो तो जघन्यरसबंध नथी, ते जणी ते एना अधिकारी नही जाणवा. तथा पर्यासा पंचेंद्रिय, मनुष्य, तिर्यंच पण एवे संक्लेशें वर्त्तता नरकप्रा योग्य नामकर्म बांधे, ते मध्ये ए त्रण प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी ते पण एना अधिकारी न कहा, अने मिथ्यात्वी देव अधिकारी कहा एवं (६९) अइ ॥७१॥

तिरि ड्ग नियं तमतमा, जिण मविरय निरय विणिगथा
वरयां आसुदु मायव सम्मो, वसायधिर सुह जसा सियरा ॥७१॥

अर्थ—(तिरिड्ग के०) तिर्यंचगति अने तिर्यंचानुपूर्वी, ए तिर्यंचदिक. (नियं के०) नीचैर्गोत्र, ए त्रण प्रकृतिना जघन्यरसबंध स्वामी, (तमतमा के०) सा तमी नरक पृथवीना नारकी सम्यक्त्वानिमुख एवा मिथ्यात्वने चरम समयें वर्त्त ता होय, जे जणी एवी विद्युदियें वर्त्तता बीजा देवता तथा नारकी होय तो ते मनुष्य प्रायोग्य बांधे. अने सातमी नरकना नारकीने तो मिथ्यात्व थकां जवप्रत्य येंज मनुष्य प्रायोग्यनो तथा उच्चैर्गोत्रनो बंध नथी तो ते स्थानकें ए त्रण प्रकृ तिनो बंध करे, ए त्रणे पापप्रकृति ठे. ते जणी विद्युदियें मंदरस बांधाय. एना बंधकमांहे एहिज अति विद्युदि ठे, ते जणी ए एना अधिकारी कहा.

(जिणमविरय के०) जिननामकर्मना जघन्य रसबंधना स्वामी अविरति स म्यक्कृष्टि मनुष्य, जेणे नरकायु बांध्या पढी ह्यायोपशमिक सम्यक्त्व पामी, कथं चित् वली नरकें जातो सम्यक्त्व वसे ते सम्यक्त्व वमतां ठेजे समयें जिननाम कर्मनो मंदरस बांधे. एना बंधक पणामांहे एहिज अति संक्लिष्ट होय.

(निरयविण के०) एक नरकगति विना शेष त्रण गतिना जीव, मिथ्यात्वी मथ्यसपरिणामें वर्त्तता त्रस बांधी स्थावर बांधतां पंचेंद्रियजाति बांधीने (इग थावरयं के०) एकेंद्रियजाति नामकर्म बांधतां तथा थावरनाम बांधतां घोळंना परिणामी होय. जे जणी अवस्थित परिणामें रहेतां तेवी विद्युदि न होय, ते ज णी परावर्त्तमान लीधा, तथा नारकी तो जव प्रत्ययेंज एकेंद्रियजाति अने स्था

वरनामकर्मनो बंध नथी करता, तेथी ते एना अधिकारी नथी. ए बे प्रकृति, मिथ्यात्व प्रत्यधिकी ठे, ते नथी नारकी विना शेष त्रण गतिना मिथ्यात्वी जीव, ए केंद्रियजाति तथा स्थावरनाम कर्मना जघन्यरस बंधाधिकारी कहा.

(आसुद्धुम के०) आ एटले मर्यादायें एटले सौधर्म जगेंना देवता जाणवा. अर्हीआं समश्रेणीयें बेहु देवलोक ठे. ते नथी ईशान देवलोक पण जेवो एटले जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशानना देव देवी मिथ्यादृष्टि अति संक्लिष्ट थका एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां (आयव के०) आतप नामकर्मनो मंदर स बांधे, जे नथी मनुष्य तथा तिर्यंच, एवे संक्लेषों वर्तता नरक प्रायोग्य बांधे. तेथी ते एना अधिकारी नर्ही अने सनत्कुमारादिक देवोने तो एकेंद्रिय प्रायोग्यनो बंधज नथी, तेथी ते पण न लीधा.

(सम्मोव के०) सम्यक्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि पंचेंद्रिय जीव, अंतरमुहूर्त्त अंतर मुहूर्त्तने फेरसारें (साथ के०) शातावेदनीय, (स्थिर के०) स्थिर, (सुह के०) शुच, (जसा के०) यश, ए चार प्रकृतिने (सश्यरा के०) इतर सहित करीयें एटले अशाता, अस्थिर, अशुच अने अयश एम ए चारे एनी विरोधिनी परावर्त्तमान प्रकृतियें सहित करीयें तेवारें आठ प्रकृति थाय. ते अंतरमुहूर्त्त शाता, अंतर मुहूर्त्त अशाता, ए रीतें घोलना परिणामें बांधतो ए आठ प्रकृतिनो मंदरस बांधे, ते प्रमत्त गुणताणा जगें बांधे, अने उपरले गुणताणे अथ्यवसाय स्थानकें अवस्थित पणे रहेतो एक शाताज बंधाय, तेथी मिथ्यात्वादिक ठ गुणताणां जगें ए आठ प्रकृतिना जघन्य रस बंध स्वामी होय. एवं चोराशी प्रकृति अऽ.

अर्हीआं जावना कहे ठे. जीवने मिथ्यात्वे अतिसंक्लेषों अशातानी त्रीश कोडा कोडी सागरोपम अने अस्थिर, अशुच तथा अयशःकीर्त्तिनी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति अवस्थित पणे बंधाय, तिहां एनी विरोधिनी चार प्रकृतिनो बंध नथी, तेथी एकादिक समयनी स्थिति हीन करतां यावत् पंदर कोडाकोडी तथा त्रण प्रकृतिनी दश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण स्थितिबंधना हेतु अथ्यवसायस्थानक जगें तो ए चार पाप प्रकृतिनो निरंतरपणे बंध पडे, ते माटें तिहां मंदरस न होय तथा जेवारें पंदर कोडाकोडी सागरोपम वेदनीयनो अने दश कोडाकोडी सागरोपम नामकर्मनो जे अथ्यवसाय स्थानकें बंध पडे, तेवारें तिहांथी पठी शाता अशातानो तथा स्थिर अस्थिरनो तथा शुच, अशुचनो अने यश अयशनो परावर्त्तें अंतरमुहूर्त्त अंतरमुहूर्त्त जगें फेरसारें बंध करे, एमज प्र

अथ गुणवाणो अंतःकोडाकोडी प्रमाण स्थिति जगें पण घोलना परिणामे
अंतर सुहूर्चने आंतरे ए आठ प्रकृतिनो बंध करतो मंदरस बांधे, जे जणी अत्र
मत्तादिक आगला गुणवाणे विद्युद्धि जणी शातादिक चार प्रकृति अविरोधिनी प
णोज बांधे. तथा एकेंडियादिक एनी लघुस्थिति बांधे पण मंदरस न बांधे ॥४१॥

तस वन्न तेअ चनु मणु, खगइ डग पणिदि सास परघुच्चं ॥

संघयणा गिइ नपु थी, सुजगि अरति मिहचउ गइआ ॥ ७३ ॥

अर्थ—(तस के०) त्रस अने बादर, पर्याप्त अने प्रत्येक, ए त्रसचतुष्क. (वन्न
के०) अजवर्ण, अजगंध, अजरस अने अजस्पर्शी, ए वर्णचतुष्क. (तेअचउके०)
तैजस, कार्मण, अगुरुलघु अने निर्माण, ए तैजसचतुष्क, ए त्रण चतुष्क. (म
णु के०) मनुष्यदिक, (खगइडग के०) खगतिदिक, (पणिदि के०) पंचेंडिय
जाति, (सास के०) उह्वासनाम, (परघुच्चं के०) पराघातनाम, उच्चैर्गोत्र, (सं
घयणागिइ के०) उ संघयण तथा उ संस्थान, (नपु के०) नपुंसकवेद, (थी
के०) स्त्रीवेद, (सुजगिअरति के०) सुजग, सुखर अने आदेय, ए अजगत्रिक
तथा एना इतर अजाग्य, अःस्वर, अनादेय, ए दौर्जाग्यत्रिक ए चालीश प्रकृतिनो
मंदरस, (मिहचउगइआ के०) चारे गतिना मिथ्यात्वी जीव, बांधे. तिहां त्रस,
बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, अजवर्ण, गंध, रस, स्पर्शी, तैजस, कार्मण, अगुरुलघु,
निर्माण, पंचेंडियजाति, पराघात, उह्वास, ए पंदर प्रकृतिना तिर्यचमनुष्य, मि
थ्यात्वी तत्प्रायोग्य संक्षेपे नरक प्रायोग्य नामकर्मनी अष्टावीश प्रकृति बांधतां,
मंदरस बांधे. एना बंधकमांहे संक्षिष्टपणुं होय, ए पुण्य प्रकृति ठे, एनो संक्षिष्टे मं
दरस बांधे, तथा नारकी अने सनत्कुमारादिकथी सहस्रारांत जगेंना मिथ्यात्वी दे
वता संक्षेपे तिर्यचगति प्रायोग्य नाम कर्मनी अणुत्रीश प्रकृति बांधतां, पण ए
पंदर प्रकृतिना मंदरस स्वामी होय, तथा ए पंदर मांहेथी पंचेंडियजाति अने त्र
सनाम विना शेष तेर प्रकृतिना मंदरस स्वामी, जवनपति, अंतर, ज्योतिषी, सौध
र्मे अने ईशानना, देवदेवी, मिथ्यात्वी, एकेंडिय प्रायोग्य बांधता एनो मंदरस बां
धे तथा त्रस नाम अने पंचेंडिय जाति, ए बे प्रकृति तो कांइ एक तेथी पण विद्युद्धा
व्यवसाये पंचेंडिय प्रायोग्य बांधतां, मंदरसे बांधे एम पंदर प्रकृतिना मंदरस स्वा
मी, चतुर्गैतिक मिथ्यात्वी जीव कह्या. तथा स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद, ए बे मोह

नीयनी प्रकृतिना मंदरस बंध स्वामी चतुर्गतिक जीव मिथ्यात्वी विद्युद् यका सम्यक्त्वान्निमुख यका होय. ए बे पाप प्रकृतिजणी विद्युदियें मंदरस बांधे.

मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, शुजखगति, अशुजखगति, ष संघयण, ष संस्थान, सुजग, सुस्वर, आदेश, दौर्जाग्य, दुःस्वर, अनादेश अने उच्चैर्गोत्र, ए त्रेवीश प्रकृतिना मंदरस स्वामी मिथ्यात्वी जीव घोलना परिणामी परावर्त्तै एनी विरोधिनी प्रकृति बांधता एवा चतुर्गतिक जीव जाणवा. जे जणी सम्यक्दृष्टि देवता तथा नारकी तो मनुष्य प्रायोग्य बांधतां तिर्यग्गत्यादिक प्रायोग्य विरोधिनी प्रकृति बांधे न हीं तथा ऋषजनाराचादिक संघयण पण न बांधे तथा सम्यक्दृष्टि मनुष्य तिर्यक् तो देवता प्रायोग्य बांधता समचतुरस्र संस्थान बांधे शेष पांच संस्थान न बांधे, ते माटे सम्यक्दृष्टिने विरोधिनी प्रकृति साथें परावर्त्तै बंध नथी तेथी ते मंदरस बंधना अधिकारी नथी तथा मिथ्यात्वी पण अतिसंक्लिष्टें वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण स्थितिवंधाध्यवसाय स्थानकें वर्त्तता तिर्यग्दिक, नरकदिक, हुंमसंस्थान, ठेवहुं संघयण, अशुजखगति, अने नपुंसकवेदादिक प्रकृतिनो निरंतर पणो उत्कृष्ट रस बांधे. तिहांथी वली अठार कोडाकोडी सागरोपमस्थिति बंधाध्यवसाय स्थानकें होय, तेवारे कुब्जसंस्थान, कीलिकासंघयण, परावर्त्तै हुंम संस्थान, अने ठेवठा संघयणनो बंध करे, तिहां मंदरस बांधे अने पंदर कोडाकोडी सागरोपम स्थितिवंधाध्यवसायस्थानकथी तिर्यग्दिकनो मनुष्यदिक साथें परावर्त्तै बंध करे, तेम नपुंसकवेदनो स्त्रीवेद साथें परावर्त्तै बंध करे, अने दश कोडाकोडी सागरोपम स्थितिवंधाध्यवसाय स्थानक पढी दौर्जाग्यत्रिकनो सौजाग्यत्रिकसाथें परावर्त्तै बंध करे. तिहांथी कोडाकोडी सागरोपम किंचिद्भूयून लगें परावर्त्तै बंधाय, तेथी हीन स्थितिवंध अध्यवसाय स्थानकें केवल मनुष्यदिक, वज्रऋषजनाराच संघयण, समचतुरस्रसंस्थान, शुजविहायोगति, सौजाग्यत्रिक, पुरुषवेद, ए प्रकृति निरंतर पणो बांधे, परंतु तिहां मंदरस न बांधे जे जणी विरोधिनी प्रकृति साथें परावर्त्तै बांधतांज मंदरस बांधे. एम एकशोने चोवीश प्रकृतिना जघन्य रसबंध स्वामी कह्या ॥४३॥

हवे जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, ए चार प्रकारना रस बंधने विषे सादि, अनादि, सांत अने अनंत, ए चार जांगा विचारे ठे.

जे थकी हीन कोइ रसबंध न पामीयें, ते जघन्य रसबंध जाणवो अने ते विना बीजा सर्व अजघन्य रसबंध जाणवा. ए रीतें ए बेहु जेदमां सर्व रसबंध ग्रह ए कखा तथा उत्कृष्टनी अपेक्षायें जेतां जे थकी अधिक तीव्र रसबंध बीजां को

इ नथी ते उत्कृष्ट रसबंध जाणवो अने ते थकी एकादि रसाविजागें हीन एवा सर्व रसबंध ते अनुत्कृष्ट रस बंध कहीयें. एम पण ए बे जेद मांहे सर्व रसबंध ग्रहण कथा तिहां मूल प्रकृति आठ अने उत्तर प्रकृति एकशोने चौवीश ए बेहुना एना चारे रसबंधे सादि अनाद्यादिक जांगा ग्रंथ लाघव करवाने सार्थेज कहे ठे.

चउ तेअ वन्न वेअणि, अनाम पुक्कोस सेस धुवबंधी ॥

घाईणं अजहन्नो, गोएअविहो इमो चउहा ॥ ७४ ॥

अर्थ—(चउतेअ के०) तैजस, कर्मण, अगुरुजघु अने निर्माण, ए तैजसचतुष्क. (वन्न के०) शुचवर्णादिक चार, ए आठ नामकर्मनी उत्तर प्रकृतिना अनुत्कृष्ट रसबंधे, सादि, अनादिसांत अने अनंत, ए चारे जांगा होय, जे नणी ए आठ प्रकृतिनो उत्कृष्ट रसबंध, अपूर्वकरणनामा आठमा गुणगणाना ठा जागने प्रांतें पोताना चरम बंधें एक उत्कृष्ट रस स्थानक होय अने ते विना सर्व अनुत्कृष्ट रस स्थानक जाणवां. जे नणी ए स्थानक, जेणे पाम्युं नथी. तेने सदा अनुत्कृष्ट रसबंध स्थानक जाणवां, ते अनादि जाणवां. तथा जे जीव, उपशमश्रेणीयें उत्कृष्ट रस बांधी, फरी तिहांथी पडतो हीन रस बांधे, तिहां अनुत्कृष्ट रस बंधनी सादि जाणवी, तथा अजघ्नने ते स्थानक पामवुंज नथी अने उत्कृष्ट रस बांधवोज नथी, तेथी तेने अनुत्कृष्ट रसबंध अनंत जागें जाणवो. अने जघ्न जीव ह्यो. ते श्रेणी पामी उत्कृष्ट रस बांधो तिहां अनुत्कृष्ट रसनुं सांतपणुं जाणवुं. एम ए आठ उत्तर प्रकृतिनो चार जेवें अनुत्कृष्ट रसबंध कह्यो.

तथा (वेअणिअनामपुक्कोस के०) वेदनीयकर्म अने नामकर्म, ए बे मूल प्रकृतिना अनुत्कृष्ट रसबंधने विषे चार जंग कहे ठे. ए बे कर्ममांहेली एक शाता, बीजी यशःकीर्ति, ए बे शुचप्रकृतिनो तो उत्कृष्ट रस बंध रूपकने दशमा गुणगणाना अंत समयें पामीयें. माटें ते स्थानक जे नथी पाम्या तेने अनुत्कृष्टनी अनादि. तथा जे ए स्थानक पामीने पाठा पड्या तेने फरी बांधती वखतें सादि तथा अजघ्नने अनंत अने जघ्नने उत्कृष्टरस बंध कर्यो, माटें अनुत्कृष्ट रसबंधनुं सांत पणुं जाणवुं.

तथा ए आठ प्रकृतिना जघ्न्य, अजघ्न्य अने उत्कृष्ट, ए त्रण बंधने विषे सादि अने सांत ए बे जांगा होय. तिहां ए आठ प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस बंध रूपकने अपूर्व करणें होय. ते प्रथम बांधवा मांय्यो ते माटें सादि, ते बंध, एक समयेंज होय. पण आगज न होय, माटें सांत बीजो जांगो तथा ए आठ शुच

प्रकृति ठे माटें एनो जघन्यरस सर्वोत्कृष्ट संक्लेशों वर्ततो मिथ्यात्वी जीव, संझी पर्याप्तो बांधे. ते एक समय तथा बे समय लगे बांधे, ते पढी अजघन्यबंध बांधे, ते वार पढी वली कालांतरें सर्वोत्कृष्ट संक्लेश पामीने जघन्य रस बांधे, एम जघन्य, अजघन्यने विषे फरता जीवने सादि अने सांत, ए बे नांगा होय.

हवे तैजसचतुष्क विना (सेस के०) शेष रही जे ज्ञानावरणीय पांच, दर्शना वरणीय नव, कषाय शोल, एक मिथ्यात्वमोहनीय, पांच अंतराय, जय, जुगुप्सा, उपघात अने अञ्जवर्णचतुष्क, ए तेंतालीश प्रकृति (ध्रुवबंधी के०) ध्रुवबंधिनी ठे तेनो अजघन्य रसबंध सादि, अनादि, सांत अने अनंत एम चार जेदें होय, जे जणी ए अञ्जुन प्रकृतिनो जघन्यरस, विद्युद्वियें करी पोताना चरमबंधें होय, अने ते स्थानक जे नथी पाम्या, तेने अजघन्यरस बंधनी अनादि अने जे श्रेणीथी पढी फरी बंध करे, तेने सादि तथा अजव्य जघन्यरस नहीज बांधे, तेथी तेने अजघन्यरसबंध अनंत अने जव्य जीव सम्यक्त्व पामशे, तेवारें ते स्थानक लइ जघन्य रस बंध करशे, तिहां अजघन्य रस बंधजुं सांतपणुं जाणवुं. एम चार नांगा कहा.

(घाईणअजहन्नो के०) ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय, ए चार मूल प्रकृति, घातिनी ठे. एना अजघन्यरस बंधने विषे चार नांगा होय, केम के ए चार पापप्रकृति जणी विद्युद्वियें मोहनीयनो नवमा गुणगणाने प्रांतें अने शेष त्रण कर्मनो दशमा गुणगणाने प्रांतें जघन्य रस बंधाय, शेष सर्वस्थानकें अजघन्य रस बंधाय, तेने विषे पण चार जंग जाणवा. ते आवी री तें के जेणे जघन्यरसबंध नथी लह्यो, तेने अजघन्य रसबंध अनादि, जे जघन्यरस बांधी वली श्रेणीथी पढतां अजघन्य रस बांधे तिहां सादि, अजव्यने अजघन्य रसबंध अनंत जाणवो, अने जव्यने अजघन्यरसबंध सांतपणे जाणवो. ए चार कर्मना अजघन्यबंध विना शेष त्रण बंधने विषे सादि अने सांत, ए बे नांगा लाजे.

(गोएडुविहो के०) गोत्रकर्मनो अनुत्कृष्ट तथा अजघन्य ए बे रसबंधने विषे (इमोचउहा के०) एमज चार जंग होय. ते कहे ठे. तेमध्ये नचैर्गोत्रनो जघन्य रसबंध सातमी नरक पृथवीना नारकी ग्रंथिजेद करी मिथ्यात्वने ठेहले समयें बांधे, ते स्थानक जे नथी पाम्या तेने अनादिनो अजघन्य रस बंधठे, अने जेणे एक समयमां जघन्यरस बंध करी फरी अजघन्य रस बांधे तेने सादि, अजव्य जीव ते स्थानक क्यारें पण नहीज पामशे, तेथी तेने अनंत, तथा जव्य जीव जघन्य रस बंध करशे. तथा रस बंध विह्वेद पण करशे तेथी तेने सांत. तेमज उच्चैर्गोत्रनो

विद्युद्विये उत्कृष्ट रसबंध, दशमा गुणताणाने प्रांते होय. ते विना बीजा सर्व अनुत्कृष्ट रसबंध जाणवा. तिहां जेणे श्रेणी नथी करी, तेणे उत्कृष्ट रस बंध नथी कसो. तेने अनुत्कृष्ट रसबंध अनादि अने श्रेणीथी पढतां उत्कृष्ट रस बांधी फरी अनुत्कृष्ट रस बांधें. तिहां सादि, अजब्यने अनुत्कृष्टरसबंध अनंत अने जघ्य ने अनुत्कृष्टनो सांत, एम चार जेद जाणवा अने शेष जघन्य तथा उत्कृष्ट ए बे, एक समयना माटे एने विषे सादि अने सांत ए बे जांगा होय. एम सुढ तालीश ध्रुवबंधिनी प्रकृति तेम वर्णादिक चार गुणागुन गणतां एकावन्न उत्तर प्रकृतिनो जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट अने अनुत्कृष्ट, एम चार प्रकारना बंधना सादि, अनादि, सांत अने अनंत. एमांना जांगा जिहां जे संजवे, तिहां ते कह्या ॥ ७४ ॥

सेसंमि डहा॥ अनुजागबंधो सम्मतो ॥ अथ प्रदेशबंधे आदावौ दारिकादिवर्गणामाह ॥ इग डग, एगाइ जा अजवपांत गुणि आणू ॥ खंधा उरलो चि अव, गगणाउ तहअगहणं तिरिया ॥७५॥

अर्थ—(सेसंमिडहा के०) एथी शेष रही जे औदारिक, वैक्रिय अने आहार क, ए त्रण शरीर तथा एज त्रण शरीरनां अंगोपांग त्रण, संस्थान ठक, संघयण ठक, पांच जाति, गति चार, खगतिदिक, आनुपूर्वीं चतुष्क, जिननाम, उद्वास, उद्योत, आतप, पराघात, त्रसदशक, तथा स्थावरदशक, ए नामकर्मनी प्रकृति अछावन तथा वेदनीयदिक, गोत्रदिक, त्रण वेद, हास्यादि युगलदिक अने आयु चार, एवं तहोत्तरे अध्रुवबंधिनी प्रकृतिना उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्य, ए चारे वंध सादि अने सांत, ए बे जांगें होय केम के, ए प्रकृतिउंनो बंध केवारेंक होय अने केवारेंक न होय, जेवारें होय तेवारें सादि, अने न होय, तेवारें सांत.

एम सविस्तरपणे रसबंध वखाणो. हवे अनुक्रमागत प्रदेश बंध कहेवाने अवसरें उपोद्घात संगतें करी प्रथम औदारिकादिक वर्गणानुं स्वरूप निरूपण कर्म वर्गणा आणवा निमित्तें कहे ठे.

१ जेम कुचीकर्ण शोभने गाय मेलववानुं व्यसन, तेथी तेणे घणी गायो मेलवी. एकवी कीथी पढी तेनी गणती आणवाने अर्थे वर्णादिकें सरखी एवी गायोनां टोलां बांध्यां तेवी रीतें अनंता पुजलस्कंधने जूदा लेखवी, तेना जेद पाडवाने अर्थे ज्ञानीयें परमाणुसंख्यायें सरखा सरखा पुजलस्कंधनां टोलां बांध्यां. तेनुं नामवर्गणा कहीयें. जेम जगत्मांहे जे एकला बूटा परमाणुआ ठे. तेनुं टोळुं

ते प्रथम वर्गणा, तेमज बे परमाणुआ एकठा मलवा थकी जे स्कंध होय. तेने षडणुक कहीयें. तेनुं टोलुं. ते बीजी वर्गणा तथा त्रय परमाणुयें निष्पन्न जे स्कंध, तेने त्र्यणुक कहीयें. तेनुं टोलुं ते त्रीजी वर्गणा. एम एकेक परमाणुयें वधता वधता स्कंधनां सरखां सरखां टोलां तेनी वर्गणा वधती वधती जाय. (३) एम वधती वधती अजव्य जीवथी अनंत गुणा अने सिद्धना जीवने अनंतमा जाग प्रमाण परमाणुयें करी निष्पन्न जे स्कंध ते स्कंध औदारिक शरीर निपजाववा योग्य होय तेथी ते स्कंध औदारिक शरीरने ग्रहण करवा योग्य होय ते माटे ते औदारिक, ग्रहण योग्य जघन्यवर्गणा होय. ए थकी एक परमाणुयें हीन स्कंधवर्गणा लगे सर्व अग्रहण योग्यवर्गणा कहीयें जे जणी तेहवे स्कंधें शरीर नीपजे नहीं, हवे ते जघन्य औदारिक शरीर आरंजकस्कंध वर्गणा तेथी एकेक परमाणुयें वधता स्कंधनी एवी बीजी, त्रीजी, चोथी, पांचमी, एम वधती वधती अनंतवर्गणा औदारिक शरीर ग्रहण योग्य पणे होय. ते औदारिक शरीर ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा थकी अनंतमे जागे वधती औदारिक शरीर ग्रहण योग्य उत्कृष्टी वर्गणा होय, ते अनंतमो जाग पण अनंता परमाणुरूप जाणवो ते माटे औदारिक शरीरने ग्रहणयोग्य पण अनंती वर्गणा जाणवी.

३ ते औदारिक शरीरनी उत्कृष्ट वर्गणा थकी एकेक परमाणुयें अधिकी स्कंधनी वर्गणा ते औदारिकनी अपेक्षायें बहु प्रदेशोपचित तथा सूक्ष्मपरिणाम परिणत तेथी औदारिकने अग्रहण योग्य अने वैक्रिय शरीर आरंजकस्कंधनी अपेक्षायें अल्पप्रदेशोपचित तथा बादर परिणत ते माटे वैक्रिय शरीरने पण अग्रहणयोग्य एम एकेक प्रदेशें वधता स्कंध अनंतनी अजव्यथी अनंतगुणी अने सिद्धना अनंतमा जाग प्रमाण एटली वर्गणा ते वैक्रिय शरीरने अग्रहण योग्य वर्गणा जाणवी. (४) ते थकी एक प्रदेशें अधिकी स्कंधनी वर्गणा ते वैक्रिय शरीर आरंज करतां जघन्य ग्रहण योग्य वर्गणा जाणवी. एम वली एकेक प्रदेशें वधता स्कंधनी अनंती वर्गणा वैक्रिय शरीर निष्पादक होय ते पण जघन्य वैक्रिय ग्रहण योग्य वर्गणाथी पोताना अनंतमा जाग प्रमाण वधती वैक्रिय शरीरने ग्रहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणा होय, तेथी ते पण अनंती वर्गणा जाणवो.

५ ते वैक्रिय ग्रहणयोग्य उत्कृष्ट वर्गणा थकी एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा ते वैक्रियदलनी अपेक्षायें बहु प्रदेश निष्पन्न तथा सूक्ष्मपरिणत होय. अने आहारक शरीर प्रायोग्य दलनी अपेक्षायें अल्पप्रदेशिक तथा बादर, परिणत होय. ते

माटें वैक्रिय तथा आहारक, ए बेहु शरीरने काममां न आवे, ते जणी ते अग्रहण योग्यवर्गणा जाणवी. ते पण एकेक प्रदेशें वधता वधता स्कंधनी अजव्यथी अनंत गुणी अने सिद्धना जीवोना अनंतमा जाग प्रमाण अनंती वर्गणा जाणवी. ए अनंती अग्रहण योग्य प्रदेश वर्गणा होय. (६) पढी तेथकी एक प्रदेश अधिक स्कंधनी वर्गणा तेणे करी ते आहारक शरीर नीपजे, तेथी ते आहारक प्रायोग्य जघन्यवर्गणा होय, ते वली एकादि प्रदेशें वधता अनंता स्कंधनी अनंती वर्गणा थाय, ते जघन्य वर्गणाना अनंतमा जाग प्रदेश प्रमाण प्रदेशें वधती एवी उत्कृष्टी आहारकशरीरने ग्रहण करवा योग्य वर्गणा अनंती होय.

७ ते आहारक ग्रहणयोग उत्कृष्ट वर्गणा थकी एक प्रदेशें वधता स्कंधनी वर्गणा ते आहारकनी अपेक्षायें बहु प्रदेशिक तथा सूक्ष्म अने तैजसनी अपेक्षायें अल्पप्रदेशिक बादर परिणत ते जणी बेहु शरीरने अग्रहणयोग्य एवी जघन्य वर्गणा तेथकी एकादिक प्रदेशें वधती यावत् अजव्यथी अनंतगुणी वर्गणा, ए वे शरीरने अग्रहण योग्य होय. माटें ते अग्रहण योग्यवर्गणा. (७) ते उत्कृष्ट अग्रहणयोग्य वर्गणादलथकी, एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा ते तैजस शरीर प्रायोग्य जघन्य वर्गणा जाणवी. पढी ते थकी एकेक प्रदेशें वधता वधता स्कंधनी एवी यावत् जघन्य तैजस शरीर वर्गणाने अनंतजागें जे अनंता परमाणु तेणे करी अधिकी एवी उत्कृष्ट तैजस शरीरने ग्रहण योग्य वर्गणा अनंती जाणवी.

८ ते तैजस शरीर ग्रहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणाना स्कंधथी एक प्रदेशें अधिक स्कंध ते तैजसनी अपेक्षायें बहु प्रदेशिक सूक्ष्म अने जाषादलनी अपेक्षायें अल्प प्रदेशिक बादर होय, तेथी ए बेहु शरीरने काम न आवे, माटें ग्रहण करवाने अयोग्य एवी जघन्य वर्गणा जाणवी. एम एकेक प्रदेश वधता स्कंधनी अजव्यथी अनंतगुणी अने सिद्धना अनंतमा जाग प्रमाण एटली वर्गणा अग्रहण योग्य होय. (१०) ते उत्कृष्ट अग्रहणयोग्य वर्गणाथकी एक प्रदेशें अधिक स्कंध ते जाषाना दलने काम आवे, ते जणी ते जघन्य जाषा ग्रहण योग्यवर्गणा होय, ते थकी वली एकादिक प्रदेशें वधती वधती यावत् जघन्यजाषा वर्गणाने अनंतमे जागें जे अनंता परमाणु, तिहां जगें वधता स्कंधनी एवी अनंती वर्गणा जाषाने ग्रहणयोग्य होय.

११ ते जाषाने ग्रहणयोग्य उत्कृष्ट वर्गणाथी एकादिक प्रदेशें वधता वधता यावत् अजव्यथी अनंतगुण प्रदेश पर्यंत वधतानी अनंती वर्गणा ते सर्व जाषा शरीरनी अपेक्षायें बहुप्रदेशिक सूक्ष्म अने श्वासोद्वासनी अपेक्षायें बादर

अल्पप्रदेशिक स्कंध. ते जणी ते वर्गणा ए बेहु शरीरने अग्रहण योग्य एवी वर्गणा अनंती जाणवी. (१२) वली ते थकी एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा, तेणे करी श्वासोद्वास नीप,जेतेथी तेवा स्कंधनो समुदाय, ते श्वासोद्वास ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा जाणवी. ए थकी एकादिक प्रदेशें वधता वधता यावत् जघन्य वर्गणाना अनंतमा जागमां जेटला प्रदेश तत्प्रमाण तेटला प्रदेशें वधती जे वर्गणा ते श्वासोद्वास ग्रहणयोग्य उत्कृष्टी वर्गणा जाणवी.

१३ ते थकी एक प्रदेशें अधिक स्कंधनी अग्रहण योग्य वर्गणा पूर्वली पेरें श्वासोद्वासने तथा मनने पण अग्रहण योग्य, तेवी एकादिक प्रदेशें वधती वधती यावत् अजव्यथी अनंतगुणी वर्गणा अग्रहण योग्य जाणवी. (१४) ए रीतें वली ते वर्गणाथकी एकादिक प्रदेशें वधता स्कंध तेणे करी ड्व्य, मन, नीपजे, ते जणी ते जघन्य मनोड्व्यग्रहण योग्यवर्गणा जाणवी. तेथी एकादिक प्रदेशें वधता वधता स्कंध ते यावत् निज जघन्य वर्गणा स्कंधने अनंतमे जागें जे प्रदेश होय, तेटले प्रदेशें वधती उत्कृष्टी मनोग्रहण प्रायोग्य वर्गणा होय.

१५ ते थकी एक प्रदेशाधिक पुजल स्कंधनी वर्गणा ते मनोड्व्यनी अपेक्षायें बहु प्रदेशिक सूक्ष्म जाणवी, अने कर्मदलनी अपेक्षायें अल्पप्रदेशिक बादर जाणवी. ते जणी बेहु शरीरने अग्रहणयोग्य एवी अजव्यथी अनंतगुणी वर्गणाजाणवी. (१६) वली ते थकी एक प्रदेशें वधता पुजलस्कंधनी वर्गणा ते कर्मदल ग्रहणयोग्य होय, ते जणी ते कर्म प्रायोग्य जघन्य वर्गणा जाणवी ते थकी वली एकादिक प्रदेशें वधता वधता यावत् आपणी जघन्य वर्गणाना अनंतमा जाग प्रदेश प्रमाण प्रदेशें वधती ते उत्कृष्टी कर्म ग्रहण योग्य पुजलनी वर्गणा जाणवी. तेणे करी कर्मदलें कर्म प्रकृति बंधाय. एक कर्मनी जघन्य अने उत्कृष्टनी वचालें अनंती वर्गणा होय, तेवा दलें करी कर्मप्रकृति बंधाय, ते जणी ए कर्म ग्रहण योग्य वर्गणा कहीयें. ए शोलमी वर्गणा थइ. ए स्वमते कहुं, तथा बृहत्तक वृत्तिमध्यें अग्रहण योग्य वर्गणा नथी कही, तेने मते तो आठज वर्गणा कही ठे,

एहवी वर्गणा ते जीवने ग्रहवा योग्य पुजल होय, जीवाश्रित होय, तेथी उ पचारें एने सचित्तवर्गणा कहीयें. अने ए थकी एकादिक प्रदेशें अधिक पुजलस्कंध जे जीवने ग्रहण योग्य नहीं, तेथी तेने अचित्त वर्गणा कहीयें. ते अचित्त वर्गणा पण सर्व जीवथी अनंत गुणी ठे. ए वर्गणाजुं स्वरूप मूढमतिने समजाववा अने चित्तमां आणवाने अर्थें बिंडु कल्पनायें करी देखाडणुं ठे. जेम एकादिकथी मां

मी दश पर्यंत परमाणु निष्पन्न अग्रहण योग्य वर्गणा जाणवी. ते थकी अग्नी आर, वार अने तेर, परमाणु निष्पन्न ते औदारिक ग्रहणयोग्य वर्गणा जाणवी. तेथकी वली चौद,पंदर, शोल, सत्तर, अठार, उंगणीश अने वीश. विंडुरूप अग्रहणयोग्य वर्गणा जाणवी. ते पठी एकवीश, बावीश अने त्रेवीश, विंडुरूप वर्गणा, ते वैक्रिय शरीरने ग्रहणयोग्य वर्गणा जाणवी. एम आठ वर्गणा ग्रहण योग्य जाणवी अने आंतरे आंतरे आठ वर्गणा अग्रहण योग्य ठे, बेहु मलीने शोल वर्गणा थड. ए शोल वर्गणा सचित्त जाणवी. जे जणी एमां आठ वर्गणाना पुजल जीवने ग्रहण योग्य होय, तेथी ते उपचारें जीवाश्रित कहेवाय तेमाटें एने सचित्त कहीयें अने अंतरालनी आठ वर्गणाना पुजल जीवने अग्रहणयोग्य ठे, तो पण ते वर्गणा ग्रहणयोग्य वर्गणाने आंतरे ठे, ते जणी एने सचित्त वर्गणाज कहीयें.

१ ए पूर्वोक्त उत्कृष्ट कर्मवर्गणा थकी एकादिक प्रदेशें वधता वधता स्कंधनी सर्व जीवथी अनंती वर्गणा, ते निरंतर पणे सदाकाल पामीयें. पण तेह्वा स्कंधनी वर्गणा जीवने ग्रहवा योग्य न होय, ते जणी तेने ध्रुवाचित्त जघन्य वर्गणा कहीयें. ते जघन्य वर्गणाथकी उत्कृष्ट वर्गणाना प्रदेश अनंत गुणा होय तेने उत्कृष्ट ध्रुवाचित्त वर्गणा कहीयें. (१) ते थकी वली एकादिक प्रदेशें अधिक स्कंधनी वर्गणा अनंती सर्व जीव थकी अनंत गुणी. एवा पुजल स्कंध, केवारेंक निरंतर पणे होय अने केवारेंक सांतर पणे पण होय, ते जणी अध्रुवाचित्त वर्गणा कहीयें. (३) ते थकी एकादिक प्रदेशें वधता पुजल स्कंधनी वर्गणा न पामीयें, पण आगली वर्गणा स्कंधनुं महत्वपणुं देखाडवाने अर्थे प्ररूपीयें, तेवी पण अनंती शून्य वर्गणा होय. ते जघन्य वर्गणाना प्रदेशाने क्षेत्र पत्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण प्रदेशनी राशियें करी गुणाकार करीयें, तेवारें उत्कृष्ट वर्गणा होय. (४) तेथकी एक प्रदेशाधिकस्कंध, ते साधारण नहीं पण प्रत्येक जीवना औदारिकादिक पांच शरीरना प्रदेश, ते माहेलो एक प्रदेश सर्व जीवथी अनंतगुणे विश्रसा परिणत सूक्ष्मपुजल स्कंध आश्रित ते स्कंधनुं नाम, प्रत्येक वर्गणा कहीयें. तेपण जघन्य वर्गणा थकी उत्कृष्ट वर्गणा क्षेत्र पत्योपमना असंख्यातमा जागरूप असंख्याता प्रदेशें गुणाकार करतां घाय, ते पण अनंती वर्गणा जाणवी. (५) तेथकी वली अनंती शून्य वर्गणा प्रदेशोत्तर कल्पियें, तेपण जघन्य वर्गणा थकी मांमीने उत्कृष्टवर्गणा पर्यंत अनंती वर्गणा जाणवी. (६) तेथकी वली एकादिक प्रदेशें वधता पुजलनी वर्गणा ते बादर निगोदीआ जीवना त्रण शरीर प्रदेशाने आश्रित अनंता पुजलस्कंध विश्रसा होय तेनी पण एकादिक प्रदे

शै वधती अनंती वर्गणा जाणवी. ते पण जघन्य वर्गणा थकी उत्कृष्टी वर्गणा प्रदेशसंख्यायें असंख्यात गुणी होय. (७) ते थकी वली असत्कल्पनायें अनंती शून्य वर्गणा पूर्वलीपेरें जाणवी. (८) तेथकी प्रदेशाधिक स्कंधनी वर्गणा ते सूक्ष्म निगोद शरीर प्रदेशाश्रित अनंत पुंजलस्कंध विश्रसा परिणत तेनी अनंती वर्गणा जाणवी, ते पण जघन्य वर्गणाथकी आवलीना असंख्यातमा जाग प्रमाण समयनी राशियें जघन्य वर्गणाने गुणतां उत्कृष्टी वर्गणा थाय. (९) ते थकी वली एकादिक प्रदेशें वधती एवी असत्कल्पनायें अनंती शून्य वर्गणा होय. (१०) तेथकी वली प्रदेशाधिक मिश्रस्कंध जेनुं सूक्ष्मपणा थकी वादर पणुं पामवाने अनिमुख ते मिश्रस्कंधनी वर्गणा अनंती जाणवी. (११) तेथकी अचित्त महास्कंध जे पर्वत कूटादिकने विश्रसा परिणामें आश्रित अनंत प्रदेशात्मक पुंजलस्कंध जे विश्रसा परिणामें १ मंठ, २ कपाट, ३ मंथ, अंतर पूर्णादिक करतो केवल समुद्धातनी पेरें आठ समयनो अजीव समुद्धात होय. तिहां चोथे समयें सर्वलोक प्रमाण स्कंध होय, अजितादिक जिनने वारें त्रस जीव घणा होय, तेवारें ते स्कंध थोडा होय अने जेवारें त्रस जीव थोडा होय तेवारें ते स्कंध घणा होय. ए लोकस्थिति तेनी वर्गणा पण अनंती जाणवी. (१२) एथी पण अधिक प्रदेशस्कंध श्री पन्नवणामध्ये कह्या ठे ए अष्टावीश वर्गणा कम्मपयडीने अनुसारें वखाणी, परंतु अर्धांयां कर्मवर्गणा कहेवानो अवसर ठे. अने बीजी औदारिक वर्गणा कर्मदलनी प्रदेश संख्या तथा सूक्ष्मावगाह क्षेत्र जाणवाने अर्थे उपोद्धातसंगतें कही देखाडी तथा आगली बीजी वर्गणाउ प्रसंग संगतें कही देखाडी. तिहां औदारिक वर्गणा अनुक्रमें एकथी बीजा प्रदेशें वधती वधती जाय अने अवगाहनायें हीन हीन थती जाय, औदारिक वर्गणाने अवगाहनानुं क्षेत्र अंगुलनो असंख्यातमो नाग जाणवो. ते थकी वली अग्रहण योग्य वर्गणानुं क्षेत्र, असंख्यांश हीन जाणवुं. तेथकी वली वैक्रिय वर्गणा क्षेत्र असंख्यांश हीन जाणवुं. एम सघले असंख्यांश हीन अवगाहनाक्षेत्र थतुं जाय. हवे गाथानो अक्षरार्थ लखीयें ठैयें.

(इगडगणुगाइ के०) एक, द्विक, अणुकादिक, अर्हीं अणुशब्दने प्रत्येकें संबध ठे. अणु एटले परमाणु जाणवो. तिहां एकाणुकादिक, द्व्यणुकादिक. एटले एक आद्यमां ठे, तिहां एकाणुकादिक कहेवुं. बे आद्यमां ठे, माटें द्व्यणुकादिक कहेवुं. अर्थात् एक परमाणुनी द्वि परमाणुनी वर्गणा आदि शब्दथकी त्रण परमाणुनी, चार परमाणुनी, पांच परमाणुनी, एम वधतां वधतां (जा के०) यावत्

क्यां सुधी कहेवुं, ते कहे ठे. (अनवपंतगुणिआणूखंधा के०) अनव्यथी अनंत गुणा परमाणुयें वधती उपलक्षणथकी सिद्धना जीवने अनंतमे जागें परमाणुयें वधता स्कंधनी (वग्गणाउ के०) वर्गणा ते प्रथम (उरल के०) औदारिक शरीरने ग्रहण करवाने (उचिअ के०) उचित एटले योग्य होय. एवी अनंती वर्गणा जाणवी. (तह के०) तेथकी एकादि परमाणुयें वधती एवी अनंती वर्गणा ते (अग्रहणंतरिया के०) औदारिक शरीरने, अग्रहण प्रायोग्य होय, अग्रहणां तरिता एटले अग्रहण वर्गणा वर्गणांतरित होय ॥ इत्यहरार्थः ॥ ७५ ॥

एमेव विउवाहा, र तेअ जासाणु पाण मण कम्मे ॥

सुढुमा कमावगाहो, ऊणूणंगुल असंखंसो ॥ ७६ ॥

अर्थ—(एमेव के०) एणी पेरें बीजी (विउव के०) वैक्रिय शरीरने ग्रहण योग्य वर्गणा, त्रीजी (आहार के०) आहारक ग्रहणयोग्य वर्गणा, चोथी (ते अ के०) तैजसग्रहण योग्य वर्गणा, पांचमी (जासाणुपाण के०) जाषा प्रायोग्य वर्गणा, षष्ठी श्वासोत्वास ग्रहणयोग्य वर्गणा, सातमी (मण के०) मनोग्रहणयोग्य वर्गणा, आठमी (कम्मे के०) कार्मण ग्रहणयोग्य वर्गणा, ए आठ वर्गणा जाणवी. ए आठे वर्गणानुं (कमावगाहो के०) अनुक्रमे अवकाश क्षेत्र ते एकेक थकी (सुढुमा के०) सूक्ष्म, सूक्ष्म होय एटले हीन हीन होय. एटले औदारिक ग्रहणयोग्य वर्गणाना अवगाहनाक्षेत्रथकी, औदारिक अग्रहणयोग्य, वर्गणानुं अवगाहना क्षेत्र, सूक्ष्म ते थकी वली वैक्रियग्रहणयोग्य वर्गणानुं अवगाहना क्षेत्र सूक्ष्म एम सर्व वर्गणानुं अवगाहनाक्षेत्र, अनुक्रमें एकेकथकी (ऊणूण के०) ऊणुं ऊणुं होय,

अने (अंगुलअसंखंसो के०) ए आठेनुं अवगाहना क्षेत्र, अंगुलने असंख्या तमे जागें होय, अने अनुक्रमें एकेकथी एकेकनी अवगाहना ऊणी ऊणी एटले न्हानी न्हानी होय. केम के पुजल इव्यने विषे जेम घणा पुजल परिमाणुनो स सुझाय मले, तेम सूक्ष्म परिणाम थाय. ते माटें औदारिक ग्रहणयोग्य वर्गणानो अवगाहनाक्षेत्र अंगुलने असंख्यातमे जागें होय, ते थकी तेनी अग्रहणयोग्य वर्गणानी अवगाहना न्हानी होय, ते थकी वली वैक्रियग्रहणयोग्य अवगाहना न्हानी होय. एम अनुक्रमें सर्व वर्गणानी अवगाहना, एकेकथकी न्हानी कहेवी. अने ते वर्गणाना परमाणु, एकेक थकी अधिक होय ॥ इत्यहरार्थः ॥ ७६ ॥

इकिक्र हिद्या सिद्धा, एतंसो अंतरेसु अग्रहणा ॥

सबड जहनुचिया, नियणंतसाहिद्या जिद्धा ॥ ७७ ॥

अर्थ—(इकिक्रहिद्या के०) एकेक परमाणुयें अधिक अग्रहण योग्य वर्गणा होय ते केटली होय? तोके (सिद्धाणंतसो के०) सिद्धोनो अनंतो अंश एटले सिद्धना अनंतमा जाग प्रमाण ग्रहणयोग्य वर्गणाने (अंतरेसु के०) अंतरे (अग्रहणा के०) अग्रहणयोग्यवर्गणा अनंती होय तथा (सबडजहनुचिया के०) सबले तामें ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा थकी (निय के०) स्वकीय जघन्य वर्गणाना (अणंतसा के०) अनंतांश एटले अनंतमे जागें (अहिद्या के०) अधिक (जिद्धा के०) ज्येष्ट एटले उत्कृष्ट ग्रहणयोग्यवर्गणा होय ॥ इत्युद्धारार्थः ॥७७॥

एक परमाणुयी मांझीने एकेक परमाणुयें वधते स्कंधें वर्गणा अनंती होय तिहां प्रथम अग्रहण योग्य जघन्य वर्गणाथकी अग्रहण योग्य उत्कृष्टी वर्गणा अनंतगुणी होय, जे जणी जघन्य अग्रहण योग्य वर्गणा एक परमाणुनी ठे, ते थी उत्कृष्ट अग्रहण योग्य वर्गणा सिद्धना जीवने अनंतमे जागें अने उपलक्षण थी अजव्यानंतगुण निष्पन्न स्कंधनी वर्गणा होय, ते जणी प्रदेशें अनंतगुणी होय. ते थकी वली औदारिक ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणा स्कंध रूपाधिक होय ते थकी औदारिक ग्रहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणास्कंध अनंतजागाधिक जाणवी. तेथ की वली ते औदारिक अने वैक्रिय वर्गणाना अंतरने विषे अग्रहणयोग्य जघन्य वर्गणास्कंध रूपाधिक होय तेथकी वली अग्रहण योग्य उत्कृष्ट वर्गणा स्कंध विशेषाधिक जाणवा. जे जणी एनी जघन्य वर्गणा स्कंध सिद्धानंतजागाधिक अजव्यानंत गुण परमाणुआ मात्र ठे. तेमांहे वली अजव्यानंत गुण सिद्धानंतजाग मात्र परमाणुआ जेलीयें, तेवारें अनंतजाग न्यूनथी घणा परमाणुआ थाय माटें अनंतजागाधिक कही. तेथकी रूपाधिक वैक्रिय ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणास्कंध प्रदेश जाणवा. तेथकी वैक्रिय ग्रहण योग्य वर्गणाना उत्कृष्टस्कंध प्रदेश अनंतजागाधिक जाणवा. एम कर्मण वर्गणा पर्यंत समस्त ग्रहण योग्य वर्गणार्थें पोताना जघन्य वर्गणास्कंधथकी पोत पोताना उत्कृष्ट वर्गणा स्कंध अनंतजागाधिक लेवा अने अग्रहणयोग्य जघन्य वर्गणास्कंधथकी उत्कृष्ट वर्गणास्कंध विशेषाधिक लेवा.

तथा ध्रुवाचित्तवर्गणार्थें जघन्य वर्गणास्कंधथी उत्कृष्ट वर्गणास्कंध, अनंत गुणा लेवा तथा एनी शून्यवर्गणाथकी आगली वर्गणार्थें पोत पोतानी जघन्य व

गीणा स्कंधयो उत्कृष्ट वर्गणास्कंध प्रदेश संख्यायें असंख्यातगुणा जेवा. अने सर्व वर्गणाने अवगाह क्षेत्रनी अपेक्षायें औदारिक वर्गणास्कंधना अवगाह क्षेत्र यकी असंख्यांश हीन वैक्रिय वर्गणानुं अवगाहना क्षेत्र जाणवुं. तेथकी आहारक वर्गणानुं अवगाहक्षेत्र असंख्यांश हीन जाणवुं. एम आगली सर्व वर्गणायें असंख्यांश हीन हीन अवगाहनाक्षेत्र होय. पुजल इव्यनो एहज स्वनाव ठे. के जे म जेम प्रदेश वधता जाय. तेम तेम सूक्ष्म थाय, जेम कपासना थोडा प्रदेश ते म घणुं ठाम रोके अने पाराना घणा दलिक होय ते थोडुं ठाम रोके, तथा पाली मध्ये तुराना कण थोडा समाय अने राइना कण घणा समाय. एम ढवीश तथा अष्टावीश, पुजलस्कंधनी वर्गणा कही. तेमध्ये शोल वर्गणा ग्रंथकारें कही ठे. माटे सूत्रोक्त जे जणी अहीआं ते मांहेली एक कर्मवर्गणा दल कहेवानो प्रदेश बंधाधिकारें प्रयोजन ठे. तेनी प्रदेश संख्या जाणवाने अर्थे शेष पूर्वोक्त पंदर वर्गणा कही ॥७॥

अथ यादृशं कर्मदलिकं जीवोगृह्णाति तदाह ॥ हवे जेवा कर्मदलिक जीव ग्रहण करे ठे, ते कहे ठे.

अंतिम चउ फास डुगं, ध पंच वन्नरस कम्म खंध दलं ॥

सब जियणंत गुण रस, अणुजुत्त मणंतय पएसं ॥ ७८ ॥

अर्थ- कर्मदल ते अगुरुलघु इव्य ठे, ते जणी अरूपी इव्य तथा पांच वर्ण, वे गंध, पांच रस अने चार स्पर्श, एम शोल गुणवंत पुजल ते पण अगुरुलघु कहीयें. हवे अहीआं कोइ केशे के कर्मदल मूर्त्तिमंत ठे अने जीवतो अरूपी ठे, तो ते जीवने कर्मदलनो करेलो अनुग्रह, उपघात, केम होय? तेनो उत्तर कहे ठे के, जेम मूर्त्तिमंत मदिरापान ठे. तेणे करी अमूर्त्तिमंत ज्ञाननो उपघात थाय ठे. तथा मूर्त्तिमंत सारस्वत चूर्णादिकें करी अमूर्त्तिवंत ज्ञाननो गुण प्राप्त थाय ठे. तथा अमूर्त्त क्रियानो मूर्त्त इव्य साथें संबंध थाय ठे. तथा घटादिक मूर्त्तिमंत इव्यनो अमूर्त्त इव्य जे आकाशादिक तेनी साथें संबंध थाय ठे तेम अगुरुलघु पुजल इव्य कर्मदलनो अगुरुलघु आत्मइव्य साथें संबंध होय ठे तथा तेणे करी आत्मइव्यना ज्ञानादिक गुणने उपघात थाय ठे तथा जिनना म कर्मादिकें करी पूजा महत्त्व ऐश्वर्यादिक अनुग्रह पण होय ठे ते जणी कर्मने अगुरुलघुइव्य थापवा निमित्तें वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनी संख्या कहे ठे. तिहां औदारिक वर्गणा, वैक्रियवर्गणा, आहारकवर्गणा, ए त्रण वर्गणाना पुजलस्कं

ध पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्शी, ए वीश गुणवंत होय तेथी ते गुरुलघु इव्य कह्यें तथा तैजसदल पण सिद्धांतने मते वीश गुणवंत होय तेथी ते पण गुरुलघु इव्य कह्यें. अने नापाइव्य, श्वासोन्नासइव्य, मनोइव्य अने कर्मवर्गणाइव्य, ए चार वर्गणाना दल शोल गुणवंत होय तेथी एने अगुरु लघुइव्य कह्यें, ते शोल गुण, गाथाना अर्थे करी विवरीने केहीयें ठैयें. "फासा गुरुलघुमिड्ड खरा लीउसहसिणि-६" ए गाथाने अनुसारे.

(अंतिमचउफास के०) ठहेला चार स्पर्शी तेनां नाम कहे ठे. एक शीत, बी जो उष्ण, त्रीजो रूह अने चोथो स्निग्ध, ए चार स्पर्शी अगुरुलघु इव्ये होय. जे नणी एक परमाणुयें एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने बे स्पर्शी. एवं पांच गुण होय केमके रूह अने स्निग्ध परमाणुयें परस्परें बंध होय, तेथी सर्व परमाणुयें ए बे मांहेलो एक स्पर्शी, अवश्य होय तथा शीत अने उष्ण ए बे मांहेलो पण एक स्पर्शी होय. एम बे स्पर्शी, एक परमाणुयें अवश्य होय अने अनंत प्रदेशो ए सूक्ष्म परिणत स्कंधे कोइ परमाणु स्निग्ध शीत, कोइ स्निग्ध उष्ण, कोइ रूह शीत अने कोइ रूह उष्ण, एम चार जातिना परमाणुआ मली आवे, तेवारे नापाइव्य, श्वासोन्नासइव्य, मनोइव्य अने कर्मणदल, ए चारे दले ए चार स्पर्शी लाजे. ए स्वमते कथुं. तथा कम्मपयडीने मते पण एज चार स्पर्शी कहा अने बृहत्तकने मते तो ए चारे वर्गणास्कंधने विपे मृड्ड तथा लघु स्पर्शी अवश्य होय अने रूह तथा स्निग्ध मांहेलो एक स्पर्शी होय, तथा शीत अने उष्ण, ए बे मांहेलो पण एक स्पर्शी होय. एवं चार स्पर्शी होय अने ए सूक्ष्मइव्य नणी गुरु तथा कर्कश ए बे स्पर्शी न होय.

तथा (डुगंध के०) एक सुगंध बीजो डुर्गंध ए बे गंध अने (पंचवन्नरस के०) कृष्ण, नील, रक्त, पीत, अने शुक्ल, ए पांच वर्ण तथा तीखो, कटुक, कषायल, आम्ल अने मधुर, ए पांच रस. एवं शोल गुण सहित (कम्मखंधदलं के०) कर्मणस्कंधनुं दल पुज्जल होय. तेमज तैजस, जाषा, श्वासोन्नास अने मनोइव्य, ए चार वर्गणाना स्कंध पण शोल गुणवाला होय, तथा औदारिक, वैक्रिय अने आहारक, ए त्रण शरीर इव्य ए नोकर्म पुज्जलइव्य, पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्शी एम वीश गुणवंत पुज्जलइव्य होय, तथा सिद्धांतने मते तैजस इव्य पण वीश गुणवंत होय, तेथी एने गुरुलघु इव्य कह्यें,

(सबजियणंतगुणरसअणु के०) अर्ही सर्व जीव जे अनंते ठे. तेणे करी गुण्या जे

रसाणु एटले केवलीनी बुद्धिरूप शब्दें करी कल्प्या जे रसना निरंश अंश, ते जा वाणु कहीयें. अर्हीआं रसाणु कहेतां जीवने कापायिक अध्यवसाय जनित आ नंद विपाद हेतु शुचाशुच कर्मनो विपाक इष्ट अनिष्टपणो करी मिष्ट अने कटुक रस एवो व्यवहार करीयें. ते रस जाणवो. पण अर्हीआं पांच रस माहेला कोऽ रसनी विवक्षा न करवी. अर्हीआं ए जाव रस लेवा, एवा सर्व जीवथी अनंत गु णा रसाविनागें युक्त जे जीव कर्मना दल ग्रहतो जेम गाय, तृणखलां चरती थ की तृणादिकने विषे झुधादिक मिष्ट रस उपजावती ग्रहण करे. तथा सर्प, झुधा दिकतुं पान करतो थको पण दूधने विषे गरजरूप कटुकरस उपजावतो ग्रहण करे तेम कर्मदलने विषे (मणंतयपएसं के०) अनंत प्रदेशीआ स्कंध तेना प्र देश प्रदेश प्रत्ये अनंता रसाणुयें (जुक्त के०) युक्तने कर्मपणो जीव ग्रहण करे. अर्ही रस शब्दें अनुजाग कहीयें तेना अणुआ एटले अंश जाणवा एटले सर्व जीवानंत गुण रसाणुआ तेणें करी युक्त. अत्र हार्द एम ठे के सर्व जघन्यरसें यु क्त जे पुजल तेनो रस केवलीनी प्रज्ञायें बेद्यमान सर्व जीवथी अनंतगुणा रसावि नागोनें आपे ठे ते जाग अति सूक्ष्मतायें करी परजागना अजावथी निरंश अंश अणु कहीयें. रसाणुया रसाविजागा रसपलिबेदा जाव परमाणुया ए सर्व एना पर्याय जाणवा ते रसाणुया प्रतिस्कंध सर्व परमाणुने विषे सर्व जीवथी अनंत गुणा वनें ठे. एवा रसाणुयें युक्त परिगत कर्मस्कंध दलिक प्रत्ये जीव ग्रहे ठे. जेम निंब इक्षुरसादिकने अधिश्रयणें करी तंडुलोनें विषे प्रत्येकें यथा रस विज्ञोप तच डूप प्रत्ये जणो ठे तथा अनुजाग बंधाध्यवसायें करी सर्व र्वंमोनें विषे अजब्यानें तगुण प्रदेश निष्पन्नने विषे प्रति परमाणुयें सर्व जीवथी अनंतगुण रसाविजाग पलिबेदो प्रत्ये जीव जणो ठे तथा अणंतपएसंति एटले अजब्यानंतगुण सिद्ध अ नंत जाग प्रमाण परमाणु निष्पन्न एकेक कर्मस्कंध प्रत्ये जीव ग्रहे ठे तेवा स्कं ध पण प्रति समयें अजब्यथी अनंतगुणा सिद्धानंत जाग वार्ति प्रत्ये ग्रहे ठे ॥९८॥ हवे कर्मदलतुं अवगाहना क्षेत्र कहे ठे.

एग पएसा गाढं, निअ सव पएसउ गहेइ जिउ ॥

थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो आहउ ॥ ९९ ॥

अर्थ—(एगपएसागाढं के०) एक एटले अनिन्न पणो जे आकाश प्रदेश जीवें, अवगाह्यो ठे. तेहीज आकाश प्रदेशें अवगाह्यां जे कर्मदल, तेने एक प्रदेशावगा

ठ कहियें, पण एकज आकाश प्रदेशों अवगाह्यां एम अर्थ न करवो, जे जणी कर्मस्कंध पण असंख्यात प्रदेशावगाढ अंगुल असंख्यांश प्रमाण क्षेत्र अवगाढ लीये ठे. पण एक प्रदेशावगाढ दल न लीये, तेम जे आकाश प्रदेशने विषे जीव अवगाढ ठे ते आकाश प्रदेशने विषे कर्म पुज्जइव्य अवगाढ ठे ते रागादिक स्नेह गुणयोगथी आत्मप्रदेशने विषे लागे ठे पण अनंतर परंपर प्रदेशस्थ कर्म पुज्जइव्यने गृह्यमाण नथी. ह्वेजेम तीव्र अग्निने संयोगें पाणी उकालीयें तेवारें तला जुं पाणी उपर आवे अने उपरजुं पाणी तलीये जाय, तेम रागादिक स्नेह गुण योगें करी आत्माना असंख्याता प्रदेश एटजे आठ मथ्य प्रदेश विना बीजा सर्व प्रदेश ए पूर्वोक्त पाणीनी रीतें आवर्त्त लीये तिहां आत्म प्रदेशों काषायिक अर्ध्य वसाय रूप चीकणता ठे. ते चीकणतार्यें करी कर्मरूप रज सहित क्षेत्रने विषेज आवर्त्त करतां जेम चीकणें शरीरें लोटतां शरीरने विषे रज वलगी जाय बंधाइ जाय, तेम (निअसवपएसउगहेइजिउ के०) पोताना आत्माना सर्व प्रदेश ते अनंतानंत कर्मदलें बंधाय पण एक प्रदेशों अथवा बे प्रदेशों करी ग्रहे बंधाय न हीं केमके, जीव प्रदेश सर्वने शृंखलावयवनी पैठें परस्पर संबंध विशेषनो जाव ठे माटें आत्मानो एक प्रदेश कर्मदल ग्रहण करवाने व्यापारतां सर्व प्रदेश व्यापारे. जेम हस्तादिकें करी घटादिक उपाडतां सर्व शरीरें जोर पहाँचे जेम कोइए क वस्तु लेवाने अर्थे अंगुलि प्रवर्त्त तेवारें करतल, मणिबंध, जुजा, खनो, ए सर्व परंपरायें बल करे पण एटलो विशेष के जे अवयव, कार्यने ठुकडा होय ते अवयवोने विषे घणुं जोर पहाँचे, अने जे अवयव कार्यने वेगला वेगला होय, तेने जोर हीन हीनतर पहाँचे, तेम कर्म दल ग्रहतां आत्म प्रदेशने विषे पण हीनाधिक वीर्य जाणवुं.

ह्वे ए आठ कर्मना दलनी नागविजजना कहे ठे. जेवारें जीव आयुःकर्म बांधे, तेवारें अंतरमुहूर्त्त पर्यंत समय समय जे कर्मदल ग्रहण करे, तेना आठ जाग करी आठ कर्मने वहेंची दीये, अने जेवारें आयुःकर्म न बांधे तेवारें जे कर्मदल ग्रहण करे, ते आयु विना शेष सात कर्म बांधतो होय, तेने वहेंची आपे अने जेवारें दशमे गुणठापो एक आयु अने बीजुं मोहनीय, ए बे कर्म न बांधे, अने शेष ठ कर्म बांधतो होय, तेवारें ठ जागें वहेंची आपे अने जेवारें जीव एकज कर्मनो बंधक होय तेवारें तेने जाग पण एकज होय.

तेमर्थे (थोवोआवतदंसो के०) आयुःकर्मना जागनो अंश थोडो जाणवो.

जे जणी बीजा कर्मनी अपेक्षायें आयुःकर्मनी स्थिति थोडी ठे. तेथी तेनां दल पण थोडां होय, थोडे कालें जागवी खपावे. ते माटें. अने तेथकी वली (नामे गोएलमोअहिउं के०) नामकर्म अने गोत्रकर्म. ए वे कर्मनां जाग विज्ञेपाधिक जाणवो. जो पण आयुःकर्मनी तेत्रीश भागरोपम स्थिति थकी नाम अने गोत्र. ए वे कर्मनी स्थिति वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण ठे ते आयुःकर्मनी स्थिति थकी संख्यातगुणी ठे ते अपेक्षायें संख्यातगुणो जाग लाजे ठे तथा मनुष्य तिर्थेचना जय न्य अंतरमुहूर्त्तदिकायुनी अपेक्षायें अ संख्यातगुणां जाग लाजे ठे, पण आयुःकर्म आखा जव मध्ये एकज वार वंथाय, ते अंतर मुहूर्त्त पर्यंत वांधे अने बीजा कर्म तो जीव सर्वदा निरंतर पणे वांधे ठे. ते माटें थोडा कालमां आयुनां दल घणा मे लववां पडे, ते कारणथी नाम अने गोत्रकर्मनां जाग विज्ञेपाधिक कह्यो अने ए वेदुनो जाग, परस्पर तुल्य स्थिति जणी समां एटले सरखें जाणवो ॥ इति ॥ १९॥

विग्धावरणे मोहे, सर्वोवरि वेअणोइ जेणप्ये ॥

तरस फुडतं न हवइ, ठिई विसेसेण सेसाणं ॥ ८० ॥

अर्थ- नामकर्म अने गोत्रकर्मना दलथकी (विग्ध के०) अंतराय कर्म. अने (आवरणे के०) ज्ञानावरणीयकर्म अने दर्शनावरणीय कर्म, ए त्रण कर्मनी उत्कृष्टी स्थिति त्रीश कोडाकोडी सागरापमनी ठे. ते जणी वीश कोडाकोडी थकी विज्ञेपाधिक होय, माटें ए त्रणनां जाग, विज्ञेपाधिक जाणवो अने ए त्रणनं मांहे मांहे तुल्यस्थिति जणी तुल्य जाग एटले सरखे जागें आवे तथा ए त्रण कर्मथकी वली (मांहे के०) मोहनीय कर्मनां जाग विज्ञेपाधिक जाणवो. जे जणी मोहनीयनी स्थिति त्रीश कोडाकोडी सागरापमथी वमणी जाजेरी ठे अने त्रिगुणीथी हीन ठे माटें संख्यातगुणी कहीयें. ए मध्ये पण दर्शनमोहनीयनी सतिर कोडाकोडीनी स्थितिठे अने चारित्रमोहनीयनी चालीश कोडाकोडी सागरापमनी स्थिति ठे, तेणे स्थिति विज्ञेपें करी दलजागनुं पण विशेषाधिकपणुं लेवुं. ए उक्तमात्रठे परमार्थथीतो श्रीजिनवचन प्रमाण करवुं तथा एक समय एक अथ्यवसायें ग्रहीत पुज्जल आते कर्म पणे परिणमे ठे अर्हो जीवनी शक्ति अचिंत्यठे अने पुज्जलनां परिणाम विचित्र ठे ते माटें एमां आश्चर्य न समजवुं.

(सर्वोवरिवेअणीइ के०) सर्वोपरि सर्व थकी अधिक वेदनीयकर्मनां जाग होय, एटले मोहनीयना जागथकी पण वेदनीय कर्मनां जाग विज्ञेपाधिक होय, जे

जणी जो पण मोहनीयनी स्थितिकी ए कर्मनी स्थिति विज्ञेप हीन ठे, तो पण मोहनीयना दल उत्कृष्टरसें ठे, अने वेदनीयना दलनो रस अघातीठ ठे. ते जणी मंदरस होय, जेम घेंश. राव प्रसुखनो रस इव्य घणो होय, तोज कुधा उपशमे अने दूध. दहीं, शिखरणी. खाम तथा घृतादिक अल्पइव्यें पण कुधा उ पशमे, तथा पापाणादिक घणे इव्य संबंधे मरण नीपजे, अने विषादिक अल्प इ व्य संबंधें पण मरणादिक कार्य नीपजे तेम मोहनीयादिक कर्मना तीव्र रस दल ठे ते थोडा होय, तो पण पोतानुं कार्य आत्मगुण घातवा रूप करे, अने वे दनीयकर्मनां दल मंदरस जणी घणां मले, तोज ते पोतानुं कार्य पौत्रलिक सु ख इखानुजव रूप प्रकट करी शके पण थोडे दलें स्वकार्य प्रगट करी न शके.

(जेणुपे के०) जेमाटें वेदनीयनो जाग अल्प होय तो (तस्सफुडतंनहवइ के०) ते वेदनीयनुं स्फूटपणुं एटले सुख इःखादिकनो अनुजव स्पष्ट न हो य. ए स्वजावेंज वेदनीयना पुज्ज घणा मले, तेवारें स्वकार्य करवाने समर्थ थाय पण थोडे दलें वेदनीय प्रगट न होय. तेमाटें वेदनीयनी थोडी स्थिति उतां पण दलनो जाग महोटां जाणवो, अने (छिईविसेसेणसेसाणं के०) शेष बीजा सात कर्मना प्रदेशना जागनुं हीनाधिकपणुं स्थितिविज्ञेपें होय एटले स्थितिनी अपे ह्यायें होय, जे कर्मनी स्थिति अधिक ते कर्मनो प्रदेश जाग पण अधिक अने जे क र्मनी स्थिति हीन ते कर्मनो प्रदेश जाग पण हीन होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८० ॥
एम मूलप्रकृति जाग रचना कही. हवे उत्तर प्रकृतिनेविषे जाग रचना कहे ठे.

निअ जाइ लक्ष दलिआ, एतंसो होइ सवघाईणं ॥

बवंतीण विज्जइ, सेसं सेसाण पइ समर्थं ॥ ८१ ॥

अर्थ—तिहां घातिनी प्रकृति मध्यें (निअजाइ के०) पोतपोतानी जातिनी प्र कृति मध्यें जे जाग (लक्ष के०) लाधो, ते (दलिअ के०) दलमाहेलो रसद लनो (अणंतसोहोइसवघाईणं के०) अनंतमो जाग सर्वघातीनी प्रकृतिने आपी अने शेष रसदल जाग जे रहे, ते ते समय (बवंतीणविज्जइ के०) बंधाती एवी जे देशघातिनी प्रकृति तेने वहेंची आपीयें, ते रीत देखाडे ठे.

प्रथम ज्ञानावरणीय कर्मनो मूलजाग लाधो, तेनो अनंतमो जाग केवलज्ञाना वरणपणे परिणमे, जे जणी कर्म दल मध्यें अत्यंत सरस स्निग्ध दल थोडा हो य, ते दल सर्व घातिनी प्रकृति लहे, अने शेष दल जे रहे, ते मतिज्ञानावरणा

दिक चार प्रकृति देशघातिनी ठे. तेने परिणमे तथा दर्शनावरणीयनो जे मूल जाग लाथो, तेनो अनंतमो जाग अत्यंत सरसदल पांच निडा तथा बहुं केवलदर्शनावरणीय, एठ प्रकृति सर्वघातिनी ठे तेने ठ जागें वहेंची आपीयें अने शेष रह्यो जे नोरस जाग, ते चक्रुदर्शनावरणादिक त्रण प्रकृति जे देशघातिनी ठे, तेनें वहेंची आपीयें. तथा शाता अशाता, ए बे प्रकृति बंध विरोधिनी ठे. ते जणी एक सम येँ एकज प्रकृति बंधाय, तेथी एने जाग वहेंचवो नथी.

तथा मोहनीयनो मूलजाग जे लाजे, तेनो अनंतमो सरस दल जाग, ते बे जागें वहेंचीयें तेमध्येँ एक दर्शन मोहनीयनेँ अने एक चारित्र मोहनीयनेँ आपीयें, वलता चारित्र मोहनीयना वली बार जाग करीयें ते बंधाता अनंतानुबंधी या चार तथा अप्रत्याख्यानीआ चार अने प्रत्याख्यानीआ चार, एवं बार प्रकृति ने वहेंची आपीयें अने शेष रह्या जे देशघातीआ रसवंत दल तेना बे जाग करी, कपाय तथा नोकषाय मोहनीयने वहेंचो आपीयें तेमध्येँ कपायनो जाग संज्वलना चारे प्रकृतिने आपीयें, अने नोकपायनो जाग एक वेद, एक युग ल, जय अने जुगुप्ता, ए पांच प्रकृतिने वहेंची आपीयें, तथा आशुःकर्म एक ज गतिआश्रयी बंधाय, तेथी एनो जाग न वहेंचाय.

नामकर्मनो मूलजाग जे आवे, ते उगणत्रीश जागें वहेंचीयें, तेनां नाम कहे ठे. १ गति, २ जाति, ३ तनुं ४ उपांग, ५ बंधन, ६ संघयण, ७ संस्थान, ८ आनु पूर्वी, १२ वर्ष चतुष्क, १३ अगुरुलघु, १४ उपघात, १५ उद्वास, १६ निर्माण, १७ जिननाम, १८ आतप, १९ शृजाशुज विहायोगति. २० त्रस दशक, अथवा स्थावरदशक, ए उगणत्रीश मध्येँ जेटली बंधाती होय, तेटले जागें वहेंचीयें, तेमध्येँ पण तनु एटले शरीर नामकर्मनी प्रकृतिना त्रण अथवा चार जाग करीयें. तिहां वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण बांधतां चार जाग करीयें तथा औदारिक, तैजस अने कार्मण अथवा वैक्रिय, तैजस अने कार्मण बांधतां त्रण त्रण जाग करीयें तथा बंधनना सात जाग तथा अगीआर जाग करीयें, तिहां मनुष्य अने तिर्यच प्रायोग्य बांधतां, औदारिकना बंधन चार. अने तैजस कार्मणना बंधन त्रण एवं सात बंधाय, तेवारें सात जागें वहेंचीयें तथा देवप्रायोग्य नामकर्मनी एकत्रीश प्रकृति बांधतां वैक्रियना बंधन चार, तथा आहारकना बंधन चार, अने तैजस कार्मणना बंधन त्रण, एवं अगीआर बंधाय तेवारें अगीआरजागें वहेंचीयें तथा वर्ष नामना पांच जाग, गंधनामना बे जाग,

रसनामना पांच जाग, स्पर्शनामना आठ जाग, एवं वीश जाग थाय अने शेष प्रकृतिना जाग अत्र कोइ थाय नहीं, जे जणी ते प्रकृतिबंध विरोधिनी ठे, एक बांधतां बीजी न बंधाय, जेम एकगति बांधतां शेष त्रण गति न बंधाय, ए मज जाति, संघयण तथा संस्थानादिक पण एकज बंधाय तथा त्रसादिक दशक बांधतां स्थावरादिक दशकनी विरोधिनी प्रकृति न बंधाय. गोत्रकर्मनो पण जा गीठ कोइ नहीं. एक समयें उंच, नीच, ए बे मांहेजुं एकज गोत्र बंधाय, तथा अंतरायकर्मनो मूलजाग जे आवे, ते तेनी उत्तर प्रकृति पांचने जागें वहेंचीयें ए म उत्तर प्रकृतिनी दलविचंजना कही.

(बवंतीणविचषड के०) जे प्रकृति बंधाती होय, ते पोत पोतानो प्रदेशदलिक जाग पामे अने बंध विहेदे तेनो जाग जे बीजी सजातीय प्रकृति बंधाती होय ते पामे अने सजातीय न बंधाती होय तो विजातीयने पण जाग आवे, जेम थीण श्रीत्रिकने बंधविहेदें तेनो जाग निडा अने प्रचलाने आवे अने निडा प्रचलाने बंधविहेदें चहुदशीनावरणादिकने आवे, तथा दर्शनावरणने बंध विहेदें तेनो जाग विजातीय प्रकृति वेदनी ठे, तेज तिहां ते गुणताणे बंधाय ठे. माटें तेनें लाजे तथा मिथ्यात्व मोहनीयने बंध विहेदें एनी सजातीय दर्शन मोहनीयनी प्रकृतिनो पण बंध नहीं, ते जणी विजातीय चारित्र मोहनीयनी प्रकृतिने एनो जाग आवे, तेमध्ये पण सरस दल सर्वघाती प्रकृतिने योग्य ठे. ते जणी सर्वघातीआ बार कषाय प्रकृतिने ए जाग दल आवे, ए उत्तर प्रकृतिजुं उत्कृष्ट पदें तथा ज घन्यपदें एकेकधी प्रदेशना अल्पबहुत्व पणानो विचार जाणवाने अर्थे नीचें यंत्र स्थापना करी ठे. एम कर्म प्रकृतिनी टीकाथकी सर्व उत्तर प्रकृतिना प्रदेशनो उत्कृष्टपदें अल्प बहुत्व विचार समजी, गुरु मुखथी निर्णय करी सविस्तर पणे वखाणवो.

॥ अथ यंत्रस्थापना ॥

॥ तत्र उत्तर प्रकृतिषु उत्कृष्टपदे कर्मदलिकजागाल्पबहुत्वमुच्यते ॥

॥ अथ ज्ञानावरणीयेषु प्रदेशाल्प ॥
॥ बहुत्वं ॥

१ केवल ज्ञानावरणस्य उत्कृष्टपदे सर्वस्तोकः कर्मदलिकजागः ॥

२ ततो मनःपर्यवज्ञानावरणस्य अ नंतगुणः ॥

३ ततोऽवधिज्ञानावरणस्य विशेषाः ॥
४ ततःश्रुतज्ञानावरणस्य विशेषाधिकः

५ ततोमतिज्ञानावरणस्यविशेषाधि०

॥ अथ दर्शनावरणीयेषु ॥

॥ प्रदेशल्पबहुत्वं ॥

१ दर्शनावरणो प्रचलायाः सर्वस्तोकः ॥

२ ततोनिज्ञाया विशेषाधिकः ॥

३ ततःप्रचलाप्रचलायाविशेषाधिकः ॥

४ ततो निज्ञा निज्ञायाविशेषाधिकः ॥

५ ततो स्त्यानक्षर्चाविशेषाधिकः ॥

६ ततोकेवलदर्शनावरणस्यविशे० ॥

७ ततोऽवधिदर्शनावरणस्याऽनं० ॥

८ ततोऽचक्षुदर्शनावरणस्यविशे० ॥

९ ततोचक्षुदर्शनावरणस्य विशे० ॥

॥ अथ वेदनीयेषु प्रदे ॥

॥ शाल्प बहुत्वं ॥

१ वेदनीयेऽशातस्य जागः सर्वस्तोकः ॥

२ ततोवेदनीयशातस्य विशेषाधिकः ॥

॥ अथ मोहनीयेषु प्रदेशा ॥

॥ ल्प बहुत्वं ॥

१ अप्रत्याख्यानमानस्य सर्वस्तोकः ॥

२ ततोऽप्रत्याख्यानक्रोधस्य विशे० ॥

३ ततोऽप्रत्याख्यानमायायाविशे० ॥

४ ततोऽप्रत्याख्यानलोनस्यविशे० ॥

८ एवं प्रत्याख्यानावरणचतुष्कस्यापि यथोत्तरं विशेषाधिकः ॥

१२ एवं अनंतानुबंधिचतुष्कस्यापि यथोत्तरं विशेषाधिकः ॥

१३ ततो मिथ्यात्वस्य विशेषाधिकः ॥

१४ ततो ज्ञुगुप्साया अनंत गुणः ॥

१५ ततो जयस्य विशेषाधिकः ॥

१७ ततोहास्यशोकयोरपि विशेषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥

१९ ततोरत्तरत्योर्विशेषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥

२१ ततो स्त्रीनपुंसकवेदयोर्विशेषाधिकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥

२२ ततः संज्वलन क्रोधस्य विशेषा० ॥

२३ ततः संज्वलनमानस्य विशेषा० ॥

२४ ततःपुंवेदस्य विशेषाधिकः ॥

२५ ततःसंज्वलनमायाया विशेषा० ॥

२६ ततःसंज्वलनलोनस्य संख्यातगुणः

४ चतुर्णामायुषामपि स्वस्थाने तुल्यः

॥ अथ नामोत्तरप्रकृतेः प्रदेशा ॥

॥ ल्पबहुत्वं ॥

२ नामकर्मणि देवनरकगत्योःसर्वस्तोकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥

३ ततो मनुष्यगतोर्विशेषाधिकः ॥

४ ततो तिर्यग्गतोर्विशेषाधिकः ॥

॥ जातिपंचकेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

४ जातिषु-र्दीडियादिजातिचतुष्के सर्वस्तोकः स्वस्थाने समः ॥

५ तत एकैडिय जातिविशेषाधिकः ॥

॥ शरीरनामकर्मणि अ ॥

॥ ल्पबहुत्वं ॥

१ शरीरेषु आहारकस्य सर्वस्तोकः ॥

- १ ततोवैक्रिय शरीरस्य विशेषाऽ॥
 २ ततऔदारिकशरीरस्य विशेषे ॥
 ४ ततो तैजस शरीरस्य विशेषाधिकः ॥
 ५ ततःकर्मण शरीरस्य विशेषाऽ॥
 ५ एवं संघातन पंचकस्यापि.

॥ उपांगेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

- १ उपांगेषु आहारकोपांगस्य स्तोकः ॥
 २ ततो वैक्रियोपांगस्य विशेषाधिकः ॥
 ३ तत औदारिकोपांगस्य विशेषाऽ॥

॥ बंधनेषु, स्वल्पबहुत्वं ॥

- १ आहारकाहारकबंधनस्य सर्वस्तो ॥
 २ तत आहारक तैजस बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
 ३ ततआहारककर्मणबंधनस्य वि० ॥
 ४ तत आहारक तैजसकर्मणबंधनस्य विशेषाधिकः ॥
 ५ ततो वैक्रिय वैक्रिये बंधनस्य वि० ॥
 ६ ततो वैक्रिय तैजस बंधनस्य वि० ॥
 ७ ततो वैक्रिय कर्मणबंधनस्य वि० ॥
 ८ ततो वैक्रिय तैजस कर्मण बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
 ९ तत औदारिक औदारिक बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
 १० तत औदारिक तैजस बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
 ११ तत औदारिककर्मणबंधनस्य विशेषाधिकः ॥

- १२ तत औदारिक तैजस कर्मण बंधनस्य विशेषाधिकः ॥
 १३ ततस्तैजस तैजसबंधनस्य वि० ॥
 १४ ततस्तैजसकर्मण बंधनस्य वि० ॥
 १५ ततःकर्मणकर्मणबंधनस्य वि० ॥

॥ संस्थानेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

- ४ संस्थानेषु मध्यसंस्थानचतुष्के सर्वे स्तोकः परस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
 ५ ततःसमचतुरस्रस्य विशेषाधिकः ॥
 ६ ततो हुंमकस्य विशेषाधिकः ॥

॥ संघयणेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- ५ संघननेषु आद्यपंचकस्य तुल्यः स्तो ॥
 ६ ततः सेवार्त्तस्य विशेषाधिकः ॥

॥ वर्णेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- १ वर्णेषु कृष्णस्य सर्वस्तोकः ॥
 २ ततो नीलस्य विशेषाधिकः ॥
 ३ ततो लोहितस्य विशेषाधिकः ॥
 ४ ततो हारिदस्य विशेषाधिकः ॥
 ५ ततःशुक्लस्य विशेषाधिकः ॥

॥ गंधेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

- १ गंधयोर्मध्ये सुरजेः सर्वस्तोकः ॥
 २ ततो डुरनिगंधस्य विशेषाधिकः ॥

॥ रसेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

- १ रसेषु तिक्करसस्य सर्वस्तोक जागः ॥
 २ ततः कटुकस्य विशेषाधिकः ॥

३ ततः कषायस्य विशेषाधिकः ॥

४ तत आम्लस्यजागो विशेषाधिकः ॥

५ ततोमधुरस्य जागो विशेषाधिकः ॥

॥ स्पर्शेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

१ स्पर्शेषु कर्कशगुरुस्पर्शयोः सर्वस्तो०

४ ततो मृदुलघुस्पर्शयोर्विशेषाधिकः ॥

६ ततो रूक्षशीतयोर्विशेषाधिकः ॥

७ ततः स्निग्धोष्णयोर्विशेषाधिकः अ

त्र सर्वत्र युग्मेषु परस्परस्तुल्यः ॥

॥ आनुपूर्वीषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ आनुपूर्वीषु देवनारक्यानुपूर्वीषु सर्व
स्तोकः परस्परं तुल्यः ॥

३ ततो मनुष्यानुपूर्वेर्विशेषाधिकः ॥

४ ततो तिर्यगानु पूर्वैर्विशेषा० ॥

१ खगति द्वये प्रशस्त खगतेः स्तोकः ॥

२ ततोऽप्रस्थखगतेर्विशेषाधिकः ॥

॥ त्रसविंशतिकेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ त्रसविंशतितोत्रसनाम्नः सर्वस्तोकः ॥

२ ततः स्थावरजागोविशेषाधिकः ॥

३ एवं बाढरस्य जागः स्तोकः ॥

४ ततः सूक्ष्मस्य विशेषाधिकः ॥

६ एवं पर्याप्तादप्यपर्याप्तो विशेषे ॥

१० एवं प्रत्येकेषु द्वयो द्वयो आतपद्योत

योः समं समं वाच्यः परस्परं तुल्यः ॥

६ निर्माणो १ ह्वास २ पराघातो ३

पघात ४ अशुरुलघु ५ जिननाम ६

अल्पबहुत्वं नास्ति परस्परं सजा

तीय प्रतिपद्भापेक्षानावात् ॥

॥ गोत्रकर्मणि स्वल्प बहुत्वं ॥

१ गोत्रयोर्नीचैर्गोत्रस्यजागः सर्वस्तो०

२ तत उच्चैर्गोत्रस्यजागो विशेषाधि० ॥

॥ अंतरायकर्मणि स्वल्पबहुत्वं ॥

१ अंतरायेषु दानांतरायस्य सर्वस्तोकः ॥

२ ततो जानांतरायस्य विशेषाधिकः ॥

३ ततो नोर्गांतरायस्य विशेषाधिकः ॥

४ ततोपचोर्गांतरायस्य विशेषाधिकः ॥

५ ततोवीर्यांतरायस्य जागोविशे० ॥

॥ इति उत्तरप्रकृतिषूत्कृष्टपदे कर्म

दलिकजागल्प बहुत्वं यंत्रकं ज्ञेयं ॥

॥ अथ जघन्यपदे उत्तर प्रकृतिषु ॥

॥ कर्मदलिकजागल्पबहुत्वमुच्यते ॥

१ तत्र केवलज्ञानावरणस्य, जघन्य
पदे कर्मदलिक जागः सर्वस्तोकः ॥

२ ततोमनःपर्यवज्ञानावरणस्यानंत ०

३ ततोऽवधिज्ञानावरणस्य वि० ॥

४ ततः श्रुतज्ञानावरणस्य विशेषा० ॥

५ ततो मतिज्ञानावरणस्य वि० ॥

॥ दर्शनावरणेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

१ दर्शनावरणे निज्ञायाः सर्वस्तोकः ॥

२ ततः प्रचलायाजागोविशेषाधिकः ॥

३ ततो निज्ञानिज्ञायाः जागोविशे० ॥

४ ततः प्रचला प्रचलाया विशेषा० ॥

५ ततः स्थानद्वयीविशेषाधिकः ॥

- ६ ततःकेवल दर्शनावरणस्य विशेषे ॥
 ७ ततोऽवधिर्दर्शनावरणस्य अनंत ॥
 ८ तत अचक्रुदर्शनावरणस्य विशेषे ॥
 ९ ततश्चक्रुदर्शनावरणस्य विशेषे ॥

॥ वेदनीयेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- १ वेदनीयेऽशातस्य जागः स्तोकः ॥
 २ ततःशातस्य जागोविशेषाधिकः ॥

॥ मोहनीयेषु स्वल्पबहुत्वं ॥

- १ अप्रत्याख्यान मानस्य सर्वस्तोकः ॥
 २ ततोऽप्रत्याख्यानक्रोधस्य विशेषे ॥
 ३ ततोऽप्रत्याख्यानमायायाविशेषे ॥
 ४ ततोऽप्रत्याख्यान लोचस्य वि ॥

१२ एवं क्रमेण प्रत्याख्यानावरणाऽनं
 तानुबंधि चतुष्कयोरपि विशेषे ॥

- १३ ततोमिथ्यात्वस्य जघन्य जागो वि ॥
 १४ ततो ज्ञुगुप्साया जागोऽनंतगुणः ॥
 १५ ततो जयस्य विशेषाधिकः ॥
 १६ ततोहास्यशोकयोर्विशेषाधिकः स्व
 स्थाने परस्परं तुल्यः ॥

१७ ततो रत्यरत्योर्विशेषाधिकः परस्प
 रं स्वस्थाने तुल्यः ॥

- १२ त्र्यन्यतरस्य वेदस्य जागो विशेषे ॥
 १६ ततः क्रोधादिचतुर्णां संज्वलनानां
 यथोक्तं विशेषाधिकत्वं ॥

॥ आयुषि स्वल्प बहुत्वं ॥

- २ आयुषि तिर्यग्नरायुषोःसर्वस्तोकः ॥
 ४ ततो देवनरकायुषोऽसंख्येयगुणः ॥

॥ नामकर्मणि स्वल्प बहुत्वं ॥

- १ ततस्तिर्यग्गतेः सर्वस्तोकः ॥
 २ ततो मनुष्यगतेर्विशेषाधिकः ॥
 ३ ततो देवगतेरसंख्येयगुणः ॥
 ४ ततो नरकगतेरसंख्येयगुणः ॥

॥ जातिषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- ४ जातिषु द्वीडियादिजातिचतुष्के
 सर्वस्तोकः परस्परं तुल्यः ॥
 ५ तत एकेंद्रियजातेर्विशेषाधिकः ॥

॥ शरीरेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- १ शरीरेषु औदारिक शरीरे सर्वस्तोकः ॥
 २ ततस्तैजसशरीरस्य विशेषाधिकः ॥
 ३ ततःकार्मेण शरीरस्य विशेषाधिकः ॥
 ४ ततोवैक्रियशरीरस्यासंख्येयगुणः ॥
 ५ ततोऽऽहारकस्यासंख्येयगुणः ॥

२० एवं संघातनेषु बंधनेषु स्वपि वार्धं.

॥ अंगोपांगेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- १ अंगोपांगेषुस्वौदारिकोपांगस्यस्तोकः
 २ ततोवैक्रियोपांगस्य असंख्येय ॥
 ३ ततोऽऽहारकोपांगस्यासंख्येयगुणः ॥

॥ आनुपूर्वीषु स्वल्प बहुत्वं ॥

- २ आनुपूर्वीषु नरकदेवगत्यानुपूर्व्योः
 सर्वस्तोकःपरस्परं स्वस्थाने तुल्यः ॥
 ३ ततो मनुष्यानुपूर्व्यां विशेषाधिकः ॥
 ४ ततस्तिर्यग्गत्यानुपूर्व्यां विशेषा ॥

॥ त्रसविंशतिषु स्वल्प बहुत्वं ॥

१ त्रस विंशतस्त्रसनाम्नः सर्वस्तोकः ॥

२ ततः स्थावरनाम्नः विशेषाधिकः ॥

३ एवं वादर सूक्ष्मयोः पर्यासाऽपर्यासा प्रत्येक साधारणयोश्च स्तोकः ॥

४ अवशिष्ट द्विचत्वारिंशत् प्रकृतीनां जघन्याल्पबहुत्वं उत्कृष्टवत् द्वेष्यं

॥ गोत्रेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

१ गोत्रेषु नीचैर्गोत्रस्य जागःस्तोकः ॥

२ तत उच्चैर्गोत्रस्य विशेषाधिकः ॥

॥ अंतरायेषु स्वल्प बहुत्वं ॥

१ अंतरायेषु दानांतरायस्य सर्वस्तोकः

२ ततो ज्ञानांतरायस्य विशेषाधिकः ॥

३ ततो जोगांतरायस्य विशेषाधिकः ॥

४ तत उपजोगांतरायस्य विशेषाधिकः ॥

५ ततो वीर्यांतरायस्य विशेषाधिकः ॥

हवे कर्मना प्रदेश वेद्या विना अवश्य निर्झरान्थाय यद्यपि स्थिति तथा रस ए वेतो वेद्या विना पण शुभ अथ्यवसायें करी तथा तप संयमं करी स्थितिघात तथा रसघात करी कर्म निर्झरे, पण प्रदेश सर्व वेदे, तेवारेंज तेनी निर्झरा थाय माटें ते प्रदेश वेदवाने जीव, सम्यक्त्वादिकगुणें करी थोडे कालें घणा प्रदेश निर्झरवाने अर्थ वेद्यमान दलने विषे उपरना दल समय समय असंख्यात गुणाकारें संक्रमावे, ते जणी एने गुणश्रेणी कह्यें. ते गुण श्रेणी अगीअर ठे, ते कहे ठे.

॥ अथ जागलब्धं दलिकगुणश्रेणी रचनयैव हिप्यते ॥

सम्म देस सब विरई, उअण विसंजोअ दंस खवगेअ ॥

मोहसम संत खवगे, खीण सजोगीअर गुण सेढी ॥ ८२ ॥

अर्थ- एक (सम्म के०) सम्यक्त्व प्रत्ययिकी, बीजी (देस के०) देशविरति प्रत्ययिकी, त्रीजी (सबविरईउ के०) सर्वविरतिप्रत्ययिकी, चौथी (अणविसंजोअ के०) अनंतानुबंधिनी विसंयोजनार्थे गुणश्रेणी करे पांचमी (दंसखवगेअ के०) दर्शनमोहनीय खपावतां गुणश्रेणी करे, षष्ठी (मोहसम के०) चारित्र मोहनीय उपशमावतां गुणश्रेणी करे, सातमी (संत के०) उपशांत मोहनीय गुणश्रेणी, आठमी (खवगे के०) कृपक श्रेणीयें गुणश्रेणी करे, नवमी (खीण के०) क्षीणमोह गुणश्रेणी, दशमी (सजोगीअर के०) सयोगी केवली गुणश्रेणी अने अगीअरामी ते थकी इतर अयोगी केवलीनी गुणश्रेणी, ए अगीअर (गुणसेढी के०) गुणश्रेणी जाणवी ॥ इत्यह्वरार्थः ॥ ८२ ॥

१ प्रथम सम्यक्त्व निमित्तं ग्रंथिजेद करतां तथा बीजो अपूर्वकरण करतां स्थिति घात, रसघात, गुणश्रेणी अपूर्वबंधन, ए चार वानां करतां, प्रति समयं असंख्यात गुणी निर्करा वधारतो जाय, तेम अपूर्वनिवृत्तिकरणे पण जाणवो. अने सम्यक्त्व पास्या पढी पण सम्यक्त्व प्रत्यये करी अंतरमुहूर्त प्रमाण शेष कर्मद ल खपाववाने गोपुढ्ढाकारें दल रचना करे, ते प्रथम सम्यक्त्व गुणश्रेणी जा एवी. ए अन्य श्रेणीनी अपेक्षायें सम्यक्त्व प्रत्ययिकी मंदविद्युद्दिनणी दीर्घ अंतरमुहूर्तें वेदवा योग्य अने अल्प प्रदेशिक एवी गुणश्रेणी करे.

२ ते थकी देशविरति निमित्त अपूर्व करण करतो पहेली गुणश्रेणीना अंतरमुहूर्तणी संख्यात गुण हीन एवा अंतरमुहूर्तें वेदवा योग्य अने पूर्वली श्रेणीथी असंख्यात गुण वृद्धि प्रदेशिक दलरचनायें, देशविरति गुण प्रत्ययिकी श्रेणी, ते प्रथम गुणश्रेणीनी निर्कराथकी असंख्यातगुणी निर्करावंत एवी बीजी गुणश्रेणी करे.

३ ते देशविरति गुणथकी अनंतगुण विद्युद्दि बांधतो सर्वविरति लब्धि निमित्त अपूर्व करण करतो सर्वविरति गुणप्रत्ययिकी देशविरति गुणश्रेणीना अंतरमुहूर्तणी संख्यातगुणहीन एवी अंतरमुहूर्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्धि प्रदेशात्मक असंख्यातगुण निर्कराहेतु एवी सर्वविरति रूप त्रीजी गुणश्रेणी करे.

४ ते थकी अनंतगुणविद्युद्दियें अनंतानुबंधीया कषाय विसंयोजतो थको सर्वविरति गुणश्रेणीना अंतर मुहूर्तथकी संख्यातगुणहीन अंतरमुहूर्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्धि दलिक एवी चौथी गुणश्रेणी करे.

५ तेथकी पण अत्यंत विद्युद्ध परिणामें पूर्वली गुणश्रेणीना अंतर मुहूर्त थकी संख्यातगुण हीन अंतरमुहूर्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्धिदलिक त्रण दर्शनमोहनीयने खपाववा निमित्त, गुणश्रेणी करे ते ह्यायिक सम्यक्त्व प्रत्ययिकी असंख्यातगुण निर्करारूप पांचमी गुणश्रेणी जाणवी.

६ तेथकी पण संख्यातगुणहीन एवी अंतर मुहूर्तें वेदवा योग्य असंख्यात गुणवृद्धि दलिक असंख्यातगुणी निर्कराहेतु चारित्रमोहनीय उपशमावतो अपूर्व करण अनिवृत्तिकरण गुणताणे गुणश्रेणी करे, ते ढही गुणश्रेणी जाणवी.

७ तेथकी अनंतगुणविद्युद्दियें उपशांतमोह प्रत्ययिकी संख्यातगुण हीन मुहूर्तें वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्धि दलिक उपशांतमोह गुणश्रेणी सातमी.

८ तेथकी अनंतगुणविद्युद्दियें संख्यातगुण हीन मुहूर्तें वेदवा योग्य असंख्यात गुणवृद्धि दलिक असंख्यातगुण निर्करायें वधती चारित्र मोहनीय खपावतां

आठमे, नवमे अने दशमे गुणवाणे दलिक रचना करे. ते आठमी गुणश्रेणी.

ए तेथकी अत्यंतविद्युद संख्यातगुणहीन अंतरमुहूर्ते वेदवा योग्य असंख्यातगुणवृद्धिदलिक क्षीणमोह गुणवाणा प्रत्ययिकी गुणश्रेणी नवमी जाणवी.

१० तेथकी संख्यातगुणहीन अंतरमुहूर्ते वेदवा योग्य असंख्यातगुणवृद्धिदलिक सयोगी केवलीने असंख्यातगुणी निर्कराहेतु दलिक रचना करे, ते दशमी.

११ ते थकी इतर अयोगी गुणवाणें कर्म खपाववा निमित्त, सयोगी गुणश्रेणी ना अंतरमुहूर्ते थकी संख्यात गुणहीन अंतमुहूर्ते वेदवा योग्य असंख्यातगुण वृद्धिदलिक कर्मदल रचना करे, ते अगीआरमी अयोगीकेवली गुणश्रेणी होय. एम अगिआरगुणश्रेणीनी रचनार्ये करी बहुकाल वेदवा योग्य कर्म ते अल्प काले निर्करे ॥ इत्यर्थः ॥ ७२ ॥

हवे गुणश्रेणीनुं स्वरूप कहे ठे.

गुणसेढी दल रयणा, एुसमय मुदया दसंख गुणणाए ॥

एअगुणा पुण कमसो, असंख गुण निकरा जीवा ॥ ७३ ॥

अर्थ—(गुणसेढी के०) गुणश्रेणी ते (दलरयणा के०) कर्मदलनी जोगवी वेदीने निर्करा निमित्त, रचना स्थापना. (अणुसमयमुदयादसंखगुणणाए के०) उदय समयथी मांमीने समय समर्थ असंख्यातगुणाकारें वधता दलनुं संक्रमा ववुं (एअगुणापुणकमसो के०) ए गुणश्रेणीना वली अनुक्रमें एकेकथी चढता (असंखगुणनिकराजीवा के०) असंख्यातगुण निर्करावंत जीव होय. पहेली गुणश्रेणीथी बीजीना, बीजी गुणश्रेणीथी त्रीजीगुणश्रेणीना जीव चढतां चढतां वधती वधती निर्करावंत होय. एम सर्वत्र समजवुं ॥ इत्यह्वरार्थः ॥ ७३ ॥

गुणाकारें कर्मदल वेदीने निर्करा निमित्त कर्मदलनुं व्यवस्थार्ये स्थापवुं उपरली स्थितिथकी उतारी उतारी उदयावलिनी स्थितिना समय समय स्थिति ने विषे असंख्यातगुण वधतुं संक्रमावतां जे दलश्रेणी, ते गुणश्रेणी कहीर्ये. एम थोडे काले घणां कर्मदल निर्करे, तेना सुखावबोध निमित्त थापना करी देखाडीठे.

तिहां प्रथम गुणश्रेणीनो काल अपूर्वकरण अने अनिवृत्ति करण कालथकी किंचि दधिक अंतर मुहूर्तमान जाणवो. ते वेद्यमान अंतर मुहूर्तथी उपरली स्थितिना दलिक उतारी, उतारी, वेद्यमान स्थितिना उदयथी प्रतिसमयें असंख्यातगुणो असंख्यातगुणो वधतो चरम समय लगे संक्रमावे, एटले उपरली स्थितिनुं उताखुं जे

दल, ते मध्ये प्रथम समयें स्तोक संक्रमावे. तेथी बीजे समयें असंख्यातगुणो संक्रमावे. तेथी वली त्रीजे समयें असंख्यातगुणो संक्रमावे. एम समयें, समयें, असंख्यात गुणाकारें वधारतो, वधारतो अंतर मुहूर्तने चरम समयें सर्वोत्कृष्ट संक्रमावी, जोगवीने खपावे पण गुणश्रेणिनो काल वधारे नहीं. एरीतें सर्व गुणश्रेणी नुं स्वरूप जाणवुं. पण एकेकथी श्रेणीनुं अंतर मुहूर्त संख्यात गुणहीन हीनकाल पूर्वली श्रेणीनी अपेक्षायें होय, अने कर्मदल असंख्यातगुणां वधतां होय.

तिहां देशविरति अने सर्वविरतिपणुं पामतो बे करण करे, पण त्रीजुं अ निवृत्तिकरण न करे, तथा देशविरति अने सर्वविरतिथी आजोगें पडद्यो अने वली जे देशविरत्यादिक पडीवजे, तेवारें पण ते बे करण करे, अने जे अनाजोगें पडद्यो ते करण कखा विना चढे, ए बे करण करी देशविरति सर्वविरत्यादिक गुण लहे तो जीव अवश्य वधते परिणामें होय. तिहां वधते परिणामें केवारें एक असंख्यात जागाधिक अने केवारें एक संख्यातजागाधिक; केवारें एक संख्यातगुणाधिक अने केवारें एक असंख्यातगुणाधिक दलिक रचना करे. तिहां हीयमानपरिणामें ए चारे हीयमान दलिक रचना करे, अने तुल्यपरिणामें तुल्य दलिक रचना करे, पण पोत पोतानी गुणश्रेणीनुं अंतरमुहूर्त सरखुंज होय तथा अनंतानुबंधीयानी विसंयोजना देवता, मनुष्य अने नारकी पर्याप्ता अविरति सम्यक्दृष्टि देशविरति अने सर्वविरति, ए सर्व त्रण करणें करी करे. तिहां अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण कालें गुणश्रेणी करे. ए मध्ये प्रथम त्रण गुणश्रेणी सम्यक्त्व देशविरति अने सर्वविरतिथी सहसात्कारें पडतां केटलो एक काल मिथ्यात्व गुणतापो पामीयें. ए गुणश्रेणीनी सविस्तर वक्तव्यता कर्मप्रकृति तथा पंचसंग्रहनी वृहद्दृष्टीका थकी जाणवी.

तथा ए अगीअार गुणश्रेणीना जीव अनुक्रमें एकेकथी असंख्यातगुणी निर्झरा वंत होय एटले मिथ्यात्वथकी सम्यक्त्व गुणश्रेणीयें अनंतगुण निर्झरा होय, जे म कोइ एक वृद्ध डुर्बल रोगाक्रांत चित्तचित्तातुर पुरुष होय ते जेनी धारा न होय एवा वृंठा काटें जरेला कूहाडायें करी बावलीआ तथा खेरनां काष्ट वेढां ने काप तो घणो डुखी थाय तोपण घणें काले थोडांक कापी शके, अने कोइ एक तरुण नीरोगी निश्चित दृढ संघयणी पुरुष, तीदण एवा सार लोह फरशीयें करी, सूकी एरंम तथा आकडानी लाकडी थोडाकालमां पण घणी कापी नाखे तेम मिथ्यात्वी जीव वीयें हीन थको पोताना अत्यंत चीकणां कर्म तेने अज्ञानोपहत एवा बाजतपश्रणादिक वृंठा शस्त्रें प्रायें करी घणा कालें पण अल्प कर्म निर्झरें, अने सम्यक्

दृष्टि जीव ज्ञानादिक गुणों बलिष्ठ होय माटे तेहना शुजपरिणाम वृद्धि रसवात स्थि तिघातें करी नीरस निःसार एरंम जेवा थयला कर्मोने ते अपूर्वकरणादिक तीहण शस्त्रें करी अल्प कालें पण घणा ठेदी नाखे, तेमाटें गुणश्रेणी गुणश्रेणी प्रत्ये थयो त्तर वीर्य वृद्धि कर्म निःसार होय. तेने गुणनिर्मलतारूप शस्त्रें करी असंख्यगुणी अ संख्यगुणी निर्झरा वधे, तिहां सवोत्कृष्ट कर्म निर्झरा अयोगी केवलीने होय॥८३॥

एम गुण विद्युद्धि र्णें निर्झरा वधे ते जणी गुणगणानो अंतरकाल कहे ठे.

पलिआ संखंसमुहू, सासण इअर गुण अंतरं हस्सं ॥

गुरु मिद्धि बे असठी, इयरगुणे पुग्गलशंतो ॥ ८४ ॥

अर्थ—(सासण के०) सास्वादन गुणगणानुं (पलिआसंखंस के०) पळ्योपम नो असंख्यातमो जाग जघन्यथी आंतरं जाणवुं, जे जणी सास्वादन गुणगणं एकवार र स्पर्शी, वली बीजी वेलायें स्पर्शें. एने वचमानो काल तेने सास्वादननुं आंतरं कही र्णें, ते जघन्यथी तो पळ्योपमासंख्येय जाग प्रमाण होय, जे जणी कोइ एक जीव मोह नीयनी बवीश प्रकृतिनी सत्तायेंथको औपशमिक सम्यक्त्व लही, त्रिपुंज करी अष्टाविं शति सत्कर्मा थाय, तेवारें पडतां सास्वादनपणुं पामे. तिहांथी वली मिथ्यात्वें जाय, तिहां मिथ्यात्वप्रत्ययें सम्यक्त्वमोहनीय मिश्रमोहनीयने समय समय बवेल तां, उवेलतां, पळ्योपमासंख्येय जाग काल प्रमाण ते मोहनीयनी बे प्रकृतिने उ वेली रहे ते वारें मिश्र तथा सम्यक्त्वनी सत्ता रहित थयो थको. बवीश सत्कर्मा थाय वली पण कोइ एक जीव औपशमिक सम्यक्त्व पामी, तिहांथी सास्वादनपणुं पामे तेषो एथी हीन आंतरं न कहुं तथा जे जीव, उपशम श्रेणीथी पडतो सास्वा द न पणुं पामी वली अंतरमुहूर्त्तने आंतरें बीजी वेला उपशमश्रेणी पडिवजे, ते वली तिहांथी पडतो सास्वादन गुणगणो आवे. ए अपेक्षायें अंतरमुहूर्त्तनुं पण आंतरं होय, अंतर मुहूर्त्तना असंख्याता जेद ठे, तथा ए गुणगणानो काल पण अंतर मुहूर्त्तनो ठे अने सर्व गुणगणां पण अंतर मुहूर्त्तमांहे स्पर्शें, अर्हीयां विरो थ कोइ नथी. ए रीतें अंतर मुहूर्त्तनुं आंतरं पण सास्वादननुं लाजे, परंतु ते मनु ष्यमध्येज कोइ एकने होय पण देवादिकने न होय ते माटें अल्प जणी अर्हीयां विवद्ध्युं नहीं, तथा बीजे कज्ञो कारणे विवद्ध्युं नहीं.

तथा ए सास्वादन थकी (इअरगुण के०) इतर एटले बीजा मिथ्यात्वादिक थी उपशांत मोह पर्यंतना दश गुणगणानुं (अंतरंहस्सं के०) जघन्यथकी आं

तरुं (मुहु के०) अंतरमुहूर्त्त अंतर मुहूर्त्तनुं जाणवुं. जे नणी कोइ एक जीव, उपशमश्रेणीधी पढतो मिथ्यात्व गुणवाणे आवी वली बीजी वखत चढतो सर्वे गुणवाणां स्पर्शे, तेवारें अंतरमुहूर्त्तनुं आंतरुं जाववुं. तथा बीजे प्रकारें पण जे मते एक नवें एकज श्रेणी करे, तिहां चढतां तथा पढतां पण एज आंतरुं जाववुं.

अने क्लीणमोह, सयोगी तथा अयोगी, ए त्रण गुणवाणाधी पढवुं नथी, ए गुणवाणां एकज वार आवे, माटे एनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट आंतरुं नथी.

हवे ए गुणवाणानुं (गुरु के०) उत्कृष्ट आंतरुं कहे ठे. तिहां (मित्रि के०) मिथ्यात्वगुणवाणानुं (वेठसही के०) वे वखत ढाशठ सागरोपम पूर्वकोटी पृथक्त्वे अधिक एटलुं उत्कृष्ट आंतरुं जाणवुं, जे नणी कोइ एक पूर्व कोट्यायु मनुष्य शुद्ध संयम पाली विजय विमानें तेत्रीश सागरोपमायु नोगवी सम्यक्त्व सहित मनुष्यनव पामी वली मनुष्य नवथी विजय विमानें जाय. एम ढाशठ सागरोपम सम्यक्त्वे रही वली अंतर मुहूर्त्त मिश्रें आवी फरी सम्यक्त्व लही त्रण वेला अच्युतगमनें मनुष्य नवांतरें ढाशठ सागरोपम पूरे, एम एकशोने बत्रीश सागरोपम पूर्व कोटी पृथक्त्वे अधिक मिथ्यात्व गुणवाणानुं आंतरुं उत्कृष्ट जाणवुं.

अने ए मिथ्यात्व विना (इयरगुणे के०) इतर जे बीजा सास्वादनथी उपशां तमोह पर्यंत दश गुणवाणां ठे, तेनुं उत्कृष्ट आंतरुं (पुग्गलईतो के०) सूक्ष्म क्षेत्र पुजल परावर्त्तनुं अर्द्ध कांइ एक ऊणेरुं होय, जे नणी उत्कृष्टो किंचिदून अर्द्ध पुजल परावर्त्त प्रमाण शेष संसार हुंते थके जीव, अंगिजेद करे, तेवार पढी ए दश गुणवाणां स्पर्शे, तेणे उत्सृत्र जाषणादिक अत्यंत अशातनायें करी अनंत संसार वधारे तो पण जेणे सम्यक्त्व लहुं ते जीव अर्द्धपुजल परावर्त्त मांहे सीजे, तेवारें वली सर्वे गुणवाणां स्पर्शे, ए अपेहायें जाववुं उपरांत संसारमां न रहे॥ ८४॥

हवे पुजल परावर्त्तनुं कालमान समजाववाने प्रथम कालमानना चेद कहे ठे. तिहां त्रीश मुहूर्त्ते एक अहोरात्रि अने त्रीश अहोरात्रिं एक मास, वे मासें एकक तु, त्रण ऋतुयें एक अयन, वे अयने ? एकवर्ष, चोराशी लाख वर्षें एक पूर्वींग, चोराशी लाख पूर्वार्गे ३ एक पूर्व, चोराशीलक्ष पूर्वे ४ एक त्रुटितांग, चोराशी लक्ष त्रुटितांगें ५ एक त्रुटित, चोराशी लक्ष त्रुटितें ६ एक अटटांग, चोराशी लक्ष अटटांगें ७ एक अटट, चोराशी लक्ष अटटें ८ एक अववांग, चोराशी लक्ष अववांगें ९ एक अवव, चोराशी लक्षअववें १० एक हूहूअंग, चोराशी लक्ष हूहूअंगें ११ एक हूहूअ, चोराशी लक्ष हूहूअं १२ एक उत्पजांग, चोराशी लक्ष उ

त्पलांगे १३ एक उत्पल, चोराशी लहू उत्पले १४ एक पद्मांग, चोराशी लहू पद्मांगे १५ एक पद्म, चोराशी लहू पद्मे १६ एक नलिनांग, चोराशीलहू नलिनांगे १७ एक नलिन, चोराशी लहू नलिने १८ एक अह्निकुरांग, चोराशीलहू अह्निकुरांगे १९ एक अह्निकुर, चोराशी लहू अह्निकुरे २० एक अयुतांग, चोराशी लहू अयुतांगे २१ एक अयुत चोराशी लहू अयुते २२ एक नयुतांग, चोराशीलहू नयुतांगे २३ एक नयुत, चोराशी लहू नयुते २४ एक प्रयुतांग, चोराशी लहू प्रयुतांगे २५ एक प्रयुत, चोराशी लहू प्रयुते २६ एक चूलिकांग, चोराशी लहू चूलिकांगे २७ एक चूलिका, चोराशी लहू चूलिकाये २८ एक शीर्षप्रहेलिकांग, चोराशी लहू शीर्षप्रहेलिकांगे २९ एक शीर्षप्रहेलिका, अर्द्धां सुधी संख्यातो काल गण्यो आवे. ए शीर्ष प्रहेलिकाये आटला आंक आवे ते अंक मांमीये ठैये. (४५८ २६३ २५३ ०४३ १० २४ १ १ ५७ ७३ ५६ ९९ ४५ ६६ ४० ६ २ १ ८ ६ ६ ८ ४ ० ८ ० १ ८ ३ २ ९ ६ २) ए चोपन आंक आगल एकशोने चालीश शून्य मांमीये तेवारें, एकशोने चोराणुं अंक आय. त्यां सुधी संख्याता वर्ष जाणवा. उपरांत गणतां नावे ते माटे पाला तथा समुद्रादिकनी उपमाये करी समजाव्युं जाय पण गणतां पार न आवे, तेने असंख्याता कहीये ते असंख्याता वर्ष प्रमाण पल्योपम सागरोपम जाणवुं तेनुं स्वरूप समजाववाने गाथा कहे ठे ॥ ८४ ॥

॥ अथ पल्योपमस्वरूपमाह ॥

उद्धार अक्ष खित्तं, पलिय तिहा समय वाससय समए ॥

केसव हारो दीवो, दहि आउ तसाय परिमाणं ॥ ८५ ॥

अर्थ—धान्य पल्यवत् पल्योपम, तथा वली सागरवत् सागरोपम जाणवुं. तेना प्रत्येके त्रण त्रण जेद ठे. तत्र वालाग्र अथवा वालाग्र खंमोनो प्रति समयें (उद्धार के०) उद्धारण करवो, तेठे प्राधान्य जिहां तेने प्रथम उद्धार पल्योपम कहीये. अने (अक्ष के०) अक्षा एटले काल ते प्रस्तावथकी वालाग्रोने अथवा वालाग्रोना खंमोने अपहारें प्रत्येके वर्ष शत लहूण प्राधान्य ठे जिहां ते बीजो अक्षा पल्योपम कहीये तथा (खित्तं के०) क्षेत्र जे आकाश प्रदेशरूप तेनुं प्राधान्य ठे जिहां ते त्रीजो क्षेत्र पल्योपम कहीये. ए (तिहा के०) त्रणे प्रकारना (पलिय के०) पल्योपम तेने प्रत्येके सूक्ष्म अने बादर एम वे वे जेदें करतां ठ जेद आय. तेनुं मान कांड एक विस्तारथी लखीये ठैये. अनंत परमाणुये एक व्यावहारि

क परमाणुं थाय, तेवा आठ परमाणुयें एक त्रसरेणु थाय, तेवा आठ त्रसरेणु यें एक ऊर्ध्वरेणु थाय, आठ ऊर्ध्वरेणुयें एक रथरेणु थाय, आठ रथरेणुयें एक उत्तरकुरु युगलिआनो वालाग्र थाय. तेवा आठ वालाग्रें महाहिमवंत युगलिआनो वालाग्र थाय, तेवा आठ वालाग्रें हिमवंत युगलिआनो एक वालाग्र थाय, तेवा आठ वालाग्रें महाविदेह नरनो वालाग्र थाय, तेवा आठ वालाग्रें नरतनरनो एक वालाग्र थाय, तेवा आठ वालाग्रें एक लीख थाय, आठ लीखें एक जू थाय, आठ जूयें एक यवमध्य थाय, आठ यवमध्ये एक अंगुल थाय, एम प्रत्येकें आठ आठ गुणुं करतां एक उत्सेधांगुल थाय, तेवी चोवीश अंगुलें एक हाथ थाय, तेवा चार हाथें एक धनुष्य थाय, तेवा बे हजार धनुष्यें एक कोश थाय, तेवा चार कोशानो योजन थाय, एवा योजन प्रमाण लांबो पहालो, उंमो, अने त्रण योजन तथा एक योजनना ठ जाग करीयें तेवो एक जाग उपर एटली परिधिवालो एवो कूपाकार पालो कल्पीयें, ते मध्ये देवकुरु तथा उत्तरकुरुना युगलिया एक दिवसना जन्मेला बे दिवसना जन्मेला यावत सात दिवसना जन्मेला तेना मस्तकना वालाग्र खंमने सात वखत आठ आठ खंम करतां एक केशना वीश लाख, सत्ताणुं हजार, एकशो ने बावन खंम थाय. तेवा खंमं ठांशीने ते पय्य जरीयें, ते एवी रीतें ठांशी जरीयें, के तेना उपर चक्रवर्तितुं कटक चाळुं जाय, तो पण धसके नहीं तथा गंगा नदीनो प्रवाह तेने जेदी शके नहीं, तथा अग्नियें करी बले नहीं, वायरे करी एक वालाग्र खंम पण ऊडे नहीं. एवो ठांशीने जरीयें.

ते मांहेंधी (समय के०) एकेक समयें (केसवहारो के०) एकेक केश खंम काहाडतां थकां जेटले कालें ते पालो खाली थाय, तेटलो बादर उदार पळोपमनो संख्याता समय प्रमाण काल होय, जे जणी ते खंम संख्याताज होय माटें संख्यातो काल क हो, ए बादर उदार पळोपम जे कहुं ते सूक्ष्म उदारपळोपम मुखें चित्त आणवाने अर्थें कहुं परंतु एनुं बीजुं कहुं पण कार्य नथी. जे जणी ए अंतर सुहूर्च संख्यात समय प्रमाण होय ते जणी सूक्ष्म उदार पळोपम उपयोगी होय.

पूर्वें जे वालाग्रखंमं पय्य नखो ठे. ते बादर एकेक खंमना असंख्याता सूक्ष्म खंम कल्पीयें, ते एवा कल्पीयें, के जे एक खंमनो वली बीजो खंम केवली केवलज्ञानें करी पण कल्पी न शके, सतेजवंत नेत्रनो धणी जे जालीमांहेंधी सूक्ष्म पुज्ज सूर्यना तेजें करी देखे, तेनो असंख्यातमो जाग अथवा बादर पर्याप्त पृथिवी कायिआ जीवतुं जेतुं सूक्ष्म शरीर होय, तेवडे खंमं करी पूर्वाक्त कूवो न

रीयें, ते एकेको खंन समय समय कदाडतां असंख्याता समय जागे, अर्थात् संख्याता वर्षनी कोटीयें करी ते कूप खाली थाय तेने सूक्ष्म उदार पद्योपम कही यें. तेवा दश कोडाकोडी पद्योपमें एक सूक्ष्म उदार सागरोपम थाय तेवा अढी सागरोपमना समय प्रमाण (दीवोदहि के०) असंख्याता दीप समुद्र ठे. ए सूक्ष्म उदार पद्योपम कहुं.

तथा तेहीज योजन प्रमाण पद्य बादर वालाग्रें जखो, तेमध्येथी (वाससय के०) शो शो वर्षें एकेक केशखंन काहाडतां, ते पद्य संख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण कालें निर्लेप थाय, तेवारें बादर अक्षा पद्योपम संख्याता वर्ष प्रमाण थाय.

वली तेहिज खंनना पूर्वोक्त रीतें असंख्याता खंन कल्पी ते कल्पना खंन शो शो वर्षें एकेक कदाडतां जेवारें ते पद्य निर्लेप थाय तेवारें सूक्ष्म अक्षा पद्योपम असंख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण थाय. तेवा दश कोडाकोडी सूक्ष्म अक्षा पद्योपमें एक सूक्ष्म अक्षा सागरोपम थाय तेवा वली दश कोडाकोडी सागरोपमें एक अवसर्पिणी काल थाय वली तेवा दश कोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सर्पिणी काल थाय ए अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणीना बेडु काल मली वीश कोडाकोडी सागरोपमें एक कालचक्र थाय, ए सूक्ष्म अक्षापद्योपम अने सागरोपमें करी देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यंचनुं (आठ के०) आयुनुं मान तथा कर्म स्थितिमान तथा कायस्थितिमान तथा जवस्थितिनुं कालमानादिक मवीयें, ए चोथुं सूक्ष्म अक्षापद्योपम कहुं, एटले ए सूक्ष्म अक्षासागरोपमना अनंता पुजल परावर्त्त अतीत अक्षा तथा अनंता पुजलपरावर्त्त अनागत अक्षा एटले अनागत अक्षानी अनंतता ठे अने अतीत अक्षानी आदि नथी, तेथी बेडुने समानपणुं ठे. अन्य आचार्य वली एम कहे ठे, के अतीत अक्षाथकी अनागत अक्षा अनंत गुणा ठे. तेनी जावना एम ठे के जो पण समयादिकें करी अनागत अक्षा हीयमान ठे, तो पण अनागत अक्षानो ह्य नथी यतो ते माटें अतीत अक्षा थकी अनागत अक्षा अनंत गुणी ठे.

सांप्रत वे प्रकारना क्षेत्र पद्योपमनुं निरूपण करीयें ठैयें. ते पूर्वोक्त वालाग्र खंने करी जखो जे पद्य ते मध्ये कल्पना करेला वालाग्रें स्पश्यां जे आकाश प्रदेश ते मांहेथो एकेक आकाश प्रदेश (समए के०) समय समय काहाडतां जे वारें सर्व वालाग्र स्पष्ट आकाश निर्लेप थाय, तेवारें असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी कालप्रमाण एक बादर क्षेत्र पद्योपम थाय.

ते पत्यना सूक्ष्म, एकेकावालाग्रने स्पर्श्या आकाश प्रदेश तथा अणस्पर्श्या एवा समस्त आकाश प्रदेशने समय समय काहाडतां जे वारें ते पत्य निर्लेप थाय, तेवारें पूर्वोक्त बादरक्षेत्र पत्योपमना कालमानयकी असंख्यातगुणो असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी प्रमाण सूक्ष्मक्षेत्र पत्योपमनुं कालमान थाय तेवा दश को डाकोडी सूक्ष्म क्षेत्र पत्योपमें एक सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम थाय, एणे करी (त सायपरिमाणं के०) त्रसादिक जीवनुं परिमाण करवुं, एटले दृष्टिवादनने विपे इव्य प्रमाण चिंतवीयें तथा पृथिव्यादिक एकेंद्रिय त्रसांत जीवनुं परिमाण करीयें तेने विपे एनुं प्रयोजन ठे. अहीं शिष्य पूढे ठे के, जो स्पष्ट, अस्पष्ट, नजःप्रदेश अहीं सूक्ष्मक्षेत्र पत्योपमें करीने ग्रहण करीयें ठैयें, तो वालाग्रोनुं शुं प्रयोजन ठे ? यथोक्त पल्यांतरगत नजःप्रदेशापहारमात्रधीज सामान्य पणे कहेवुं उचित ठे. तत्र गुरु कहे ठे. के ए सत्य ठे. किंतु सूक्ष्मक्षेत्र पत्योपमें करी दृष्टिवादनने विपे इव्य मवीयें ठैयें ते केटला एक यथोक्त वालाग्र स्पष्ट नजःप्रदेशों करी मवीयें ठैयें, अने केटला एक अस्पष्ट नजःप्रदेशों करी मवीयें ठैयें, माटें दृष्टिवादीक इव्यमानोपयोगीपणा यकी वालाग्र प्ररूपणा प्रयोजनवाली ठे.

एम त्रण सूक्ष्म पत्योपम शास्त्रने विपे उपयोगी होय अने त्रण बादर पत्योपम कहा ते सूक्ष्मपत्योपमना सुखावबोध अवा माटें कहा. अहींआं प्रायें घणुंतो सूक्ष्म अक्षापत्योपमनुं प्रयोजन ठे, ते अक्षापत्योपमें करी वीश कोडाकोडी सागरोपमनुं काल चक्र थाय, तेवा अनंतें कालचक्रें एक पुञ्जलपरावर्त थाय, एवा अनंत पुञ्जलपरावर्त अतीत अक्षा अतिक्रम्या ते नणी एनेविपे पुञ्जल परावर्त एवी संज्ञा करीयें जो पण पुञ्जल परावर्त एवी संज्ञा मुख्य पणे इव्य परावर्तने विपे होय. केम के औदारिकादिक पुञ्जलनी परावर्त एवी संज्ञा होय, ठे ते मुख्य कहेवाय तथापि आकाश प्रदेश समय अने अथ्यवसाय परावर्तें क्षेत्र, काल अने जाव परावर्तादिकने विपे पण जे पुञ्जल परावर्त एवी संज्ञा करवी. ते गौणपणे जाणवी. तथा आशांबरमतें नवपरावर्त पण मान्युं ठे. पण ते अहींयां न लीधुं ॥ ८५ ॥

हवे पुञ्जलपरावर्तना आठ जेदनुं स्वरूप त्रण गाथायें करी कहे ठे.

दवे खित्ते काले, जावे चउह ड्ह बायरो सुद्धुमो ॥

होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गल परट्ठो ॥ ८६ ॥

अर्थ—(दवे के०) इव्य पुञ्जल परावर्त, (खित्ते के०) क्षेत्र पुञ्जल परावर्त, (का

ले के०) कालपुञ्जपरावर्त्त, (जावे के०) जाव पुञ्ज परावर्त्त, एम (चवह के०) चार चेदें पुञ्ज परावर्त्त ठे ते वली एकेको (बायरो के०) बादर अने (सुद्धुमो के०) सूक्ष्मना चेदें करी (डुह के०) बे बे प्रकारें (होइ के०) होय. (अणंतुस्सपिणि परिमाणो के०) अनंती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीकाल प्रमाण (पुग्गल परदो के०) पुञ्ज परावर्त्तनुं कालमान जाणवुं ॥ इत्यह्वरार्थः ॥ ८६ ॥

एक बादर इव्यपुञ्जपरावर्त्त, बीजो सूक्ष्म इव्य पुञ्जपरावर्त्त, त्रीजो बादर क्षेत्रपुञ्जपरावर्त्त, चोथो सूक्ष्म क्षेत्र पुञ्जपरावर्त्त, पांचमो बादर काल पुञ्जपरावर्त्त, षष्ठो सूक्ष्म कालपुञ्ज परावर्त्त, सातमो बादर जावपुञ्जपरावर्त्त, आठमो सूक्ष्म जाव पुञ्जपरावर्त्त. अर्द्धियां कोइएक नवपुञ्जपरावर्त्त सूक्ष्म तथा बादर एम पण माने ठे. ते मते दश चेद कहे ठे. पण स्वमते तो आठ चेदज कह्या ठे.

तिहां पूर्णगलन स्वजाव तेने पुञ्ज कहीयें, ते अणुने मलवे तथा विघटवे करी जे स्कंधनो चेद ते पुञ्जस्कंध कहीयें ते सर्व जीवथकी अनंतगुणा ठे. सर्व लोकाकाश प्रदेश अनंतानंत पुञ्जस्कंधें जख्यो ठे. ते जेटले कालें जीव, सर्व अणुस्कंध औदारिकादिक शरीर पणे ग्रहीने सूके, तेटले कालें बादरइव्य पुञ्जपरावर्त्त एवी सामान्य संज्ञा होय. ए आठ जातिना पुञ्ज परावर्त्त कह्या ठे. ते मथ्यें पण चार जातिना बादर पुञ्ज परावर्त्त जे कह्या ठे ते सूक्ष्मपुञ्जपरावर्त्तना सुखावबोधने अर्थें कह्या ठे. जे मूढमति, सूक्ष्म पुञ्जपरावर्त्तनुं स्वरूप न समजे, तेने बादरनुं स्वरूप समजावीयें, ते बादरना स्वरूपनी समजणमां मति चेदाय तो पठी सूक्ष्मपुञ्जपरावर्त्तनुं स्वरूप पण सुखें समजी जाय, ते जणी बादर कह्या ठे. बीजुं जिहां पुञ्ज परावर्त्त काल शास्त्रें कह्यो ठे. तिहांतो सर्व सूक्ष्मपुञ्जपरावर्त्त लेवा, केंमके तेहिज शास्त्रमां उपयोगी ठे. जे सम्यक्त्व पाभ्या पठी किंचिन्न्यून अर्द्ध पुञ्जपरावर्त्त मात्र संसार मथ्यें रहे, एम कहुं ठे, ते पण सूक्ष्म क्षेत्रपुञ्जपरावर्त्तनुं अर्द्ध जाणवुं ते चारे जातिना सूक्ष्म पुञ्ज परावर्त्त माहेलो एकेक केटले कालें होय, तेनुं मान कहे ठे.

उत्सर्पिणी कहेतां जिहां नरत ऐरवतना मनुष्यने चढतुं शरीरमान, आयु तथा सुख वधतुं जाय. तेने उत्सर्पिणी काल जाणवो. तिहां प्रथमं दुःखमां दुःखमां आरो एकवीश हजार वर्षनो, बीजो दुःखमां आरो एकवीश हजार वर्षनो त्रीजो दुःखमां सुखमां आरो एक कोडाकोडीसागरोपम वेंतालीश हजार वर्षे न्यूननो, चोथो सुखमां दुःखमां आरो वे कोडाकोडीसागरोपमनो, पांचमो सुखमां आरो त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो अने षष्ठो सुखमां सुखमां आरो चार कोडा

कोडी सागरोपमनो. एम जिहां चढतो चढतो काल ते उत्सर्पिणीकाल कहीयें, अने जिहां प्रथम सुखमासुखमा आरो होय, अने ठो छो दुःखमादुःखमा आरो होय, ते अवसर्पिणी पडतो काल जाणवो. तेहवी अनंती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी एटले अनंता कालचक्र प्रमाण एकेक पुजलपरावर्त्त ते अनंतानंतचेदें ठे. तेथी ए म थ्यें पण कालनुं अल्पवदुत्व कथ्युं ठे. ते विरुद्ध नथी, जे नथी इव्य पुजल परावर्त्तकालस्तोक, तेथी अनंतगुणो क्षेत्र पुजलपरावर्त्तकाल जाणवो, तेथी काल पुजलपरावर्त्तनो काल अनंतगुणो जाणवो, तेथकी नावपुजल परावर्त्तनो काल अनंत गुणो जाणवो. ए जीवने अतीतकालें नाव पुजलपरावर्त्त अनंतां थयां, तेथी अनंतगुणां कालपुजल परावर्त्त थयां, तेथी अनंतगुणां क्षेत्र पुजलपरावर्त्त थयां, तेथी अनंतगुणां इव्यपुजल परावर्त्त थयां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७६ ॥

दवे प्रथम इव्यथी बादर तथा सूक्ष्म पुजलपरावर्त्तनुं स्वरूप कहे ठे.

उरलाइ सत्त गेणं, एग जिउं मुअइ फुसिय सव अणू ॥

जित्तिअ कालि स थूलो, दवे सुहुमो सगऽन्नयरा ॥ ७७ ॥

अर्थ—(उरलाइसत्तगेणं के०) औदारिकादिक वर्गणाना पुजल सात प्रकारें करीने (एगजिउं के०) एक जीव, (फुसिय के०) स्पर्शीने (मुअइ के०) मूके, (सवअणू के०) लोकमाहेला सर्व परमाणुआने (जित्तिअकालि के०) जेटले कालें स्पर्शीने मूके, (स के०) तेकालनुं मान, (थूलो के०) स्थूल एटले वादर, (दवे के०) इव्यथकी पुजलपरावर्त्त जाणवुं, अने इव्यथकी (सुहुमोसगऽन्नयरा के०) सूक्ष्म पुजलपरावर्त्त एथी अन्यतरें करीने थाय ॥ इत्यह्वरार्थः ॥ ७७ ॥

औदारिक, वैक्रिय, तैजस, नापा, श्वासोब्वास, मन अने कार्मण, ए सात प्रकारें सर्व लोकमाहेला परमाणुनेद संघातें तथा बादर सूक्ष्म परिणमने क री स्वस्व वर्गणा योग्य परिणतस्कंध औदारिकादिक नोकर्म पणो तथा कार्मण पणो जेटले कालें एक जीव अनंत नव व्रमण करतो परिणमावी ग्रही स्पर्शी मूके, तेने बादर इव्य पुजलपरावर्त्त कहीयें. तिहां जे एक वेला ग्रह्या, एवा जे पुजल तेने फरी वीजी वेला ग्रहण करे, ते ग्रहीतग्रहणादार तथा पूर्वे केइ ग्रहण कखा केइ अग्रहण कखा एवा पुजलने ग्रहे, ते मिश्रग्रहणादार, तथा जे पूर्वे अग्रहण करेला ग्रहे, ते अग्रहीत ग्रहणादार, तिहां गृहीत ग्रहणादार तथा मिश्र ग्रहणादार अतिकमीने जे अग्रहीत ग्रहणादारें पुजल ग्रहण करे, ते लेखे लेखववा

एटले लेखामां गणवा. एम एक औदारिक पयो बीजो वैक्रियपयो. त्रीजो तैजस पयो, चोथो जाषा पयो, पांचमो श्वासोद्वासपयो षष्ठो मनपयो, अने सातमो कार्मण पयो, ए सात परिणाम, एकेक अणुना थाय. एम सर्वलोक वर्ति पुजल इव्यना सात परिणमन एक जीव पूर्ण करे, तेवारें बादर इव्यपुजल परावर्त्त पूर्ण थाय. अहींथां आहारक शरीर तो संसारमांहे वसतो जीव, चार वेला करे, तेवारें तेणे करी सर्व पुजलनी परावर्त्ति न होय, तेथी ते न लीधो.

तथा जेवारें सर्वलोक वर्ति अणुने औदारिकादिक पयो परिणमावे, पण एटलुं विशेष जे औदारिकपयो परिणमावतां वचले जवें जे जे वैक्रियादिक पुजल ग्रहण करे, तें कोइ लेखामां नावे. एम अनंत जवें करी सर्वलोकना अणु औदारिकपयो परिणमावी ग्रही स्पर्शी मूके, तेवारें प्रथम औदारिक सूक्ष्म इव्य पुजल परावर्त्त थाय. वलतुं एज रीतें सर्वाणु वैक्रियपयो परिणमावी ग्रहीने मूके, तेवारें बीजुं वैक्रिय पुजल परावर्त्त थाय. एमज तैजस शरीर पयो परिणमावी ग्रहीने मूके, तेवारें त्रीजुं तैजस पुजलपरावर्त्त थाय. एमज जाषादल पयो सर्वाणु परिणमावी ग्रहीने मूके, तेवारें चोथुं जाषापुजलपरावर्त्त थाय. एमज पांचमुं श्वासोद्वास, षष्ठुं मन अने सातमुं कार्मण पुजलपरावर्त्त पण जाणवुं. तिहां सर्व थकी कार्मणपुजलपरावर्त्तकाल अनंतो ठे परंतु बीजानी अपेक्षायें स्तोक. तेथकी तैजस पुजलपरावर्त्तकाल अनंतगुणो, तेथकी औदारिक पुजलपरावर्त्तकाल अनंतगुणो, तेथकी श्वासोद्वास पुजलपरावर्त्त काल अनंतगुणो, तेथकी मनःपुजलपरावर्त्त काल अनंतगुणो, तेथकी जाषापुजलपरावर्त्तकाल अनंतगुणो, तेथकी वैक्रियपुजलपरावर्त्त काल अनंतगुणो जाणवो. कार्मण पुजलपरावर्त्त सर्व जवें ग्रहण करे, तेथी तरत पूराय अने ते कार्मणदलथकी तैजस अनंतगुणो हीन पुजल ठे, ते नणी अनंत गुण कालें पूराय, एम पोतानी मतियें विचारीने कहेवुं. अतीतकालें एक जीवने अनंता वैक्रिय पुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां जाषा पुजलपरावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां मनःपुजलपरावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां श्वासोद्वास पुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां औदारिक पुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंत गुणां तैजसपुजल परावर्त्त थयां, तेथकी अनंतगुणां कार्मण पुजल परावर्त्त थयां. एम अतीतकालें अतिक्रम्या. अहींथां कोइएक आचार्य एम कहे ठे के औदारिक वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए चार शरीरपयो सर्वलोकवर्त्ति परमाणु जे ग्रहे, ते तेना लेखामांहे गणाय. एम करी सर्व परमाणु चार शरीरपयो परिणमावी ग्रही

ने मूके, ते बादर इव्य पुञ्ज परावर्त्त अने अनुक्रमें एक शरीर पणो परिणमावे ते लेखामांहे गणाय. एवी रीतें सर्वाणु एक शरीरपणो जेवारें परिणमावी रहे, तेवार पढी वली बीजा शरीरपणो परिणमावे, पण औदारिक परावर्त्तमध्यें वैक्रियादिक पुञ्ज लीये, ते लेखामांहे गणाय नहीं, एम अनुक्रमें चारे प्रकारें सर्वाणु परिणमावतां सूक्ष्मपुञ्ज परावर्त्त थाय ॥ इत्यर्थः ॥ ८७ ॥

हवे बादर तथा सूक्ष्म क्षेत्रादिक त्रण पुञ्ज परावर्त्तुं स्वरूप कहे ठे.

लोग पएसो सप्पिणि, समया अणु नाग बंध छाणाय ॥

जह तह कम मरणेणं, पुढा खित्ताइ थूलियरा ॥ ८८ ॥

अर्थ—(लोगपएसो के०) चौदराज लोकना आकाश प्रदेश (सप्पिणिसमया के०) उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समय अने (अणुनागबंधछाणाय के०) अनुनाग बंधनां स्थानक, ते रसबंधना हेतु असंख्यातां अव्यवसाय स्थानक जाण वां. ए त्रणे (जहतह के०) जेम तेम आघा पाठा (मरणेणं के०) क्रमोत्क्रम मरणे करीने (पुढा के०) फरसी रहे, तेवारें (कम के०) अनुक्रमें (खित्ताइ के०) क्षेत्रादिक एटले क्षेत्रथी, कालथी अने नावथी (थूल के०) स्थूल एटले बादर पुञ्ज परावर्त्त थाय अने (इयरा के०) ए थकी इतर एटले ए त्रणे अनुक्रमें ज मरण वेलायें फरसे, तेवारें ए त्रणे सूक्ष्म पुञ्ज परावर्त्त थाय ॥ इत्यर्थः ॥ ८८ ॥

सर्वलोकना आकाशप्रदेश एटले जे अंगुलघन आकाश खंढना प्रदेशापहार स मय समय प्रत्ये करतां पण असंख्यातां कालचक्र व्यतिक्रमी जाय, एवा सूक्ष्म नचः प्रदेश ठे. ते सर्व लोकना आकाश प्रदेशने जेवारें एक जीव, अनेक नवें करी स्प र्शें, एटले सर्व आकाशप्रदेशें मरण पामे, तेमांहे जे आकाश प्रदेशें एक वेला मरण पाम्यो, तेज आकाश प्रदेशें वली बीजी वेला मरण पामे, ते लेखामां न ग णाय, परंतु जे अस्पृश्य प्रदेशने स्पर्शी मरण पामे ते प्रदेश, तेना लेखामां गणाय. एम करतां सर्वलोकाकाश प्रदेशने मरणे करी स्पर्शें. अर्हीच्यां जो पण जीव अ संख्याता आकाश प्रदेश अवगाहीने रह्यो ठे तो पण मरणवेलायें एक प्रदेशनी मुख्यता लेवी. एने बादर क्षेत्र पुञ्जपरावर्त्त कहीयें.

अने जेवारें अनुक्रमें एटले जे आकाशप्रदेशें जीव एकवार मरण पाम्यो, ते ज आकाश प्रदेशनी श्रेणीयें जेवारें वली तेनी जोडना बीजा प्रदेशें बीजी वेला मरण पामे, ते लेखामां गणाय, परंतु बीजे स्थानकें बीजे नवें तेनी वचमां अ

संख्य लोकाकाश प्रदेशों असंख्य वेला मरण पामे, ते वचला मरणना प्रदेश ले खामांहे नावे. एम अनुक्रमे श्रेणीबद्ध प्रतर बद्ध प्रदेश मरणें करी स्पर्शतो थ को सर्व लोकाकाश प्रदेश स्पर्शें, तेवारें सूक्ष्म क्षेत्र पुञ्ज परावर्त्त थाय तेमध्ये अनं ता कालचक्र प्रमाण बादर पुञ्जपरावर्त्तथकी अनंतगुणो काल नीपजे.

हवे कालथकी पुञ्ज परावर्त्तनुं मान कहे ठे. वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमा ण कालचक्र ठे. तेना सर्व समय, मरणें करी जीव स्पर्शें, एटले पहेला समय थकी मांमिने ठेहला समय सुधी सर्व समयें मरण करे, परंतु जे समयें एक का लचक्रमांहे मरण पाम्यो, तेहीज समयें बीजा घणा कालचक्रमांहे मरण पामे. ते समय लेखामांहे गणाय नहीं. पण अनेरे समयें मरण पामे, ते लेखामां गणा य. एम कालचक्रना सर्व समय मरण वेलायें करी जेवारें एक जीव स्पर्शीं रहे, ते वारें कालथकी बादरपुञ्जपरावर्त्त थाय.

अने जेवारें ए कालचक्रने पहेले धुरले समयें मरण लही वली जेवारें केवा रेंक कोइ कालचक्रने बीजे समयें मरण पामे, ते लेखामां गणाय. तेमज कोइ कालचक्रने त्रीजे समयें जीव मरण पामे, ते लेखामां गणाय. परंतु वचला आगल पाठलना समयें अनेक मरण करे, ते लेखामां गणाय नहीं. एम वली जेवारें कोइ ए क कालचक्रने चौथे समय मरण लहे, पांचमे समय मरण लहे, यावत् कालचक्रना ठेहला समय पर्यंत अनुक्रमे सर्व समय मरणें करी स्पर्शें. अर्हींआं कोइक कालच क्र दीठ एक समय लेखामां आवे अने वचालें संख्याता. असंख्याता, यावत् अनंत कालचक्रना मरण पण लेखामां न आवे, परंतु जेवारें आगल जे समयें मरण पाम्यो होय, तेने आगले समयेंज जेवारें मरण पामे, तेवारें तेज लेखामां आवे. एम असंख्याते मरणें पण अनंतां कालचक्र व्यतीत थइ जाय. तावत् कालप्र माण सूक्ष्म काल पुञ्जपरावर्त्त थाय.

हवे नावथी सूक्ष्मबादरपुञ्जपरावर्त्त कहे ठे. रसबंध हेतु काषायिक अथ्य वसायस्थानक मंद, मंदतर, मंदतमना चेदें असंख्यात लोकाकाश प्रमाण ठे जे न णी सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपमना समय प्रमाण स्थितिस्थानकें असंख्याता र संबंधहेतु अथ्यवसाय स्थानक ठे. ते सर्व अथ्यवसाय स्थानक मरणें करी अनु क्रमे स्पर्शें एटले ते रसबंधनां स्थानक केवारेंक मंद, मंदतम, मंदतर, तीव्र, तीव्र तम, तीव्रतर, एवे स्थानकें मरण पामतो जेवारें एक जीव, सर्व स्थानक फरसी रहे तेवारें नावथकी बादरपुञ्जपरावर्त्त थाय.

अने जेवारें प्रथम जघन्य अध्यवसायें मरण पामाने वली जेवारें कोइएक कालां तरें तेथकी चढते बीजे अध्यवसायस्थानकें मरण पामे ते लेखामांहे गणाय, तेवार पढी वली कोइक कालांतरें तेथकी चढते त्रीजे अध्यवसायस्थानकें वर्त्ततो मरण पामे ते लेखामांहे गणाय, परंतु बीजा आधा पाढा अध्यवसायें मरण पामे ते लेखामां न गणाय, एम अनुक्रमें निरंतर पणो जघन्यथी उत्कृष्ट अध्यवसाय स्थानक पर्यंत सर्व कर्मना असंख्याता रसबंधनां अध्यवसाय स्थानक ठे. ते अनुक्रमें मरणें करी स्पर्शें तेनी वचालें जे तेज अध्यवसायें तथा सांतर अध्यवसाय स्थानकें अनंता मरण करे, ते पण लेखामां न आवे परंतु जे पूर्वलो अध्यवसाय होय, तेथकी चढते अध्यवसायें मरण पामे तोज ते लेखामां आवे, एम अनुक्रमें सर्व अनुजाग बंधस्थानक, जन्म अथवा मरणें करी स्पर्शें, तेवारें जावथी सूक्ष्मपुञ्जलपरावर्त्त आय. ए रीतें आठ पुञ्जल परावर्त्त कहां.

तथा ग्रंथांतरें जवपरावर्त्त कथुं ठे. ते कोइएक जीव नरकादिकगतिने विषे दश सहस्रवर्ष जघन्यायुथी समयाधिक समयाधिक स्थिति वधारतां नेवुं हजार वर्षनी स्थिति पर्यंत तथा दश लक्ष वर्ष स्थितिथकी समयाधिक समयाधिक तेत्रीश सागरोपम स्थितिने आउखे सर्वे नरकायु स्थितिना स्थानकें नारकीना जवें करी तथा देवगति मध्ये दश हजार वर्षायुथी जइ समयाधिक समयाधिक एकत्रीश सागरोपम जगें सर्वदेवायुस्थितिनां स्थानकें देवजवें करी तेमज मनुष्य तिर्यचगति मध्ये जघन्य दुल्लक जवथी लेइने समयाधिक समयाधिक मनुष्य तिर्यकूनी यावत् त्र ए पद्योपमायुस्थिति जगेंनां स्थानकें मनुष्य तिर्यचना जवें करी एम सर्वायुस्थानकें अनुक्रमें स्पर्शतो बादरजव पुञ्जल परावर्त्त आय, अने समयाधिक समयाधिक स्थिति अनुक्रमें एकेक गतिना क्रमें क्रमें करी आयुनां सर्वस्थानक स्पर्शतो चारे गतिना सर्वायुस्थानक जीव स्पर्शें, तेवारें सूक्ष्म जव पुञ्जल परावर्त्त आय, ए आशांवर मत्तें मान्यो ठे, ते अंहीं प्रसंगें जाणवा निमित्त लखुं ठे, ए रीतें उपोद्घात संग तें तथा प्रसंगसंगतें पद्योपम, सागरोपम तथा पुञ्जल परावर्त्तादिकनां स्वरूप कहां.

प्रकारांतरें वली पांच वर्षां, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, अने अगुरुलघु, ए बावीश जेदें करीने सर्वलोकवर्त्ति पुञ्जल परमाणुआ फरशी मूके, तेवारें जावथी बादर पुञ्जल परावर्त्त आय, अने ए बावीशमांहेथी एकेका पणो अनुक्रमें सर्व पुञ्जल फरशीने रहे, तेवारें जावथी सूक्ष्म पुञ्जलपरावर्त्त आय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८८ ॥

हवे जे प्रदेश बंधनो अधिकार कहेतां थकां ते मध्ये जे प्रकारें जीव, उत्कृष्ट

प्रदेश बंध करे, अने जेह्वो थको जे प्रकारें जीव, जघन्य प्रदेश बंध करे, ते प्रकार कहे ठे. जे नणी प्रदेशबंधतो योग प्रत्ययियो ठे तेथी योगवृद्धियें प्रदेश वृद्धि होय अने सर्व जीवजेद मध्ये सन्नीआ पंचेंडिय पर्याप्तानुं उत्कृष्ट योगस्थानक होय, बीजा जीवजेद सर्व एथी. हीनयोगी ठे. ए स्वरूप जणाववाने गाथा कहे ठे.

॥ अथोत्कृष्टजघन्यप्रदेशबंधस्वरूप माह ॥

अप्यर पयडि बंधी, उक्कड जोगीअ सन्नि पज्जत्तो ॥

कुणइ पए सुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥ ८९ ॥

अर्थ—(अप्यरपयडिबंधी के०) अल्पतर एटले घणी थोडी प्रकृति बांधतो होय एटले प्रकृति थोडी बांधाती होय तिहां अबंधाती सजातीय प्रकृतिना दलजाग, ते बांधाती प्रकृतिनें जागें घणा जाजे, तेथी तेने प्रदेशनी वृद्धि होय, तथा ते पण (उक्कडजोगीअ के०) उत्कृष्टयोगी एटले उत्कृष्ट योगस्थानकें वर्त्ततो उत्कृष्ट जीवव्यापारें करी घणा कर्मप्रदेशनुं ग्रहण करे, जेम जोरा वर पुरुष, तृणादिक संग्रह करतो बीजा निर्बल पुरुषनी अपेहार्यें घणा तृणादिकनी संग्रह करी शके, तेम मंद योगी जीवनी अपेहार्यें उत्कृष्ट योगी जीव, घणां कर्मदल ग्रहण करे, तेथी ते लीधो. ते पण (सन्नि के०) सन्नी पंचेंडिय जीव होय, जे नणी जे जीव, मन सहित होय तेमन लगावीने जे कार्य करे, ते कार्य करतां बीजुं अनाजोगें जे कार्य करे, तेनी अपेहार्यें आजोगें जे कार्य करे, तेनी उत्कृष्ट चेष्टा होय. अने तिहां प्रदेशबंध अधिक होय ते मध्ये पण वली (पज्जत्तो के०) पर्याप्तियें करी पूर्ण होय, तेवारें तेने योग प्रबलतायें प्रदेश पण घणा जेवराय एने अपर्याप्तावस्थायें पण अंतरमुहूर्त सुधी समय समय प्रत्यें असंख्या तगुणवृद्धे योग वधे, एटले सन्नीठ पंचेंडिय पर्याप्तो, उत्कृष्ट योगस्थानकें वर्त्ततो पोताना बंधयोग्य स्थानकमांहे अल्पसंख्यायें प्रकृति बंधस्थानकें वर्त्ततो एवो जीव (कुणइपएसुक्कोसं के०) उत्कृष्टप्रदेशबंध करे.

अने (जहन्नयं के०) जघन्य प्रदेशबंधतो (तस्स के०) ते उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामिनी प्रदेशबंध सामग्रिने (वच्चासे के०) विपर्यासें विपरीतपणे एटले सन्नीआथी विपरीत असन्नीआ लेवो तथा पर्याप्ताने स्थानकें अपर्याप्तो लेवो अने उत्कृष्ट योगीने स्थानकें मंदयोगी लेवो, एटले असन्नीआ लेवो, तेमांहे पण अपर्याप्तो लेवो, ते पण वली प्रथम समयें घणो मंदयोगी होय, तेथी योग मंद

तार्थे करी तथा मनोयोगने अनावें करी कर्मदल थोडां ग्रहण करे, तेपण पोता ना बंधस्थानक मध्ये बहु संख्येय प्रकृति बंध स्थानके वर्ततो होय ते जेवो. एटले घणी प्रकृति बांधतां थोडुं दल घणी प्रकृतिना जागें वहेचतां अल्प दल जाग आवे, तेथी ते जीव, जघन्य प्रदेशबंध करे ॥ इति समुच्चयार्थः॥ ८५ ॥

एम सामान्यपणे कर्मप्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध तथा जघन्य प्रदेशबंधनो उ पाय कही, हवे मूलोत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध, जे गुणगणे जीवने होय ते कहे ठे. तेमध्ये पण मूलप्रकृति आठ अने उत्तर प्रकृति एकशोने वीशना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कहेवाने अवसरें सूची कटाह न्यार्ये अल्प वक्तव्यता जणी प्रथम आयुःकर्मनी मूलोत्तर प्रकृतिना बांधनार गुण स्थानकनी अपेक्षार्ये कहे ठे, एटले कया कया गुणगणे आयुःकर्मना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी होय? ते कहे ठे. तेमध्ये मिश्रगुणगणे तो आयुनो बंध न होय. अने सास्वादाने पढतां घोलना योगीने होय खरो, तो पण तेथें तिहां उत्कृष्ट योगने अनावें तथा अल्प काल जावी पणे अथवा बीजे कोइ कारणें ग्रंथकारें उत्कृष्ट प्रदेशबंध निषेधो ठे जे जणी कोइएक आचार्यने मते सास्वादानगुणगणे पण उत्कृष्ट प्रदेश बंध मान्यो ठे. ते मत अहीं उवेखवो मिश्र तथा सास्वादन, ए बे गुणगणां सू कीने शेष गुणगणें आयुःकर्मना उत्कृष्ट प्रदेशबंधक, गाथार्ये करी कहे ठे.

॥ अथ मूलोत्तरप्रकृतीनामुत्कृष्टप्रदेशबंधस्वामीनाह ॥

मिह अजय चउ आउ, बि ति गुण विणु मोहि सत्त मिह्नाइ ॥

गहं सतरस सुहुमो, अजया देसा बि ति कसाए ॥ ८६ ॥

अर्थ—(मिह के०) एक मिथ्यात्वगुणगणुं अने बीजा (अजयचउ के०) अविरत्यादिक चार गुणगणां, एटले बीजुं अविरति, त्रीजुं देशविरति, चोथुं प्रमत्त अने पांचमुं अप्रमत्त, ए पांच गुणगणें वर्ततो संज्ञी पंचेंद्रिय जीव, उत्कृष्टयो गस्थानके वर्ततो (आउ के०) आयुःकर्मनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध करे, जे जणी अपूर्वकरणादिक सात गुणगणां तथा मिश्रगुणगणुं, ए आठ गुणगणे आयुनो बंधज नथी अने सास्वादाने उत्कृष्टयोगने अनावें उत्कृष्ट प्रदेश बंध न होय, तथा (बितिगुणविणु के०) बीजुं सास्वादन, त्रीजुं मिश्र, ए बे गुणगणा विना शेष (मिह्नाइ के०) १ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ देशविरति, ४ प्रमत्त, ५ अप्रमत्त, ६ निवृत्ति, ७ अनिवृत्ति, ए (सत्त के०) सात गुणगणे सात कर्म बांधतो एवो सं

झी पंचेंद्रिय जीव सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्तो, (मोहि के०) मोहनीय कर्मनो उत्कृष्टप्रदेश बंध करे, अर्द्धांसां सास्वादन तथा मिश्रगुणगणे उत्कृष्ट योग न लाजे, तेथी उत्कृष्टदल संचय करी न शके ते जणी निषेध्या; जे जणी मोहनीय नी सत्तर प्रकृति मिश्रें तथा अविरति गुणगणे बंधाय ठे, अने जो मिश्रें उत्कृष्ट योगस्थानक होत तो चोधानी परें त्रीजे गुणगणे पण अप्रत्याख्यानीया कषाय नो उत्कृष्ट प्रदेशबंध कहेत पण ते न कह्यो, तेथी जाणीयें ठैयें. जे मिश्रगुण गणे उत्कृष्टयोग नथी तथा आयु अने मोह विना शेष (ठाहं के०) ठ मूल कर्मप्रकृतिनो उत्कृष्ट योगी एवो संझी पंचेंद्रिय पर्याप्तो जीव, उत्कृष्ट प्रदेशबंध करे,

एम मूलप्रकृतिना उत्कृष्टप्रदेश बंध स्वामी कही, हवे उत्तर प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कहे ठे. ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, अंतराय पांच, एक शातावेदनीय, एक उच्चैर्गौत्र अने एक यशःकीर्त्ति, ए (सत्तरस के०) सत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वामी (सुहुमो के०) सूक्ष्मसंपराय गुण स्थानकवर्त्ति मनुष्य उत्कृष्ट योगी होय, जे जणी आयु अने मोहनीयना दलनो जाग पण ठ कर्मने आवे, तथा पांच निदानो जाग चार दर्शनावरणीयने आवे तथा नामकर्मनी सर्व प्रकृतिनो जाग, एक यशःकीर्त्तिने आवे, तेथी प्रदेशबहुलता थाय.

(अजया के०) अविरति सम्यक्दृष्टि गुणगणे वर्त्ततो उत्कृष्टयोगी पर्याप्तो संझी पंचेंद्रिय जीव, (बि के०) बीजी अप्रत्याख्यानावरणीय कषायनी चोकडीनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध करे जेजणी एना बंधकमाहे एहिज अल्पप्रकृति बंधक पणुं ठे तेथी अ नंतानुबंधीया चार अने मिथ्यात्व मोहनीय, ए पांचना प्रदेश एने अधिक आवे, तथा (देसा के०) देशविरतिगुणगणे वर्त्ततो मनुष्य, तिर्थेच उत्कृष्टयोगी सात मूल प्रकृति बांधतो (तिकसाए के०) त्रीजी प्रत्याख्यानावरण कषायनी चो कडीनो उत्कृष्ट बंधक होय, एना बंधकमाहे एहिज अल्प प्रकृति बंधकपणुं ठे तेथी शेष आठ कषायना दल जाग एने आवे तथा आयु अने मिथ्यात्वनो पण अंश अधिक आवे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १० ॥

पण अग्निअष्टी सुख गइ, नराठ सुर सुजग तिग विठ

वि छगं ॥ सम चउरंस मसायं, वइरं मिहोव सम्मोवा ॥ ११ ॥

अर्थ- पुरुषवेद अने संज्वलना कषायनी चोकडी, ए (पण के०) पांच मोहनीय कर्मनी उत्तर प्रकृतिनो (अग्निअष्टी के०) अनिवृत्तिनामा नवमा गुणगणाना पांचे

जागें अनुक्रमें उत्कृष्टप्रदेश बंध होय, तेमध्ये अनिवृत्तिना प्रथमजागें हास्यादिक चार प्रकृतिना अधिक जाग लाजे, तेथी पुरुष वेदनो उत्कृष्टप्रदेश बंध होय अने बीजे जागें पुंवेदबंध विद्वेद थये थके बार कषायना दलिकना जाग आवे, तेमां क्रोध कषायनो जाग क्रोधने लाजे, तेणे उत्कृष्ट प्रदेश बंध होय, त्रीजे जागें संज्वलनक्रोधनो जाग वली अधिक लाजे, तेथी माननो उत्कृष्ट प्रदेशबंधक होय. चौथे जागें वली संज्वलना माननो बंध पण संज्वलनी मायाने आवे, तेथी तेनो उत्कृष्ट प्रदेश बंधक होय. पांचमे जागें समस्त मोहप्रकृतिनो जाग संज्वलना लोचने आवे, तेथी तेनो उत्कृष्टप्रदेश बंध होय. एम त्रीश प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध कद्यो.

(सुखगइ के०) शुनविहायोगति, (नराउ के०) मनुष्यायु, (सुंरसुजगतिग के०) सुरत्रिक अने सौजाग्यत्रिक, (विठविडुगं के०) वैक्रियदिक, (समचउ रंस के०) समचतुरस्रसंस्थान, (मसायं के०) अशातावेदनीय, (वइरं के०) वज्ररूपनाराच संघयण, ए तैर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेश बंधक (मिहोवस र्मोवा के०) मिथ्यात्वी अथवा सम्यक्दृष्टि उत्कृष्ट योगी जीव होय. तेमध्ये देवायु तथा नरायु ए बे प्रकृतिना स्वामी अष्टाविध बंधक अने शेष अगीआर प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी सप्तविध बंधक जाणवा. अहींआं आयुःकर्म ना दल जाग अधिक लाजे, तेमाटें. तथा ते मध्ये पण १ देवगति, २ देवानु पूर्वी, ३ वैक्रियशरीर, ४ वैक्रियअंगोपांग, ५ समचतुरस्रसंस्थान, ६ शुनखगति, ७ सुजग, ८ सुस्वर, ९ आदेय, ए नव प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी तो देव प्रायोग्य नामकर्मनी अष्टावीश प्रकृति बांधतो होय, तेमां नव प्रकृति तो एहिज बांधे. ते जीव होय जे जणी त्रेवीश अने पच्चीशादिक प्रकृतिना बंधस्थानकें ए नव प्रकृतिनो बंध नथी अने देव प्रायोग्य अंगणत्रीश, त्रीश तथा एकत्रीशादिक प्रकृतिना बंध स्थानकें ए नव प्रकृतिनो बंध बे खरो, परंतु तिहां घणी प्रकृतिने बंधें घणे जागें वहेचतां अल्प प्रदेश जाग आवे तेथी ते बंधक न लीधा. तथा वज्ररूपनाराच संघयणनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी मनुष्य, प्रायोग्य अंगणत्रीश प्रकृति बांधतो एवो सम्यक्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि जीव होय, तथा तिर्थेच प्रायोग्य अंगणत्रीश बांधतो मिथ्यादृष्टिज होय. तिहां मनुष्य प्रायोग्य अंगणत्रीशनां नाम कहे ठे. १ मनुष्यदिक, ४ औदारिकदिक, ५ पंचेंद्रियजाति, ६ तैजस, ७ कर्मण, ८ वज्ररूपनाराचसंघयण, ९ समचतुरस्रसंस्थान, १० वर्ण, ११ गंध, १२ रस, १३ स्पर्श, १४ अगुरुलघु, १५ उपघात, १६ पराघात, १७ उद्धास,

१८ शुनखगति, १९ त्रस, २० बादर, २१ पर्याप्त, २२ प्रत्येक, २३ निम्नीण,
 २४ सौनाग्य, २५ सुस्वर, २६ आदेय, २७ स्थिर अथवा अस्थिर, २८ शुन अ
 थवा अशुन, २९ यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति, ए मनुष्य प्रायोग्य बांधतो स
 म्यक्दृष्टि तथा मिष्यादृष्टि जीव होय तथा तिर्यंच प्रायोग्य अगणत्रीश बांध
 तो तिहां मनुष्य द्विकने स्थानकें तिर्यंचदिक कहेवुं तथा मनुष्य प्रायोग्य बां
 धतां मिष्यादृष्टि जीव पण लेवो अने सास्वादन उक्कष्ट योग न होय, तेजणी
 ते न लीधो तथा त्रेवीश, पञ्चीशादिकना बंधस्थानकें प्रथम संघयणनो बंध न
 थो अने त्रीश, एकत्रीशना बंधस्थानकें प्रकृति जाग घणो होय, तेथी उक्कष्ट
 प्रदेशबंध न होय. तथा शाता वेदनीयनो उक्कष्ट प्रदेश बंधक सम्यक्दृष्टि तथा
 मिष्यात्वी सात कर्मनो बंधक होय, जोपण दशमे गुणठाणे उक्कष्ट योग ठे तो प
 ण तिहां उक्कष्टस्थिति बंध न होय तेथी प्रदेशबंध पण विवद्दयो नही. एम तें
 तालीश प्रकृतिना उक्कष्ट प्रदेशबंध स्वामी कहा ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ९१ ॥

निहा पयला ड जुअल, जयकुञ्जातिड संमगो सुजई ॥

आहार डगं सेसा, उक्कोस पएसगा मिडो ॥ ९२ ॥

अर्थ—(निहापयला के०) निहा अने प्रचला, (डजुअल के०) हास्य अने रति
 तथा शोक अने अरति, ए बे युगल एवं ड प्रकृति (जयकुञ्जा के०) सातमी
 जय, आवमी जुगुप्सा, (तिड के०) नवमुं तीर्थिकर नामकर्म, ए नव प्रकृतिनो
 उक्कष्ट प्रदेशबंधस्वामी (संमगो के०) सम्यक्दृष्ट्यादिक अपूर्वकरणांत पांच
 गुणस्थानकवर्ती जीव सात कर्मबांधतो आयु दलनो जाग अधिको लाजे, तेज
 णी. तथा निहा प्रचलाने चोथे गुणठाणे शीण-दीत्रिकना दलनो जाग अधिक
 होय, तथा मिश्रगुणठाणे पण शीण-दीत्रिकनो बंध नथी पण ते उक्कष्ट योगी
 न होय, तेजणी ते न कह्यो. तथा हास्यादिक बे युगल, जय अने जुगुप्सा, ए ड
 प्रकृतिनो पण मोहनियनी तेर प्रकृतिने बंधें तथा नव प्रकृतिने बंधें अल्पप्रकृति
 नणी जाग घणो आवे, तेजणी लेवो तथा जिननामकर्मनो उक्कष्ट प्रदेश बंधस्वामी
 सम्यक्दृष्टि मनुष्य देवगति प्रायोग्य जिननाम सहित उगणत्रीश प्रकृति बांधतो
 होय ते लेवो, जे नणी त्रेवीशादिक प्रकृतिनां बंध स्थानकें तो जिननाम कर्मनो
 बंधल नथी, अने त्रीश प्रकृति मनुष्य प्रायोग्य बांधतां तथा एकत्रीश देवगति
 प्रायोग्य बांधतां प्रकृति घणी होय, तेथी जागें दल स्तोक आवे तेथी ते न लीधा.

(सुजई के०) सुयति सुसाधु एटले प्रमाद रहित साधु अप्रमत्त अने अपूर्व
करण, ए बे गुणगणो वर्त्ततो उत्कृष्ट योगी देव प्रायोग्य त्रीश प्रकृति (आहार
डुगं के०) आहारकदिक सहित बांधतो बे समय सुधी उत्कृष्ट प्रदेश बंध करे,
शेष गुणगणो आहारकदिकनो बंध नथी, तेथी ते न लीधा तथा उत्कृष्ट योग
स्थानके जीव बे समय पर्यंतज रहे. पढी योगस्थानक फरे, तेथी सर्वत्र उत्कृष्ट
योगी बे समय सुधीज होय तथा एकत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानके प्रकृतिजागनी
बहुलताये अल्पदल लाजे, एम चोपन्न प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वामी कहा.

तेथकी (सेसा के०) शेष रही जे ढाशठ प्रकृति तेना (उक्कोसपएसगा के०)
उत्कृष्ट प्रदेश बंध स्वामी (मिहो के०) मिथ्यात्वी जीव पंचेंद्रिय पर्याप्तो उत्कृष्ट
योगी सात कर्म बांधतो बे समय लगे होय जेजणी ३ नरकत्रिक, ७ जाति चार,
११ स्थावरचतुष्क, १२ हुंमसंस्थान, १३ ठेवहुं संघयण, १४ आतप, १५ नपुंसक
वेद, १६ मिथ्यात्व, २० अनंतानुबंधीआ कषाय चार, २४ मध्यसंघयण चार,
२७ मध्यसंस्थान चार, ३१ दौर्जाग्यत्रिक, ३४ थीण-द्रीत्रिक, ३७ तिर्यचत्रिक,
३७ स्त्रीवेद, ३९ उद्योत, ४० कुखगति, ४१ नीचैर्गोत्र. ए एकतालीश प्रकृति मध्ये
शोल प्रकृतिनो बंध मिथ्यात्व प्रत्ययिठ अने पच्चीश प्रकृतिनो बंध अनंतानुबंधी
प्रत्ययिठ ठे, ते मिश्रादिक गुणगणो न बंधाय अने सास्वादन गुणगणो उत्कृष्ट यो
गने अजावे उत्कृष्ट प्रदेश बंध न होय, तेजणी एनो स्वामी मिथ्यात्वीज कहा.

तथा शेष पच्चीश प्रकृतिनो बंध, जोपण सम्यक्त्वादिक गुणगणो ठे. तो पण १
औदारिक, २ तैजस, ३ कर्मण, ७ वर्णचतुष्क, ७ अगुरुलघु, ९ उपघात, १०
बादर, ११ प्रत्येक, १२ अस्थिर, १३ अशुज, १४ अयश, १५ निर्माण, ए पंद
र प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध अपर्याप्तो एकेंद्रिय प्रायोग्य नामकर्मनी त्रेवीश प्र
कृति बांधतो थको मिथ्यात्वी जीव करे, जे जणी ४ स्थावरचतुष्क, ५ एकेंद्रिय
जाति, ६ हुंम संस्थान, ७ तिर्यचदिक अने पूर्वली पंदर, एवं त्रेवीश बांधता हो
य, ते करे तथा पच्चीशादिकने बंधे जाग बाहुल्य आवे माटे अल्प दल लाजे.

तथा मनुष्यदिक, पंचेंद्रियजाति, औदारिक उपांग, पराघात, उन्नास, त्रस, अप
र्याप्त, स्थिर अने शुज, ए दश प्रकृतिनो मिथ्यात्वे पच्चीश नामकर्मनी प्रकृति अपर्याप्त
त्रस प्रायोग्य बांधतो उत्कृष्ट प्रदेश बंध करे, तेथी ए ढाशठ प्रकृतिना उत्कृष्ट प्र
देशबंध स्वामी मिथ्यात्वी कहा. एम उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्वामी कहा ॥ इति ॥ ए५॥

हवे जधन्य प्रदेशबंध स्वामी कहा थकी वचला सर्व मध्यम प्रदेशबंध स्वामी

मुखें समजाय ते जणी एकशोने वीश प्रकृतिना जघन्य प्रदेशबंध स्वामी कहे ठे.

॥ अथ जघन्य प्रदेशबंधस्वामीनाह ॥

सुसुणी छुनि असन्नी, नरय तिग सुराठ सुर विठवि छुगं ॥

सम्मो जिणो जहन्नं, सुदुम निगो आइखणि सेसा ॥ ९३ ॥

अर्थ-तिहां असन्नीठ अपर्याप्तो आपणी प्रकृतिना बंधक मांहे घणी प्रकृति बांधतो जघन्य योगें वर्त्ततो चार समय लगें रहे एटले जघन्य योगें उत्कृष्टो तो चार समय पर्यंत जीव रहे ते जणी सामान्यपणे ए जघन्य प्रदेश बंध स्वामी कह्यो ठे (सुसुणी के०) अप्रमत्त साधु घोलना योगी देवगति प्रायोग्य एकत्रीश प्रकृति बांधतो आहारक शरीर तथा आहारकोपांग, ए (छुनि के०) वे प्रकृतिनो जघन्यप्रदेश बंध करे, जे जणी एना बंधकमांहे एज जघन्य प्रकृतिनो बंधक होय (नरयतिग के०) नरकगति, नरकानुपूर्वीं अने नरकायु, ए नरकत्रिक तथा चोष्टु (सुराठ के०) देवायु, ए चार प्रकृतिनो जघन्य प्रदेशबंध स्वामी (असन्नी के०) असन्नीठ पंचेंद्रिय पर्याप्तो जीव, आठ कर्म बांधतो घोलना योगी जे एक योग थकी बी जे योगें संचार करतो होय ते घोलना योगी कहीरें. ते जघन्यथी तो एक समय लगें अने उत्कृष्ट तो चार समय लगें जघन्य प्रदेशबंध स्वामी होय, जे जणी जघन्य योगें जीव, चार समय उपरांत न रहे अने सन्नीआना जघन्य योग थकी असन्नीआनो उत्कृष्ट योग पण अस्संख्यात्तगुण हीन होय, तो वली जघन्य योग घणोज हीन होय, एमां छुं कहेवानुं ठे? ते जणी असन्नीठ लीधो तथा असन्नीआ अपर्याप्ताने तो ए प्रकृतिनो बंधज नथी ते जणी अपर्याप्तो न लीधो, अने एकेंद्रिया दिकने पण ए प्रकृतिनो बंध नथी तेजणी पंचेंद्रियज लीधो तथा आठ कर्म बांधतो वखतें घणा जागें कर्म दल थोडुं आवे, तेमाटें, आठ कर्मनो बंधक लीधो. (सुर के०) देवगति अने देवानुपूर्वीं, ए देवदिक तथा (विठविछुगं के०) वैक्रिय शरीर अने वैक्रिय अंगोपांग, ए वैक्रियदिक अने (जिणो के०) जिननाम कर्म, ए पांच प्रकृतिनो (जहन्नं के०) जघन्य प्रदेश बंध स्वामी (सम्मो के०) सम्यक्कृष्टि जीव जव प्रथम समय वर्त्ततो होय, तेमध्ये पण अनुत्तर विमान वासी देव पोताना जव प्रथम समयें स्वप्रायोग्य जघन्य वीर्यवंत थको जिननाम सहित मनुष्य प्रायोग्य अयोग्यत्रीश प्रकृति बांधतो जिननामसहित त्रीश बांधे, ते वारें जिननामनो जघन्य प्रदेशबंधस्वामी होय, जे जणी मनुष्य तो देव प्रायोग्य

अष्टावीश, अयोग्यत्रीश बांधे ठे पण जिननाम सहित त्रीश न बांधे, वली तिहां प्रकृति अल्प होय ते जणी मनुष्य न कह्यो, अने नारकी तो अनुत्तर देवयकी उत्कृष्ट योगी होय, तेथी ते घणा प्रदेश बांधे माटें ते पण न लीथो तथा चारित्रियाने आहारकदिक सहित अने जिननाम सहित देव प्रायोग्य एकत्रीशनो बंध होय तिहां जो पण प्रकृतिनी बहुलता होय, तोपण ते नव प्रथम समयना एवा अपर्याप्ता अनुत्तर सुरयकी उत्कृष्ट योगी होय, तेथी ते पण न लीथो. तेमाटें सम्यक्कृष्टि अपर्याप्ता अनुत्तरसुर जिननामनो जघन्य प्रदेशबंध करे, तथा शेष वैक्रियदिक अने देवदिक, ए चार प्रकृतिनो जघन्य प्रदेश बंध, सम्यक्कृष्टि मनुष्यनव प्रथम समयें वर्त्ततो करे, जे जणी शेष त्रण गतिना जीवने ए अयोग्यत्रीश प्रकृतिनुं बंध स्थानक होय परंतु त्रीश अने एकत्रीश प्रकृतिनो बंध तो पर्याप्तावस्थायें होय तिहां जघन्य योग न होय, तेथी अल्प प्रदेश बंध न करी शके, तेथी ए अपर्याप्तावस्थायें मनुष्यज एना स्वामी कहा.

तथा (सुद्धमनिगोआश्रवणितेसा के०) एथी शेष रहि जे एकशो ने नव प्रकृति तेनो जघन्य प्रदेशबंध स्वामी सूक्ष्म निगोदियो लब्धि अपर्याप्तो जीव आदि कृणें एटले नव प्रथम समयें वर्त्ततो होय, जे जणी पूर्वे अगीआर प्रकृति जे कही, तेनो बंध निगोदिआने नथी, तेथी तेना स्वामी निन्न कहा. अने (१०९) प्रकृतिनो बंध एने ठे तेथी एनो जघन्य बंधक स्वामी निगोदीओ कह्यो, केम के एथी अधिक जघन्य योग कोइ बीजा जीवने नथी ते मध्यें पण नव प्रथम समयें वर्त्ततो घणोज जघन्ययोगी होय, तेणे करी अल्प प्रदेश बंध करे तथा तेमा पण मनुष्यायु अने तिर्यंचाशु, ए बे प्रकृतिना अल्प प्रदेशबंधस्वामी नव प्रथम समयवर्त्ति जीव न होय जे जणी त्रण पर्यापत्ति पूर्ण कखा विना कोइ परजवायु बांधेज नहीं, तेमाटें ए बे प्रकृतिना जघन्य बंधकमध्ये अपर्याप्तो मात्र जेवो पण नव प्रथमसमय वर्त्ति न जेवो. एम सर्व प्रकृतिना जघन्य प्रदेश बंध स्वामि कहा ॥ ९३ ॥

हवे प्रदेश बंधने विषे सादि अनाद्यादिक जांगा विचारे ठे.

दंसण ळग जय कुडा, बि ति तुरिअ कसाय विग्घ नाणा
एण ॥ मूल ळगेऽणुक्कोसो, चउह डहा सेसि सवडं ॥ ९४ ॥

अर्थ—चहुदर्शनावरणादिक चार, दर्शनावरण तथा निडा अने प्रचला, ए (दंसण ळग के०) दर्शनावरणषट्क, (जयकुडा के०) जय अने छुगुप्ता, तथा (बि

तितुरिअकसाय के०) बीजा अप्रत्याख्यानावरण क्रोधादिक चार, त्रीजा प्रत्याख्यानावरण क्रोधादिक चार, चोथा संज्वलना क्रोधादिक चार, (विग्ध के०) पांच अंतराय, (नाणाणं के०) पांच ज्ञानावरणीय, एवं त्रीश उत्तर प्रकृतिनो तथा (मूल लठगे के०) एक ज्ञानावरणीय, बीजी दर्शनावरणीय, त्रीजी वेदनीय, चोथी नाम, पांचमी गोत्र अने ठही अंतराय, ए ठ मूलप्रकृतिनो (अणुवक्कोसो के०) अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध (चउह के०) चार जागे होय. तिहां ठ मूल प्रकृतिनो तथा पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण अने पांच अंतराय, एवं चौद उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध सूक्ष्म संपरायगुणगणो होय तथा संज्वलना चार कषायनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध, नवमे गुणगणो होय तथा निडा अने प्रचला, ए बे प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध आठमा गुणगणाने प्रथम जागे होय, तथा जय अने छुगुप्सा मोहनीयनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध, आठमा गुणगणाने सातमे जागे होय तथा प्रत्याख्यानावरण कषाय चारना उत्कृष्ट प्रदेशबंध, पांचमे गुणगणो होय तथा अप्रत्याख्यानावरण कषाय चारनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध, चोथे गुणगणो होय माटे जे अनादि मिथ्यात्वी जीव ते उत्कृष्ट प्रदेशबंधना स्थानक एवां गुणगणां नथी पाम्यो, तेने सर्वदा ए त्रीश प्रकृतिनो अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध अनादि जाणवो. जे जणी ते जीव, केवारें पण अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध थकी उत्कृष्ट प्रदेशबंधें नथी आब्या, तेथी तेने अनुत्कृष्टनी अनादि ठे ए प्रथम जंग जाणवो. अने जेणे थं थिजेव करी सम्यक्त्व पामी ए प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंध स्थानकें बे समय लगे उत्कृष्ट योगस्थानकें रहि तिहां उत्कृष्ट प्रदेश बंध करी वली योगस्थान परा वरें तथा अथ्यवसाय पडतां अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करे, तिहां सादि नामें बीजो जांगो जाणवो, तथा जिन अने जव्यने सांत जागे होय, जे जणी ते जीव गुणगणो चढतो उत्कृष्ट प्रदेश बंध करतो, तथा ते उत्कृष्ट प्रदेश बंधनो अंत पण करतो ते जणी तिहां अनुत्कृष्ट प्रदेश बंधनुं सांतपणुं जाणवुं. ए त्रीजो जांगो कह्यो. तथा अजव्य जीवने उपरजा गुणगणां पामवांज नथी तेथी तेने उत्कृष्ट प्रदेश बंध पण करवो नथी तथा बंधांत पण करवो नथी तेने अनुत्कृष्ट प्रदेशबंधनो अनंत नामे चोथो जांगो जाणवो. एम ए त्रीश उत्तरप्रकृतिनो तथा मूल ठ प्रकृतिनो अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध चार जागे कह्यो.

अने (सेसिसवठं के०) शेष सर्व त्रणे प्रकारना बंध, ते (डुहा के०) बे जागे होय. तिहां उत्कृष्ट प्रदेशबंध बे समय लगे होय, तेथी सादि अने सांत ए

बे जांगा होय तथा जघन्य योग चार समय जगें रहे, तिहां जघन्य प्रदेशबंध मिथ्यात्वे पामीयें. फरी अजघन्य बंध करे तिहां सादि अने सांत, ए बे जांगा बहु बंधने विषे होय. एम ए त्रण बंध बे जागें होय, ए पूर्वोक्त त्रीश प्रकृति विना शे प नेवुं प्रकृति रही. तेमध्ये तहोत्तेर प्रकृति अभ्रुव बंधिनी ठे. ते केवारेंक बंधाय अने कवारेंक न वंधाय, ते जणी एने विषे सादिसांत जांगो होय तथा एक मिथ्यात्व, शीण-क्षीत्रिक, अनंतानुबधीचतुष्क, ए आठ प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध सात कर्म बांधतां संझी मिथ्यात्वीने उत्कृष्ट योगें बे समय जगें होय, तेमाटें सादिसांत जांगा जाणवा तथा सूक्ष्म निगोदियाने जव प्रथम समयें जघन्य प्रदेश बंध होय अने बीजा जीवने अजघन्य प्रदेश बंध होय, एम ए चारे बंध आठ प्रकृतिना मिथ्यात्वगुणतापो पामीयें माटें सादि, सांत, ए बे जांगा जाणवा.

तथा नाम ध्रुवबंधिनी नव प्रकृतिनो अपर्याप्त एकेंदिय प्रायोग्य त्रैवीश प्रकृति ने बंधें उत्कृष्ट प्रदेशबंध, मिथ्यात्वीने होय अने जघन्य प्रदेशबंध सूक्ष्म निगोदियाने जव प्रथम समयें होय, तेपो सादि, सांत, ए बे जांगा जाणवा, एम उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट अने जघन्य प्रदेशबंधें सादि अने सांत, ए बे जांगा कहा. ते प्रायें व्यवहारीया जीवने संजवियें ठैयें. अन्यथा उत्कृष्ट प्रदेशबंध सन्निध्या जीवने होय अने अनादि निगोदियाने जीवें तो संझीपणुं पाम्युंज नधी, तो तेउत्कृष्ट प्रदेशबंध कयां करे? तेषी तेने अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध पण चार जांगे संजवे, ते अहींयां न कह्यो.

एम योगवृद्धियें प्रवेश वृद्धि होय ते जणी हवे योगस्थानकनुं स्वरूप कहे ठे.

अथ योगस्थानान्याह हवे योगस्थानकनी संख्या कहे ठे.

सेढि असंखिऊंसे, जोगघाणाणि पयडि ठिइ जेच्या ॥

ठिइ बंधध्रुवसाया, अप्पुजाग ठाण असंख गुणा ॥ ए५ ॥

अर्थ—(सेढिअसंखिऊंसे के०) श्रेणीने असंख्यातमें जागें जेटला आकाश प्रदेश होय, ते घनीकृतलोकनी एक प्रदेशिक श्रेणी तेने सूची श्रेणी सातराज प्रमाण नी कहीयें तेने असंख्यातमें जागें जेटला आकाश प्रदेश ठे तेटला (जोगघाणाणि के०) योग स्थानक होय, ते जावीयें ठैयें. सर्वथी अल्पवीर्यवान् जव प्रथम समयें वर्त्ततो एवो सूक्ष्मनिगोदित लब्धि अपर्याप्तो जीव, तेना असंख्याता जीव प्रदेश ठे तेमध्ये पण जे सर्वे जघन्य वीर्य प्रदेश एटले जे प्रदेशमां सर्वथी जघन्य वीर्य होय, तेना वीर्यना अंश केवलीनी प्रज्ञारूप शस्त्रें करी ठेदतां एटले केवलीयें क

ल्प्यो जे वीर्यविनाग अर्थात् जे वीर्याशनो अंश केवली पण कल्पी न शके तेने
 जावाणु पण कहीये. तेहवा लोकने असंख्यातमे नागें वर्तता जे असंख्याता प्रत
 र, तेना प्रदेश प्रमाण वीर्याशें करी सहित ते पण असंख्याता अथा, परंतु ते अ
 संख्याताने असत्कल्पनायें दश कल्पियें तेवा दश वीर्याश सहित एवा जे जीवना
 प्रदेश असंख्येय प्रतरप्रमाणनो समुदाय परंतु असत्कल्पनायें तेने त्रण मांभीयें ते
 नी प्रथम जघन्य वर्गणा जाणवी, तेथकी वली एक वीर्याशें अधिक वीर्यवंत जीव
 प्रदेशनो समुदाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी, तेथकी वली एक वीर्याशें अधिक
 जीव प्रदेशना समुदायनी त्रीजी वर्गणा जाणवी. एम एकेक वीर्याशें अधिक अधि
 क जीव प्रदेशनी समान जातिरूप वर्गणा तेवी घनीकृत लोकनी एक प्रदेशिक श्रे
 णी तेना असंख्यजाग प्रदेश प्रमाण वर्गणा जेवारें थाय, तेवारें असत्कल्पनायें
 तेने ढ वर्गणा थापीयें तेने प्रथम स्पर्शक कहीयें जे जणी एकोत्तर वीर्यविनाग
 वृद्धियें करीने परस्परें स्पर्श करे एवी वर्गणाने स्पर्शक कहीयें ए प्रथम स्पर्शक
 नी चरम उत्कृष्ट वर्गणाने विषे जेटला वीर्य विनाग ठे. ते थकी एक, बे थावत्
 संख्याते वीर्याशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेश न पामीयें परंतु तेथकी असंख्य
 लोकाकाश प्रदेश प्रमाण वीर्याशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेश पामीयें तेवा समा
 न वीर्य विनागें युक्त जीव प्रदेशना समुदायनी वर्गणा ते बीजा स्पर्शकनी प्रथम
 वर्गणा जाणवी. तेथकी वली एक वीर्याशें अधिक वीर्यवंत जीव प्रदेशनो समु
 दाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी. एम एकेक वीर्याशें वधते जीव प्रदेशना समुदा
 यनी वर्गणा, ते जेवारें लोकाकाशनी श्रेणीना असंख्येय जाग वर्ति प्रदेश राशि
 प्रमाण वर्गणानो समुदाय थाय, तेवारें बीजो स्पर्शक थाय, ते पठी बीजा स्पर्श
 कनी चरम वर्गणाथकी वली असंख्यलोकाकाश प्रदेश तुल्य वीर्यविनागें अधिक
 वीर्यविनागवाला प्रदेशनो राशि ते त्रीजा स्पर्शकनी प्रथम वर्गणा जाणवी. तेमज
 वली तेवाज अनुक्रमें त्रीजो स्पर्शक करवो फरी एवाज अनुक्रमें चोथो स्पर्शक,
 एम पांचमो स्पर्शक, ए रीतें लोकाकाश प्रदेशनी श्रेणिना असंख्येय जाग प्रदेश
 राशि प्रमाण स्पर्शकना समुदायें एक योग्य स्थानक थाय. तेथकी अन्य किंचि
 त् अधिक वीर्यवंत जंतुं पण एवाज अनुक्रमे बीजुं योगस्थानक उपजे, तेथकी
 अन्य जीवतुं वली तेवाज अनुक्रमें त्रीजुं योगस्थानक उपजे, तेथकी अन्य जीव
 तुं वली तेवाज अनुक्रमें चोथुं योगस्थानक उपजे, ए प्रकारें करीने नाना जीवो
 ना अथवा कालजेदें करीने एक जीवना लोकाकाशनी श्रेणीने असंख्येय जाग द

ति ननः प्रदेश राशि प्रमाण योगस्थानक होय. हवे ते पूर्वोक्त जघन्य एक योग स्थानकें वर्त्तता एवा त्रस जीव असंख्याता तथा स्थावर जीवतो अनंता पामी ये. तथा अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदीया जीव, नव प्रथम समयें सघला एकज यो गस्थानकें रहे अने बीजे समयें असंख्यात गुण वृद्धि वाला योगस्थानकें जाय अने पर्याप्ता जीव जघन्य योगस्थानकें चार समय पर्यंत रहे, तथा मध्यम योग स्थानकें वर्त्ततो चार, पांच, ष. सात, आठ, सात, ष, पांच, चार, त्रय समय मा त्र रहे. तथा उत्कृष्ट योगस्थानकें बे समय पर्यंत रहे. एम असंख्यात योग स्था नक ठे, पण संक्षेपें मनना चार, वचनना चार अने कायाना सात, रूप सहकार कारण जेदविवह्णायें पंदर योग कहा.

ते योगस्थानकना जेद थकी वली (पयडि के०) ज्ञानावरणादिक मूल कर्म प्रकृति तथा उत्तर प्रकृतिना जेद, असंख्यात गुणा ठे. जे जणी एकेक योगस्था नकें वर्त्तता, अनेक जीव ठे तथा कालजेदें एक जीव, सर्व प्रकृति बांधे ठे, तथा क्षेत्रादि संबंधें करीने ज्ञानावरणादिकना ह्योपशम विचित्रें करीने बंधना वि चित्र पणाथकी एटले मूल प्रकृति आठ ठे अने उत्तर प्रकृति एकशोने अष्टावन्न ठे, ते क्षेत्रना तारतम्यें ह्योपशमजेदें करी बंधने विचित्र पणो करी तथा उदयतुं तारतम्य विचित्रपणुं असंख्य जेदें होय, तेथी प्रकृतिजेद पण असंख्याता जाणवा.

ते प्रकृतिजेद थकी वली (तिइजेआ के०) स्थितिबंधना जेद असंख्यातगुणा होय, जेजणी जघन्यस्थिति थकी एक समयाधिक, द्विसमयाधिक, त्रिसमयाधिक कर तां, करतां एम उत्कृष्ट स्थितिस्थानक पर्यंत एकेकी प्रकृति असंख्यात जेदें बंधा य, तेजणी प्रकृति जेदथकी स्थिति जेद, असंख्यात गुणा ठे.

ते स्थितिजेद थकी (तिइबंधवसाया के०) स्थितिबंधना अथ्यवसायना जेद असंख्यातगुणा ठे, जे जणी एकेको स्थितिबंध असंख्याते अथ्यवसाय स्था नकें तीव्र, तीव्रतर, मंद, मंदतर, एणी परें कषायोदय कृत जीवनो अष्टुद्ध परिण तिजेद ते अथ्यवसाय कहीयें. ते अथ्यवसाय स्थानक कोइ पण कर्मना एक मुहूर्त्तमात्र स्थितिबंधना हेतुनूत रहे, ते माटें स्थितिजेद थकी असंख्यात गुणा अ थ्यवसाय होय. जे जणी जघन्य स्थितिबंध पण असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्र माण अथ्यवसाय स्थानकें होय ठे. तेथकी वली समयाधिक समयाधिक स्थिति तो विशेषाधिक विशेषाधिक अथ्यवसाय स्थानकें होय, एम पळ्योपमना असंख्या तेंमा जाग मात्र स्थितिजेद अतिक्रम्या पढी जे स्थितिजेद होय, तिहां सुधी बम

यां अथ्यवसायस्थानक थाय. एम द्विगुणवृद्धि स्थानक पण असंख्यातां होय, तेमाटें स्थितिजेदथकी असंख्यातगुणां अथ्यवसायनां स्थानक होय. अहींआं कर्मनुं जे अवस्थान एटले रहेवुं, तेने स्थिति कहीयें, तेनो जे बंध, तेने स्थितिबंध कहीयें तथा कषायजनित जीव परिणामने अथ्यवसाय कहीयें. ते अथ्यवसायने विषे जीव वसे, तेने स्थान कहीयें. ते अथ्यवसाय जीवने वसवानां स्थान ठे, माटें एतनें अथ्यवसायस्थान कहीयें. तिहां स्थितिबंधनां कारणनूत जे अथ्यवसाय स्थानक, तेने स्थितिबंधाथ्यवसाय स्थानक कहीयें.

तेथकी (अणुजागताणअसंख्यगुणा के०) अनुजाग एटले रसबंध, हेतुनां अथ्यवसायस्थानक, असंख्यातगुणां ठे. तिहां अनु एटले पश्चात् बंधोत्तर कालें अनुजागीयें ते अनुजाग शब्दें रस कहीयें ते असंख्याता ठे. जे जणी अंतरमौहूर्तिक स्थितिबंधाथ्यवसायस्थानक होय ते नगर सरखा तथा ते मध्ये एक, बे, त्रण, चार, पांच, ष, सात अने उत्कृष्ट जे आठ सामयिक रसबंधाथ्यवसाय स्थानक होय, ते घर सरखा नाना जीवनी अपेक्षायें असंख्याता होय तथा एक जीवनी अपेक्षायें तो दे श, काल, क्षेत्र, जाव जेदें जघन्य स्थितिबंध पण असंख्यातलोकाकाशप्रदेश प्रमाण रसबंधाथ्यवसायस्थानकें पामीयें, ते थकी समयाधिक स्थितिविशेषें वली अधिक अधिकतर रसबंधनां अथ्यवसाय स्थानक पामीयें, एम सर्व स्थितिबंधाथ्यवसाय स्थानने विषे रसबंधाथ्यवसायस्थानकनी जावना करवी. ए कारणथी सर्वस्थिति बंधाथ्यवसायथी रसबंधाथ्यवसाय स्थान, असंख्यगुणां जाणवां ॥ इति समु० ॥ १५ ॥

ततो कम्म पएसा, अणंत गुणिया तउ सरहेया ॥

जोगा पयडि पएसं, द्विइ अणु जाग कसायाउ ॥ १६ ॥

अर्थ—(ततो के०) ते कर्मना रसबंधहेतु अथ्यवसाय थकी (कम्मपएसा के०) कर्मना प्रदेश एटले दज (अणंतगुणिया के०) अनंतगुणा जाणवा. जे जणी रसबंधहेतु अथ्यवसाय स्थानक तो असंख्याता ठे. अने कर्मवर्गणा ते पण अनंती ठे. ते वली एकेक वर्गणायें अनंता परमाणुआ ठे. तेवी अनंती वर्गणा मिथ्या त्वादिकहेतुयें एक समयने विषे जीव, ग्रहण करे ठे. अने रसबंधनां अथ्यवसाय स्थानक तो एक उत्कृष्ट आठ समय पर्यंत रहे ठे, तेमाटें अनंता जाणवा.

(तउसरहेया के०) खीर नींव रताना अधिश्रयण समान अनुजाग बंध अथ्यवसाय स्थानकें करी तंदूल समान कर्मपुजलोने विषे रस जणीयें बैयें. माटें ते

कर्मदलयकी कर्मदलना रसाविनाग अनंतगुणा जाणवा. जे जणी सर्व जघन्य रसाणुने विषे पण सर्व जीवथी अनंतगुणा रसाविनाग रसाणु होय, जे रसना नाग कल्पतां, कल्पतां केवलीनी प्रज्ञारूप शस्त्रे करी ठेदतां, ठेदतां जे निरंश अंश रहे, एटले केवली पण जे अंशनो बीजो अंश कळपी न शके, ते रसाणुनुं नाम, अविनाग पलीहेद कहीरें. ते एकेक कर्माणुने विषे पण सर्व जीवथी अनंतगुणा रसाणु जघन्य पदें होय, तेवारे उत्कृष्टपदनुं तो कहेवुंज सुं? अने कर्माणुतो अजघन्यथी अनंतगुणा अने सिद्धने अनंतमे जागें होय ते अजघन्यथी सिद्ध अनंत गुणा ठे, ते सिद्ध थकी वली सर्व जीव अनंतगुणा ठे तेथकी पण कर्मदलना रसाणु अनंतगुणा ठे माटे. एम सविस्तरपणे प्रदेश बंध कह्यो.

हवे ए प्रकृत्यादिक चार बंधने विषे विशेषहेतु कहे ठे. तिहां (जोगा के०) मन, वचन अने कायानी चेष्टार्ये करीने (पयडि के०) एक तो ज्ञानावरणादिकस्वजाव, एटले ज्ञानादिकने आवरवानो ठे स्वजाव जेने विषे एवो प्रकृतिबंध करे अने बीजो (पएसं के०) प्रदेश बंध एटले कर्मनो दल संचय, ए बे बंध करे, केम के करणवीर्य जे मनो वचन कायादिकनो योग, तेनी उत्कटतायें जो घणुं वीर्य होय, तो तेथी घणां दल मेलवे अने मध्यमयोगें मध्यमदल मेलवे, तथा योगनी मंदतायें अल्प दल मेलवे, केम के मिथ्यात्वादिक हेतु विना पण केवल योगें करीज वारमे अने तेरमे गुणठाणे शातावेदनीयनो प्रकृतिबंध तथा प्रदेशबंध करे, अने योगने अजावें चौदमे गुणठाणे प्रकृतिबंध तथा प्रदेशबंध न करे, तेणे अन्वय व्यतिरेकें करी प्रकृतिबंध तथा प्रदेश बंधना हेतु योग कहीरें.

तथा (चिड के०) एक स्थितिबंध अने बीजो (अणुजागकसायाउ के०) अनुजागबंध ए बे बंध, कपायने तारतम्यपणे होय केमके उत्कृष्ट कपाय संक्लेपें स्थिति पण उत्कृष्टी बंधाय तथा अशुच प्रकृतिनो रस, उत्कृष्ट बंधाय अने शुच प्रकृतिनो रस मंद बंधाय, तेमज मध्यम संक्लेपें मध्यम रस बंधाय. एम कपायनी अनुवृत्तियें बंध होय तथा कपाय पण दशमा गुणठाणा पर्यंत होय अने कर्म प्रकृतिनो स्थितिबंध पण तिहां लगेंज होय, तेमाटे ए बे बंधनुं असाधारण कारण कपाय जाणवो. एम चार बंधना स्वामी तथा हेतु, ए उत्कृष्ट जघन्य पणे विस्तर सहित कह्या ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ए६ ॥

— हवे योगस्थानादिकने विषे लोकाकाशनी श्रेणीनुं असंख्यातजागादिक मान क

द्युं, ते जो श्रेणीं मान जाणियें, तो सुखें समजी शकीयें, ते माटें श्रेणी प्रतर घनादिकुं मान कहे ठे. अथ श्रेणीप्रतरस्वरूपमाह.

चउदस रङ्गु लोगो, बुद्धिकउ सत्त रङ्गु माण घणो ॥

तद्दीहेग पएसा, सेढी पयरो अ तवग्गो ॥ ए७ ॥

अर्थ—सुप्रतिष्ठित संस्थानें सर्वे लोक ठे. जेम एक शरावलुं अधोमुख राखीयें, ते उपर वली एक शरावलुं समुं राखीयें, ते उपर वली एक शरावलुं अधोमुख राखीयें, ए रीतें नीचो सातमी नरकें सातराज लांबो पहोलो ठे अने त्रिगुणी जाजेरी परिधि ठे. तिहांथकी एकेक प्रदेशें हीन करतां करतां रत्नप्रजा पृथ्वीयें एक राज्य लांबो पहोलो होय. तिहांथी वली एकेक प्रदेश वृद्धि होती होती पांचमे देवलोकें पांच राज्य पहोलो होय. तिहांथी वली एकेक प्रदेशें हीन करतां, करतां लोकाग्र एक राज्य पहोलो होय. ए आकारें (चउदसरङ्गु लोगो के०) चौदराज्य लोक ठे. तेमध्ये एक राज्य लांबी, पहोली अने चउद राज्य उंची त्रसनाडी ठे ते त्रस जीवें करी सहवर्त्तमान ठे. उपरांत स्थावरजीवो ठे ते लोकनो (बुद्धिकउसत्तरङ्गुमाणघणो के०) बुद्धियें कल्पनायें करी घन करतां सात राज्य लांबो, पहोलो अने सात राज्य उंचो चउरस घन कल्पियें, ते कल्पनानो प्रकार देखाडे ठे.

जे आकारें अधोलोक ठे, तेनो एक पाशानो खंम, ते जिहां सातमीना तलने नागें त्रण राज्य पहोलो ठे तिहांथी एकेक प्रदेश हीण थातो जिहां एक प्रदेश मात्र रहे, ते प्रदेशनुं पाशुं जिहां सातमी नरकनो चार राजनो खंम बाकी रह्यो ठे. ते विशायें राखीयें अने त्रण राज्य पहोलुं पाशुं ते एक राज्य जिहां रत्नप्रजा पृथ्वी पहोली ठे ते विशायें राखीयें, तेचारे चार राज्य पहोलपणे अने दीर्घपणे थाय अने सात राज्य जाजेरुं उंचपणे एवो लोकनो अर्द्धखंम थाय अथवा त्रसनाडी थकी दक्षिणदिशिना अधोलोकनो खंम, ते नीचें त्रण राज्य पहोलो ठे अने पढी प्रदेशें प्रदेशें घटतो उपरें एक प्रदेश सांकडो ठे. अने उंचो सात राज्य जाजेरो ठे. तेने उपाडीने त्रस नाडीने उत्तर दिशिचें विपरीतपणे जोडीयें, एटले हेवलुं पहोल पणुं ते उपर आणीयें अने उपर सांकडो ठे, ते नीचें लावी मूकीयें, एटले अधोलोक सात राज्य जाजेरो उंचो अने चार राज्य पहोल पणे सर्वत्र सरस्वो थाय. हवे ऊर्ध्वलोक ऊर्ध्व मामलने आकारें ठे. तिहां त्रसनाडिथी बाहेरनुं एक

पाशातुं अर्ध, वज्रैथी छेदीने जे पाशायें मध्य त्रण राज्य पहोळुं ठे, ते पाशें एक प्रादेशिक तिर्ठा जाग उंचा, नीचा जोडीयें, तेवारें त्रण राज्य लांबो, पहोलो अने किंचिन्पून सात राज उंचो एवो ऊर्ध्वलोकनो घन आय, एटले ऊर्ध्वलोकें त्रस नाडी थकी दक्षिणदिशिनी खंम वे राज्य पहोलो अने किंचिन्पून सात राज उंचो तेमांहे ब्रह्म देवलोकना मध्यथकी हेतलो अने उपरलो खंम करिने त्रस नाडीने उत्तर पासें विपरीत पणे थापीयें एटले पहोळपणुं हेतल करीयें, अने सांकडापणुं वज्रें ब्रह्म देवलोकें आणीने थापीयें. एम जेवारे नीचें उपर थापीयें, ते वारें ऊर्ध्वलोक त्रण राज्य पहोलो अने किंचिन्पून सात राज्य उंचो, सर्वत्र आय. एवो ऊर्ध्वलोकनो घन आय. ते किहां एक थोडुं अधिकुं उंबुं होय, तेने पोतानी बुढियें अधिकुं उंबुं मांहे जेलीने सरखुं करीयें.

तेवार पठी लोकनुं उपरनुं अर्ध उपाडीने अधोलोकने संवर्तिने दक्षिणपाशें जोडीयें एटले सात राज पहोलो, सात राज लांबो अने सात राज उंचो, एम स मचतुरस्त्र घन लोक आय. अर्धैथ्या अधोलोकना सातराज जाजेरा ठे. तेम ऊर्ध्वलोकना सात राज मातेरा ठे, ते मेजवतां पूर्ण आय.

एना एकराज्य लांबा, पहोला, तथा एक राज्य उंचा, एवा खांमुआ करीयें, तेवारें त्रणशें ने तेंतालीश खंमुक आय. ए सर्व स्थूल व्यवहारनयें कहुं, जे जणी लोकतो वृताकारें ठे अने ए घन तो समचतुरस्त्र अयुं माटें एने वृताकारें करवाने अर्थें त्रणशें तेंतालीश खंमुकने अयोगीशगुणा करीने बावीश जागें हरीयें, तेवारें वृताकारें लांबो, पहोलो आय, पण ए नय कांइएक कणाने पण पूर्ण कहे ठे, तेमाटें व्यवहार थकी सर्व ठेकाणो सात राजनोज घन कह्यो ठे, तेथी खांमुआ न आय तो पण न गणवो. अर्धी एक राज्य ते स्वयंचरमण समुदनी पूर्व दिशिनी वेदिका थकी पश्चिमदिशिनी वेदिका पर्यंत तथा उत्तरदिशिनी वेदिका थकी दक्षिणदिशिनी वेदिका पर्यंत असंख्याता कोडाकोडी योजन प्रमाण जाणवुं. ए घनवृत्त लोकना घनवृत्त चतुरस्त्र खंमुक (३६९) आय.

(तद्दीहेगपएसा के०) ते घनीकृत सात राज लोकनी एक प्रादेशिक श्रेणी मोतीनी लडनी पेरें (००००००) सात राज लांबी एकेका आकाश प्रदेशनी पंक्ति तेने (सेठी के०) श्रेणी कहीयें, एटले श्रेणी असंख्यांश जे ठेकाणो कहुं होय, तिहां ए श्रेणीनुं असंख्यांश जेवुं अने (पयरोअतवग्गो के०) ते श्रेणीनो वर्ग करीयें, एटले ते श्रेणीमांहे जेटला प्रदेश होय, तेने तेटला साथें गुणीयें तेने

प्रतर कहीयें. एटले सात राज लांबो, पद्दोलो, एक प्रदेशदलें मांमानी पेरें चतुरस्र, ते प्रतर कहीयें माटें जिहां प्रतर कहुं होय, तिहां एक श्रेणीना वर्ग प्रमाण प्रदेश लेवा तथा ते प्रतरना प्रदेश ते वली श्रेणीना प्रदेश साथें गुणोयें, तेने घन कहीयें यथा असत्कढपनायें श्रेणीना पांच प्रदेश ठे, ते सूची कहीयें. अने तेने पांच गुणा करतां पञ्चशि शाय, तेने प्रतर कहीयें, तेने वली तेहीज श्रेणीना पांच प्रदेशें गणीयें, तेवारें एकशो पञ्चशि शाय. तेने घन कहीयें. अहीं सात राज लांबो, सातराज पोद्दोलो अने जाड पणो एक प्रदेशनो प्रतर जाणवो. एम सप्रसंग सविस्तर प्रदेशबंध कह्यो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ९७ ॥ इति पएसबंधो सम्मत्तो ॥

हवे चशब्दे संसूचित उपशमश्रेणी तथा कृपकश्रेणीतुं स्वरूप कहे ठे. तेमध्ये पण प्रथम अनंतानुबंधियाना उपशमनो विधि कहे ठे.

अथोपशमश्रेणीमाह. हवे उपशमश्रेणीतुं. स्वरूप, अनुक्रमें कहे ठे.

अण दंस नपुंसि ढी, वेअ ङकं च पुरिस वेअं च ॥

दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ९८ ॥

अर्थ— तिहां एक अविरति सम्यक्दृष्टि, बीजुं देशविरति, त्रीजुं प्रमत्त, चोथुं अप्रमत्त, ए चार गुणगणे वर्त्ततो जीव ज्ञानोपयोगी ठ लेख्या मांहेली शुज त्रण लेख्याना परिणामें शुजाभ्यवसायें करी पुण्यप्रकृतिना वेताणीआ रसने स्थानकें चोताणीआ रसने निपजावतो अने अशुज प्रकृतिना चोताणीआ रसने स्थानकें वेताणीठ रस करतो तिहां बंधविरोधिनी प्रकृतिमध्ये त्रसादिक शुज प्रकृतिनो बंध करतो अंतर सुहूर्त्त, यथाप्रवृत्तिकरणें वर्त्ततो पूर्वला पूर्वला स्थितिबंध थकी आगलो आगलो स्थितिबंध पद्योपमासंख्येय जागें हीन करतो अंतर सुहूर्त्त यथा प्रवृत्तिकरणे रहीं पठी अपूर्वकरणे अनंतगुण विद्युदियें वधतो चडे, तिहां धुर थी स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी. गुणसंक्रम अने अपूर्वबंध, ए पांच वानां प्रवर्त्तें. तिहां सर्व कर्मनी जेटली स्थिति शेष रहीं तेना उपरला नागथी सागरोपम पृथक्त्व प्रमाण स्थिति खंदी जघन्यतो पद्योपमा संख्येयजाग प्रमाण स्थिति खंदी ने तेना दलीया उदयकालनी स्थितिथी उपरली उपरली स्थितिने विषे यथोक्त असंख्यात गुणाकारें वधता इलिक संक्रमावतो जाय. एम अंतःस्थिति सर्वोत्कृष्ट दल संक्रमावे तथा एकेक अंतर सुहूर्त्त स्थिति खंद करतो अनेक सहस्र खंद करे तेथी प्रथम जे रस हतो, तेनो अनंतमो जाग रस शेष रह्यो बीजो सर्व

खपाव्यो एम हीन रस थया. एवां कर्मदल ते जीर्ण काष्ठने जेम अग्नि सुखें बाली शके. तेम एना कर्म पण सुखें निर्झराय तेणे असंख्यातगुणी निर्झरा वधे. ए गुणश्रेणी अपूर्वकरणें चढतां जीव विद्युदि स्थानक विचित्र पणो सत्रिकोण क्षेत्र रुंधे.

तथा त्रीजुं अनिवृत्तिकरण मोतीनी लडनी पेरें ठे एने विषे सर्व जीव एकज विद्युदियें चढे, जे जणी तिहां पण स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम, ए चार वा नां अपूर्वकरणनी पेरें प्रवर्ते, पण एटलुं विशेष जे अनिवृत्तिकरणने संख्यातमे जागें गये थके एक प्रथम स्थिति, बीजो अंतर करण, ए बेहु नवी बंधस्थितिने अंतर सुदूर्त प्रमाण नीपजावे. तिहां अंतर करणें अंतरस्थितिनां दल लेइ लेइने केटलाएक प्रथम स्थितिमध्ये अने केटलाएक उपरली स्थितिमध्ये संक्रमावे, एम संक्रमाव तां बे आवली शेष प्रथमस्थिति रहे, तेवारें गुणश्रेणी निवर्ते तथा बीजी स्थिति ना दलनी उदीरणा ते आगलें कहीयें, तेपण निवर्ते अने एकावजिका शेष प्रथम स्थिति रहे, तेवारें रसघात, स्थितिघात अने उदीरणा, ए त्रण निवर्ते. ए प्रथम सम्यक्त्व उपजावे तिहां उपशमविधि कह्यो. अर्हीयां अनिवृत्तिकरणें गुण संक्रमे अनंतानुबंधीयांनुं दलिक लही प्रत्याख्यानीया कषायादिक पणो संक्रमावतो चरम समयें सर्व संक्रम करे. एम (अण के०) अनंतानुबंधीया उपशमावे.

तेवार पठी मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रण (दंस के०) दर्शन मोहनीयने पण सार्थे उपशमावे तेवारें उपशम सम्यक् दृष्टि शाय. अर्हीयां जोपण वेदक सम्यक्दृष्टिने अनंतानुबंधीया कषाय चार तथा मिथ्यात्व मोहनीयादिकनो रसोदय नथी तोपण प्रदेशोदयनो विधि जाणवो.

ते पठी जेणे स्त्रीवेदें उपशमश्रेणी आरंजी होय, तो (नपुंस के०) प्रथम नपुंस कवेद खपावे पठी (पुरिसवेदअंच के०) पुरुषवेद खपावे अने पठी (उक्कं के०) हास्यादिक षट्क, ते पठी (इडिवेअ के०) स्त्रीवेद उपशमावे अने जो पुरुषवेदें श्रेणी आरंजी होय तो प्रथम नपुंसकवेद पठी स्त्रीवेद, पठी हास्यादि षट्क अने पठी पुरुषवेद उपशमावे. तथा नपुंसकवेदेंश्रेणी आरंजी होय तो प्रथम स्त्रीवेद, पठी पुरुषवेद, पठी हास्यादिषट्क अने पठी नपुंसकवेद उपशमावे.

ते पठी (दोदोएगंतिरिएसरिसेसरिसंउवसमेइ के०) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध अने प्रत्याख्यानावरण क्रोध, ए बेहु उपशमावे, ते पठी संज्वलन क्रोध उपशमावे, ते पठी अप्रत्याख्यानावरणमान अने प्रत्याख्यानावरणमान, ए बेहु उपशमावे, ते पठी संज्वलनमान उपशमावे, ते पठी अप्रत्याख्यानावरणमाया अने प्रत्याख्यानावरणमाया,

प्रतर कहीयें. एटजे सात राज जांबो, पहोलो, एक प्रदेशदलें मांमानी पेरें चतुरख, ते प्रतर कहीयें माटें जिहां प्रतर कहुं होय, तिहां एक श्रेणीना वर्ग प्रमाण प्रदेश लेवा तथा ते प्रतरना प्रदेश ते वली श्रेणीना प्रदेश साथें गुणोयें, तेने घन कहीयें यथा असत्कल्पनायें श्रेणीना पांच प्रदेश ठे, ते सूची कहीयें. अने तेने पांच गुणा करतां पच्चीश आय, तेने प्रतर कहीयें, तेने वली तेहीज श्रेणीना पांच प्रदेशें गणीयें, तेवारें एकशो पच्चीश आय. तेने घन कहीयें. अहीं सात राज जांबो, सातराज पोहोलो अने जाड पणे एक प्रदेशनो प्रतर जाणवो. एम सप्रसंग सविस्तर प्रदेशबंध कह्यो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ९७ ॥ इति पएतबंधो सम्मत्तो ॥

हवं चशब्दं संसूचित उपशमश्रेणी तथा रूपकश्रेणीनुं स्वरूप कहे ठे. तेमध्ये पण प्रथम अनंतानुबंधियाना उपशमनो विधि कहे ठे.

अधोपशमश्रेणीमाह. हवे उपशमश्रेणीनुं स्वरूप, अनुक्रमें कहे ठे.

अए दंस नपुंसि ली, वेअ ठकं च पुरिस वेअं च ॥

दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ९८ ॥

अर्थ- तिहां एक अविरति सम्यक्दृष्टि, वीजुं देशविरति, वीजुं प्रमत्त, चोशुं अप्रमत्त, ए चार गुणवाणे वर्त्ततो जीव ज्ञानोपयोगी ठ लेस्या मांदेली शुन त्रण लेस्याना परिणामें शुनाथ्यवसायें करी पुण्यप्रकृतिना वेवाणीआ रसने स्थानकें चोवाणीआ रसने निपजावतो अने अशुन प्रकृतिना चोवाणीआ रसने स्थानकें वेवाणीअ रस करतो तिहां बंधविरोधिनी प्रकृतिमध्ये त्रसादिक शुन प्रकृतिनो बंध करतो अंतर सुहूर्त्त, यथाप्रवृत्तिकरणें वर्त्ततो पूर्वला पूर्वला स्थितिवंध थकी आगलो आगलो स्थितिवंध पद्योपमासंख्येय जागें हीन करतो अंतर सुहूर्त्त यथा प्रवृत्तिकरणे रही पढी अपूर्वकरणे अनंतगुण विशुद्धियें वधतो चडे, तिहां धुर थी स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी. गुणसंक्रम अने अपूर्वबंध, ए पांच वानां प्रवर्त्तें. तिहां सर्व कर्मनी जेटली स्थिति शेष रही ठे तेना उपरला जागथी सागरोपम पृथक्त्व प्रमाण स्थिति खंमी जघन्यतो पद्योपमा संख्येयजाग प्रमाण स्थिति खंमी ने तेना दलीया उदयकालनी स्थितिथी उपरली उपरली स्थितिने विषे यथोक्त असंख्यात गुणाकारें वधता दलिक संक्रमावतो जाय. एम अंतःस्थिति सर्वोत्कृष्ट दल संक्रमावे तथा एकेक अंतर सुहूर्त्त स्थिति खंम करतो अनेक सहस्र खंम करे तेथी प्रथम जे रस हतो, तेनो अनंतमो जाग रस शेष रह्यो बीजो सर्व

खपाव्यो एम हीन रस घया. एवां कर्मदल ते जीर्ण काष्ठने जेम अग्नि सुखें बाली शके. तेम एना कर्म पण सुखें निर्झाराय तेणे असंख्यातगुणी निर्झारा वधे. ए गुणश्रेणी अपूर्वकरणें चढतां जीव विद्युद्धि स्थानक विचित्र पणो सत्रिकोण क्षेत्र रुंधे.

तथा त्रीजुं अनिवृत्तिकरण मोतीनी लडनी पेरें ठे एने विषे सर्व जीव एकज विद्युद्धियें चढे, जे जणी तिहां पण स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम, ए चार वा नां अपूर्वकरणनी पेरें प्रवर्त्ते, पण एटलुं विशेष जे अनिवृत्तिकरणने संख्यातमे जागें गये थके एक प्रथम स्थिति, बीजो अंतर करण, ए बेहु नवी बंधस्थितिने अंतर मुहुर्त्त प्रमाण नीपजावे. तिहां अंतर करणें अंतरस्थितिनां दल लेइ लेइने केटलाएक प्रथम स्थितिमध्ये अने केटलाएक उपरली स्थितिमध्ये संक्रमावे, एम संक्रमाव तां बे आवली शेष प्रथमस्थिति रहे, तेवारें गुणश्रेणी निवर्त्ते तथा बीजी स्थिति ना दलनी उदीरणा ते आगलें कहीयें, तेपण निवर्त्ते अने एकावलिका शेष प्रथम स्थिति रहे, तेवारें रसघात, स्थितिघात अने उदीरणा, ए त्रण निवर्त्ते. ए प्रथम सम्यक्त्व उपजावे तिहां उपशमविधि कह्यो. अर्दीयां अनिवृत्तिकरणें गुण संक्रमे अनंतानुबंधीयां दलिक लही प्रत्याख्यानीया कषायादिक पणो संक्रमावतो चरम समयें सर्व संक्रम करे. एम (अण के०) अनंतानुबंधीया उपशमावे.

तेवार पठी मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रण (दंस के०) दर्शन मोहनीयने पण साथें उपशमावे तेवारें उपशम सम्यक् दृष्टि घाय. अर्दीयां जोपण वेदक सम्यक्दृष्टिने अनंतानुबंधीया कषाय चार तथा मिथ्यात्व मोहनीयादिकनो रसोदय नथी तोपण प्रदेशोदयनो विधि जाणवो.

ते पठी जेणे स्त्रीवेदें उपशमश्रेणी आरंजी होय, तो (नपुंस के०) प्रथम नपुंस कवेद खपावे पठी (पुरिसवेदअंच के०) पुरुषवेद खपावे अने पठी (ऋक् के०) हास्यादिक षट्क, ते पठी (इन्धिवेदअ के०) स्त्रीवेद उपशमावे अने जो पुरुषवेदें श्रेणी आरंजी होय तो प्रथम नपुंसकवेद पठी स्त्रीवेद, पठी हास्यादि षट्क अने पठी पुरुषवेद उपशमावे. तथा नपुंसकवेदेंश्रेणी आरंजी होय तो प्रथम स्त्रीवेद, पठी पुरुषवेद, पठी हास्यादिषट्क अने पठी नपुंसकवेद उपशमावे.

ते पठी (दोदोएगंतिरिएसरिसेसरिसंउवसमेइ के०) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध अने प्रत्याख्यानावरण क्रोध, ए बेहु उपशमावे, ते पठी संज्वलन क्रोध उपशमावे, ते पठी अप्रत्याख्यानावरणमान अने प्रत्याख्यानावरणमान, ए बेहु उपशमावे, ते पठी संज्वलनमान उपशमावे, ते पठी अप्रत्याख्यानावरणमाया अने प्रत्याख्यानावरणमाया,

ए वेदु उपशमावे, ते पठी संज्वलनमाया उपशमावे, ते पठी अप्रख्यानावरणलो न अने प्रत्याख्यानावरणलोन उपशमावे, एटले वादर संपरायनामा नवमुं गुण स्थानक पूर्ण थाय. पठी दशमा सूक्ष्म संपरायनामा गुणस्थानकें रह्यो, सूक्ष्म संज्वलन लोनने स्तिबुक संक्रम प्रकारें उपशमावीने उपशांतमोही थाय, तिहांशी न वक्ष्यें पढतो अनुत्तर सुर थाय, जे नणी अब-दायु तथा ब-द सुरायु वालो उपशमश्रेणी करे ठे. तेमध्ये अब-दायुवालो तो मरण पामे नहीं, अने ब-दायु वालो जो मरे, तो अनुत्तर देव थाय, तिहां अगीअरमाथी चोथे गुणठाणे आवे, तिहां सर्व करण समकालें प्रवर्त्तयें अने कालक्ष्यें पडे तो जिहां चढतां जे वंधादिक नो विभेद कीधो हतो, तिहां तिहां वली ते वंधादिक प्रगट करतो जाय तथा रूपकश्रेणीशी उपशमश्रेणीनी मंद विद्युद्धि ठे ते नणी अपूर्व वंध बमणो बमणो करे, सूक्ष्म संपरायना चरम समयें नाम तथा गोत्र कर्मना शोल सुहूर्त्तनो वंध करे, वेदनीयनो चोवीश सुहूर्त्तनो वंध करे, अने ज्ञानावरणादिकनो वे वे सुहूर्त्तनो वंध करे. एम चढतां तथा उतरतां सर्व स्थानें बमणो बमणो वंध करे. एम उपशमनाविधि तथा विसंयोजनाविधि, सर्व सत्तरीनामा उष्ठा कर्मग्रंथना वालावबोध थकी जाणवो तथा कर्मप्रकृतिनी टीकाथी सविस्तर जाणवो ॥ इति स० ॥ ९७ ॥

॥ अथ रूपकश्रेणीमाह ॥ हवे रूपकश्रेणीनो विधि कहे ठे.

अणमिह मीस सम्मं, तिआउ इग विगल थीण तिगुजोअं ॥

तिरि निरय थावर डुगं, साहारायव अड नपुंसि ठी ॥ ९८ ॥

अर्थ- तिहां रूपकश्रेणीनुं प्रारंभक संख्यातावर्षायुवालो कर्म नूमिजात मनुष्य प्रथम संघयणी अत्यंत विद्युद्धमान परिणामी, अविरति, देशविरति, प्रसन्न अने अप्रसन्नादिक गुणठाणे वर्त्ततो जो पूर्वधर होय, तो शुक्लध्यानं वर्त्ततो होय अने बीजो होय तो विद्युद्ध धर्मध्यानं वर्त्ततो प्रथम (अण के०) चार अनंता बुवंधीआ कपायनी रूपणा आरंभे, तेने त्रण करणें करी खपावतां, खपावतां, जे वारें अनंतमो नाग शेष रहे, तेवारें ते नाग (मिह के०) मिथ्यात्वमोहनीय मांहे घालीने खपावे जेम अग्नियें अर्द्ध बलेलो इंधण त्रीळुं इंधण पामी वेदु बले. एम रूपण-पण तत्रि परिणामें करी ते दल अल्प प्रकृतिमांहे संक्रमावी, वेदुने खपावे. वली मिथ्यात्वतुं शेष दल रहे ते (मीस के०) मिश्रमोहनीयमां घाली खपावे अने मिश्रमोहनीयतुं शेष दल रहे, ते सम्यक्त्व मोहनीयमां घाली खपावे. (सम्मं

के०) सम्यक्त्वमोहनीयनो बेलो खंभ उकेरीने हूपककृत करणाकार्ये वर्त्ततो जो पूर्वब-शायु तिहां मरण पामे, तो अपतित परिणामे देवगति पामे अने पतितपरिणामे चारे गतिमाहे अवतरे. तिहां ते गतिमध्ये सम्यक्त्वमोहनीय खपावी तेना चरमग्रामें एक समय वेदक सम्यक्त्व लहीने, सर्व सम्यक्त्व मोहनीयने खपावी ह्याधिक सम्यक्त्व लहे. एम दर्शनमोहनीय हूपणानो आरंजक मनुष्य, हूपणानी पूर्णता तो चारे गतिमध्ये करे, ते माटे ह्याधिकसम्यक्त्वनो जाज, चारे गतिमध्ये संजवे तथा ब-शायु वालाने ए सात प्रकृति खपावी रह्या पठी जो आयु शेष रहे, तो तिहां चारित्र मोहनीयने हूपणा करनारी श्रेणी न करे अने अब-शायु तो चारित्रमोहनीयनी संपूर्ण हूपणा करीने केवलज्ञान पामे. चारित्र मोहनीयनी हूपणा मानतो प्रथम (तिआव के०) नरकायु, तिर्यगायु अने देवायु, ए त्रण आयु खपावे. अर्हीआं जो पण त्रण आयुनी सत्ता नथी, तो पण संजव सत्तानी अपेकार्ये हूपणा कही. जे जणी जेणे पोत पोताना चरम जवने प्रांते आपआपणुं आयु खपावी, मनुष्यजव लही दर्शन मोहनीयनी हूपणा करी, शेष त्रण जवना आयुनी बंध योग्यता मटाडी ठे, तेहीज चारित्र मोहनीयनी हूपणा आरंजे. ते अपेकार्ये हूपणा कही, शेष एक मनुष्यायुज उदय तथा सत्ताये वर्त्ते ठे.

तेवार पठी अपूर्वकरणनामा आठसुं गुणठाणुं हूपणाने अर्थे करी नवमा अ निवृत्ति गुणठाणाना नव जाग करी तेने बीजे जागे (इग के०) एकेंद्रियजाति, (विगल के०) विकर्षेंद्रियजाति त्रण, एवं जाति चार तथा (शीणतिग के०) शीण-द्वित्रिक, (उजोअं के०) उद्योतनाम कर्म, (तिरिनिरयथावरडुगं के०) तिर्यंचदिक, नरकदिक, थावर अने सूक्ष्म, ए स्थावरदिक, (साहारायव के०) साधारणनाम, आतपनाम, ए शोल प्रकृति खपावे. कोइ एक आचार्य कहे ठे के ए शोल प्रकृति खपावतो वज्जे (अड के०) अप्रत्याख्यानीय तथा प्रत्याख्यानीय आठ कषाय खपावीने पठी ए शोल प्रकृति खपावे अने कोइ एक आचार्य कहे ठे के ए शोल प्रकृति खपाव्या पठी त्रीजे जागे आठ प्रकृति खपावे ते पठी (नपुंसिद्धी के०) नपुंसकवेद ह्य करे, ते पठी स्त्रीवेद ह्य करे ॥ एए ॥

लग पुम संजलणा दो, निहा विग्धावरण खए नाणी ॥

देविंद सूरि लिहिअं, सयगमिणं आय सरणठा ॥ १०० ॥

अर्थे-पठी (लग के०) हास्यादिक ठ प्रकृति खपावे पठी (पुम के०) पुरु

पुत्रवेद खपावे, तिहां जो स्त्रीवेदें कृपकश्रेणी आरंजे तो प्रथम नपुंसकवेद खपावे, पत्नी पुरुषवेद खपावे, पत्नी हास्यादिक ठ प्रकृति खपावे अने ते पत्नी स्त्रीवेद खपावे, अने जो नपुंसक वेदें श्रेणी आरंजे तो पहेलुं अनुदीरण पण स्त्रीवेद खपावे, पत्नी पुरुषवेद खपावे, पत्नी हास्यादिक ठ प्रकृति खपावे, ते पत्नी नपुंसकवेद खपावे अने जो पुरुषवेदें श्रेणी आरंजे, तो प्रथम नपुंसक वेद खपावे, पत्नी स्त्रीवेद खपावे, पत्नी हास्यादिक ठ प्रकृति खपावे, ते पत्नी पुरुषवेद खपावे.

हमणां जे पुरुषवेदें श्रेणी आरंजे, ते स्त्रीवेदक्य साथें पुरुष वेद तथा हास्यादिक ठ प्रकृतिनो बंध व्यवहरे करे, तिहां नोकषायनां दल वे आवली शेष दुंते वेद पतदग्रह न थाय तेथी संज्वलनक्रोध मांहे संक्रमावे, एम जे अंतर मुहूर्ते हास्यादि षट्क हीण थाय, ते समयें पुंवेदनो बंध, उदय अने उदीरणा विज्ञेद थाय, अर्हीआं वे आवली बांधुं जे पुरुषवेददल, ते विना बीजुं सर्व हीण थयुं ठे.

हवे अवेदक थको क्रोध वेदतो स्थिति अज्ञाना त्रण जाग करे, एक अश्वकर णादा, बीजो कीटीकरणादा, त्रीजो वेदनोदा तिहां प्रथमादायें वर्ततो पुरुष वेद पण समयोन वे आवलिकालें गुण संक्रमे, संक्रमावतो, संक्रमावतो, ठेहले समयें सर्व संक्रमे, संक्रमावे. अर्हीआं पुंवेद हीण थयो अने अश्वकरणादा पूर्ण थयो. ते पत्नी बीजा कीटीकरणादायें प्रवेश करे, तिहां एकेका कषायनी अनं ती कीटी एटले खंम करे ते अनंती पण असत्कल्पनायें चार कल्पयें, तोपण (संज लणा केण) संज्वलना चार कषाय मध्ये जो क्रोधोदयें पडिवजतां शोल अने मानोदयें पडिवजतां बार तथा मायोदयें पडिवजतां आठ अने लोकोदयें पडिवजतां चार कीटी होय, ते मांहेलुं एकेक कीटीजुं दल गुण संक्रमे संक्रमावतो एक चरमकीटी रहे तिहां संज्वलनक्रोधनो बंध उदय अने उदीरणा विज्ञेद थाय, परंतु सत्तायें ठेहेलुं बांधेलुं वे आवली मात्र रहुं ठे तेने पण माननी प्रथम स्थिति कीटी दलमां क्रोधना दल ने आकर्षने तिहां गुण संक्रमे, संक्रमावे, चरम समयें सर्व संक्रमें संक्रमावे तेवारें ति हां क्रोध हीण थयो. ए रीतें संज्वलना माननी कीटी पण उपरली स्थिति मांहेथी नीची. स्थिति मांहे उत्तारी वेदतो गुण संक्रमे संक्रमावतो, संक्रमावतो, जेवारें च रम एटले ठेहली कीटी रहे, तेवारें तेने मायामांहे संक्रमावी खपावे. तेम मायानी पण चरम कीटी, संज्वलना लोचनी प्रथम कीटीमांहे संक्रमावी खपावे संज्वलन की टीजुं दल प्रथम स्थितिगत करी वेदे, ते वेदतो आगली कीटीजुं दल तेनी सूक्ष्मसूक्ष्म कीटी करे, तेपण त्यां लगे करे के, ज्यां लगे संज्वलन लोचनी बीजी कीटी समया

धिक आवलि मात्र रहे, तिहां संज्वलन लोचनो वंध व्यवहृद थाय अने तथा बा दर कषायनो उदय अने उदीरणा पण व्यवहृद थाय अनिवृत्तिगुणस्थानकनो काल पण व्यवहृद थाय. ए त्रण सार्थे व्यवहृद थाय.

ते पढी सूक्ष्मसंपराय कीटीदल प्रथम स्थितिगत करी वेदे तेथी तेने सूक्ष्म संपराय गुणगणुं कहियें. तेना संख्याता जाग जाय, तिहां लगे मोहनीयमाहे स्थितिघातादिक पांच पदार्थ प्रवर्त्ते. जेवारें एक जाग शेष रहे, तेवारें स्थितिघाता दिक पांच पदार्थ विरमे. शेष ज्ञानावरणादिक कर्मना स्थितिघातादिक रहे तिहां अपवर्त्तना करणें करी सूक्ष्मसंपरायअ वा जेटलो लोच करे ते संज्वलनो लोच आव लीमात्र रहे, तेवारें उदीरणा टले, ठेहली आवलीयें उदय करी वेदी खपावे. एम सू क्ष्म संपरायना चरम समयें सर्व मोहनीयने ह्रीण करी ह्रीणमोही थयो.

तिहां जेम कोइएक तारु पुरुष, महोटी समुद्र तरतो थको वचमां दीप पामी विश्राम जेइ वली आगल तरवा मांमे तथा कोइएक थोडो पुरुष, महासंग्राम करतो शत्रुने हणतो हणतो थके, तेवारें वली विश्राम जेइ समूलगो शेष शत्रु जींतवा ने सक्त थाय. तेम ए जीव पण सबल दुर्जय शत्रु जे महामोह तेने जींपतो सं ग्राम करतो करतो थको तेमाटें ते थथाख्यात चारित्ररूप विश्राम स्थानक पामी वली शुक्लथ्यानना बीजा पादें प्रवर्त्तमान वीर्यवंत थयो थको अंतरमुहूर्त्तना ठेहला बे स मय मध्ये प्रथम समयें (निहा के०) निहा अने प्रचला, ए बे प्रकृति खपावे अने ठेहले समयें (विग्धावरणखए के०) पांच अंतराय, पांच ज्ञानावरण, चार द र्शनावरण, ए चौद प्रकृति खपावी, निश्चय नयें बारमा गुणगणाने ठेहले समयें (नाणी के०) केवलज्ञानी थाय अने व्यवहार नयने मते तेरमा गुणगणाने प्रथम समयें केवलज्ञानी थाय. एम त्रेशत प्रकृतिनो रूपणाविधि कह्यो. ए रूपकश्रेणीने संक्षेपें कही एनो विस्तार उछा कर्मग्रंथना बालावबोधमांलख्यो ठे तेमाटें अर्हीअं थोडा बोलें घणुं जाणवुं.

ए लघुशतक एवे नामें पांचमो कर्मग्रंथ जे जणी महोटी शतक श्री शिवश र्म सूरिकृत जोइने तथा पंच संग्रह, कर्मप्रकृति प्रमुख शास्त्र तथा चूर्णिका प्रमुख घणा ग्रंथ जोइने परमगुरु गङ्गाधिराज तपाबिरुद प्रवर्त्तक, महावैरागिकशि रोमणि, जट्टारक श्री जगज्जंडसूरीश्वर चरणकमलधोरालंबायमान सर्वांगमिकच क्रवर्त्ति बिरुदधारक अनेक विद्यानंद धर्मकीर्त्ति प्रमुख बहुश्रुत परिवार परिवृता आ-दिनकृत्य सूत्रवृत्ति चैत्यवंदनादि नाष्यत्रितय संघाचारादि तर्कति लघुउप

मिति नवप्रपंचाद्यनेक ग्रथ सूत्रेण सूत्रधारायमान तपागङ्गाधिराज नद्वारक श्री
(देविंदसूरिलहिअं के०) देवेइसूरीश्वरं लख्यो. (सयगमिणं के०) शतक एवे
नामं ग्रंथ, ते (आयसरणछा के०) पोताना आत्माने संनारवा निमित्तं लख्यो.
ते सर्व संघने सुखदायक आजो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १०० ॥

॥ अथ प्रशस्तिः ॥

॥ श्रीवीरपट्टेश्वरमौलिमौलिः, कलालयोऽज्ञानतमोविनाशी ॥ अनूत्तपाख्यातिसुं
कौमुदीनूत् सूरीर्कगच्छं इति प्रसिद्धः ॥ १ ॥ तत्पट्टपुष्करविजासनराजहंसो, हृद्योऽ
नवद्यवचनस्थितराजहंसः ॥ देवेइसूरिरजवद्भवतापचेदी, वेदीव दीव्यतिपरानुनव
स्य यज्ञीः ॥ २ ॥ यद्ज्ञानादिविशुक्लेषु, प्रियमेलकतामगात् ॥ श्रीमदेवेइसूरीणां, वच
स्तीर्थं पुनातु वः ॥३॥ श्रीमदेवेइसूरो, मैलयगिरिगुरोर्गिरां गुरुत्वमहो ॥ आप्तानुन्नय
ति शिवः, स्वन्नमनासांस्तु पातयति ॥ ४ ॥ सुवर्णा सत्पदन्या, सालंकारा सुरेइगौः ॥
श्रवतेऽर्थपयोधारां, मंददोभाऽपि नोदिता ॥५॥ इति शतकटवार्थं प्रार्थनां प्राप्य किं
चि, दलिखमिहमदोषामग्रजस्यार्थसारं ॥ द्वि शशि घन मितेऽद्धे निर्दिशे निर्दिशेयं,
यदिह नवति छुष्टं तद्बुधाः शोधयंतु ॥६॥ विबुधगुरुवर्णितयश, स्तोमयशस्सोमगु
रुशिष्याणुः ॥ जयसोमोऽलिखदेनां, जाषामात्मस्मृतौ शतके ॥ ७ ॥ इति प्रशस्तिः ॥

॥ इति श्री यशःसोमकृत बालावबो
धसहितः शतकनामा, पंचम क
र्मग्रंथः समाप्तः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीचंद्रमहत्तराचार्यप्रणीत सप्ततिका नामा षष्ठः कर्मग्रंथः समारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ बालावबोधकारकृत मंगलाचरणम् ॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

॥ प्रणिपत्य पार्श्वदेवं, स्मृत्वा स्वगुरुं गिरं च जागवतीं ॥ सप्ततिकायाव्याख्यां कुर्वे
ऽहं बालबोधार्थम् ॥ १ ॥ मत्तोपि मंदमतयो, न जानते येहि चूर्णिटीकोक्तीः ॥
तद्वोधानुग्रहधी, विषयोयन्नः शुजोर्यतत् ॥ २ ॥ केचित्परात्मसंवि, द्विकला विक
लाः कलौ खलायंते ॥ तेन्योन कापि नीतिः, संतः संतोषजाजश्चेत् ॥ ३ ॥ श्रीह
र्षसोमविबुधान्, सुयशः सोमानिधानकविश्रेष्ठान् ॥ नत्वा सप्ततिकाया, लिखामि जन
नाशया व्याख्याम् ॥ ४ ॥ अर्थ—प्रथम श्रीपार्श्वनाथ परमेश्वरने नमस्कार करीने पोता
ना दीहागुरु अने विद्यागुरु, तेनां पद कमलने नमीने, महारा थकी जे तुहबुद्धिना
धणी जेने टीका अने चूर्णीयें करी अर्थ समजवामां न आवे, तेवा पुरुषोना हि
तने अर्थे सत्तरी नामा उठा कर्मग्रंथनो बालावबोध लखुं बुं.

॥ मूल गाय्या ॥

सिद्ध पएहिं महुं, बंधोदय संत पयडि छाणाणं ॥

बुहं सुण संखेवं, नीसंदं दिधि वायस्स ॥ १ ॥

अर्थ—(सिद्ध के०) अचल एटले कोइथी खोटा करी न श्काय, एवा (पएहिं के०)
पद ठे जेने विषे, एवा कर्मपाहुडा कर्मप्रकृति, अने कम्मपयडी प्रमुख जे ग्रंथ जे न
एी तेनां पद सर्वज्ञ जापित ठे ते कोइथी पण खंफी श्काय नहीं त्यां (महुं
के०) महोटा अर्थ एटले घणा अर्थ ठे जेने विषे तिहांथी (बंधोदयसंतपयडिछाणाणं
के०) वंध, उदय अने सत्तापणो परिणामी जे कर्मनी प्रकृति, तेना स्थानकनो
(संखेवं के०) संक्षेपें एटले थोडे अहारे घणो अर्थ समजाय अथवा विस्तारवंत
अर्थ सार्थे थोडा मांहे आणीने एवी रीतें वचन रचना प्रकारें करी (बुं के०) कहे
शुं, तेजणी हे शिष्य ! तुं (सुण के०) सावधान अइने सांजल, पण ते संक्षेप के
हेवो ठे ? तोके (दिधिवायस्स के०) दृष्टिवाद एटले समस्त जिनागमरूप समूह, ते
नुं (नीसंदं के०) जरणुं ठे जे नणी बारमुं अंग दृष्टिवाद ठे तेना एक परिकर्म,

बीजं सूत्र, त्रीजो पूर्वायुग, चोथो पूर्वगत, अने पांचमी चूलिका, ए पांच अधिकार ठे. तेमांहे चोथो पूर्वगतनामा अधिकार ठे तेने विषे चौद पूर्व ठे. तेमांहेजुं वीजं अग्रायणी नामा पूर्व, तेमध्ये चौद वस्तुपरिमाण ठे ते मांहेजां पांचमा वस्तु परिमाणमां वीश पाहुडा ठे. पाहुडा एटले अधिकार विशेष जाणवो. ते वीश पाहुडा मांहेलो चोथो कर्मप्रकृतिनामा जे पाहुडो ठे, ते चोवीश अनुयोग द्वार सहित ठे, ते पाहुडा थकी बंधोदयसत्ता पणे परणमी जे कर्मनी प्रकृति, तेनां स्थानक नो संवेध एटले विचार ते संक्षेपथकी हुं कहीश, एटले ए शास्त्रपरंपरायें सर्वज्ञ जावित ठे तेजणी सद्गुने प्रमाण होय.

अथवा बीजे अर्थें (सिद्ध के०) स्वसमय प्रसिद्ध जे (पद के०) चौद जीवस्थानक, चौद गुणगणां इत्यादिक पद ते आश्रयी बंध, उदय अने सत्तायें प्रकृतिस्थानक सज्ञाव आश्री संक्षेप बोलीश तथा संवेध एटले विचार अथवा संवेध एटले परस्परें बंध, उदय, सत्तानुं जोडवुं, (दृष्टिवाद के०) द्वादशांगीनुं रहस्य अथवा दृष्टिवादनी अपेक्षायें ए सत्तरी प्रकरण बिंड्या समान ठे, ते हेशिष्य ! तुं. सांजल.

तिहां आत्मप्रदेशने कर्म परमाणुनी साथें अग्निजोहनी पेरें सर्वांशें मजवुं, तेने बंध कहीयें. ते कर्म परमाणुना छुजाछुन रसनुं जोगववुं तेने उदय कहीयें. तेहवा बांध्या तथा संक्रम्या जे परमाणु, ते जिहां लगें निर्झरे नहीं, तिहां लगें तेनो जे सज्ञाव, तेने सत्ता कहीयें, अने प्रकृति स्थानक एटले समुदाय जेम के बें, त्रण, चार, पांच, इत्यादिक प्रकृतिना थोकडा ते ज्यां लगें जेटला होय. त्यां लगें तेटला प्रकृतिना स्थानक जाणवां ए सर्वनो विचार, तेनो संक्षेप एटले थोडे अहूरें घणो अर्थ समजाय तेवी रीतें कहीछुं, पण ते संक्षेप केहवो ठे तोके (महड के०) घणा अर्थ ठे जेमां एवो ठे. अहींअ्यां बंधोदय सत्ताप्रकृतिस्थान कहेछुं ते अनिधेय जाणवुं, अने अनिधायक शास्त्र तेने वाच्यवाचक जाव, ए संबंध जाणवो. तथा ए ग्रंथें अधिकारी कर्मनी बंधोदय प्रकृति स्थाननी विवेचनाथी महा अधिकारी मोक्षार्थी जीव जाणवा अने ते कर्मविचारनुं जे समजवुं ते अवांतर प्रयोजन जाणवुं तथा महा प्रयोजन अथवा परंपराप्रयोजन तो मोक्ष जाणवुं. एम अ निधेय, संबंध, अधिकारी अने प्रयोजन, ए चार वानां ग्रंथने आरंभें कहेवां ॥ १ ॥

कइ बंधंतो वेअइ, कइ कइ वा संत पयडि ठाणाणि ॥

मूलुत्तर पगईसु, जंग विगप्पा मुणेअवा ॥ २ ॥

अर्थ— एवं आचार्ये कहे अके, हवे शिष्य पूढे ठे के हे जगवन् ! (कंश्चंतोवेअइ के०) केटली प्रकृति बांधतो अको जीव केटली प्रकृति वेदे, एटले अनुजवे (वा के०) अथवा (कश्कइ के०) केटली केटली प्रकृति बांधतां तथा केटली प्रकृति वेदतां अकां (संतपयडिवाणाणि के०) केटली केटली प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय. एवो शिष्ये प्रश्न कीधे अके मूलोत्तर प्रकृतिने विषे प्रत्येक बंधोदय सत्तानो संवेध कहेवो, ते आश्रयी हुकर जाणीने हवे आचार्य सामान्ये प्रत्युत्तर कहे ठे. (मूलोत्तर पगईसु के०) मूलप्रकृति ज्ञानावरणीयादिक आठ अने उत्तर प्रकृति एकशोने अ चावन्न, तिहां बंधोदय सत्ताये प्रकृतिनो संवेध विचारतां (जंगविगप्पा के०) नांगाना विकल्प अनेक उपजे ठे, ते आ प्रकरणे विषे लेशथी आगल देखाडो. तिहांथी (मुपोअवा के०) जाणवा. तेमथ्ये प्रथम मूलप्रकृति आठ बी जो बंधोदयसत्ताये प्रकृति स्थाननी संख्या, त्रीजो तेनो परस्पर संवेध, ए त्रय अ धिकार चौद जीवस्थानक तथा चौद गुणतापो विवरीने कहेवा. तिहां प्रथम उधे मूलप्रकृति आठनां नाम, व्युत्पत्ति, तथा स्वरूप टीकाकार देखाडे ठे.

प्रथम ज्ञानावरणीय कर्म कहे ठे. जे अको घटादिक अर्थे जाणीये, तेने ज्ञान क हीये, अथवा जे जाणवुं, ते ज्ञान कहीये तथा सामान्य विशेषात्मक उचयरूप एक वस्तु ठे ते मांहे विशेषांश ग्रहणात्मक जे अबबोधक प्रकाश, ते ज्ञान कहीये. तेना आवरण आहादक जे कर्मवर्गणाना पुजल मांहे ज्ञान आवरवानो स्वभाव ठे. केनी पेरें? तोके जेम लोचनने तेजनुं आवरण वस्त्रादिक ठे ते जेम जेम सघ न होय, तेम तेम आंखनुं तेज मंद, मंदतर थाय. तेवी रीते जेम जेम ज्ञानावरणनी सघनता होय, तेम तेम आत्मप्रकाश ढंकाय, ते प्रथम ज्ञानावरणीय कर्म जाणवुं.

बीछुं दर्शनावरणीयकर्म, ते छुं कहीये? तोके देखीये जेणे करी अथवा देखवुं तेने दर्शन कहीये. सामान्यविशेषोन्नयात्मक वस्तु विषइठ जे जाति गुण क्रिया दिक संयोजना हीन केवल धर्म मात्र ग्राहक जे सामान्यांशावबोध, ते दर्शन कहीये, तेने आवरवानो स्वभाव जे कर्मपुजलनो ठे, तेने दर्शनावरणीयकर्म क हीये. जेम पोलीठ दूर थाय तो राजानुं दर्शनमात्र थाय तथा जे राजानुं दर्श न अनिलाषतो पुरुष पण ज्यां सुधी पोलीआने अनिप्रेत न होय तो तेने बले रा जाने मलवानी इहा उतां पण राजाने मलवा न दीये, तेम पोलीआ समान जे दर्शनावरणीय अने ज्ञानावरणीय कर्म तेणे करी खरडया एवा जे घटादि पदार्थ तेनुं दर्शन जीव रूप राजाने न होय. अहीआं ग्रंथनी साख लखीये बैये. “ दंसएसी

जे जीवे, दंसणघाय करेइ जे कम्मं ॥ तं पडिहारसमाणं, दंसणावरणं जवे बीयं ॥ १ ॥ जह रत्तो पडिहारो, अणनिप्येअस्त सोउ लोगस्त ॥ रत्तोतह दरिसावं, न देइ दंहुंपि कामस्त ॥ २ ॥ जह रायाणा जीवो, पडिहारसमं तु दंसणावरणं ॥ ते एहिं व बंधगेणं, न पिच्चए सो घडाइअं ॥ ३ ॥

त्रीछुं वेदनीयकर्म ते शुं कहीयें? जेने प्रथम आढ्हाद तथा विषादरूपें अनु जवीयें, जेम मधुयें खरडी तरवारनी धारजुं चाटवुं ते प्रथम चाटतां आढ्हाद था य अने पढी जीन ठेदाय तेवारें विषाद थाय तेम शातावेदनीयने प्रांतें अशाता वेदनीय होय एवो जे कर्म पुज्जनो स्वजाव ते त्रीछुं वेदनीयकर्म जाणवुं.

चोथुं मोहनीयकर्म ते शुं कहीयें? जे मोहें मुंजाय तेथी हिताहित न जाणे जेमके आटवुं जूंमूं, आटवुं रूडुं, एम नजाणे इत्यादिक विवेक रहित आत्माने करे जेम मदिराइयें करी जीवने घेला पणुं प्राप्त थाय तेथी हिताहित विचार शून्य करे एवो जे कर्मपुज्जनो स्वजाव, ते चोथुं मोहनीयकर्म जाणवुं.

पांचमुं आयुःकर्म ते शुं कहीयें? तोके जे हेहनी परें प्रकृति बंध थाय, देवादिक नी गति बांधी त्यां जावा बांढतो होय तो पण ज्यां लगे इह जवायु जोगववुं होय, त्यां लगे न जइ शके. एवो जे कर्म पुज्जनो स्वजाव ठे, तेने पांचमुं आयुःकर्म कहीयें.

ठहुं नामकर्म, ते शुं कहीयें? के जे परमात्म रूपी जीवने पण देव नरकादिक तथा एकेंद्रिय, वेंद्रिय, तेंद्रियादिक जातिपणे हीन विशेष करी बोलावीयें, नमा वियें. जेम चितारो अनेक वानें करी हाथी, घोडा, माणस इत्यादिकना रूप आले खे तेम नामकर्म पण निन्न निन्न प्रकारें देव, नारकादिक स्वरूपें जीवना पर्याय करावे, एवो जे कर्मपुज्जनो स्वजाव ठे, तेने ठहुं नामकर्म कहीयें.

सातमुं गोत्रकर्म ते शुं कहीयें? तोके जे थकी जातिकुलादिक उच्चतायें करी गु एणुं स्थानक होय पूजा पामे अने जातिकुलादिक हीनतायें करी लोक मांहे निं दा पामे, पूजा न पामे, एवो जे कर्म पुज्जनो स्वजाव ठे, ते सातमुं गोत्रकर्म जाणवुं. जेम कुंनकार जला घडा करे, तो लोकमांहे तंदूल, फूल, कुंकुमें करी पू जा पामे अने मदिरानां स्थानक जूनला, घडा, करे तो ते लोक मध्यें निंदा पामे. तेम जीव उच्चैर्गौत्रने उदयें उत्तम जातिकुलने प्रजावें रूप बुध्यादिकें हीन थको पण मान महत्व पामे अने हीन जात्यादिक अवगुणें करी जोपण स्वरूप सुबुद्धिमान् होय तो पण लोकमांहे हेलनीय होय.

आठमुं अंतराय कर्म, ते शुं कहीयें? के जेणे करी जीवें दान, लाज, जोग,

उपजोग, वीर्यादिकनी लब्धि हृणीयें निवारियें, जेम राजा, धन, धान्यनो धणी उतो पण जंमारीना दीधा विना वस्तुनां दान, लाज, जोग करी न शके, तेम जीव रूप राजा पण जंमारी रूप अंतरायकर्मना विवर लह्या विना दानादिक लब्धि न पामे, ते जणी जे, कर्मपुजलनी दानादिक लब्धि ने हणवानो स्वभाव ठे, तेने आठसुं अंतराय कर्म कहीयें. एटले आठ कर्मना मूलनाम तथा स्वरूप अने लक्षण कहां.

हवे बंध, उदय अने सत्तायें प्रकृतिनां स्थानक कहे ठे. तिहां मूल आठ प्रकृतिना बंधनी अपेक्षायें आठ, सात, ठ अने एक, एवं चार प्रकृतिस्थानक होय. अने उदयापेक्षायें आठ, सात अने चार, ए त्रण प्रकृति स्थानक होय अने सत्ता नी अपेक्षायें पण आठ, सात अने चार, ए त्रणज प्रकृतिस्थानक होय.

तिहां जेवारें जीव, सर्व कर्म बांधे, तेवारें आठ प्रकृतिजुं बंधस्थानक होय, ते जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर मुहूर्त्त रहे, केम के आयु बांधतां थकां जीवने ए बंध स्थानक होय अने आयुनो बंधकाल तो निरंतर पणे जघन्य तथा उत्कृष्टो अंतर मुहूर्त्तज होय, तेथी ए बंधस्थानकनो काल पण अंतर मुहूर्त्तनो जाएवो.

हवे ते मांहेथी जेवारें जीव, आयु न बांधे, तेवारें सात प्रकृतिना बंधस्थानकें होय, तेजुं कालमान पण जघन्यथकी तो अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जाएवुं. कारण के कोइएक अंतर मुहूर्त्तायुंवालो जीव, पोताना आयुष्यनो त्रीजो जाग थाक तो रहे, तेवारें परजवायुनो बंध करे, माटें तिहां आठ प्रकृतिनो बंध करी वली सात प्रकृतिना बंध स्थानकें आव्यो, तिहां वली कांइएक न्यून अंतर मुहूर्त्तना त्रीजा जाग पर्यंत सात प्रकृतिनो बंध करतो, सात प्रकृतिना बंधस्थानकें रही, वली मरण पामी अंतर मुहूर्त्तायु पणे अवतल्यो, तिहां पण ते आयुना बे जाग पर्यंत सात प्रकृतिनो बंध करे, पढी त्रीजा जागने धुरें आयु बांधे, तेवारें आठ प्रकृतिना बंधस्थानकें आवे. एम अंतर मुहूर्त्तनो जघन्य काल कह्यो अने उत्कृष्टो तो तेत्रीश सागरोपम ढम्मासे कण ते वली अंतरमुहूर्त्तोन पूर्वकोटी वर्षना त्रीजा जा गें अधिक एटलो काल होय, ते आवी रीतें—कोइएक जीव, पूर्वकोटी आयुवालो पोताना आयुष्यनो त्रीजो जाग थाकते अंतर मुहूर्त्त पर्यंत तेत्रीश सागरोपम देवा युनो बंध करे. तिहां आठ प्रकृतिना बंधस्थानें रही, वलतो पूर्वकोडीनो त्रीजो जाग, अंतर मुहूर्त्तें कणो रहे, त्यां लगे सात प्रकृतिना बंधस्थानकें रही, तिहांथी चवी, देवता थाय. तिहां पण तेत्रीश सागरोपम ढम्मासे कण एटला काल पर्यंत तो सात प्रकृतिनो बंध करे. शेष ढम्मास आयु विशेष रहे, तेवारें वली परजवायु बांधे.

तिहां आठ प्रकृतिना बंधस्थानकें आवे, ते जणी उत्कृष्टणी एटलो काल संजवे ठे.

अने जेवारें मोहनीय अने आयु विना बाकी ठ प्रकृतिनो बंध सूक्ष्मसंपराय नामा दशमे गुणगणे करे, तेवारें ते बंध जघन्यतो एक समय लगें होय. ते के म के कोइएक जीव, उपशमश्रेणी करी दशसुं गुणगणुं एक समय लगें स्पर्शी, तिहां जवह्यें दशमे गुणगणोज मरण पामीने अनुत्तर देव आय, तिहां वली अ विरति सम्यक्दृष्टिपणे सात प्रकृतिनो बंधक होय, ते अपेह्यें जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट तो अंतरमुहूर्त काल प्रमाण होय, ते केमके दशमा गुणगणानुं उत्कृष्ट एटलुंज कालमान ठे. तिहां ठ प्रकृतिनोज बंध होय, ते अपेह्यें जेवुं.

तथा एक वेदनीयकर्मनो बंध, अगीआरमे, बारमे अने तेरमे गुणगणे होय, अहींआं पण जघन्य तो पूर्वली परें एक समय लगें होय. अहीं अगीआरसुं गुणगणुं एक समयलगें स्पर्शी, जवह्यें मरण पामे. तेनी अपेह्यें एक समय जेवुं. अने उत्कृष्ट तो देशें जणी पूर्वकोटी वर्ष प्रमाण, एक वेदनीयनो बंध होय, केमके को इ एक जीव पूर्वकोटी आयुष्यनो धणी सात महीना माताना उदर मांहे रहिने शी घ्र जन्मे; जन्मथकी आठ वर्षने अंतें चारित्र जेइ, रूपकश्रेणीयें चढी, केवलज्ञान पामे. तिहां एकज वेदनीय कर्मनी प्रकृतिना बंधस्थानकें देशें जणी पूर्वकोटी वर्ष पर्यंत रहे ते अपेह्यें जेवुं.

हवे कयुं कयुं कर्म बांधतां कयां कयां बंधस्थानक होय ? ते कहे ठे. अहीं आं जाष्यनी गाथा लखीयें तैयें “ आठमि ष माहे ष, सत्त एक सग थवा तइए ॥ ब षतयमि बवंति, सेसएसु ठ सत्त ष ॥१॥ ” आयुःकर्म बांधतां एक आठ कर्मनुं बंध स्थानक होय अने मोहनीय कर्म बांधतां एक आठनुं, बीजुं सातनुं, ए बे बंधस्थान क होय. त्रीजुं वेदनीय कर्म बांधतां आठ, सात, ठ अने एक, ए चार बंधस्थानक होय. शेष ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र अने अंतराय, ए पांच कर्म ना बंधें आठ, सात अने ठ, ए त्रण बंधस्थानक होय.

हवे उदयस्थानक त्रण कहे ठे. आठ, सात अने चार, ए त्रण उदय स्थान क ठे. तिहां सर्व आठे कर्मने उदयें पदेवुं आठनुं उदय स्थानक होय. ए अजब्यनो अपेह्यें अनादिअनंत जागें जेवुं अने जब्यनी अपेह्यें अनादि सांत जागे जे वुं. तथा कोइएक जीव, उपशमश्रेणीयें चढी तिहां मोहनीय विना सात कर्मनुं उ दयस्थानक स्पर्शी, वली तिहांथी पढतो आठनुं उदयस्थानक स्पर्श. तेनी अपे ह्यें सादि सांत जागे जेवुं. ए जघन्य तो अंतर मुहूर्त काल प्रमाण जाणवो.

केम के कोइ एक जीव, वली मुहूर्त्तौतरें श्रेणी पडिवजे, तेनी अपेहार्ये लेवुं. तथा उत्कृष्टो तो देशें कणो अर्द्ध पुजलपरावर्त्त काल जाणवो, जें नणी उत्कृष्टशी फरी उपशमश्रेणी पडिवजवानुं एटलुंज अंतर ठे केम के सम्यक्त्व पाम्या पठी संसारमाहे रहेवानो उत्कृष्टो काल एटलोज होय, तेटला काल पर्यंत आतनो उदय होय तथा मोह विना सात कर्मनुं बीछुं उदय स्थानक, ते अगीआरमे गुणठा षोण होय. ते जघन्यशी तो एक समय लगें होय, जे नणी कोइएक जीव, एक समय मात्र अगीआरमुं गुणठाणुं स्पर्शाने, मरण पामे. तेनी अपेहार्ये जाणवुं. अने उत्कृष्ट तो अंतरमुहूर्त्त पर्यंत रहे. केमके अगीआरमा अने बारमा गुणठा णानो काल एटलोज ठे अने तिहाज ए सात प्रकृतितुं उदय स्थानक पण होय. तथा चार घातीयां कर्म ह्य कखा पठी नाम, गोत्र, आयु अने वेदनीय ए चार जवोपग्राही कर्मनो उदय, तेरमे, चौदमे, गुणठाणे होय, तिहां जघन्य तो अंतरमुहूर्त्त पर्यंत रहे अने उत्कृष्टशी तो देशें कणो पूर्वकोडीवर्ष पूर्वली परें जाववां.

हवे कइ प्रकृतिने उदर्ये केटजां उदय स्थानक जाजे? ते कहे ठे. मोहनीय कर्मने उदर्ये एकज आठ प्रकृतितुं उदयस्थानक जाजे तथा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय, ए त्रण कर्मने उदर्ये तो आठनुं अने सातनुं, ए बे उदयस्थानक जाजे, अने बाकीना चार कर्मने उदर्ये तो दशमा गुणठाणा लगें आठनुं उदय स्थानक होय, तथा अगीआरमे अने बारमे गुणठाणे सातनुं उदयस्थानक होय, अने तेरमे तथा चौदमे गुणठाणे चार कर्मनुं उदयस्थानक होय. एवं त्रण उदयस्थानक चार कर्मने उदर्ये होय.

हवे आठ, सात ने चार, ए त्रण सत्ता स्थानक कहे ठे. तिहां आठ कर्मनी सत्तानुं स्थानक, अगीआरमा गुणठाणा लगें होय, ए अजव्यनी अपेहार्ये अनादि, अनंत अने जव्यनी अपेहार्ये अनादि सात जागें होय. तथा मोहनीय ह्य कखा पठी सात कर्मनुं सत्तास्थानक, बारमे गुणठाणे अंतर मुहूर्त्त लगें होय. तथा चार घातीयां कर्मने ह्ये चार कर्मनुं सत्तास्थानक, तेरमे तथा चौदमे गुणठाणे होय. ते जघन्यशी तो अंतर मुहूर्त्त पर्यंत अंतगड केवलीनी अपेहार्ये जाणवो अने उत्कृष्टशी तो देशें कणो पूर्व कोटी वर्ष प्रमाण जाणवो.

हवे कइ कइ प्रकृतिनी सत्तार्ये कयां कयां सत्तास्थानक होय? ते कहे ठे. एक मोहनीयनी सत्तार्ये आठ कर्मनुं सत्तास्थानक होय, मोहनीयविना बीजां घातीयां

त्रण कर्मनी सत्तायें आतनुं तथा सातनुं, ए बे सत्ता स्थानक होय अने चार अघातीयांनी सत्तायें आत, सात अने चार, ए त्रणो सत्तास्थानक होय ॥ इति ॥ १ ॥

हवे मूल आत कर्मनो बंध, उदय, सत्ता स्थानकनो परस्पर संवेध कहे ठे.

अठ विह सत्त बब्बं, धएसु अठे व उदय संतंसा ॥

एग विहे ति विगप्पा, एग विगप्पा अबंधंमि ॥ ३ ॥

अर्थ—(अठविहसत्तबब्बं धएसु के०) अठविध बंधक, सप्तविध बंधक अने षड्विध बंधक, ए त्रण बंधकने विषे प्रत्येकें (अठेवउदयसंतंसा के०) आते कर्म प्रकृति उदय अने सत्तायें पामीयें. अहीं त्रण जंग थया. ते देखाडे ठे. प्रथम आतनो बंध, आतनो उदय, अने आतनी सत्ता, ए नांगो आयुर्बंध कालें अंतरमुहूर्त्त प्रमाण मिष्यात्वथी मांझीने अप्रमत्तगुणवाणा लगे जाणवो. तथा सातनो बंध, आतनो उदय अने आतनी सत्ता, ए बीजो नांगो, आयुर्बंधने अजावें जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टो ठमासैं-कणो ते त्रीश सागरोपम पूर्वकोडी त्रिजगें अधिक काल प्रमाण मिष्यात्वथी मांझीने नवमा गुणवाणा लगे जाणवो. तथा षड्विध बंध आतनो उदय अने आतनी सत्ता, ए त्रीजो नांगो, सूक्ष्म संपरायगुणवाणे जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो अंतर मुहूर्त्त प्रमाण जाणवो. तिहां मोहनीयनो बंध नथी, ते माटें कह्यो. तथा (एगविहेतिविगप्पा के०) एकविध बंधकें वेदनीय बांधे, तिहां त्रण नांगा होय, ते कहे ठे. एकनो बंध, सातनो उदय अने आतनी सत्ता, ए नांगो उपशांतमोह गुणवाणे जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो अंतरमुहूर्त्त लगे पामीयें, के म के अहीं मोहनो उदय नथी, परंतु सत्ता ठे. तेमाटें. तथा एकनो बंध, सातनो उदय अने सातनी सत्ता, ए बीजो नांगो ह्रीणमोह गुणवाणे अंतर मुहूर्त्त लगे पामीयें, के म के तिहां मोहनीयनी सत्ता पण नथी ते माटें. तथा एकनो बंध, चारनो उदय अने चारनी सत्ता, ए त्रीजो नांगो सयोगी केवलीने विषे पामीयें. ते घाती कर्मना अजावथी जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टो देशूणी पूर्वकोडी वर्ष लगे होय.

तथा (एगविगप्पाअबंधंमि के०) बंधकपणाने अजावें चारनो उदय अने चारनी सत्ता, ए एक नांगो अयोगी गुणवाणे पामीयें, अहींयां योगने अजावें बंध न होय माटें अवंधक कह्या. एवं सर्व मज्जीने मूल प्रकृतिना सात जंग थया ॥ ३ ॥

हवे ए सात जंग, चौद जीव स्थानकें कही देखाडे ठे.

सत्तठ बंध अद्दुद, यंसंत तेरस सुजीव ठाणोसु ॥

एगंमि पंच जंगा, दो जंगा हुंति केवलिणो ॥ ४ ॥

अर्थ—(तेरससुजीवठाणोसु के०) एक संझी पंचेंडिय पर्यासा जीव वर्जिने शेष तेर जीव स्थानकने विषे बे जांगा होय, ते देखाडे ठे. (सतठबंधअद्दुदयसंत के०) सातनो बंध आतनो उदय अने आतनी सत्ता, ए प्रथम जांगो आयुर्वंध काल विना सदा होय, तथा अष्टविध बंध, आतनो उदय अने आतनी सत्ता, ए बीजो जांगो आयुर्वंध कालें अंतर सुहूर्त्त जगें होय. अने (एगंमि के०) एक संझी पंचेंडिय पर्यासाना जीवस्थानकें (पंचजंगा के०) धुरला पांच जांगा होय, तिहां बे जांगा तो पहेलानी पेरें जाणवा. एटले एक आयुर्वंधकालें आतनो बंध, आतनो उदय अने आतनी सत्ता बीजो आयुर्वंधकाल विना सातनो बंध, आतनो उदय अने आतनी सत्ता, त्रीजो दशमे गुणठाणे मोह अने आयु विना ठनो बंध, आतनो उदय अने आतनी सत्ता, चौथो अग्नीआरमे गुणठाणे एकवेदनीयनो बंध अने मोह विना सातनो उदय अने आतनी सत्ता होय. पांचमो बारमे गुणठाणे एकनो बंध सातनो उदय अने सातनी सत्ता, ए पांच जांगा संझी पंचेंडिय पर्यासाने गुणठाणाने जेदें होय. तथा (दोजंगाहुंतिकेवलिणो के०) बे जांगा केवलीने होय, ते केम के तेरमे गुणठाणे एक वेदनीयनो बंध, चारनो उदय अने चारनी सत्ता, सयोगी केवलीने होय. ए प्रथम जंग तथा चौदमे गुणठाणे अयोगी केवलीने बंधशून्य होय अने चारनो उदय तथा चारनी सत्ता होय, ए बीजो जंग जाणवो. ए बे जंग के वलीने होय. अहींआं ए जाव जे मनना अजावथी केवलीने सत्तीआ पंचेंडिय थी निन्न कह्या, एटले केवलीने डब्यमन होय पण जावमन न होय, माटें संझी पण नही, असंझी पण नही परंतु संझासंझी कहियें, तथा एना जांगा पण चूदा कह्या. एवं सात जांगा चौद जीव स्थानकें कह्या ॥ ४ ॥

हवे एहिज चौद जांगा गुणठाणे विवरीने कहे ठे.

अठसु एग विगण्यो, ठस्सु विगुण सन्निएसु डु विगण्या ॥

पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदय संत कम्माणं ॥ ५ ॥

अर्थ— एक मिश्रगुठाणुं अने आठमाथी मांमीने चौदमा सुधीना सात गुणठाणां, एवं (अठसु के०) आठ गुणठाणाने विषे (एगविगण्यो के०) एकेक

जांगो होय. ते केम ? तोके त्रीजुं तथा आठमुं अने नवमुं, ए त्रण गुणठाणे आशु न बांधे, माटें सातनो बंध आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए एकेक जांगो होय, जे जणी ए त्रण गुणठाणे आयुर्बंध योग्य अथ्यवसाय स्थान क नथी तेथी आठनो बंध न होय तथा सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे आशु अ ने मोह विना ठनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए एकज जांगो होय. अग्नीधारमे गुणठाणे एकनो बंध, मोह विना सातनो उदय अने आठनी सत्ता ए एकजांगो होय तथा बारमे गुणठाणे एकनो बंध सातनो उदय, अने सातनी सत्ता, ए एकज जांगो होय. तेरमे गुणठाणे एकनो बंध, चारनो उदय, अत्ते चार नी सत्ता, ए एकज जांगो होय. चौदमे गुणठाणे बंध शून्य माटें चारनो उदय अने चारनी सत्ता, ए एकज जांगो होय. एवं आठ गुणठाणे एकेक जांगो होय.

तथा (उस्सुविगुणसन्निघ्णु के०) मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरति, देशविरति, प्रमत्त अने अप्रमत्त, ए उ गुणठाणाने विषे एवी संज्ञा (इविगण्या के०) तेने वि षे बे बे विकल्प पामीयें केम के ए उ गुणठाणे आयुर्बंध योग्य अथ्यवसाय स्था नक ठे तेथी आयुर्बंध काळें आठनो बंध, आठनो उदय, अने आठनी सत्ता ए जांगो होय अने आयुर्बंध विना सातनो बंध, आठनो उदय अने आठनी सत्ता, ए बीजो जांगो होय. एम ए उ गुणठाणे बे बे जांगा होय. एम (पत्तेयपत्तेय के०) प्रत्येकें प्रत्येकें, (बंधोदयसंतकम्माणं के०) बंध, उदय अने सत्ताना जांगा अत्रुक्रमें गुणठाणे होय, एटले मूल प्रकृति आश्रयी बंधोदय सत्ता संवेध स्वामी कह्या ॥५॥

हवे उत्तर प्रकृति आश्रयी बंध, उदय अने सत्ताप्रकृति स्थानक, संवेध कहीयें बैयें. तिहां प्रथम आठ कर्ममांहे जे कर्मनी जेटली उत्तर प्रकृति ठे, ते कहे ठे.

॥ अथात्तर प्रकृतिराश्रित्य संवेधस्वामित्वं चाह ॥

पंच नव झसि अष्टा, वीसा चउरो तहेव बायाला ॥

झसिय पंच य जणिया, पयडीउ आणुपुव्वीए ॥ ६ ॥

अर्थ— ज्ञानावरणीयनी उत्तर प्रकृति, (पंच के०) पांच, दर्शनावरणीयनी उत्तर प्रकृति, (नव के०) नव, वेदनीयनी उत्तर प्रकृति, (झसि के०) बे, मोह नीयनी उत्तर प्रकृति, (अष्टावीसा के०) अष्टावीस, आयुनी उत्तर प्रकृति, (चउ रो के०) चार, (तहेव के०) तथा चली तेमज नामनी उत्तर प्रकृति, (बाया ला के०) बेंताजिशा, गोत्रनी उत्तर प्रकृति, (झसिय के०) बे अने अंतरायनी उत्तर प्रकृ

तिना (पंचय के०) पांच जेद, (जणिया के०) कहा ठे. (पयडीउआणुपुव्वीए के०) ए रीते आठ मूल प्रकृतिना उत्तर जेद, अनुक्रमे जाणवा. तिहां नामकर्मनी बेता लीश प्रकृतिमध्ये चौद पिंरु प्रकृतिना जेद करतां पांशठ थाय. तेमध्ये त्रसदशक, स्थावरदशक तथा आठ प्रत्येक प्रकृति मेलवतां त्र्याणुं थाय. ते आश्रयी विशेष विवरो पद्देला कर्मग्रंथना बालावबोधथी जाणवो. ए उत्तर प्रकृति कही ॥ ६ ॥
हवे उत्तर प्रकृतिनो बंध उदय अने सत्तानोसंवेध कहे ठे.

बंधोदय संतंसा, नाणावरणं तराइए पंच ॥

बंधो चरमे वि उदय, संतंसा ह्रुति पंचेव ॥ ७ ॥

अर्थ- (बंधोदयसंतंसा के०) बंध, उदय अने सत्ताना अंश ते (नाणावरणं तराइएपंच के०) ज्ञानावरणीय अने अंतराय, ए बे कर्मना पांच पांच प्रकृतिरूप सरखा ठे, ते जणी बंधादिक स्थानकनी प्ररूपणा पण वेनी सार्येज करे ठे. ज्ञानावरणीये तथा अंतरायें प्रत्येके बंध, उदयअने सत्तारूप अंश सम जागें पांच प्रकृति होय, एटले ज्ञानावरणीयनुं पांच प्रकृतिनुं एकज बंध स्थानक होय, ए पांचे ध्रुवबंधिनी प्रकृति ठे, माटे पांचेनो ध्रुवबंध जाणवो. तथा उदय पण पांचनो ध्रुव जाणवो अने सत्तास्थानक पण पांचनुं ध्रुव जाणवुं. एमज अंतरायनी पांच प्रकृति पण ध्रुवबंधिनी ध्रुवोदयिनी तथा ध्रुवसत्ताये कही ठे. हवे ए बे कर्मे संवेध कहे ठे. ज्ञानावरणीय बंध कालें पांचनो बंध पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता ए एक जांगो, एमज अंतरायनो पण ए एकज जांगो ते दशमा गुणताणा लगे होय. तथा (बंधोचरमेवि के०) आगल ज्ञानावरणीय अने अंतरायना बंधने अजावें पण (उदयसंतंसाह्रुतिपंचेव के०) पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता रूप बीजो जांगो अगीआरमे अने बारमे गुणताणे जाणवो ॥ ७ ॥

हवे दरीनावरणीय कर्मने विषे उत्तर प्रकृति आश्रयी बंधादिक स्थानकनी प्ररूपवाने कहे ठे. अथोत्तर प्रकृतिराश्रित्य बंधस्थान प्ररूपणार्थमाह ॥

बंधस्सय संतस्सय, पगइछाणाइ तिन्नि तुल्लाइ ॥

उदय छाणाइ छवे, चउ पणग दंसणावरणे ॥ ८ ॥

अर्थ-दरीनावरणीय कर्मने विषे (बंधस्सयसंतस्सयपगइछाणाइ के०) बंध प्रकृतिनां स्थानक तथा सत्ताप्रकृतिनां स्थानक पण (तिन्नि के०) त्रण त्रण (तुल्ला

इं के०) तुल्य ठे, एटले बंधनां स्थानक पण त्रण ठे अने सत्तानां स्थानक पण त्रण ठे माटे तुल्य ठे ते कहे ठे. एक नव प्रकृतिनुं स्थानक बीछुं थीण-धीत्रिक हीन करतां ठ प्रकृतिनुं स्थानक, त्रीछुं निडा अने प्रचला हीन करतां चार प्रकृतिनुं स्थानक, एरीते त्रण स्थानक जाणवां. तिहां नव प्रकृतिनुं बंध स्थानक पहेले तथा बीजे गुणठाणे लाजे, ते अजव्यने पहेले गुणठाणे अनादि अनंत होय अने जव्यने अनादि सांत होय तथा सम्यक्त्वी जीव मिथ्यात्वं जाय तेनी अपेक्षायें सादि सांत पण होय ते जघन्यतो अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टो तो देशोन अर्ध पुजलपरावर्त्त काल पर्यंत जाणवो. तथा बीछुं ठ प्रकृतिनुं बंध स्थानक, मिश्रगुणठाणाथी अ पूर्वकरणना प्रथम जाग लगे होय ते जघन्य तो अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टो तो एकशो बत्रीश सागरोपम जाजेरा लगे रहे, जे जणी सम्यक्त्वं ढाशठ सागरोपम र ही पठी अंतर मुहूर्त्त मिश्रगुणठाणे आवी वली ढाशठ सागरोपम सम्यक्त्वं रही, ते पठी कोइएक जीव. मिथ्यात्व पडीवजे, तेवारें नवने बंध स्थानकें जाय अथवा कृपकश्रेणी पडिवजे, तो ते चारने बंध स्थानकें जाय तथा चार प्रकृतिनुं बंध स्थानक निडा प्रचलानो बंधविच्छेद करी आठमा गुणठाणाना बीजा जागथी मां नी दशमा गुणठाणा लगे होय ते जघन्यथी तो एकसमय होय जे जणी कोइ एक जीव आठमा गुणठाणाने बीजे जागे चार प्रकृतिनो बंध करी मरण पामी देवता थाय. तिहां ठ प्रकृतिनो बंध करे. ए अपेक्षायें लेवुं तथा उत्कृष्टो तो अंत र मुहूर्त्त काल जाणवो. एम त्रण बंधस्थानक कहां.

हवे त्रण सत्तास्थानक कहे ठे. तिहां नवनुं सत्तास्थानक, अजव्यनी अपेक्षायें अनादि अनंत अने जव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत, ए स्थानक उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें पहेला गुणठाणाथी मां नी अगीथारमा गुणठाणा लगे होय अने कृपक श्रेणीनी अपेक्षायें तो प्रथम गुणठाणाथी मां नी नवमा गुणठाणाना नव जागमाहेला प्रथम जाग लगे होय. तिहां वली थीण-धीत्रिकनो ह्य करे तेथी तेनी सत्ता टव्या पठी ठ प्रकृतिनी सत्ता नवमा गुणठाणाना बीजा जागथी बारमा गुणठाणाना दि चरम समय लगे होय. एनो काल अंतरमुहूर्त्तनो जाणवो तथा बारमा गुणठा णाने ठेहजे समयें निडा प्रचलाने ह्यें चारना सत्ता स्थानक एक समय लगे होय.

तथा (उदयत्ताणाइं के०) उदय स्थानक (चउपणग के०) चारनुं तथा पां चनुं ए (डवे के०) वे, (दंसणावरणे के०) दर्शनावरणीय कर्मने विषे होय ति हां चक्रु, अचक्रु, अवधि अने केवलदर्शनावरणीय, ए चार प्रकृति ध्रुवोदयी ठे.

ते जणी ए चारनो उदय, सदा होय, माटें एक चारनुं उदयस्थानक मिष्यात्वशी मांनिने हीणमोहना ठेहडा लगे होय अने ए चार साथें जेवारें पांचमी एक निज्ञानो उदय होय, तेवारें पांचनुं उदयस्थानक बीजुं जाणवुं. जे जणी पांच निज्ञा अश्रुवोदयी ठे ते माटें उदय विरोधी ठे, तेथी ए पांच निज्ञामांथी एक काळें एक निज्ञाने उदयें बीजी निज्ञानो उदय न होय, तेमाटें जेवारें निज्ञानो उदय न होय तेवारें चक्रुदर्शनावरणादिक चारनोज उदय होय अने जेवारें निज्ञानो उदय होय तेवारें पांचनो उदय साथें होय, माटें पांचनुं अने चारनुं, ए बे उदयस्थानक क ह्यां. एम बीजा दर्शनावरणीयकर्मना बंधोदयसत्तास्थानक क ह्यां ॥ इति ॥ ७ ॥

हवे ए दर्शनावरणीयना बंधस्थानकादिकनो संवेध, गुणठाणे कहे ठे.

बीयावरणे नव बंध, धएसु चउ पंच उदय नव संता ॥

उच्चउ बंधे चैवं , चउ बंधुदए उ लंसाय ॥ ए ॥

अर्थ—(बीयावरणे के०) बीजा दर्शनावरणीयने विषे (नवबंधएसु के०) नवनुं बंधस्थानक, मिष्यात्व अने सास्वादन, ए बे गुणठाणाने विषे होय. तिहां (चउपंचउ दय के०) चारनुं अने पांचनुं, ए बे उदयनां स्थानक होय, तेमांहे चक्रुदर्शनावरणादिक चारने उदयें चारनुं उदय स्थानक होय अने पांच निज्ञामांहेली एककाळें एक निज्ञाने उदयें पांच प्रकृतिनुं उदय स्थानक होय अने ए बेहु जांगे (नवसंता के०) सत्तानुं स्थानक तो नव प्रकृतिनुंज होय, एटले नवनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता, ए एक जांगो तथा नवनो बंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बीजो जांगो. ए बे जांगा पहेले तथा बीजे गुणठाणे लाजे. ए बीजा जांगामां एककाळें पांच निज्ञामांहेली एकेकी निज्ञानो उदय होय ते एकेकी निज्ञानुं नाम लइने क हीयें, तेवारें एक जांगामां पांच जांगा थाय.

एमज (उच्चउबंधेचैवं के०) निश्चैशी ठने बंधें तथा चारने बंधें पण बे बे जांगा होय, ते कहे ठे. तिहां ठनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता ए प्रथमजांगो, तथा ठनो बंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बीजो जांगो. एवं बे जांगा त्रीजो, चौथो, पांचमो, षष्ठो, सातमो अने आठमा गुणठाणाना प्रथम जांग लगे होय, जे जणी त्रीजा गुणठाणा थकी शीणद्वित्रिक टालीने बाकी उ प्रकृतिनो बंध होय तथा उदय तो चारनो ध्रुव होय अथवा जेवारें निज्ञानो उदय होय, तेवारें पांच प्रकृतिनो उदय पूर्वली परें होय अने सत्ता तो नवनीज होय. हूपक साधुने आठमाना

प्रथम जागें ठनो बंध, चारनो उदय अने ठनी सत्ता, ए एकज जांगो पामीयें, जे जणी ते ने अतिविच्छेद पणे करी कोइपण निज्ञानो उदय न होय. थडुक्तं सत्कर्मग्रंथे “ निहाडुगस्त उदउ, स्वीएखवणे परिवषए ” ए वचनथी पांचनो उदय न होय तथा कोइएक आचार्य, बारमा गुणठाणा लगें निज्ञानो उदय मानिने कूपकने पण निज्ञानो उदय कहे ठे. पण ते कम्मपयडीनी साथें विरुद्ध ठे तेषी अंहीं विवक्ष्योनथी.

एमज चारने बंधें पण बे जांगा जाणवा, एटले पांच निज्ञा विना चारनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा जेवारें निज्ञा अथवा प्रचला, ए बे मांहेली एकनो उदय होय तेवारें चारनो बंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे जांगा आठमाना बीजा जागथी मांमीने अगीआरमा गुणठाणां लगें उपशमभ्रेणीयें होय अने कूपकने तो निज्ञाना अजाव जणी पूर्वली परें एक जांगोज जाणवो.

तथा (चउबंडुदएठलंसाय के०) चारने बंधें नवमा गुणठाणाना बीजा जागथी थीणद्वित्रिक नवमाना प्रथम जागें हेपवे तेवारें ठनी सत्ता होय, अंहींआं अंश शब्दें सत्ता कहीयें. “ अंसइति संतंकम्मं जन्नइ ” एम चूर्णीवचनथी जाणवुं. तेवारें चारनो बंध, चारनो उदय अने ठनी सत्ता होय, ए जांगो दशमा गुणठाणाना ठेह्ला समय लगें कूपकने होय. एम चारने बंधें त्रण जांगा अया ॥९॥

उवरय बंधे चउपण, नवंस चउरुदय ठ च्चऊसंता ॥

वेयणियाउ अ गोए, विचऊ मोहं परं वुहं ॥ १० ॥

अर्थ-हवे (उवरयबंधे के०) बंध विरमे अके अगीआरमे गुणठाणे (चउपणनवंस के०) चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे जांगा पामीयें जे जणी उपशांतमोहने निज्ञानो उदय संजवे ठे; तेषी पांचनो उदय पण लाजे. अंहींआं पण नवंस शब्दें नवनी सत्ता जाणवी. तथा वारमे गुणठाणे ठेह्ला समयना आगला समय लगें (चउरुदयठञ्जकसंता के०) चारनो उदय अने ठनी सत्ता, ए जांगो होय अने ठेहले समयें तो चारनो उदय तथा चारनी सत्ता, ए जांगो होय. केमके द्विचरमसमयें निज्ञा अने प्रचलानो कूपकने तेषी चारनी सत्ता होय. एम अगीआर जांगा दर्शनावरणीय कर्मना होय अने कूपक हीणमोहने विषे जे निज्ञानो उदय माने ठे, तेने मत्तें चारनो बंध, पांचनो उदय अने ठनी सत्ता ए जांगो नवमे अने दशमे गुणठाणे कूपकने होय अने बंधने अजावें पांचनो उदय, ठनी सत्ता, ए जांगो हीणमोहें द्विचरम

समय लगे होय. एम ए बे जांगा वधे तेवारें तेर जांगा होय. ते वली जिहां जेटली निडा होय तिहां तेटली निडानुं पृथक्कनाम लड कहीरें तेवारें पच्चीश जांगा थाय.

हवे वेदनीय, आयु अने गोत्र, ए त्रण कर्मने विषे संवेध देवाडे ठे. (वेयणि यावअगोए के०) वेदनीय, आयु अने गोत्र ए त्रण कर्मने विषे यथागम एटले जेम शास्त्र नाषादिकें कळुं ठे, तेम बंधादिक स्थानक संवेध (विजय के०) वहे चीरें तिहां वेदनीयकमें शाता अथवा अशाता ए बे मांहेली एकनोज बंध थाय जे जणी ए बे प्रकृति बंधें तथा उदरें विरोधिनी ठे ते माटें एक बंधाता बी जीनो बंध न होय माटें बंधें एक स्थानक होय. तेम उदय स्थानक पण शाता अथवा अशाता, ए बे मांहेथी एकनुंज होय अने सत्तास्थानक बेनुं तथा एकनुं एवं बेहु होय. हवे एना जांगा कहीरें ठैरें. अशातानो बंध, अशातानो उदय अने शाता, अशाता बेहुनी सत्ता, ए एक जांगो, तथा अशातानो बंध, शातानो उदय अने शाता अशाता ए बेनी सत्ता, ए बीजो जांगो. ए बे जांगा मिथ्यात्व गुणगणा थी मांमीने प्रमत्तगुणगणा लगे होय तेवार पढी अशातानो बंध ठेदाय माटें ए क शातानो बंध, अशातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता ए प्रथम जांगो तथा बीजो शातानो बंध, शातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता ए बे जांगा, मिथ्यात्वथी मांमीने सयोगी केवली लगे होय, तेवार पढी बंधने अ जावें शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता तथा अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए बे जांगा, अयोगीने द्विचरम समय लगे होय तेवार पढी बहोत्तर प्रकृतिमध्ये जेणे अशातानो क्य क्यो तेने शातानो उदय अने शातानी सत्ता ए जांगो अ योगी गुणगणाने ठेहले समयें होय अने जेणे शातानो क्य क्यो, तेने आशा तानो उदय अने आशातानी सत्ता, ए जांगो अयोगीने ठेहले समयें होय. ए बे जांगा एकेक समयना जाणवा. ए सर्व मलीने वेदनीय कर्मना आठ जांगा कहा.

हवे आयुःकर्मना जांगा कहे ठे. आयुने विषे सामान्यें एक बंधस्थानक होय. केम के चारे गतिना आयुबैधें तथा उदरें विरोधी ठे तेमाटें एक वेलायें बे आयुनो बंध तथा उदय न होय अने सत्तास्थानक एक तथा बे होय ते केवी रीतें ? तो के जिहां लगे परजवनुं आयु बाधुं न होय तिहां लगे एकज आयु वर्ते ठे तेनी ज सत्ता जाणवी अने परजवायु बंधकालें तथा बांध्या पढी मरण समय पर्यंत बे आयुनी सत्ता होय, तेवारें एक तो जे गतिमां वर्ते ठे तेनो उदय ठे तेनी सत्ता होय अने बीजो परजवायु बांधे तेनी सत्ता होय ए बे सत्तास्थानक जाणवां.

प्रथम जागें ठनो बंध, चारनो उदय अने ठनी सत्ता, ए एकज जांगो पामीयें, जे जणी ते ने अतिविद्युद्ध पणे करी कोइपण निदानो उदय न होय. यहुक्तं सत्कर्मग्रंथे “ निदाङ्गस्त उदउ, खीणखवगे परिवक्षए ” एवचनथी पांचनो उदय न होय तथा कोइएक आचार्य, वारमा गुणठाणा लगें निदानो उदय मानीने रूपकने पण निदानो उदय कहे ठे. पण ते कम्मपयडीनी साथें विरुद्ध ठे तेथी अंहीं विवक्ष्योनथी.

एमज चारने बंधें पण बे जांगा जाणवा, एटले पांच निडा विना चारनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा जेवारें निडा अथवा प्रचला, ए बे माहेली एकनो उदय होय तेवारें चारनो बंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे जांगा आठमाना बीजा जागथी मांमीने अगीआरमा गुणठाणां लगें उपशमश्रेणीयें होय अने रूपकने तो निदाना अजाव जणी पूर्वली परें एक जांगोज जाणवो.

तथा (चउबंधुदएउलंसाय के०) चारने बंधें नवमा गुणठाणाना बीजा जागथी थीणद्वित्रिक नवमाना प्रथम जागें ह्येपवे तेवारें ठनी सत्ता होय, अंहींअं अंश शब्दें सत्ता कहीयें. “ अंसइति संतंकम्मं जन्नइ ” एम चूर्णीवचनथी जाणवुं. तेवारें चारनो बंध, चारनो उदय अने ठनी सत्ता होय, ए जांगो दशमा गुणठाणाना ठेह्ला समय लगें रूपकने होय. एम चारने बंधें त्रय जांगा थया ॥ए॥

उवरय बंधे चउपण, नवंस चउरुदय उ च्चउसंता ॥

वेयणियाउ अ गोए, विचऊ मोहं परं वुहं ॥ २० ॥

अर्थ—हवे (उवरयबंधे के०) बंध विरमे थके अगीआरमे गुणठाणे (चउपणनवंस के०) चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे जांगा पामीयें जे जणी उपशांतमोहने निदानो उदय संजवे ठे; तेथी पांचनो उदय पण लाजे. अंहींअं पण नवंस शब्दें नवनी सत्ता जाणवी. तथा वारमे गुणठाणे ठेह्ला समयना आगला समय लगें (चउरुदयउचउसंता के०) चारनो उदय अने ठनी सत्ता, ए जांगो होय अने ठेहले समयें तो चारनो उदय तथा चारनी सत्ता, ए जांगो होय. केमके द्विचरमसमयें निडा अने प्रचलानो ह्य करे तेथी चारनी सत्ता होय. एम अगीआर जांगा दर्शनावरणीय कर्मना होय अने रूपक हीणमोहने विषे जे निदानो उदय माने ठे, तेने मत्तें चारनो बंध, पांचनो उदय अने ठनी सत्ता ए जांगो नवमे अने दशमे गुणठाणे रूपकने होय अने बंधने अजावें पांचनो उदय, ठनी सत्ता, ए जांगो हीणमोहें द्विचरम

समय लगे होय. एम ए बे जांगा बंधे तेवारें तेर जांगा होय. ते वली जिहां जेटली निडा होय तिहां तेटली निडातुं पृथक्नाम लइ कहीयें तेवारें पञ्चीश जांगा घाय.

हवे वेदनीय, आयु अने गोत्र, ए त्रण कर्मने विषे संवेध देखाडे ठे. (वेयणि याउअगोए के०) वेदनीय, आयु अने गोत्र ए त्रण कर्मने विषे यथागम एटले जेम शास्त्र नापादिकें कसुं ठे, तेम बंधादिक स्थानक संवेध (विजस के०) वहे चीयें तिहां वेदनीयकर्में शाता अथवा अशाता ए बे मांहेली एकनोज बंध घाय जे जणी ए बे प्रकृति बंधें तथा उदयें विरोधिनी ठे ते माटें एक बंधातां बी जीनो बंध न होय माटें बंधें एक स्थानक होय. तेम उदय स्थानक पण शाता अथवा अशाता, ए बे मांहेली एकनुंज होय अने सत्तास्थानक बेतुं तथा एकतुं एवं बेहु होय. हवे एना जांगा कहीयें ठैयें. अशातानो बंध, अशातानो उदय अने शाता, अशाता बेहुनी सत्ता, ए एक जांगो, तथा अशातानो बंध, शातानो उदय अने शाता अशाता ए बेनी सत्ता, ए बीजो जांगो. ए बे जांगा मिथ्यात्व गुणगणा यी मांहीने प्रमत्तगुणगणा लगे होय तेवार पढी अशातानो बंध ठेदाय माटें एक शातानो बंध, अशातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता ए प्रथम जांगो तथा बीजो शातानो बंध, शातानो उदय अने शाता, अशाता ए बेनी सत्ता ए बे जांगा, मिथ्यात्वयी मांहीने सयोगी केवली लगे होय, तेवार पढी बंधने अजावें शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता तथा अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए बे जांगा, अयोगीने द्विचरम समय लगे होय तेवार पढी बहोतेर प्रकृतिमध्ये जेणे अशातानो क्य कसो तेने शातानो उदय अने शातानी सत्ता ए जांगो अयोगी गुणगणाने ठेहले समयें होय अने जेणे शातानो क्य कसो, तेने आशातानो उदय अने आशातानी सत्ता, ए जांगो अयोगीने ठेहले समयें होय. ए बे जांगा एकेक समयना जाणवा. ए सर्व मलीने वेदनीय कर्मना आठ जांगा कहा.

हवे आयुःकर्मना जांगा कहे ठे. आयुने विषे सामान्यें एक बंधस्थानक होय. केम के चारे गतिना आयुबंधें तथा उदयें विरोधी ठे तेमाटें एक वेलायें बे आयुनो बंध तथा उदय न होय अने सत्तास्थानक एक तथा बे होय ते केवी रीतें ? तो के जिहां लगे परजवतुं आयु बाधुं न होय तिहां लगे एकज आयु वसें ठे तेनी ज सत्ता जाणवी अने परजवायु बंधकालें तथा बांध्या पढी मरण समय पर्यंत बे आयुनी सत्ता होय, तेवारें एक तो जे गतिमां वसें ठे तेनो उदय ठे तेनी सत्ता होय अने बीजो परजवायु बांधे तेनी सत्ता होय ए बे सत्तास्थानक जाणवां.

हवे संवेध कह्यैयें ठैयें. तिहां प्रथम आउखानी त्रण अवस्था कह्यैयें ठैयें. पहेली परजवायुबंधना समयथी जे प्रथम ते पूर्वावस्था, बीजी परजवायुबंधकालें बंधावस्था, त्रीजी परजवायु बांध्या पढीनी परावस्था, तिहां नरकायुनो उदय, नरकायुनी सत्ता, ए जांगो नारकीने परजवना आयुबंधकालथकी पहेली अवस्थायें बंधने अजावें प्रथमना चार गुणठाणे होय तथा जे वर्तमाने नारकी ठे अने आगले जवें तिर्यच थाइतेने परजवायुबंधकालें तिर्यचायुनो बंध, नरकायुनो उदय अने तिर्यगायु तथा नरकायु, ए बेनी सत्ता ए जांगो मिष्यात्व तथा सास्वादन, ए बे गुणठाणे होय, तेमज जे नारकी, आगले जवें मनुष्य थाइतेने आयुबंधकालावस्थायें मनुष्यायुनो बंध, नरकायुनो उदय तथा मनुष्यायु अने नरकायु ए बेनी सत्ता, ए जांगो पहेले, बीजे अने चौथे, ए त्रण गुणठाणे होय. एम ए नारकीने ए बे आयुनोज बंध ठे पण देवता अने नारकीना आयुनो बंध नथी यइक्त "देवनारगेषु न उववचंति" ए वचनथी जाणवुं. तथा परजवायु बांध्या पढी उत्तरावस्थायें बंधशून्य बे जांगा होय, ते कहे ठे. एक नरकायुनो उदय अने नरक तथा तिर्यगायुनी सत्ता, बीजो नरकायुनो उदय अने नरक तथा मनुष्यायुनी सत्ता, एम बे जांगा चारे गुणठाणे होय. ए रीतें नरकगति मध्ये आयुःकर्मना पांच जांगा लाजे, तेमज देवगतिने विषे पण एज पांच जांगा कहेवा पण एटलुं विशेष जे नरकायुने ठामें देवायु कहेवुं. एवं नरक-तथा देव ए बे गतिना दश जांगा थया.

हवे तिर्यच तथा मनुष्यगतिने विषे आयु आश्री प्रत्येकें नव नव जांगा उपजे, ते लखीयें ठैयें. तिहां पण त्रण अवस्था पूर्वली परें जाणवी, तेमध्ये तिर्यचने विषे परजवायु बंधथकी पूर्वे बंधने अजावें तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायुनी सत्ता, ए जांगो पांच गुणठाणां पर्यंत लाजे अने मनुष्यने मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए जांगो चौदे गुणठाणे लाजे, अने परजवायुबंधकालावस्थायें तिर्यच तथा मनुष्यने प्रत्येकें चार चार जांगा उपजे, ते कह्यैयें ठैयें. जे तिर्यच मरीने तिर्यच थाइतेने तिर्यगायुनो बंध, तिर्यगायुनो उदय तथा बे तिर्यगायुनी सत्ता होय केमके एक तिर्यगायु बांधे ठे अने बीजो जोगवे ठे माटें बेनी सत्ता कही, ए जांगो प्रथमना बे गुणठाणां लगें होय, जे जणी आगला गुणठाणे तिर्यगायुनो बंधज नथी, ते जणी बे गुणठाणां कह्या अने जे तिर्यच मरी मनुष्य थाइतेने मनुष्यायुनो बंध तिर्यगायुनो उदय अने मनुष्यायु तथा तिर्यगायु ए बेनी सत्ता जाणवी. ए जांगो पण पहेले अने बीजे ए बे गुणठाणे पामीयें तथा जे तिर्यच मरी

देव आशे, तेने देवायुनो बंध, तिर्यगायुनो उदय अने देवायु तथा तिर्यगायु ए बे नी सत्ता ए नांगो एक. मिश्रगुणताणा विना देशविरति गुणताणा जगें चार गुणता णे पामीयें. तथा जे तिर्येच मरीने नरकें जाशे तेने नरकायुनो बंध, तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु तथा नरकायु ए बे नी सता, ए नांगो मिथ्यात्वने होय. ए चार नांगा आर्युबंधकालावस्थायें तिर्येचने होय. हवे आर्युबंध करी रद्या पढी पा ढजी उत्तरावस्थायें बंधशून्य चार नांगा होय, ते देखाडे ठे. एक तिर्यगायुनो उदय अने बे तिर्यगायुनी सत्ता, बीजो तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु तथा मनुष्यायु ए बेनी सत्ता, त्रीजो तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु, देवायु ए बेनी सत्ता, चोथो तिर्यगायुनो उदय अने तिर्यगायु, नरकायु, ए बेनी सत्ता, ए चार नांगा होय, तेम ध्ये जेणे आर्युबंधकालावस्थायें जे गतिनुं आयु बांध्युं होय, तेने उत्तरावस्थायें बंधशून्य नांगो जाणवो. एटजे नव नांगा तिर्येचनी गतिथी उपजे.

तेम मनुष्यने पण नव नांगा जाणवा, परंतु एटजुं विशेष जे परानवायुबंधाव स्थाकालें जे मनुष्य मनुष्यायु बांधे, तेने मनुष्यायुबंध, मनुष्यायुदय अने बे मनु ष्यायुनी सत्ता तेमां एक मनुष्यायु तो जोगवे ठे ते अने बीजो बांधे ते, एम बेहुनी सत्ता होय तथा जे मनुष्य तिर्यगायु बांधे तेने तिर्यगायुनो बंध मनुष्यायुनो उदय अने तिर्येचायु तथा मनुष्यायु, ए बेहुनी सत्ता ए नांगो होय. ए बे नांगा मिथ्यात्व त था सास्वादन ए बे गुणताणे लाजे जे नणी मनुष्य तथा तिर्येच सम्यक्त्वी थका देवायु बांधे पण बीजुं आयु न बांधे तेमाटें चोथे गुणताणे ए नांगा न होय. त था जे मनुष्य देवायु बांधे, तेने देवायुनो बंध मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्य तथा देवायु ए बेनी सत्ता ए नांगो एक मिश्रगुणताणा विना अप्रमत्त गुणताणां लगे ढ गुणताणे पामीयें, तथा जे मनुष्य, नरकायु बांधे तेने नरकायुनो बंध मनुष्यायुनो उद य तथा मनुष्य अने नरकायु ए बेनी सत्ता, ए नांगो मिथ्यात्व गुणताणे लाजे. ए चार आर्युबंध कालावस्थाना नांगा जाणवा. हवे आर्युबंध काल पढी आगळे यथानु क्रमे उत्तरावस्थायें ए चार नांगा बंधशून्य कहेवा, ते कहे ठे. एक मनुष्यायुनो उदय, तथा बे मनुष्यायुनी सत्ता, बीजो मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्य तिर्यगायुनी सत्ता, त्री जो मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायु तथा नरकायुनी सत्ता, ए त्रण नांगा मिथ्यात्व थी अप्रमत्तगुणताणा पर्यंत लाजे. चोथो मनुष्यायुनो उदय अने देव तथा मनुष्या युनी सत्ता, ए नांगो अग्नीआरमा गुणताणा पर्यंत लाजे. केमके देवायु बांध्या पढी वली श्रेणी पण आरंजी होय पण बीजा त्रण आयु बांध्या पढी श्रेणी आरंजे

नहीं तेमाटें बीजा त्रण जांगा, अप्रमत्तगुणवाणा जगें कह्या तथा मनुष्यने विपे परजवायु बंधककी पूर्वे मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए जांगो प्रथम तिर्थचना जांगानी साथें कहेलो ठे. एवं नव जांगा मनुष्यगतिने विषे आयुना कह्या, शरवाले अछावीश जांगा आयुःकर्मने संवेधें आय.

हवे गोत्रकर्मने विषे सामान्यें एकनो बंध तथा एकनो उदय होय, जे जणी उच्चैर्गोत्र तथा नीचैर्गोत्र, ए बेहु प्रकृति उदय तथा बंधें विरोधिनी ठे. तेजणी बेहुनो उदय तथा बंध साथें न होय एकेकीनो जूदो जूदो बंध तथा उदय होय, तेथी एकज प्रकृतिनुं बंधस्थानक तथा एकज प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय अने सत्तास्थानक तो एक प्रकृतिनुं तथा बे प्रकृतिनुं एवं बेहु होय, ते कहे ठे. जेवारें तेउ अने वाउकायमांहे रहेतो थको जीव उच्चैर्गोत्र उवेलीने सत्ताथी टाले, तेवारें तेउ वाउ मध्यें तथा तिहांथी मरी बीजा अवतारमां आवीने जिहां जगें फरी उच्चैर्गोत्र न बांधे, तिहां जगें एक नीचैर्गोत्रनी सत्ता जाणवी तथा बीजुं अयोगीगुणवाणाना चरमसमयें एक उच्चैर्गोत्रनुं सत्तास्थानक होय एम बे प्रकारनुं एकेक प्रकृतिनुं सत्तास्थानक पहेलुं जाणुं. अने बीजुं तो बे प्रकृतिनी सत्तारूप सत्तास्थानक जाणुं.

हवे गोत्रकर्मने विषे संवेध कहीयें हैयें. एक नीचैर्गोत्रनो बंध, नीचैर्गोत्रनो उदय अने नीचैर्गोत्रनी सत्ता, ए जांगो तेउकाय अने वायुकाय मध्यें उच्चैर्गोत्र उवेल्या पठी होय. तथा नीचैर्गोत्रनो बंध नीचैर्गोत्रनो उदय अने उच्च तथा नीचगोत्रनी सत्ता, ए एक जंग तथा नीचैर्गोत्रनो बंध उच्चैर्गोत्रनो उदय अने उच्च तथा नीच ए बेहुनी सत्ता, ए बे जांगा मिथ्यात्व तथा सास्वादन ए बे गुणवाणे होय, केमके आगळे गुणवाणे नीचैर्गोत्रनो बंध नथी तेजणी तिहां न होय, तथा उच्चैर्गोत्रनो बंध नीचैर्गोत्रनो उदय अने बेहु गोत्रनी सत्ता, ए जांगो मिथ्यात्वथी मांमिने देशविरति गुणवाणा जगें होय केमके आगळे गुणवाणे नीचैर्गोत्रनो उदय नथी तेजणी न होय तथा उच्चनो बंध उच्चैर्गोत्रनो उदय अने बेहुनी सत्ता ए जांगो दशमा गुणवाणा जगें होय. आगळे गुणवाणे गोत्रबंधना अजावथी ए जांगो न होय तथा उच्चैर्गोत्रनो उदय अने उच्चैर्गोत्र तथा नीचैर्गोत्र ए बेहुनी सत्तानो जांगो अगीआरमा गुणवाणाथी मांमिने चौदमा गुणवाणाना द्विचरम समय जगें होय तथा उच्चैर्गोत्रनो उदय अने उच्चैर्गोत्रनी सत्ता, ए जांगो अयोगी गुणवाणाना ठेहला समयने विपे होय, एम सात जांगा गोत्र कर्मना संवेधें होय. ए रीतें वेदनीय, आ

यु अने गोत्रकर्मने विषे संवेध कहीने पढी (मोहंपरंबुद्धं के०) मोहनीयकर्मना बंधादिक स्थानक आगले कहीछुं ॥ इति समुच्चयाथैः ॥ १० ॥

हवे ए त्रण कर्मना जांगा गाथार्ये करी कहे ठे.

गोअम्मि सत्त जंगा, अठ्य जंगा हवंति वेयणिए ॥

पण नव नव पण जंगा, आठ चउक्केवि कमसोउ ॥ ११ ॥

अर्थ—(गोअम्मिसत्तजंगा के०) गोत्रकर्मने विषे सात जांगा जाणवा. अने (वेयणिए के०) वेदनीयकर्मने विषे (अठ्यजंगाहवंति के०) आठ जांगा होय तथा (पण के०) पांच, (नव के०) नव, वली (नव के०) नव, (पण के०) पांच, ए चार प्रकारें मलीने अठावीश (जंगा के०) जांगा ते (आठचउक्केवि के०) नरकादिचारआयुखाने विषे (कमसोउ के०) अनुक्रमें होय ॥ ११ ॥

हवे मोहनीयकर्मना बंधादिक स्थानक कहे ठे.

बावीस इक्कीसा, सत्तरसं तेरसे व नव पंच ॥

चउ तिग डुगचं इक्कं, बंधघाणाणि मोहस्स ॥ १२ ॥

अर्थ—एक बावीशनुं बंधस्थानक, बीजुं एकवीशनुं बंधस्थानक, त्रीजुं सत्तरनुं बंधस्थानक, चोसुं तेरनुं बंधस्थानक, पांचमुं नवनुं बंधस्थानक, ठुं पांचनुं बंध स्थानक, सातमुं चारनुं बंधस्थानक, आठमुं त्रणनुं बंधस्थानक, नवमुं बे प्रकृतिनुं बंधस्थानक अने दशमुं (इक्कं के०) एक प्रकृतिनुं बंधस्थानक, ए (बंधघाणाणि मोहस्स के०) प्रकृतिबंधरूपदश बंधनां स्थानक मोहनीयकर्मनां जाणवां.

तिहां प्रथम बावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक केम होय? ते कहीयें ठैयें. मोहनी यनी अठावीश प्रकृति ठे, तेमांहे सम्यक्त्व अने मिश्र, ए बे मोहनीय बंध योग्य नथी तेमाटें बाकी त्तीश बंधयोग्य रही. तेमांथी पण त्रण वेद मध्यें एक सम यें एकज वेदनो बंध होय ए विरोधिनी प्रकृति नणी बीजा बे वेदनो बंध न होय तेमाटें बाकी चोवीश रही तेमांथी पण हास्य अने रतिनो जेवारें बंध होय, ते वारें एनी विरोधिनी शोक अने अरतिनो बंध न होय अने जेवारें शोक अने अरति बंधाय तेवारें हास्य अने रति, ए बे प्रकृति न बंधाय तेषी ए चार प्रकृतिमध्ये एक समयें बेज बंधाय बाकीनी बे बीजी न बंधाय तेमाटें ए बे क हाडतां शेष मोहनीयनी एक समयें उत्कृष्टी तो बावीश प्रकृति बंधाय पण अधि

क न बंधाय ए बावीश प्रकृतिना बंधतुं स्थानक, मिथ्यात्व गुणतापो होय, ते अत्र व्यनी अपेक्षायें अनादिअनंत जागे होय तथा जव्यनी अपेक्षायें अनादि सांत तथा सादि सांत ए बे जागे होय. तथा ए बावीश प्रकृतिमाहेंशी जेवारें मिथ्यात्व मोहनीय न बंधाय तेवारें बीजुं एकवीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक सास्वादन गुणतापो जघन्यतो एक समय अने उत्कृष्टशी तो उ आवलिका प्रमाण होय. अहीं आं अद्यपि नपुंसकवेदनो पण बंध नथी तथापि ते स्थानकें खविद अथवा पुरुष वेदनो बंध ठे तेशी वेदशून्य न होय.

तथा ते बावीश प्रकृति माहेंशी अनंतानुबंधीआ क्रोधाधिक चार तथा मिथ्यात्व मोहनीय ए पांच प्रकृति जेवारें न बंधाय, तेवारें मिश्र तथा अविरति गुणतापो सत्तर प्रकृतिनुं बंधस्थानक जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्टशी तेत्रीश सागरोपम जाजेरा लगें होय जे जणी अनुत्तर सुर चवीने देशविरति अथवा सर्वविरति पणुं ज्यां लगें न पडिवजे, तिहां लगें तेने सत्तर प्रकृतिनोज बंध होय.

ते सत्तर माहेंशी जेवारें अप्रत्याख्यानावरण चार न बांधे, तेवारें देशविरति गुणतापो तेर प्रकृतिनुं बंधस्थानक जाणवुं. तेमाहेंशी वली प्रत्याख्यानावरणीय चार न बांधे तेवारें प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण गुणतापा लगें नव प्रकृतिनुं बंध स्थानक जाणवुं. अहींआं जोपण सातमे तथा आठमे गुणतापो शोक अने अरतिनो बंध नथी तोपण ते स्थानकें हास्य अने रतिनो बंध ठे. ते जणी संज्वलन चार, हास्य, रति, जय, जुगुप्सा अने पुरुषवेद, ए नव प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. तेरनुं तथा नवनुं, ए बे बंधस्थानक जघन्यतो अंतरमुहूर्त्त पर्यंत होय अने उत्कृष्टांतो देशे ऊणी पूर्वकोडी लगें होय तेमाहेंशी हास्य, रति, जय अने जुगुप्सा, ए चार प्रकृतिनो अपूर्वकरणना ठेहजे जागें बंध विभेद यथा पठी अनिवृत्ति गुणतापाना पांच जाग मध्यें पहेले जागें पांच प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. तेमाहेंशी पुरुषवेदनो बंधभेद करी बीजे जागें चारनुं बंधस्थानक होय तेमाहेंशी संज्वलनक्रोधनो बंध भेदे तेवारें त्रीजे जागें त्रणनुं बंधस्थानक होय. तेमांशी संज्वलन माननो बंध भेदे तेवारें चोथे जागें बेनुं बंधस्थानक रद्दे, तेमांशी संज्वलनमायानो बंध भेदे तेवारें पांचमे जागें एक संज्वलना लोचनुं बंधस्थानक होय. अहींआं ए गुणतापो पांच बंधस्थानक थाय तेनो काल जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट तो अंतरमुहूर्त्त प्रमाण जाणवो. ए मोहनीय कर्मनां दश बंधस्थानक कहां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १३ ॥

हवे मोहनीयकर्मनां नव, उदयस्थानक कहे ठे.

एगं च दोव चउरो, एतो एगाहिआ दसुक्रोसा ॥

उहेण मोहणिके, उदए ठाणाणि नव हुंति ॥ १३ ॥

अर्थ- (उहेणमोहणिके के०) उधें एटले सामान्ये मोहनीय कर्मने विषे (उद एठाणाणिनवहुंति के०) उदयनां स्थानक नव होय, ते कहे ठे. (एगंच के०) एक प्रकृतिनुं उदयस्थानक, (दोव के०) बे प्रकृतिनुं उदयस्थानक, (चउरो के०) चार प्रकृतिनुं उदयस्थानक, (एतोएगाहिआदसुक्रोसा के०) अर्हीआंथी आगल एकेक प्रकृति अधिक उत्कृष्टा दश लगे करीये एटले पांचनुं उदयस्थानक, ठनुं उदयस्थानक, सातनुं उदयस्थानक, आठनुं उदयस्थानक, नवनुं उदयस्थानक, अने दशनुं उदयस्थानक, ए नव उदयस्थानक, पश्चानुपूर्वीये देखाडीये ठैये.

तिहां संज्वलननी चोकडीमर्थे एकने उदये प्रथम एकनुं उदयस्थानक, एक पुरुषवेद अने चार संज्वलन कपायमांहेलो कोइएक कषाय, ए बे प्रकृतिने उदये बीजुं बेनुं उदयस्थानक, पुंवेद अने संज्वलनो एक कषाय तथा हास्य अने रति, ए चार प्रकृतिने उदये त्रीजुं चारनुं उदयस्थानक. ए चारनी सार्थे जयमो हनीय लेतां पांच प्रकृतिने उदये चोथुं, पांचनुं उदयस्थानक, ते मर्थे जुगुप्सानो उदय वधारीये, तेवारें ठ प्रकृतिने उदये पांचमुं ठनुं उदयस्थानक, तेमांहे वली चार प्रत्याख्यानीआ कषाय मांहेलो गमे ते एक कषाय हेपवीये, तेवारें सात प्र कृतिने उदये ठहुं सातनुं उदय स्थानक, तेमांहे वली अप्रत्याख्यानीआ क्रोधादि चार मांहेथी एकनो उदय हेपवीये, तेवारें आठ प्रकृतिने उदये सातमुं आठनुं उदयस्थानक. तेमांहे वली अनंतानुबंधीआ चार कषायमांहेलो एक कषाय हेपवी वीये, तेवारें नव प्रकृतिने उदये आठमुं नवनुं उदयस्थानक, तेमांहे वली मिष्यात्व मोहनीयनो उदय वधारीये, तेवारें दश प्रकृतिने उदये नवमुं दशनुं उदयस्थानक जाणवुं. एटले सामान्य पणे उदय स्थानकनुं विवेचन कथुं, विशेषथी सूत्रकार पो तेंज आगल कहेणे, तेथी अर्हीआं विशेष लख्युं नथी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥१३॥

हवे मोहनीय कर्मना पंदर, सत्तानां स्थानक कहे ठे.

अठय सतय ठ चउ, तिग जुग एगाहिआ जवे वीसा ॥

तेरस वारिकारस, इतो पंचाइ एगूणा ॥ १४ ॥

अर्थ- आठ, सात, ष, चार, त्रण, बे अने एक, ए सर्वने (एहिआनवेवीता के०) वीं अधिक करवा, तेवारें अष्टावीश, सत्तावीश, षवीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश, एकवीश, अने (तेरसबारिक्कारस के०) तेर, बार, अगीअार, (इचोपंचा इएगूणा के०) अहींयांशी आगळे पांच मांमिने तेमांशी एकेक ऊणो करीयें एट जे पांच, चार, त्रण, बे अने एक, ए रीतें मोहनीयकर्मने विषे सर्व मली पंदर सत्तास्थानक होय. ते विवरीने लखीयें ठेयें.

सर्व मोहनीय प्रकृतिनी सत्तायें अष्टावीशतुं सत्तास्थानक, ते सम्यक्त्व पामी ने पठ्या होय, तेने होय, तेमांहेथी सम्यक्त्व मोहनीय उवेल्या पठी सत्तावीशतुं सत्तास्थानक, ते मांहेथी वली मिश्रमोहनीय उवेजे षवीशतुं सत्तास्थानक, तथा अनादि मिष्यात्तीने पण एज स्थानक होय. वली ते पूर्वोक्त अष्टावीशनी सत्तावालो जेवारें चार अतंतानुबंधीआ खपावे, तेवारें तेने चोवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, ते मांहेथी मिष्यात्व खपावे, तेवारें त्रेवीशतुं सत्तास्थानक, तेमांशी मिश्रमोहनीय खपावे, तेवारें बावीशतुं सत्तास्थानक, ते मांहेथी सम्यक्त्वमोहनीय खपावे, तेवारें एकवीशतुं सत्तास्थानक, ए एकवीशतुं स्थानक क्वायिक सम्यक्कृदृष्टिने होय. हवे ए आगलां स्थानक हूपकने होय, ते कहे ठे. तेमांहेथी अप्रत्याख्यानीआ चार अने प्रत्याख्यानीआ चार, एवं आठ प्रकृति खपावे थके अनिवृत्तिकरण गुण ठाणाने त्रीजे जागें तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, तेमांहेथी नपुंसकवेदने क्यें चोथे जागें बारतुं सत्तास्थानक, तेमांशी स्त्रीवेदने क्यें पांचमें जागें अगीअारतुं सत्तास्थानक, तेमांशी हास्यादिक ष प्रकृतिने क्यें षठे जागें पांचतुं सत्तास्थानक होय. तेमांशी पुरुषवेदने क्यें सातमे जागें चारतुं सत्तास्थानक, तेमांशी संज्वलन क्रोधने क्यें आठमे जागें त्रणतुं सत्तास्थानक, तेमांशी संज्वलनना मानने क्यें नवमे जागें वेतुं सत्तास्थानक, तेमांशी संज्वलनी माथाने क्यें सूक्ष्म संपरायें एक संज्वलन लोचतुं सत्तास्थानक जाणतुं ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १४ ॥

संतस्स पयडिठाणा, णि ताणि मोहस्स हुंति पन्नरस ॥

बंधोदय संते पुण, जंग विगपे बहू जाण ॥ १५ ॥

अर्थ-(संतस्सपयडिठाणाणित्ताणि के०) ए सत्तानी प्रकृतिनां स्थानक ते (मोहस्स के०) मोहनीयकर्मनी प्रकृतिनां (हुंतिपन्नरस के०) पंदर होय. (पुण के०) वली (बंधोदयसंते के०) ए बंध, उदय अने सत्ता स्थानकने विषे प्रत्येकें

संवेधे करीने (जंगविगण्येबहूजाण के०) मोहनीयकर्मना जांगाना चेद घणा नि पजे, ते घणा जांगा हुं कहुं हुं. ते मने केतां थकां तुं सम्यक् प्रकारें जाण. एम शिष्य प्रत्ये ध्यामंत्रण करीने गुरु कहे ठे के हे शिष्य! तुं सांजल ॥इति॥ १५ ॥

अथ मोहनीयबंधस्थानेषु यथासंजवत्वेन जंगानाह ॥ तिहां हवे प्रथम मोहनीयकर्मना बंधस्थानकने विषे यथासंजवपणे जांगा उपजे, ते कहे ठे.

ठ ब्वावीसे चउ इग, वीसे सत्तरस तेरसे दोदो ॥

नवबंधगे वि छणित, इक्किक्क अउ परं जंगा ॥ १६ ॥

अर्थ—(ठब्बावीसे के०) बावीश प्रकृतिने बंधे ठ जांगा उपजे, ते आवी रीते के एक मिथ्यात्व, शोल कषाय, त्रण वेद मांहेलो एक वेद, हास्य अने रति अथवा शोक अने अरति ए बे युगल मांहेलुं एक युगल तथा जय अने छुगुप्ता, ए बावीशने बंधे ठ जांगा थाय, ते देखाडे ठे. एक हास्य अने रति बांधतां बावीशानो बंध करे, ए प्रथम जांगो, बीजो तेमज हास्य अने रतिने स्थानके शोक अने अरति बांधे, तेवारें बीजो जांगो. ए बे जांगा थया. ते बे जांगा पुरुषवेद बंध साथे गणवा. वली तेमज स्त्रिवेदबंध साथे पण बे जांगा तेज लेवाय तथा तेमज नपुंसकवेद बंध साथे पण एज बे जांगा लइये. एम त्रण वेदने बे बे गुणा करतां ठ जांगा थाय.

तथा (चउइगवीसे के०) एकवीश प्रकृतिने बंधे चार जांगा होय, ते कहे ठे. ते पूर्वोक्त बावीशना बंधमांहेथी एक मिथ्यात्वनो बंध हीन करीये, तेवारें एकवीश नो बंध थाय पण एटलुं विशेष जे अर्हीयां नपुंसकवेद टालीने बाकीना बे वेद मांहेलो एकेक वेदनो बंध कहेवो. ए एकवीशानो बंध, बीजे गुणठाणे होय. तिहां पुरुषवेदे हास्य रति साथे एक जांगो तथा शोक अरति साथे बीजो जांगो, वली ते हीज बे जांगा स्त्रिवेदे पण बांधे माटे सर्व मली चार जांगा थाय. अर्ही मिथ्यात्वने अजावे नपुंसकवेदनो बंध नथी तेथी तेना बे जांगा न होय.

(सत्तरसत्तरसेदोदो के०) सत्तर अने तेर प्रकृतिना बंधे बे बे जांगा होय, ते कहे ठे. पूर्वोक्त एकवीशमांथी अनंताजुबंधीया चार कषायना बंधविहेदे सत्तरनो बंध त्रीजे अने चोथे गुणठाणे होय. तेमांथी पण अप्रत्याख्यानिआ चारनो बंधविहेदे, तेवारें देशविरति गुणठाणे तेरनो बंध होय. तिहां प्रत्येके बे बे जांगा होय, केमके मिश्रगुणठाणाथी मांदिने आगले गुणठाणे स्त्रिवेदनो पण बंध नथी जेजणी अनं

तानुबंधिञ्चा कषायना उदयने अजावें स्त्रीवेद न बंधाय तेमाटें स्त्रीवेदना बंधथी उपना जे बे जांगा ते पण टले बाकी मात्र पुरुषवेदें बांधवाना वे बे जांगा होय.

तथा (नवबंधगेविडुणित के०) नव प्रकृतिने बंधस्थानकें पण वे जांगा होय. तिहां संज्वलनना कषाय चार, हास्य अने रति, जय, जुगुप्सा अने पुरुषवेदें एक जांगो अथवा हास्य रतिने स्थानकें शोक अने अरति ए युगल लइयें, तेवारें बीजो जांगो ए वें जांगा प्रमत्त गुणगणो होय एथी आगल शोक अने अरति, ए युगल नो बंध नथी परंतु हास्य अने रतिनोज बंध ठे तेमाटें अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण ए बे गुणगणो नव प्रकृतिने बंधे एकज जांगो होय परंतु बीजो जांगो न होय.

तथा (इक्किअरपरंजा के०) एथी उपर पंचादिक पांच बंधस्थानकने विपे पण अपूर्व करणनी पेरें एकेको जांगो होय. ए सर्व मली मोहनीय कर्मना दश बंध स्थानकें अइने एकवीश जांगा थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १६ ॥

अथैषामेव बंधस्थानानां मध्ये कियंत्युदयस्थानानीत्याह ॥ हवे एज बंध स्था नकमां कयां कयां बंधस्थानकें केटलां केटलां उदयस्थानक होय, ते कहे ठे.

दस बावीसे नव इग, बीसे सत्ताइ उदय कम्मंसा ॥

गाइअ नव सत्तरसे, तेरं पंचाइ अठेव ॥ १७ ॥

अर्थ—(दसबावीसेसत्ताइउदयकम्मंसा के०) षाविंशतिबंधके सप्तादीनि दशपर्यंतानि चत्वारि उदयस्थानानि जवंति' बावीश प्रकृतिने बंधे सातथी मांझीने दश पर्यंत एटले सात, आठ, नव अने दश, ए चार उदय स्थानक होय. तिहां प्रथम सातजुं उदय स्थानक देखाडे ठे. एक मिथ्यात्व, बीजो हास्य, त्रीजो रति, अथवा ए वेने स्थानकें शोक अने अरति पण होय. चौथो त्रणवेद मांहेलो एक वेद, पांचमो एक अप्रत्याख्यानीठ कषाय, षष्ठो एक प्रत्याख्यानीठ कषाय, सातमो एक संज्वलनकषाय, ए सात प्रकृतिनो उदय बावीशना बंधक मिथ्यादृष्टिने निश्च होय. तिहां जांगा चोवीश थाय, ते देखाडे ठे. क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए चारे उदय विरोधी ठे, ते जणी क्रोधादिकने उदयें मानादिकनो उदय न होय परंतु क्रोधने उदयें तेना हेतजा सधजा क्रोधनोज उदय होय. तिहां अनंतानुबंधीआना एक क्रोधने उदयें बीजा अप्रत्याख्यानादिक चारे जातिना क्रोधनो उदय साथेंज होय अने अप्रत्याख्यानीआना क्रोधने उदयें बीजा प्रत्याख्यानादिक त्रणे जातिना क्रोधनो उदय साथेंज होय तथा प्रत्याख्यानीया क्रोधने उदयें बे जातिना क्रोधनो उ

दय होय अने संज्वलन क्रोधने उदयें एकनोज उदय होय, तेमाटें अर्हीआं अ प्रत्याख्यानीआ क्रोधने उदयें त्रणे क्रोधनो उदय होय. तेम मानने उदयें पण त्रणे माननो उदय होय अने मायाने उदयें पण त्रणे मायानो उदय होय अने लो जने उदयें पण त्रणे लोचनो उदय जाणवो. ए क्रोध, मान, माया, अने लोच ना चार जांगा स्त्रीवेदना उदय साथें गणवा. वली स्त्रीवेदने स्थानकें पुरुषवेदनो उदय होय, तेवारें ए चार जांगा पुरुष वेदने विषे पण पामीयें अने ए चार जांगा नपुंसक वेदने उदयें पण पामीयें. एम सर्व मली बार जांगा हास्य अने तिते उदयें जाणवा. तेमज वली हास्य अने रतिने स्थानकें शोक अने अरतिने उदयें पण बार जांगा गणयें. तेवारें चोवीश जांगा थाय.

अथवा एक मिथ्यात्व सातने उदयें लहीयें तथा हास्यादिक एक युगल साथें पुरुषवेदें एक जांगो तथा शोकादि युगल साथें एक जांगो, एम बे जांगा पुरुषवेदें थाय. तेमज स्त्रीवेद साथें पण बे जांगा थाय अने नपुंसकवेद साथें पण बे जांगा थाय. एवं ४ जांगा क्रोधे थया अने क्रोधने स्थानकें मान लहीयें, तेवारें पण ४ जांगा थाय. तेमज माया साथें ४ जांगा तथा लोच साथें ४ जांगा, एम ४ चोक चोवीश जांगा थाय. ए सातने उदयें मिथ्यात्व लहीयें, तेवारें जांगानी चोवीशी थइ.

तथा ए सातना उदय मध्ये नय, जुगुप्सा अथवा अनंतानुबंधीआ चार क षाय माहेलो एक कषाय, ए त्रण प्रकृतिमाहेथी एकेक प्रकृतिनो उदय क्हेपीयें, तेवारें आठ प्रकृतिनो उदय थाय. अर्ही त्रण चोवीशी जांगानी थाय. ते केम के ए सातना उदय माहे नयनो उदय क्हेपी आठना उदय सहित गुणीयें तेवारें जांगानी एक चोवीशी थाय तथा ते सातना उदय मध्ये जुगुप्सानो उदय क्हेपी आठना उदय सहित गुणीयें, तेवारें जांगानी बीजी चोवीशी थाय अने ते सात ना उदयमाहे अनंतानुबंधीआनो उदय बधारीयें, तेवारें आठनो उदय थाय. तिहां पण पूर्वली परें जांगानी त्रीजी चोवीशी थाय.

तथा मिथ्यात्वे अनंतानुबंधीआनो उदय तो अवश्य होय, तो सातनो उदय तथा नय, जुगुप्सा अने अनंतानुबंधीआ सहित आठनो उदय शा कारणे कह्यो ? तेने उ त्तर. जे कोइएक जीव, सम्यक्दृष्टि ठतां अनंतानुबंधीआ चारने विसंयोज्या एटले ख पाव्या, ते खपाव्या ठतां पण कालांतरें कोइएक बीजजुत मिथ्यात्वनी सत्तायें करी वली पण बंधाय तेने विसंयोज्या कहीयें अने जे खपाव्या कहा होय, ते तो फरी बंधायज नहीं ए विसंयोज्या अने खपाव्यानुं विशेष जाणवुं. हवे तेवी सामग्रीने अजावें कोइ

एक जीवें मिथ्यात्वादिकने स्वपाष्यानो उद्यम न कस्यो ते जीव, कालांतरें मिथ्यात्वं गयो तिहां मिथ्यात्व प्रत्ययिञ्चा नणी मिथ्यात्वं करी वली अनंतानुबंधीञ्चा चार कषाय बांधे, तेवारें बंधावलिका लगे ते अनंतानुबंधीञ्चानो उदय न होय. अर्हीञ्चां कोइ कहेरो के बंधकालनी आवलिका पढीज ते प्रकृतिनो उदय होय, ते केम घटे, जे नणी ए अनंतानुबंधीञ्चानो अबाधाकाल जघन्य तो अंतर सुदूर्जनो अ ने उत्कृष्टो तो चार हजार वर्षनो कह्यो ठे, तो अबाधाकाल जोगच्या विना केम बंधावलिका पढी एनो उदय होय ? तेनो उत्तर कहे ठे. जे बंधसमयथी पण अनंतानुबंधीञ्चानी सत्ता लेखवाय. बंधसत्ता जेवारें होय, तेवारें अनंतानुबंधीञ्चा पतजह् थाय पतजह् एटले ते बंधाती प्रकृति मध्ये बीजी सजातीय प्रकृतिनां दल तथा रसनो संक्रम, तेनुं ठाम जाणवुं. एटले जे प्रकृति, बंधन परिणामें परिणम्यो जीव, ते प्रकृतिमध्ये बीजी सजातीय प्रकृतिनां दलीयां क्लेपवीने बांधी प्रकृतिरूप पणे तेने परिणमाववुं, तेने संक्रम कहीयें. तेनुं स्थानक तेने पतजह् कहीयें. ते माटें बंधाता अनंतानुबंधीञ्चा मध्ये पण अणबंधाता एवा जे अप्रत्याख्यानावरणादिक बीजा कषाय, तेना दलीया संक्रमे, ते अनंतानुबंधीञ्चापणे परिणमे एटले जेमांहे संक्रमे तेपणे परिणमें तेनो उदय, संक्रमावलिका थया पढी उदयावलिका यें आवे तेमाटें अनंतानुबंधीनो बंधावलिका पढी उदय कहीयें. अर्हीञ्चां कसुं विरुद्ध नथी. ए वातआश्री विशेष कम्मपयडीथकी जाणवुं तेमाटें मिथ्यात्व गुणगणो पण बंधसंक्रमावलिका लगे तो अप्रत्याख्यानादिक त्रण कषायनोज उदय होय, केमके एक वेदातें जेटलानो जे गुणगणो उदय होय तेटला सर्व समा न जातीय माटें तिहां वेदाताज कहीयें. जेमाटें क्रोधादिक चार, परस्परें विरुद्ध ठे माटें ते मांहेलो एकनोज समकालें उदय होय परंतु तिहां एक अनंतानुबंधीक्रोध वेदातां सजातीयपणा माटें अप्रत्याख्यानादिक बीजा त्रणे क्रोध समकालें साथेंज वेदाय परंतु तेनी साथें ते समयें बीजा मानादिक न वेदाय तेमाटें पूर्वोक्त प्रकारें मिथ्यात्वं पण बंधसंक्रमावलिका पढी अनंतानुबंधीञ्चानो उदय होय.

हवे ए सात प्रकृतिना उदय मध्ये जय अने छुगुप्ता, ए बे प्रकृतिनो उदय वधारीयें, तेवारें नवनो उदय थाय. अर्ही पण पूर्वली पेरें नांगानी एक चोवीशी थाय तथा ते सातमध्ये जय अने अनंतानुबंधीञ्चानो उदय मेलवीयें, तेवारें पण नवनो उदय थाय. अर्हीञ्चां नांगानी बीजी चोवीशी थाय तथा ते सातमध्ये छुगुप्ता अने अनंतानुबंधी, ए बे प्रकृति मेलवतां पण नवनो उदय थाय. तिहां

जांगानी त्रीजी चोवीशी थाय. एम नवने उदयें सर्व मली जांगानी त्रण चोवीशी थाय.

तथा एक मिष्यात्त्व, बीजुं जय, त्रीजी जुगुप्ता, चोशुं हास्य, पांचमुं रति, अथवा एने स्थानकें शोक अने अरति पण लइयें. ठाठो त्रण वेदमांहेलो एक वेद, तथा अनंतानुबंधीआदिक चारे कषाय, एवं दशनुं उदयस्थानक जेवारें होय, तेवारें पण पूर्वली पेरें जांगानी एक चोवीशी थाय. एम बावीशना बंधें सातनुं, आठनुं, नवनुं, दशनुं, ए चार उदय स्थानकें सर्व संख्यायें आठ चोवीशी जांगानी थाय.

तथा (नवइगवीसेसत्ताइ के०) “एकविंशतिबंधे सप्तादीनि नव पर्यंतानि त्रीणि उदयस्थानानि नवन्ति.” एटले एकवीश प्रकृतिने बंधें सात आदें देइने नव लगे त्रण उदय स्थानक होय. तिहां प्रथम एक युगल, त्रण वेद मांहेलो एक वेद, चार कषाय मांहेला क्रोधादिक एक कषायना चार जेद, एम सात प्रकृतिने उदयें पूर्वली पेरें जांगानी एक चोवीशी थाय. ए सातना उदयने जयना उदय सहित कर तां आठनो उदय थाय. तिहां पण जांगानी एक चोवीशी थाय तथा जुगुप्तानो उदय मेलवतां पण आठनो उदय थाय. तिहां पण जांगानी एक चोवीशी थाय. तथा जय अने जुगुप्ता, ए बे प्रकृतिनो उदय सामटो मेलवतां नवनो उदय थाय. तिहां पण पूर्वली पेरें जांगानी एक चोवीशी थाय. एम एकवीश प्रकृतिने बंधें सात्वादन गुणठाणाने विषे त्रण उदय स्थानकें अइ जांगानी चोवीशी चार थाय.

अहीं सास्वादना बे जे दठे. एक उपशम श्रेणिगत, बीजो अश्रेणीगत, तिहां अश्रेणीगतने विषे तो ए त्रण उदयस्थानक होय अने अश्रेणीगतने विषे बे आचार्यना आदेश जाणवा, ते कहे ठे. एक जे अनंतानुबंधीआने उपशमावीने श्रेणी करे अने श्रेणीथी पढतो सास्वादन गुणठाणुं स्पर्शें, तेने मर्ते तो ए पूर्वे कइयां ते हीज त्रण उदयस्थानक जाणवा. अने जे आचार्य अनंतानुबंधीआ चारनी वि संयोजनायें श्रेणीनो प्रारंज माने ठे, तेने मर्ते श्रेणीथी पढतां अनंतानुबंधीआनी सत्ताने अचावें अनंतानुबंधीआना उदय रहित सास्वादन पणुं न घटे जे जणी “अस्स सासणजावोन जवइ,” एम चूर्णिकारनुं वचन ठे माटे. अने जो सम्यक्त्वथी पढतो ते ज्यां सुधी मिष्यात्त्व जूमनि विषे नथी पढतो तेना वचला कालमां अनंतानुबंधीआना उदय विना पण सास्वादन गुणठाणुं पामीयें, एम कहियें तो तिहां ठ प्रकृतिनो उदय मान्यो जोइयें, तेवारें एकवीशने बंधें ठथी मांफीने नव लगेना चार उदयस्थानक मान्यां जोइयें, तेवारें तो तिहां जांगानी चोवीशी पण आठमानवी,

जोड़्यें ते अर्ही सूत्रकारें कोइ कारणे मानी नथी ते जणी एने मतें श्रेणीथी प
हतां साखादन न होय, एमज कहेवुं.

हवे (गाइअनवसत्तरसे कें०) "सप्तदशबंधस्थानके षडादीनि नव पर्यंतानि च
त्वारि उदयस्थानानि जवंति" एटले सत्तर प्रकृतिने बंधे ठ आदें वेइने नव लगें चार
उदयनां स्थानक होय. अर्हीआं सत्तरनो बंध त्रीजे तथा चोथे गुणठाणे होय, ति
हां जे मिश्र गुणठाणे सत्तरनो बंध होय, तेने विषे सात, आठ अने नव, ए त्रण उ
दय स्थानक होय एटले एक मिश्रमोहनीय, बे युगल मांहेलुं एक युगल, त्रण वेद
मांहेलो एक वेद अने अनंतानुबंधीआ विना त्रण कषायनो एकेको जेद, ए सा
त प्रकृतिनो उदय, मिश्रगुणठाणे होय. इहां पूर्वली परें जांगानी चोवीशी एक
थाय तथा ए सातनी सार्थे जय मेलवतां आठने उदयें पण जांगानी चोवीशी एक
थाय तथा जयने स्थानकें जुगुप्सा मेलवीयें, तेवारें पण आठने उदयें जांगानी एक
चोवीशी थाय तथा जय अने जुगुप्सा बे सामटी मेलवतां नवने उदयें पण जां
गानी चोवीशी एक थाय. एवं मिश्रगुणठाणे सत्तर बंधें जांगानी चार चोवीशी थाय.

तथा चोथे गुणठाणे सत्तरना बंधे ठ, सात, आठ अने नव, ए चार उदयनां
स्थानक, ह्याधिक सम्यक्कृष्टिने होय. तिहां मिश्रने जे सातनो उदय कह्यो, तेमध्ये
थी मिश्रमोहनीय विना चोथे गुणठाणे ठनो उदय लेखवतां जांगानी चोवीशी ए
क थाय, ते ठ प्रकृतिना उदय मध्यें जय, जुगुप्सा तथा सम्यक्त्व मोहनीय ए ए
केकनो उदय मेलवतां त्रण प्रकारें सातनो उदय थाय. तिहां एकेका जेदें एकेकी
जांगानी चोवीशी थाय, तेवारें सातने उदयें त्रण चोवीशी जांगानी थाय.

तथा ते ठना उदयमांहे जय अने जुगुप्सा अथवा जय अने वेदकसम्यक्त्व मो
हनीय अथवा जुगुप्सा अने वेदक सम्यक्त्वमोहनीय ए रीतें बे बे प्रकृति सामटी
जेलीयें, तेवारें त्रण प्रकारें आठनुं उदय स्थानक थाय तिहां पण प्रत्येकें जांगानी
एकेकी चोवीशी गणतां त्रण चोवीशी जांगानी थाय. अर्ही सम्यक्त्वमोहनीयना
जे जांगा, ते वेदकसम्यक्कृष्टिने जाणवा अने ह्याधिक तथा उपशमसम्यक्कृष्टिने
सम्यक्त्वमोहनीयनो उदय नथी, तेजणी तेने न जाणवा. तथा ते ठना उदय मध्यें
जय, जुगुप्सा अने वेदकसम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रणे प्रकृतिनो उदय सामटी मेल
वीयें, तेवारें नव प्रकृतिनो उदय थाय. तिहां पण एक चोवीशी जांगानी थाय. एम
सर्व मली चोथे गुणठाणे आठ चोवीशी जांगानी थाय. ते मध्यें चार ह्याधिक तथा
उपशमसम्यक्कृष्टिने जेवी तथा चार ह्यायोपशमिक सम्यक्कृष्टिने मिश्रनी परें जेवी.

तथा ए आठ चोवीशी साथें मिश्रगुणठाणानी चार चोवीशी मेलवतां सत्तरने बंध स्थानकें बार चोवीशी नांगानी होय. यद्यपि त्रीजे अने चोथे गुणठाणे उदय स्थानक तो तेहीज ठे पण तिहां प्रकृति जूदी ठे माटें बेचार लीधा ठे.

तथा (तेरंपंचाइअठेव के०) “त्रयोदश बंधस्थानके पंचादीनामष्टपर्यंतानि चत्वारि उदयस्थानानि स्युः” एटले तेर प्रकृतिने बंधें पांच आदें देइ आठ जगें चार उदयनां स्थानक होय एटले पांच, ठ, सात अने आठ, ए चार उदय स्थानक होय तिहां एक प्रत्याख्यानी क्रोध, बीजो संज्वलनक्रोध, त्रीजो पुरुषवेद, एक युगल, एवं पांचनो उदय होय. अहीं क्रोधने स्थानकें मान, माया अने लोन साथें परावर्त्त करतां चार नांगा पुरुषवेद साथें थाय अने जेवारें पुरुषवेदने स्थानकें स्त्रीवेद लइयें, तेवारें पण चार नांगा थाय अने नपुंसक वेद साथें पण चार नांगा थाय. एवं बार नांगा थ या. पठी हास्य अने रति, ए युगलने स्थानकें शोक अने अरति ए युगल लेइयें, तो तेनी साथें वली बीजा बार नांगा थाय. एम नांगानी एक चोवीशी पांचने उदयें थाय. तेमध्ये वली जय अथवा जुगुप्सा अथवा सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रण प्रकृति मांहेली एकेक मेलवतां ठनो उदय त्रण जेदें थाय. तिहां एकेके जेदें एकेक चोवीशी करतां त्रण जेदें ठना उदयें त्रण चोवीशी नांगानी थाय, तथा ते पांचना उदयमांहे जय, जुगुप्सा अथवा जय, अने सम्यक्त्व मोहनीय अथवा जु गुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए, वे वे प्रकृतिनो उदय सामटो मेलवतां सातः प्र कृतिनां उदयस्थानक त्रण थाय. तिहां पण नांगानी चोवीशी त्रण थाय त आ ते पांचना उदयमांहे जय, जुगुप्सा अने सम्यक्त्वमोहनीय ए त्रण प्र कृतिनो उदय साथें मेलवीने आठ प्रकृतिनुं उदय स्थानक करतां तिहां नांगानी चोवीशी एक थाय. एम तेरने बंधें चार उदय स्थानकें देशविरति गुणठाणे सर्व मली नांगानी चोवीशी आठ थाय, तेमध्ये ह्यायिक तथा उपशम सम्यक्दृष्टिने चार चोवीशी अने बाकीनी चार चोवीशी वेदक सम्यक्दृष्टिने थाय ॥ १५ ॥

हवे नव प्रकृतिने बंधें नांगा कहे ठे.

चत्वारि आइ नव बं, ध एसु उक्कोस सत्त सुदयसा ॥

पंच विह बंधगे पुण, उदठ इएहं मुणेअवो ॥ १८ ॥

अर्थ— (चत्वारिआइनवबंधएसुउक्कोससत्तसुदयसा के०) चत्वारित्यादि नवबंध केषु प्रमत्तादिषु चतुरादीनि सप्तपर्यंतानि चत्वारि उदयस्थानानि जवंति ” एटले

प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण, ए त्रण गुणवाणे नव प्रकृतिना बंधस्थानकें चारनो उदय आदें देइने उत्कृष्टतो सातनुं उदयस्थानक होय. ए जाव. तिहां संव्वलना क्रोधादिक मांहेलो एक कषाय, त्रण वेद मांहेलो एक वेद, हास्यगुण ल अथवा शोकगुण, एवं चारनो उदय ह्याधिक तथा उपशम सम्यक्दृष्टिने ध्रुव होय ते माटें अहींआं जांगानी चोवीशी एक आय. ते चार मध्यें जय, छुगुं प्ला तथा सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रण प्रकृति मांहेली एकेक जेलतां त्रण प्रकारें पांचनो उदय आय. तिहां जांगानी चोवीशी त्रण आय. ते चार मध्यें जय अने छुगुं प्ला ए वे, अथवा जय अने सम्यक्त्वमोहनीय ए वे, अथवा छुगुं प्ला अने सम्यक्त्वमोहनीय ए वे, एम वे वें प्रकृतिनो उदय मेलवीयें, तेवारें त्रण प्रकारें ठनो उदय आय. तिहां पण जांगानी चोवीशी त्रण आय तथा ते चार मांहे जय, छुगुं प्ला अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रणे प्रकृतिनो उदय सामटो मेलवीयें, तेवारें सात प्रकृतिनुं उदयस्थानक आय, तिहां जांगानी चोवीशी एक आय. एवं नवने वेंचें चार उदय स्थानकें यइने आठ चोवीशी जांगानी यइ, तेमांहेली चार चोवीशी ह्याधिक अने औपशमिक सम्यक्दृष्टिने होय तथा चार चोवीशी वेदक सम्यक्दृष्टिने होय. ए ठे सातमे अने आठमे गुणवाणे होय.

तथा (पंचविह्वंधगेपुण के०) वली पांच प्रकृतिना बंधने विपे (उदरुं डणहंमुणेअवो के०) वे प्रकृतिनुं एकज उदयस्थानक जाणवुं. ते आवी रीतें के चार संव्वलनमांहेलो एक क्रोध अथवा मान अथवा माया अथवा लोभ होय; अने त्रण वेद मांहेलो एक वेद, ए रीतें वे प्रकृतिनुं उदयस्थान क होय. अहींआं जांगा वार आय जे जणी अहींआं हास्यादिकनो उदय नशी मा टें जांगानी चोवीशी न आय. मात्र चार कषायने त्रण वेद साथें गणतां वार जांगा आय. ए वार जांगा नवमा गुणवाणाना पांच जाग मांहेला पहिले जागें होय ॥ १ ॥ हवे आगले बंधस्थानकें उदय स्थानक कहे ठे.

इतो चउ बंधाइ, इक्किदया हवंति सवेवि ॥

बंधो चरमेवि तहा, उदया जावे विवा हुजा ॥ १९ ॥

अर्थ- (इतो के०) अहींआं पांचना बंधस्थानकयकी आगले हवे (चउबं धाइ के०) चतुर्वंधादिक एटले चारनो बंध, त्रणनो बंध, वेनो बंध अने एकनो बंध, ए चार बंधस्थानकें (इक्किदयाहवंतिसवेवि के०) एकेक प्रकृतिनुंज उदय

स्थानक सर्व बंधस्थानकने विषे होय. ते केमके पुरुष वेदनो बंध टले पठी चार संज्वलननोज बंध होय पुरुष वेदना बंध साथे उदय पण टले तेमाटें तिहां चतुर्विध बंधें एकोदयें चार जांगा होय जे जणी चार संज्वलनाकषाय मांहेलो कोइएकने संज्वलनाक्रोधनोज उदय होय. कोइएकने संज्वलना माननोज उदय होय, कोइएकने संज्वलनी मायानोज उदय होय अने कोइएकने संज्वलना लोचनोज उदय होय. एम चार जांगा, उदयना अनिवृत्तिकरणने बीजे जागें होय. अर्हींच्या कोइएक आचार्य, चतुर्विध बंधने संक्रम कालें त्रण वेद मांहेला एक वेदनो उदय माने ठे तेवारें तेने मत्तें चतुर्विधबंधने पण प्रथम कालें चार संज्वलनाने त्रण वेद साथे गुणतां बार जांगा द्विकोदयना अर्हींच्या पण धाय तथा पंचविध बंधें पण द्विकोदयना बार जांगा थाय. एम द्विकोदयना चौबीस जांगा प्रथम कालें होय. ते पठी चतुर्विध बंधे एकोदयना चार जांगा होय.

तेवार पठी संज्वलना क्रोधने उड्डे अनावृत्तिने त्रीजे जागें त्रिविध बंध होय. तिहां एकनो उदय होय, तेना जांगा त्रण उपजे, तेवार पठी चौथे जांगे बेने बंधें संज्वलन माया तथा लोच, ए बे मांहेला एकने उदयें बे जांगा होय तथा एक संज्वलन लोचने एक बंधस्थानकें एक संज्वलन लोचनो उदय होय तेनो एक जांगो नवमा गुणठाणाना पांचमा जागें होय.

हवे बंध विना मात्र उदयनोज एक जांगो थाय, ते कहे ठे. (बंधोचरमेवितहा के०) मोहनीयना बंधने अजावें पण सूक्ष्म संपरायगुणठाणे एक संज्वलनालोचनुं उदयस्थानक होय. तिहां एक जांगो जाणवो. एम चारने बंधस्थानकें जांगा चार, त्रणने बंधस्थानकें जांगा त्रण, वेने बंधस्थानकें जांगा बे, एकने बंधस्थानकें जांगो एक, तथा बंध शून्य करतां जांगो एक, एवं अग्नीअार जांगा एकने उदयें थया. अर्हींच्या जोपण संज्वलना क्रोधादिकना उदयमांहे विशेष नथी तो पण बंधस्थानकें विशेषें करी विशेष जाणवुं.

पठी (उदयाजवेविवाहुळा के०) उदयने अजावें पण उपशांतमोहें उपशांत कषायनी अपेह्यार्यें मोहनीयनी सत्ता होय. ते पण एक जांगो प्रसंगें कह्यो परंतु अर्हींच्या बंध अने उदयना संवेध मांहे सत्तानो जांगो कहेवो. ते निष्कारण ठे तेथी न कह्यो अने व्हीणमोहें तो सत्ता पण न होय ॥ इति ॥ १९ ॥

अथ दशादिषूदयस्थानेषु यावंतोर्जंगाः स्युस्तानाह. हवे दशादिक पश्चाजुषूवीर्यें एक पर्यंत उदय स्थानकने विषे जेटला जांगा होय, ते कहे ठे.

इकग ठक्किरारस, दस सत्त चउक्क इक्कगंचेव ॥ एए चउ
वीस गया, वार झुगिक्कम्मि इक्कारा ॥ तथा मंतांतरे,
चउवीस झुगिक्कमिक्कारा ॥ १० ॥

अर्थ-अर्हीआं उदयने स्थानकेँ यथाक्रमेँ संख्या जोडवी. तिहां दशने उदयेँ
(इक्कग के०) एक चोवीशी, नवने उदयेँ (ठक्क के०) ठ चोवीशी, आठने उदयेँ
(इक्कारस के०) अगीअर चोवीशी, सातने उदयेँ (दस के०) दश चोवीशी, ठने
उदयेँ (सत्त के०) सात चोवीशी, पांचने उदयेँ (चउक्क के०) चार चोवीशी, चा
रने उदयेँ (इक्कगंचेव के०) निश्चेँ एक चोवीशी जांगा होय. (एएचउवीसगया
के०) ए सर्व मलीने चालीश चोवीशी जांगा थाय. ए जांगा उपजाववानी जाव
ना पूर्वेँ कही ठे, तेम जाणवी तथा (वारझुग के०) बेने उदयेँ वार जां
गा होय अने (इक्कम्मिइक्कारा के०) एकने उदयेँ अगीअर जांगा होय, ते केम ?
जे चारने बंधेँ चार, त्रएने वंधेँ त्रए, बेने बंधेँ बे अने एकने बंधेँ एक, तथा
अबंधेँ एक, एवं अगीअर जांगा थाय. तथा अन्य आचार्यने मतेँ (चउवीसझुग
के०) बेने उदयेँ एक चोवीशी जांगा उपजे एटले वार जांगा पांचने बंधेँ अने बे
ने उदयेँ तथा वार जांगा चारने बंधेँ अने बेने उदयेँ, एम चोवीश जांगा उपजे
अने (इक्कमिक्कारा के०) एकने वंधेँ अगीअर जांगा उपजे, ए मतांतर कहुं. १०

एतेपामेव जंगानां विशिष्टसंख्यां पदसंख्यां च स्वमतेन आह ॥ हवे एज
जांगानी विशिष्टपणे संख्या अने तेना पदनी संख्या पोताने मतेँ कहे ठे.

नव तेमीइ सएहिं, उदय विगण्पेहि मोहिआ जीवा ॥ अनुणुत्तरि
सीआला, पर्याविद सएहिं विन्नेआ ॥ ११ ॥ अथवा मतांतरेण जंग
संख्या पदसंख्यामाह ॥ नव पंचाण ठसए, उदय विगण्पेहि मोहि
आ जीवा ॥ अनुणत्तरि एगुत्तरि, पर्याविद सएहिं विन्नेआ ॥ ११ ॥

अर्थ-अर्हीआं दश, नव, आठ, सात, ठ, पांच अने चार, ए सात उदयस्थानकेँ
थइने चालीश चोवीशी जांगानी लाधी, ते चालीशने चोवीश गुणा करीयेँ, तेवारें
(ए६०) थाय. तेमध्येँ द्विकोदयना वार अने एकोदयना अगीअर, एवं त्रेवीश जां
गा मेलवीयेँ, तेवारें (नवतेसीइसएहिं के०) नवज्ञेने त्र्याशी जांगा थाय. ए मोहनीय

कर्मना (उदयविगप्पेहिमोहिआजीवा के०) उदयने विषे नव विकल्पे करीने स्व मते (६७३) जांगा थाया, तेने विषे सर्व संसारी जीव मोह्या मुंजाणा पड्या ठे.

हवे पदसंख्यांक कहे ठे. ए (६७३) जांगाने विषे (अउणुत्तरिसीआलापयविं दसएहिंविन्नेआ के०) (६६४७) एटला पदना वृंद एटले समूह जाणवा. एट ले एकेकी प्रकृतिनुं नाम ते एकेकुं पद कहिये. ते दश प्रकृतिने उदये एकेका जां गामांहे दश दश पद होय, नवने उदये एकेका जांगा मांहे नव नव पद होय. एम थावत एकने उदये एकेका जांगा मांहे एकज पद होय तेमाटे दशोदयना जांगा दश गुणा करीये अने नवोदयना जांगा नव गुणा करीये. एम सर्वने गुणा कार करी तेनुं ऐक्य कीधे अके (६६४७) पद, स्वमते कह्या एटले जिहां बे प्र कृतिने उदये बार जांगा कह्या ठे, ते स्वमते जाणवा.

अने मतांतरे बेने उदये चोवीश जांगा कह्या ठे. तेने मते एकतालीश चोवीशीना (६७४) तथा एक प्रकृतिना उदयना अगीअार जांगा मेलवतां (६७५) थाय. एटला मोहनीयकर्मना विकल्पे करीने सर्व संसारी जीव संसारने विषे मुंजाइ रह्या ठे. हवे एना (६६७१) पदवृंद प्रकृतिसंख्या थाय, ते करी देखाडे ठे.

दशने उदये एक चोवीशी जांगानी ठे, तेने दश गुणा करतां दश चोवीशी थाय, तथा नवने उदये ठ चोवीशीनी चोपन थाय, तथा आठने उदये अगीअार चो वीशीनी अष्टाशी थाय, तथा सातने उदये दश चोवीशीनी सत्तिर थाय, तथा ठने उदये सात चोवीशीनी बेंतालीश थाय, तथा पांचने उदये चार चोवीशीनी वीश था य, तथा चारने उदये एक चोवीशीनी चार थाय, तथा बेने उदये एक चोवीशीनी बे थाय, एम (३६०) चोवीशी सरवाले जांगानी थाय तेने चोवीश गुणा करतां (६६६०) थाय. तेमध्ये एकोदयना अगीअार जेलीये, तेवारें (६६७१) पदवृंद संख्या थाय. तेने विषे सर्व संसारी जीव मोह्या मुंजाणा ठे.

ए सर्व उदयने जांगे जघन्यथी तो एक समय काल अने उत्कृष्टो तो अंतर मु दूर्त प्रमाण काल होय, जे जणी वेद तथा हास्य युगलमांहेलो एक अंतर मुदूर् त पठी फरे, ते पंचसंग्रहनां मूल तथा टीकामांहे कह्यो ठे, माटे अंतरमुदूर्त उपरांत जांगे अथश्य फरे अने एक समयतो बंधस्थानक फरवानी तथा स्वरूपे उदयांतर करवानी अपेकार्ये जाणवो एटले बंधस्थानकना जेदथी अथवा गुणवा णाना जेदथी अथवा स्वरूपथकी अथश्य अन्य उदये अन्य जागांतरे जीव जाय. ॥ इतिगाथाद्वयार्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ एम बंधस्थानके उदय स्थानकनो संवेध कह्यो.

॥ अथ सत्तास्थानैः सह संवेधमाह ॥ हवे सत्ता स्थानक सार्धे संवेध कहे ठे.

तिन्नेवय बावीसे, इगवीसे अछवीस सत्तरसे ॥

ठञ्जेव तेर नव बं, धएसु पंचेव ठाणाणि ॥ ९३ ॥

अर्थ- (तिन्नेवयबावीसे के०) बावीशने बंधें अछवीश, सत्तावीश अने ठवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. जे जणी बावीश प्रकृतिनो बंध, मिष्यात्वीने होय तिहां ७-८-९-१०-ए चार उदय स्थानक होय तेमध्ये सातने उदयें तो एकज अछवीशनुं सत्तास्थानक होय, जे जणी सातनो उदय तो अनंतानुबंधीआने अचावें होय अने ते तो जेणे सम्यकृष्टि ठतां अनंतानुबंधीआ उवेव्या होय ते जे वारें मिष्यात्वे जाय, तेवारें वली मिष्यात्वप्रत्ययिक अनंतानुबंधीआ चार बांधवा मांमे, ते मिष्यात्वीने बांधावजिका तथा संक्रमावजिका जगें अनंतानुबंधीआना उदय रहित सातनो उदय पामीयें, तिहांतो तेने निश्चें अछवीशनीज सत्ता होय.

तथा आठ प्रकृतिना उदयस्थानकें अछवीश, सत्तावीश अने ठवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां जे अनंतानुबंधीआ रहित आठनो उदय होय तिहां तो पूर्वोक्त युक्तियें एक अछवीशनुं सत्तास्थानक होय अने अनंतानुबंधीआ सहित जे आठनो उदय होय तेने विषे त्रण सत्तास्थानक होय तेमध्ये जिहां जगें सम्यक्त्व मोहनीय उवेव्युं नथी तिहां जगें अछवीशनुं सत्तास्थानक जाणुं अने सम्यक्त्व उवेव्या पढी सत्तावीशनुं सत्तास्थानक तथा मिश्रमोहनीय उवेव्या पढी ठवीशनुं सत्तास्थानक अथवा अनादि मिष्यात्वीने पण ठवीशनुं सत्तास्थानक होय. एमज नवने उदयें पण एहिज त्रण सत्तास्थानक कहेवां अने दशनो उदय तो अनंतानुबंधीआ सहितज होय तो तिहां पण ए त्रण सत्तास्थानक कहेवां.

(इगवीसेअछवीस के०) एकवीशने बंधें सात, आठ अने नव, ए त्रण उदय स्थानकें पण एकज अछवीशनुं सत्तास्थानक होय जे जणी ए एकवीश प्रकृतिनो बंध सास्वादन गुणगणे होय अने सास्वादनपणुं तो औपशमिक सम्यक्त्व व मतां होय तेणे उपशम सम्यक्त्वे करी मिष्यात्वना दलिकनो एक सम्यक्त्व, बीजो मिश्र अने त्रीजो मिष्यात्व, एवा त्रण पुंज कखा तेमाटें त्रणे दर्शन मोहनीयनी सत्ता, सास्वादने पामीयें तेथी अछवीशनुं एकज सत्तास्थानक एकवीशने बंधें होय.

(सत्तरसेठञ्जेव के०) सत्तरने बंधें ठ सत्तानां स्थानक होय. ते अछवीश, सत्तावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए ठ सत्तास्थानक होय. तिहां ए

सत्तर प्रकृतिनुं बंधस्थानक त्रीजे अने चोथें गुणगणे होय तिहां ठ, सात, आठ, अने नव, ए चार उदय स्थानक सम्यक्दृष्टिने होय तिहां ठनुं उदय स्थानक ह्याधिक तथा औपशमिक सम्यक्दृष्टिने होय. तिहां ह्याधिक सम्यक्दृष्टिने एकवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय जे जणी अनंतानुबंधी चार तथा दर्शन मोहनीय त्रण, ए सात प्रकृतिने ह्यें ह्याधिक सम्यक्त्व होय ठे तेमाटें. तथा औपशमिक सम्यक्दृष्टिने प्रथम ग्रंथि जेदी औपशमिक पामतां तथा उपशमश्रेणियें पण जेणे अनंतानुबंधीया उपशमाव्या होय तेने अष्टावीशनुं सत्तास्थानक होय अने जे अनंतानुबंधीया विसंयोजीने श्रेणि आरंजे तेने चोवीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय. एम बे सत्तानां स्थानक, उपशमसम्यक्दृष्टिने होय. एटले सत्तरने बंधें अने ठ ने उदयें सर्व मली १८-१४-११ ए त्रण सत्तास्थानक थयां.

मिश्रदृष्टिने सात, आठ अने नव ए त्रण उदयें अष्टावीश, सत्तावीश, अने चोवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां जे अष्टावीशनी सत्तावालो मिश्रगुणगणुं पडिवजे तेने अष्टावीशनी सत्ता होय अने जेणे मिथ्यात्वी थकां सम्यक्त्व उवेळ्युं अने मिश्रपणुं हजी उवेजवा मांमयुं नथी ते सम्यक्त्वज उवेजीने मिथ्यात्वथी निवर्त्तिने फरी परिणामवर्शें मिश्रें आवे. तेने सत्तावीशनुं सत्तास्थानक होय, तथा जे सम्यक्दृष्टि ठतां अनंतानुबंधीया विसंयोजीने तथाविध परिणामने वर्शें मिश्रें आवे, तेने चोवीशनी सत्ता होय. ए चोवीशनी सत्ता, चारे गतिने विषे पामीयें, जे माटें चारे गतिना सम्यक्दृष्टि अनंतानुबंधीयांनी विसंयोजना करे, ए विषे कम्मपयडिमध्यें एम कसुं ठे, के “चउगइया पज्जता, तिन्नि विसंजोयणा विसंयोजति ॥ करणोहिं तिहि सहिया, पांतरकरणं उवसमोवइति” चार गतिना पर्याप्ता जीव, एक सम्यक्दृष्टि, बीजा देशविरति, त्रीजा सर्वविरति, ए त्रणे अनंतानुबंधीयांनी विसंयोजना करे ते वली परिणामने वर्शें मिश्रें पण आवे, तेषी ए जांगो चारे गति मध्यें पामीयें.

तथा चोथें गुणगणे सत्तरने बंधें सातने उदयें अष्टावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच सत्तानां स्थानक होय. तिहां अष्टावीशनुं औपशमिक तथा वेदक सम्यक्दृष्टिने होय अने अनंतानुबंधीया विसंयोज्या पढी चोवीशनुं सत्तास्थानक पण ए बेहुने होय, तथा मिथ्यात्वने ह्यें त्रेवीशनुं सत्तास्थानक अने मिथ्यात्व तथा मिश्र, ए बेना ह्यें बावीश प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, ए बे, वेदकसम्यक्दृष्टिनेज होय, ते केमके? अनंतानुबंधी चार तथा मिथ्यात्व अने मिश्र, ए ठ प्रकृति खपावीने सम्यक्त्व मोहनीय खपावतो तेने चरम आसें वर्त्त

तो कोइएक पूर्वबन्धायु जीव तिहां मरीने चारे गति मांहेली जावे, ते एक गति मांहे जइ उपजे, तेवारें बावीशनी सत्ता, चारे गति मध्यें पामीयें अने एकवीशनी सत्ता तो ह्याधिक सम्यक्दृष्टिनेज होय.

तथा आठने उदयें तो मिश्रगुणताणे सातना उदयनी पेरें अष्टावीश, सत्तावीश अने चोवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय, अने अविरतिसम्यक्दृष्टिने तो जेम सातने उदयें पांच सत्तास्थानक कहां, तेप्रकारेंज पांच सत्तास्थानक आठने उदयें पण कहेवां तेमज नवनो उदय पण अविरति वेदक सम्यक्दृष्टिने होय. ते ह्यायोपशमिक सम्यक्दृष्टि माटें एकवीश अने सत्तावीश, ए बे सत्तास्थानक विना शेष ३८-३४-३३-३२ ए चार सत्तास्थानक होय. ते पूर्वली पेरें जाववां.

तथा (तेरनवबंधएसु के०) तेरने बंधें अने नवने बंधें प्रत्येकें प्रत्येकें (पंच चताणाणि के०) पांच पांच सत्तानां स्थानक होय, अष्टावीश, चोवीश, त्रेवीश, वावीश अने एकवीश, ए पांच सत्तानां स्थानक होय. तेमांहे तेरना बंधक देश विरति होय, ते बे जेदें ठे. एक तिर्यंच, बीजा मनुष्य, तेमध्ये तिर्यंचने पांच, ठ, सात अने आठ, ए चार उदय स्थानकें अष्टावीश अने चोवीश, ए बे सत्तानां स्थानक होय. तिहां पांच, ठ अने सातने उदयें औपशमिक सम्यक्दृष्टिने अष्टावीशनी सत्ता होय ते कोइएक ग्रंथि जेदीने सम्यक्त्व सहित देशविरति पणुं पडिवजे तेनी अपेह्यायें जेवी जे जणी शतकचूर्ण मध्यें एम कहुं ठे के, “ उव समसम्मदिच्छि, अंतरकरणेवि उकोइ देसविरइ कोइपमत्तापमत्त जावंपिगहइ सासाय पोपुण किमविलहइ” तथा ह्यायोपशमिक सम्यक्दृष्टि तिर्यंचने ठ, सात अने आठ, ए त्रण उदयें चोवीशनी सत्ता होय ते अनंतानुबंधीआ चारनी वि संयोजना पूर्वे चार गति मध्यें कही ठे, ते अपेह्यायें जेवा अने बीजां त्रेवीश, बा वीश अने एकवीश, ए सत्तास्थानक देशविरति तिर्यंचने न होय, जे जणी बावीश अने त्रेवीश, ए बे सत्तास्थानकतो ह्याधिक सम्यक्त्व उपजती वेलायें होय ते तो तिर्यंचने न उपजे अने ह्याधिक सम्यक्त्वनो धणी जेणे पूर्वे तिर्यंचायु बांधुं होय तेथी ते तिर्यंच थाय तो पण ते असंख्याता वर्षायु वाला तिर्यंच मध्यें अवतरे, तेने तो देशविरतिपणुं होयज नहीं तथा संख्यातवर्षनुं तिर्यंचायु बांध्या पठी तो ते नवें ह्याधिक सम्यक्त्व पामेज नहीं तेथी तिर्यंच देशविरतिने तेरने बंधें एकवीशनुं सत्तास्थानक न होय. यडुकं चूर्णौ “ एग वीसातिरिक्तेसु संज

यासंज्ञयेसु न संज्ञवः ॥ कहं नसुः संखिव वासाउएसु तिरिक्केसु स्वायगसम्म
दिठि नउवववः असंखिव वासाउएसु उवववः तस्स देसविरइनड्डित्ति. ”

तथा देशविरति मनुष्यने पांचने उदयें एकवीश, चोवीश अने अछावीश, ए त्र
ए सत्तास्थानक होय तथा बने अने सातने उदयें पांच सत्तास्थानक होय अने आठ
ने उदयें एकवीशनां सत्तास्थानक विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय, जे नणी आ
उतो उदय, सम्यक्त्वमोहनीय साथे होय तेमाटे तिहां एकवीश प्रकृतिनुं सत्तास्था
नक न होय बाकीनां चार होय ते वेदक सम्यक्त्वी मनुष्यने देशविरति गुणगणो होय.
एमज नवने बंधें प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणगणो चारने उदयें अछावीश, चोवी
श अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय तथा पांचने उदयें अने बने उदयें
तो जे देशविरतियें कहां तेहिज पांच सत्तास्थानक होय अने सातने उदयें ए
क एकवीशना सत्तास्थानक विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय. अहींआं प
ए पूर्वोक्त युक्ति करवी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३३ ॥

पंचविह चउविहेसु, उ उक्क सेसेसु जाण पंचेव ॥

पत्तेअं पत्तेअं, चत्तारि अ बंधु वुत्तेए ॥ ३४ ॥

अर्थ—तथा (पंचविहचउविहेसु उक्क के०) पंचविध बंधकने विषे तथा चतुर्विध बं
धकने विषे प्रत्येकें उ उ सत्तास्थानक होय, तिहां पांचने बंधें अछावीश, चोवी
श, एकवीश, तेर, बार अने अगीआर, ए उ सत्तानां स्थानक होय तेमांहेजा अ
छावीश अने चोवीश, ए बे सत्तास्थानक तो उपशमश्रेणीयें औपशमिक सम्यक्कृष्टि
ने होय. तिहां जेणे नवमा गुणगणाने प्रथमजार्गे चार अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या
तेने चोवीशनुं सत्तास्थानक होय अने एकवीशनुं सत्तास्थानक तो ह्याधिकसम्यक्कृष्टि
ने उपशमश्रेणीयें तथा रूपकश्रेणीयें पण ज्यां लगे अप्रत्याख्यानीआ तथा प्रत्या
ख्यानीआ ए आठ कषायनो ह्य न थयो होय, तिहां लगे एकवीशनुं सत्तास्था
नक होय, अने आठ कषाय खपाआ पढी तेहिज बंधें तेरनुं सत्तास्थानक होय.
तेमांहेथी पण नपुंसकवेद खपावे थके बारनुं सत्तास्थानक होय तेमांहेथी पण स्त्रीवे
द खपावे थके अगीआरनुं सत्तास्थानक होय. पुरुषवेद बांधतां हास्यादिक उ प्रकृ
तिनो ह्य न थाय तेमाटे तिहां पंचादिक प्रकृतिनुं सत्तास्थानक न होय.

तथा चारने बंधें अछावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक तो
उपशम श्रेणीयें पूर्वजी पेरे जाणवां. बाकीनां त्रण सत्तास्थानक रूपकश्रेणीयें हो

य तेनुं विशेष कहे ठे. तेमध्ये कोइएक जीवें नपुंसक वेदोदयें वर्त्तता कृपकश्रेणी मांझी ते स्त्री अने नपुंसक ए वे वेद, साथें सम कालें खपावे, ते वेलायेंज पुरुष वेदनो बंध विहेदे, तेवार पढी पुरुषवेद अने हास्यादिक ठ, ए साते प्रकृति साथें खपावे तथा जे स्त्रीवेदें श्रेणी मांझे, ते प्रथम नपुंसकवेद खपावी अंतरमुहूर्त्त पढी स्त्रीवेद खपावे, तेनी साथेंज पुरुषवेदनो बंध विहेदे अने पुरुषवेदबंध ठेया पढी पुरुष वेद तथा हास्यादिक ठनो समकालें कृत्य करे. ते ज्यां लगे कृत्य न थाय, तिहां लगे ए वे ठामें चारने बंधें वेदोदय रहित एकोदय वर्त्तताने अगीअार प्रकृतिनुं सत्तास्थानक पामीयें अने ते पुरुषवेद तथा हास्यादिकपट्क एम सात प्रकृतिनो समकालें कृत्य थये थके चार प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय एम पांच सत्तानां स्थानक, स्त्रीवेदें अने नपुंसकवेदें श्रेणी मांझे तेने होय अने जे पुरुषवेदें कृपकश्रेणी मांझे, तेने हास्यादिक ठना कृत्यनी साथें पुरुषवेदनो बंध टले ते जणी तेने चतुर्विधबंधकालें अगीअारनुं सत्तास्थानक न होय पुरुषवेद विना हास्यादिकपट्क टालियें, तेवारें पांच प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय ते वे समयोन वे आवलिका लगे होय तेवार पढी पुरुषवेदनो कृत्य थये थके चारनुं सत्तास्थानक रहे, ते पण अंतर मुहूर्त्त पर्यंत रहे तेशी एने पण अगीअारनुं सत्तास्थानक टाली बाकी पांच सत्तास्थानक होय. एम च तुर्विध बंधकने विपे ३८-३४-३१-११-५-४ ए ठ सत्तानां स्थानक होय.

तथा (सेमेसुजाणपंचेवपत्तेअंपत्तेअं के०) शेष त्रिविध, द्विविध अने एकविध, ए त्रण बंधस्थानकने विपे प्रत्येकें प्रत्येकें पांच पांच सत्तानां स्थानक होय. तिहां त्रणने बंधें अष्टावीश, चोवीश, एकवीश, चार अने त्रण, ए पांच सत्तानां स्थानक होय. तिहां प्रथमनां त्रण सत्तास्थानक तो, उपशमश्रेणीयें होय. बाकी चार अने त्रण, ए वे सत्तानां स्थानक कृपकश्रेणीयें होय, ते कही देखाडे ठे. संज्वलना क्रोधनी अंतरकरण प्रथमस्थिति एक आवलिका मात्र शेष ठते तेनो बंध, उदय अने उदीरणा समकालें व्युत्तेद थाय, तेवार पढी मानादिक त्रणनो बंध हांय तेवारें संज्वलनाक्रोधनुं प्रथम स्थितिगत आवलिकामात्र अने वे समयोन वे आवलिबंध वस्ता सूकीने अन्य सर्व कृत्ये गथुं अने ते क्रोधनी सत्ता पण वे समय कणी वे आवलिका मात्र कालें कृत्य पामशे ते ज्यां लगे कृत्य न जाय त्यां लगे त्रिविध बंधें चार प्रकृतिनी सत्ता होय अने ते संज्वलनो क्रोध कृत्यें गये थके त्रण प्रकृतिनुं सत्तास्थानक होय, ते अंतरमुहूर्त्त लगे जाणवुं. हवे द्विविधबंध

१८-१४-११-३-५ ए पांच सत्तास्थानक होय. ए मांहेलां त्रण तो पूर्वली पेरें उपशमश्रेणीयें जाववां अने बे सत्तास्थानक, रूपकश्रेणीयें जाववां. ते पूर्वोक्त क्रोधनी पेरें मानने पण आवलिकामात्र प्रथम स्थितिगत करे उते संज्वलना मानना पण बंध, उदय अने उदीरणा सार्थेज टले, तेवारें द्विविध बंध होय. तिहां बे समयोन बे आवलिका लगे संज्वल माननी सत्ता होय तेवारें त्रण प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक जाणवुं अने पठी मानने क्यें अंतरमुहूर्त पर्यंत बे प्रकृतिनुं सत्तास्थानक जाणवुं. तथा एकने बंधस्थानकें पण पांच सत्तास्थानक जाणवां. तेमध्ये त्रण तो पूर्वली पेरें उपशमश्रेणीयें जाववां अने बे रूपकश्रेणीयें जाववां, ते कहे ठे. जेवारें संज्वलनी मायानी प्रथमस्थिति आवलिकामात्र रहे, तेवारें संज्वलनी मायानो बंध, उदय अने उदीरणा सार्थे टले, तेवारें एकनुं बंधस्थानक होय अने बे समयोन बे आवलिकालगे मायानी सत्ता ठे. तेजणी बेनी सत्ता होय. तेवार पठी अंतरमुहूर्त पर्यंत एक जोचनी सत्ता होय. ए सर्व नवमे गुणठाणें वर्त्ता जाणवी.

(चत्वारिअबंधुवुहेए के०) तथा बंधने व्युह्वेदें एटले बंधने अजावें सूक्ष्मसंपरा य गुणठाणे १८-१४-११-१ ए चार सत्तानां स्थानक होय, तेमध्ये त्रण तो पूर्वली पेरें उपशमश्रेणीयें कहेवां अने एक संज्वलनाजोचनी सत्तानुं स्थानक रूपकश्रेणीयें होय अने बंध तथा उदयने अजावें पण उपशांतमोहनामा अग्नी आरमे गुणठाणे १८-१४-११ ए त्रण सत्तानां स्थानक होय, एनी जावना पूर्व वत् जाणवी. एम उपशमश्रेणीयें अने रूपकश्रेणीयें सत्तानो संवेध कह्यो ॥इति॥ १४॥

दस नव पन्नर साई, बंधोदय संत पयडि ठाणाणि ॥

जणिआणि मोहणिजे, इतोनामं परं वुहं ॥ १५ ॥

अर्थ-(दसनवपन्नरसाई के०) दश, नव अने पंदर, (बंधोदयसंत के०) बंध, उदय अने सत्तानां स्थानक अनुक्रमें एटले दश बंधनां स्थानक, नव उदयनां स्थानक अने पंदर सत्तानां स्थानक, तेना प्रत्येकें जांगा अने ते बंधोदय सत्ताने संवेधें (पयडिठाणाणि के०) प्रकृतिनां स्थानक ते सर्व (मोहणिजे के०) मोहनीयकर्मने विषे (जणिआणि के०) कहां. (इतो के०) हवे अर्हीआथकी आगल (नामंपरंवुहं के०) अपर एटले नामकर्मना बंध, उदय अने सत्ता प्रकृतिनां स्थानक तेहना संवेधें जांगा कहेरो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १५ ॥

अथ नामकर्मणि आदौ बंधस्थानान्याह ॥ तिहां प्रथम नामकर्म
नां बंधस्थान कहे ठे.

तेवीस पन्नवीसा, ठवीसा अठवीस गुणतीसा ॥
तीसेगतीस मेगं, बंधघाणाणि नामस्स ॥ २६ ॥

अर्थ-पहेलुं त्रेवीशनुं बंधस्थानक, बीजुं पञ्चीशनुं बंधस्थानक, त्रीजुं ठवीशनुं
बंधस्थानक, चोथुं अघावीशनुं बंधस्थानक, पांचमुं अयोगत्रिशनुं बंधस्थानक,
(तीसेगतीस के०) ठहुं त्रीशनुं बंधस्थानक, सातमुं एकत्रिशनुं बंधस्थानक अने
आठमुं (मेगं के०) एक प्रकृतिनुं बंधस्थानक, ए आठ, (बंधघाणाणिनामस्स
के०) नामकर्मनां बंधनां स्थानक होय. ए आठ बंधस्थानक, ते तिर्थेच अने
मनुष्यादिगति प्रायोग्यपणे करीने अनेक प्रकारनां ठे. तेमाटे तेमज देखाडे ठे.

तिहां तिर्थेचगति प्रायोग्य बांधताने सामान्यपणे १३-१५-१६-१९-३०-ए पां
च बंधस्थानक होय. तेमध्ये प्रथम एकेंद्रिय तिर्थेचगति प्रायोग्य १३-१५-१६-ए
त्रय बंधस्थानक होय, ते कहे ठे. तिहां १ तिर्थेचगति, २ तिर्थेचानुपूर्वी, ३ एकेंद्रि
यजाति, ४ औदारिक, ५ तैजस अने ६ कर्मण, ए त्रय शरीर, ७ हुंनसंस्थान,
८ वर्ष, ९ गंध, १० रस, ११ स्पर्श, १२ अगुरुलघु, १३ उपघात, १४ स्थावर,
१५ सूक्ष्म अथवा बादर, १६ अपर्याप्त, १७ प्रत्येक अथवा साधारण, १८ अ
स्थिर, १९ अच्युज, २० दौर्भाग्य, २१ अनादेय, २२ अयशःकीर्त्ति, २३ निर्मा
ण, एवं त्रेवीश प्रकृतिना समुदायनुं पहेलुं बंधस्थानक, ए अपर्याप्ता एकेंद्रियप्रा
योग्य बांधतां तिर्थेच तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टिने जाणवुं अर्हीआं जांगा चार उपजे, ते
कहे ठे. एक सूक्ष्मपणुं साधारण सहित त्रेवीश बांधे, बीजुं सूक्ष्मपणुं प्रत्येक स
हित त्रेवीश बांधे, त्रीजुं बादरपणुं साधारण सहित त्रेवीश बांधे, चोथुं बादर प
णुं प्रत्येक सहित त्रेवीश बांधे, एवं चार जांगा थाय.

तथा ए त्रेवीश प्रकृतिमांहे पराघात अने उह्वास, नेले थके पञ्चीश प्रकृतिनुं बीजुं
बंधस्थानक पर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य, मिथ्यादृष्टि तिर्थेच तथा मनुष्य अने देवता जे
एकेंद्रियमांहे जवा वाला होय ते बांधे, अर्हीआं अपर्याप्ताने स्थानके पर्याप्तनाम क
हेलुं अने स्थिर अस्थिरमांहेथी एक तथा शुनाच्युजमांहेथी एक तथा यशअयश
मांहेथी एक बांधे. अर्हीआं जांगा वीश उपजे, ते कहे ठे. बादर, पर्याप्त अने प्रत्येक ने
स्थिर साथे पञ्चीश बांधताने एक जांगो तेमज अस्थिर साथे पञ्चीश बांधतां बीजो जां

गो थाय. ते वली शुजाशुने चार थाय, ते यश अयशे आठ थाय. एमज वली वादर पर्याप्त साधारणपणुं बांधतां स्थिर अने अस्थिरें बे नांगा थाय अने शुजा शुने चार नांगा थाय. तिहां साधारण साथें यशःकीर्त्ति न बांधे केमके तिहां अय शनोज बंध होय तेमाटें. तथा एमज वली सूक्ष्म पर्याप्त प्रत्येकना चार नांगा थाय त था वली सूक्ष्म पर्याप्त साधारण साथें चार नांगा थाय. एम सर्व संख्यायें पच्चीश ने बंधें वीश नांगा उपजे, ए वीश माहेला एकेंद्रिय प्रायोग्य देवता जेवारें बांधे, तेवारें तिहां वादर पर्याप्त अने प्रत्येकना आठ नांगा उपजे.

हवे ए पच्चीशमाहे आतपनाम अथवा उद्योतनाम, ए बे माहेलो एक नेली यें, तेवारें ढवीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक थाय. अर्हीआं वादर अथवा सूक्ष्मने स्था नकें एक वादरज लेवो, तथा साधारणने तामें प्रत्येकज लेवो. ए बंधस्थानक प र्याप्ता वादर प्रत्येक एकेंद्रिय प्रायोग्य मिष्यादृष्टि तिर्यंच, मनुष्य अने देवता ए केंद्रियमाहे जनार होय, ते बांधे. अर्हीआं आतप उद्योत साथें स्थिर, अ स्थिर, शुज, अशुज, यश अने अयश, ए प्रकृतिने परावर्त्तें शोल नांगा जा णवा. अर्हीआं आतप, उद्योत, ते सूक्ष्म साधारण अने अपर्याप्त साथें न होय तेमाटें ते साथें नांगा न कहेवा. तथा यशःकीर्त्ति पण सूक्ष्म साधारण अने अपर्या प्त साथें न बांधे. अर्हीआं एक आतप, स्थिर, शुज अने यश. बीजो आतप, स्थि र, शुज, अने अयश. त्रीजो आतप, स्थिर, अशुज अने यश. चोथो आतप, स्थि र, अशुज अने अयश. पांचमो आतप, अस्थिर, शुज अने यश. षष्ठो आतप, अ स्थिर, शुज ने अयश. सातमो आतप, अस्थिर, अशुज अने यश. आठमो आ तप, अस्थिर, अशुज, ने अयश, ए आठ नांगें एकेंद्रिय पर्याप्त प्रायोग्य आ तप साथें ढवीश प्रकृति बांधे, तेमज आठ नांगे उद्योतसाथें पण ढवीश प्र कृति बांधे, एवं शोल नांगा थया. एम एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां त्रणे बंध स्थानकें अने चालीश नांगा थाय.

हवे बेंद्रिय प्रायोग्य बांधताने ३५-३६-३७ ए त्रण बंधस्थानक होय. तिहां ३ तिर्यंचदिक, ३ बेंद्रियजाति, ५ औदारिकदिक, ६ तैजस, ७ कार्मण, ७ हुं मसंस्थान, ९ लेवहुंसंघयण, १० वर्ष, ११ गंध, १२ रस, १३ स्पर्श, १४ अ गुरुलघु, १५ उपघात, १६ त्रस, १७ वादर, १८ अपर्याप्त, १९ प्रत्येक, २० अ स्थिर, २१ अशुज, २२ दौर्भाग्य, २३ अनादेय, २४ अयशःकीर्त्ति, २५ निर्मा ण, ए पच्चीश प्रकृतिना समुदाय रूप बंधस्थान अपर्याप्त बेंद्रिय प्रायोग्य मिष्यादृष्टि

मनुष्य तथा तिर्यंच वाधि. अर्हीआं अपर्याप्त नामनी साथें शुजाशुजादिक परावर्त मान प्रकृति मांहेली अशुनज वंधाय पण शुन न वंधाय, तेषी अर्हीआं बीजो जांगो कोइ उपजे नर्ही. मात्र एकज जांगो थाय.

हवे ए पूर्वोक्त पञ्चीश प्रकृतिने १ पराघात, २ उड्वास, ३ अग्रशस्तविहायो गति, ४ पर्याप्त, ५ डुःस्वर, ए पांच प्रकृति सहित करीवें अने अपर्याप्त रहित क रीयें. तेवारें उंगणत्रीश प्रकृतिना समुदायरूप वंधस्थानक थाय, ते पर्याप्ता वेंडिय प्रायोग्य मिष्यादृष्टि जीव वाधि. अर्हीआं थिर, अथिर, शुन अने अशुन, यशने अ यश, ए प्रकृति पर्याप्ता सहित ठे तेषी तेना परावर्तें एक शुन साथें तथा एक अशुन साथें एवं वे जंग स्थिरना अने वे अस्थिरना, एवं चार थया. ते चार अयशःकीर्त्ति साथें तथा चार यशःकीर्त्ति साथें वाधि, तेवारें आठ जांगा थाय.

ते उंगणत्रीश प्रकृतिने उद्योत सहित वांधतां त्रीशतुं वंधस्थानक ए पण पर्याप्त वेंडिय प्रायोग्य मिष्यात्वीने होय. तिहां पण पूर्वोक्त रीतें जांगा आठ उपजे. ए सर्व मली वेंडिय प्रायोग्य त्रण वंधस्थानकें अइने जांगा सत्तर थया.

तेमज तेंडिय प्रायोग्य पण एज त्रण वंधस्थानकें अइने सत्तर जांगा कहेवा पण तिहां एटलुं विशेष जे वेंडियजातिने स्थानकें तेंडियजाति कहेवी. तेमज चौरिंडिय प्रायोग्य पण एज त्रण वंधस्थानकें जांगा सत्तर कहेवा अने तेंडियजातिने स्थानकें चौरिंडिय जाति कहेवी. एम शरवाले विकलेंडियने विषे एकावन जांगा थाय.

हवे पंचेंडियतिर्यंच प्रायोग्य वांधतां पञ्चीश, आंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण वंधस्थानक होय. तिहां पञ्चीश प्रकृतिनुं वंधस्थानक अपर्याप्त पंचेंडिय तिर्यंच प्रायोग्य मिष्यात्वी तिर्यंच अने मनुष्य वाधि, ते प्रकृतिनां नाम अपर्याप्त वेंडिय प्रायोग्यनी परें कहेवा. पण एटलुं विशेष जे वेंडियजातिने स्थानकें पंचेंडियजातिनाम कहेवुं. अर्हीआं जांगो एकज पूर्वली परें अशुननो जाणवो.

तथा १ तिर्यंचदिक, २ पंचेंडियजाति, ५ औदारिकदिक, ६ तैजस, ७ कार्मण, ८ ठ संघयण मांहेलुं एक संघयण, ९ ठ संस्थान मांहेलुं एक संस्थान, १३ वर्णचतुष्क, १४ अशुरुजघु, १५ उपघात, १६ पराघात, १७ उड्वास, १८ खगति वे मांहेली एक खगति, १९ त्रस, २० बादर, २१ पर्याप्त, २२ प्रत्येक, २३ स्थिर, अस्थिरमांहेली एक, २४ शुन अने अशुन मांहेली एक, २५ सौभाग्य, दौर्भाग्य मांहेली एक, २६ सुस्वर, डुःस्वर मांहेली एक, २७ आदेय अने अनोदय मांहेली एक, २८ यशःकीर्त्ति, अयशःकीर्त्ति मांहेली एक अने २९

निर्माणा. ए ओगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच प्रायोग्य मिथ्या ली अने सास्वादनी चारे गतिना जीव बांधे. अर्हीआं एटलुं विशेष जे सास्वादनीने संघ यण तथा संस्थान पांच पांच मांहेलुं एकेक कहेलुं. केमके हुंमसंस्थान तथा ठेवछा संघयणनो बंध, सास्वादन गुणतापो नथी माटें. ए बंधस्थानकें (४६०८) जांगा उप जे, ते देखाडे ठे. उ संघयण मांहेथी एक संघयणना बंध साथें ओगणत्रीश प्रकृ ति बांधतां एक जांगो थाय, तेवा उ संघयणें उ जांगा थाय. तेवली एकेका संस्था नना बंध साथें उ उ जांगा जेतां उ संस्थानना उत्रीश जांगा थाय. ते उत्रीश जां गा शुजखगति साथें थया. तेमज अशुजखगतिना उत्रीश मेलवतां ७३ जंग थाय. तेवली स्थिर अने अस्थिर साथें (१४४) थाय. ते वली शुज अशुज साथें बम णा करतां (१८८) थाय. ते वली सुस्वर तथा दुःस्वर साथें बमणा करतां (५७ ६) थाय. ते सौजाग्य तथा दौर्जाग्य साथें बमणा करतां (११५३) थाय. ते आदेय अनादेय साथें बमणा करतां (३३०४) थाय. ए (३३०४) यश साथें त था (३३०४) अयश साथें बांधतां थाय. बेहु मलीने (४६०८) थाय: ए जां गा सन्निपंचेंद्रिय तिर्यंचगति प्रायोग्य ओगणत्रीश प्रकृतिने बंधें थाय. तिहां विशे प आश्रथीने सास्वादन आश्रथी बांधतो विचारियें, तेवारें ते सास्वादनी हुंमसं स्थान अने ठेवछुं संघयण न बांधे, माटें पांच संघयणने पांच संस्थान साथें गु णतां ३५ थाय. पढी सात वार पूर्वली पेरें बमणा करीयें, तेवारें (३३००) जां गा थाय. पण ए जांगा तेहीज (४६०८) मांहेला जाणवा, तेमाटें जूदा गणवा नहीं.

ते ओगणत्रीश प्रकृतिने उद्योत नामकर्म सहित बांधतां त्रीश प्रकृतिनुं बंध स्थानक थाय. अर्हीआं पण ओगणत्रीश प्रकृतिने बंधें जे (४६०८) जांगा उप ना तेटलाज उद्योतने साथें जेलीने गणतां थाय. एम पंचेंद्रिय तिर्यंच प्रायोग्य त्रण बंधस्थानकें अइने (९३१७) जांगा थाय.

हवे मनुष्यगति प्रायोग्य बांधतां पञ्चीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंध स्थानक होय. तिहां जांगा कहे ठे. तिहां पञ्चीशनुं बंधस्थानक, अपर्याप्त मनुष्य प्रायोग्य बांधे, तिहां जांगो एक, तिर्यंचना पञ्चीश, प्रकृतिना बंधनी पेरें लेवो. प ण एटलुं विशेष जे तिर्यंचदिकने तामे मनुष्यदिक कहेलुं. तथा बीजुं उंगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक मिथ्याली, सास्वादनी, मिश्रदृष्टि तथा अविरति सम्यक्दृष्टि, ए चार बांधे तिहां मिथ्याली तथा सास्वादनी चारे गतिना जीव बांधें. अने मिश्र तथा अविरति सम्यक्दृष्टि तो देवता, नारकीज बांधे, एने विषे पण जेम पंचेंद्रिय तिर्यंच

प्रायोग्य अगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानकने विषे जांगा (४६०८) कहा, तेमज क हेवा. पण एतलुं विशेष जे ए मांहेजाज साखादनीने (३२००) जांगा कहेवा. तथा मिश्रदृष्टि अने सम्यक्दृष्टि देव, नारकी बांधे, ते नव नामकर्मनी ध्रुवबंधि प्रकृति १० मनुष्यगति, ११ मनुष्यानुपूर्वी, १२ पंचेंद्रियजाति. १४ औदारिकदिक, १५ समचतुरस्रसंस्थान, १६ वज्ररूपजनाराचसंघयण, १७ पराघात, १८ उन्नास १९ अचलखगति, २० त्रस, २१ बादर, २२ पर्याप्त, २३ प्रत्येक, २४ स्थिर, अस्थिर मांहेली एक, २५ अचल, अचल मांहेली एक, २६ सुजग, २७ सुस्वर, २८ आदेय, २९ यश अने अयशमांहेली एक, ए अगणत्रीशने बंधें जांगा आठ उपजे, केमके अहीं प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान विना बीजा पांच संघयण तथा पांच संस्थाननो बंध नथी तथा अचलखगति, दौर्भाग्य, दुःस्वर अने अनादेयनो बंध नथी, तेथी तेना विकल्पें जांगा न उपजे. बाकी अचल अचल सार्थे एकेक तेवली स्थिर तथा अस्थिर सार्थे बे बे अने यश अयश सार्थे चार चार, एवं आठ आठ जांगा एकेक गुणगणे थाय पण ते सर्व पूर्वला (४६०८) मांहेलाज जाणवा.

ते अगणत्रीश प्रकृतिमध्ये तीर्थकरनामकर्म जेलायें, तेवारे त्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक थाय. ते मनुष्य प्रायोग्य देवता तथा नारकी जे सम्यक्दृष्टि होय, ते बांधे. तिहां पण जांगा आठ थाय, जेजणी तीर्थकरनामकर्मनो बंध, मिथ्यात्वादिक त्रण गुणगणे न होय, तेथी त्रीश प्रकृतिने बंधें अधिक जांगा न थाय. एम मनुष्यगति प्रायोग्य त्रण बंधस्थानकें यदने (४६१७) जांगा थाय.

हवे देवगतिप्रायोग्य बांधतां अष्टावीश, अगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए चार बंधस्थानक होय. ते पंचेंद्रिय तीर्थच तथा मनुष्य बांधें. तिहां ३ देवदिक, ३ पंचेंद्रियजाति, ५ वैक्रियदिक, १४ ध्रुवबंधिनी नव प्रकृति, १५ समचतुरस्र संस्थान, १६ अचलखगति. २० त्रसचतुष्क, २१ पराघात, २२ उन्नास, २३ स्थिर अथवा अस्थिर, २४ अचल अथवा अचल, २५ सुजग, २६ सुस्वर, २७ आदेय, २८ यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति, ए अष्टावीश प्रकृतिना समुदायें बांधतां अष्टावीशनुं बंधस्थानक कहीयें. ए बंधस्थानक मिथ्यात्वथी मांफीने देशविरति गुणगणा लगेंना मनुष्य, तीर्थच बांधे अने ते पढी ठां गुणगणे एकला मनुष्य पण बांधे. अहींआं स्थिर अथवा अस्थिर, अचल अथवा अचल यश अने अयशने परावर्ते आठ जांगा थाय तथा अप्रमत्त अने अपूर्वकरण गुणगणावाला मनुष्यपण बांधे परंतु तिहां स्थिर, अचल अने यशज बांधे. अहींआं सर्व अचलज बांधाय

माटें एकज जांगो उपजे, ते पण ए आठ मांहेलोज ठे माटें पृथक् गणवो नहीं.

ते अछावीशमांहे जिननाम जेलतां आंगणत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक देव प्रायोग्य, ते अविरति सम्यक्दृष्टि, देशविरति तथा प्रमत्त मनुष्यज बांधे. तिहां पण स्थिर, अस्थिर, शुच, अशुच, यश अने अयशने परावर्त्ते आठ जांगा थाय. वली ए आंगणत्रीशनुं बंधस्थानक एकली स्थिरादिक शुच प्रकृतिर्ये सहित अप्रमत्त अने अपूर्वकरणवालो मनुष्य पण बांधे. तिहां एकज जांगो थाय, ते तदंतरंजुत जाएवो.

तथा ते अछावीशमांहे आहारदिक जेलीर्ये अने जिननाम जेलीर्ये नहीं, तेवारें त्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक देवगति प्रायोग्य अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणवाला वालो मनुष्यज बांधे. तेपण स्थिर, शुच अने यशज बांधे. पण अस्थिर, अशुच अने अयश न बांधे तेमाटें तिहां पण एकज जांगो थाय.

तथा ते त्रीशमांहे वली जिननाम जेलीर्ये, तेवारें एकत्रीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक देव प्रायोग्य अप्रमत्त अने अपूर्वकरणवालो मनुष्यज बांधे. अहींआं पण शुच प्रकृतिनोज बंध ठे, तेमाटें एकज जांगो होय. एम सर्व मलीने देवगति प्रायोग्य चारे बंधस्थानके अइने अठार जांगा थाय. हवे नरकगतिप्रायोग्य जांगा कहे ठे.

हवे नरकगति प्रायोग्य बांधताने एकज अछावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. १ नरकदिक, २ पंचेंद्रियजाति, ५ वैक्रियदिक, ६ हुंमसंस्थान, ७ पराघात, ८ उड्ढास, ९ अशुचविहायोगति, १० त्रस, ११ बादर, १२ पर्याप्त, १३ प्रत्येक, १४ अस्थिर, १५ अशुच, १६ दौर्जाग्य, १७ दुःस्वर, १८ अनादेय, १९ अयशःकीर्ति, २० नामध्रुवबंधिनी नव प्रकृति, ए अछावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य मिथ्यात्व गुणवालावाला बांधे. अहींआं सर्व परावर्त्तमान मांहेली अशुचप्रकृतिज बांधे माटें विकल्प नहीं तेथी जांगो पण एकज होय.

हवे देवगति प्रायोग्य बंध व्युत्पेद पामे अके पण अपूर्वकरणना सातमा जागथी मांमीने सुद्धसंपराय गुणवाणाना अंत पर्यंत पण एकज यशःकीर्ति नामकर्मनी प्रकृतिने एकला मनुष्य बांधे. तिहां एकनुं बंधस्थानक लेवुं इतिसमुच्चयार्थः ॥ २६ ॥

अथैकस्मिन् बंधस्थाने कति जंगाः सर्वसंख्यायाः स्युरित्याह ॥

हवे कया बंधस्थानके केटला जांगा, सर्व संख्याये होय, ते कहे ठे.

चउ पणवीसा सोलस, नव बाण उई सयाय अडयाला ॥

एयालुत्तर ढाया, लसया इक्कि बंध विही ॥ २७ ॥

अर्थः—अपर्यासा एकैन्द्रिय प्रायोग्य त्रेवीश प्रकृतिने बंधे (चउ के०) चार जांगा होय, तथा पञ्चीशने बंधे एकैन्द्रिय प्रायोग्य वीश, बेंद्रिय प्रायोग्य एक, तेंद्रिय प्रायोग्य एक, चौरिन्द्रिय प्रायोग्य एक, पंचेंद्रियतिर्थेच प्रायोग्य एक, अने मनुष्य प्रायोग्य एक, एवं पञ्चीशने बंधे (पणवीसा के०) पञ्चीश जांगा होय तथा एकैन्द्रिय प्रायोग्य षड्वीशने बंधे (सोलस के०) शोल जांगा होय, तथा देव प्रायोग्य अष्टावीशने बंधे आठ जांगा अने नरकप्रायोग्य अष्टावीशने बंधे एक जांगो, एवं अष्टावीशने बंधे (नव के०) नव जांगा होय. तथा बेंद्रियप्रायोग्य आठ, तेंद्रियप्रायोग्य आठ, चौरिन्द्रिय प्रायोग्य आठ, पंचेंद्रियतिर्थेच प्रायोग्य ठेंतालीशशेने आठ, पंचेंद्रिय मनुष्य प्रायोग्य ठेंतालीशशेने आठ अने देव प्रायोग्य आठ, एवं सर्व मली अगणत्रीश प्रकृतिना बंधस्थानके (बाणउईसथायअडयाला के०) बाणुशेने अडतालीश जांगा होय तथा बेंद्रिय प्रायोग्य आठ, तेंद्रिय प्रायोग्य आठ, चौरिन्द्रिय प्रायोग्य आठ, पंचेंद्रियतिर्थेच प्रायोग्य ठेंतालीशशेने आठ, मनुष्य प्रायोग्य आठ अने देवप्रायोग्य एक, एवं सर्व मलीने त्रीश प्रकृतिने बंधस्थानके (एयालुत्तरढायालसया के०) ठेंतालीशशेने एकतालीश जांगा थाय अने एकत्रीश प्रकृतिने बंधस्थानके देवप्रायोग्य, (इक्किक्किबंधविही के०) एकविध बंधनो एकज जांगो होय. ए सर्व मली आठे बंधस्थानके अइने नामकर्मना (१३७४५) तेर हजार, नवशेने पिस्तालीश जांगा थाय. ए नामकर्मना बंधस्थानकना जांगा कह्या ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ अथ उदयस्थानान्याह ॥ हवे नामकर्मना बार उदयस्थानक कहे ठे.

वीसिगवीसा चउवी, स गाठ एगाहि याय इगतीसा ॥

उदयछाणाणि नवे, नव अछय हुंति नामरुस ॥ ३८ ॥

अर्थ— (वीसिगवीसा के०) प्रथम वीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक, बीहुं एकवीशनुं उदयस्थानक, तेवार पढी (चउवीसगाठएगाहियायइगतीसा के०) चोवीश प्रकृतिना उदयस्थानककथकी मामीने एकेक प्रकृतिथे अधिक करता निरंतरपणे एकत्रीश प्रकृति लगे आठ, (उदयछाणाणिनवे के०) उदयना स्थानक होय, एटले चोवीशनुं, पञ्चीशनुं, षड्वीशनुं, सत्तावीशनुं, अष्टावीशनुं, उगणत्रीशनुं, त्रीशनुं अने एकत्रीशनुं ए आठ थया अने वे पूर्वला मली दश उदयस्थानक थया तथा अगी आरभुं (नव के०) नव प्रकृतिनुं उदयस्थानक अने बारभुं (अछय के०) आ

उ प्रकृतिनुं उदयस्थानक, ए बार उदय स्थानक, (हुंतिनामस्स के०) नामकर्मनां होय ॥ इत्यङ्करार्थः ॥ १८ ॥ हवे एनुं विवरण लखियें हैयें.

अहींआं एकेंडियादिकनी अपेकार्यें अनेक नांगा उपजे, ते देखाडे ठे. तिहां एकेंडियने एकवीश, चोवीश, पञ्चीश, ष्ठीश अने सत्तावीश, ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां १ तैजस, २ कार्मण, ३ अगुरुलघु, ४ स्थिर, ५ अस्थिर, ६ शुभ, ७ अशुभ, ८ वर्ष, ९ गंध, १० रस, ११ स्पर्श, १२ निर्माण ; ए बार प्रकृतिनो उदय ध्रुव ठे. तेमाटें ए नामकर्मनी ध्रुवोदयिका बार प्रकृति तेरमा गुणगणा लगे उदय आश्रीने सर्व जीवने होय, माटें सर्वत्र लेवी अने तिर्यंचदिक, ३ स्थावर, ४ एकेंडियजाति, ५ बादर अथवा सूक्ष्म, पर्याप्त अथवा अपर्याप्त, ७ दौर्भाग्य, ८ अनादेय, ९ यशःकीर्ति, अथवा अयशःकीर्ति, ए नव प्रकृति, पूर्वोक्त बार प्रकृतिमांहे जेजीयें, तेवारें एकवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक, एकेंडिय जीवने पूर्वला नवतुं शरीर मूक्या पठी जिहां लगे आगलें जइ अवतस्यो नथी तेने वचलें जाणवो. एटले नवने अपांतरालें वर्त्तता एकेंडियने होय. अहीं नांगा पांच उपजे, ते कहे ठे. एक सूक्ष्म पर्याप्त साथें एकवीशने उदयें बीजो बादर पर्याप्त साथें एकवीशने उदयें, ए बे नांगा पर्याप्तना थया. तेमज वली अपर्याप्त साथें पण बे नांगा थाय. ए चार नांगा थया. तेमांहेला सूक्ष्म पर्याप्त अने सूक्ष्मअपर्याप्त तथा बादर अपर्याप्त, ए त्रण नांगा तो अयशःकीर्ति साथें होय, पण तिहां यशःकीर्तिनो उदय न होय “ एषुसुदुमतिगेणजसं ” ए वचनथी जाणवुं. अने बादर पर्याप्त साथें यशःकीर्ति सहित एकवीशने उदयें एक नांगो तथा अयशःकीर्ति सहित एकवीशने उदयें बीजो नांगो, ए बे नांगा पूर्वला त्रण नांगा साथें मेलवतां पांच नांगा थाय. अहींआं जे जीव, आगलें पोताने योग्य सर्वे पर्याप्त पूर्ण करजे, तेने योग्यपणें करी लब्धि आश्रयिने नवांतरालें पण पर्याप्तो कहीयें. अहींआं लब्धि पर्याप्तानीज विवक्षा जाणवी.

तेवार पठी ते शरीरस्थाने ते एकवीश प्रकृतिना उदयमांहे एक औदारिक शरीर, बीजुं हुंरसंस्थान, त्रीजुं उपधात, चोथो प्रत्येक अथवा साधारण, ए चार प्रकृति हेपीयें अने एक तिर्यंचनी आनुपूर्वी काढीयें, तेवारें चोवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय. अहींआं पूर्वोक्त पांच नांगाने प्रत्येक तथा साधारण साथें बे गुणा करीयें, तेवारें दश नांगा थाय. तेमांहे एक नांगो वैक्रियनो जेजीयें जे नणी बादर वायुकाय वैक्रिय शरीर करे ठे तिहां पण चोवीशनो उदय होय, पण

एटलुं विशेष जे श्रौदारिक शरीरने स्थानकें वैक्रिय शरीर कहेवुं. तिहां बादर, प्रत्येक, पर्याप्त अने अयशःकीर्त्ति साथें एकज जांगो होय, जे जणी तेउकाय तथा वायुकायने साधारण तथा यशःकीर्त्तिनो उदय न होय, तेथी तेना जांगा न उपजे. एम सर्व मलीने चोवीशने उदयें अगीअर जांगा थाय.

तेवार पढी ते शरीर पर्याप्ताने चोवीशना उदयमांहे पराघातनो उदय जेळीयें, तेवारें पञ्चीश प्रकृतिनो उदय थाय. ए उदय शरीर पर्याप्ति पूरी कखा पढी होय. तिहां बादर पर्याप्त साथें प्रत्येक तथा साधारण गुणतां बे जांगा थाय, ते यशःकीर्त्ति तथा अयशःकीर्त्ति साथें गुणतां चार जांगा थाय. तेमज बादरने स्थानकें सूक्ष्म साथें प्रत्येक अने साधारणना विकल्पें बे जांगा थाय. ए बे जांगे एकली अयशःकीर्त्तिज जाजे. पण यशःकीर्त्ति न जाजे माटें तेना जांगा न लेवा. एवं ठ जांगा थया तथा बादर वायुकायने वैक्रिय करतां शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता थया पढी पराघातनो उदय जेलतां पण पञ्चीश प्रकृतिनुं उदय स्थानक जाजे, तिहां पण पूर्वली परें एकज जांगो होय, एम सर्व मली पञ्चीशने उदयें सात जांगा थाय.

तथा श्वासोद्वासपर्याप्तियें करी पर्याप्ता थया पढी ते पञ्चीशना उदय मांहे वली श्वासोद्वासनो उदय जेळीयें, तेवारें ढवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय. अर्हीअं पण पूर्वली परें जांगा ठ थाय अथवा शरीरपर्याप्ति पर्याप्ताने उद्वासने अ उदयें एटले ज्यां सुधी श्वासोद्वास पर्याप्ति पूर्ण न थाय, त्यां सुधी उद्वासना उदय विना उद्योतनो उदय होय, तेवारें पण ढवीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां बादरने उद्योत सहित ढवीशने उदयें प्रत्येक साथें एक जांगो, तेमज साधारण साथें बीजो जांगो, ते बे जांगा यशःकीर्त्ति साथें लेवा तथा तेहिज बे जांगा अयशःकीर्त्ति साथें लेवा. एम चार जांगा थाय. तथा उद्योतने स्थानकें आतपनो उदय जेलतां पण ढवीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां प्रत्येकने यश तथा अयशें करी बे जांगा थाय, केमके आतप ते पृथ्वीकायमांहेज होय माटें एक प्रत्येकज लीधो अने उद्योत तो वनस्पतिमांहे पण होय माटें तिहां प्रत्येक अने साधारण वेहु लीधा तथा आतप अने उद्योतनो उदय ते बादरनेज होय पण सूक्ष्मने न होय माटें अर्हीअं सूक्ष्मनो उदय न लीधो तथा बादर वायुकायने वैक्रिय करतां श्वासोद्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ता वायुकायने ते पञ्चीश प्रकृति मध्यें उद्वासनो उदय जेलतां ढवीशनो उदयें होय. तिहां जांगो एक जाणवो केमके वायुकाय

ने आतप उद्योत तथा यशःकीर्त्तिनो उदय पण नथी तेमाटें. अहीं बीजा जांगा न पामीयें. एम ठवीश प्रकृतिने उदयें सर्व मली तेर जांगा थाय.

तथा ते श्वासोद्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने श्वासोद्वास सहित ठवीशना उदयमांहे आतप तथा उद्योत, ए बे मांहेला एकेकनो उदय जेलतां सत्तावीशनो उदय थाय. तिहां पूर्वलीपेरें ठवीशना उदयमांहे उद्योत जेलतां चार अने आतप जेलतां वे, एवं ठ जांगा जे पूर्वे कह्या, तेज अहीं पण जाणवा. जे जणी कहुं ठे के, "एगेंदिय उदयेसु, पंचयएकार सत्ततेरसय ॥ ठकं कमसो जंगा, बायाज हुंति सवेवि ॥" एम एकेंदियना उदयस्थानकने विषे एकवीशना उदयें पांच, चोवीशना उदयें अगीअर, पच्चीशना उदयें सात, ठवीशना उदयें तेर अने सत्तावीशना उदयें ठ, ए रीतें पांच उदयस्थानकें अइ सर्व मली बेंतालीश जांगा होय.

हवे बेंदियना एकवीश, ठवीश, अछावीश, आंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए ठ उदयस्थानक होय. तिहां जांगा कहे ठे.

तिहां ३ तिर्थचदिक, ३ बेंदियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त, ७ दौर्जाग्य, ८ अनादेय, ९ यशःकीर्त्ति अथवा अयशःकीर्त्ति, ए नव प्रकृति अइ. एनी साथें वार ध्रुवोदयी प्रकृति मेलवतां एकवीश प्रकृतितुं उदयस्थानक विचालें विग्रह गतियें वर्त्तता नवने अपांतराजगतियें बेंदिय जीवने होय. अहींआं अपर्याप्ता साथें अयशःकीर्त्ति जेतां जांगो एक थाय तथा पर्याप्ता साथें यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति जेतां बे जांगा पर्याप्ताना थाय. एवं सर्व मली त्रण जांगा थाय.

हवे ते बेंदियने स्वस्थाने अवतच्छा पठी ते पूर्वोक्त एकवीश प्रकृतिना उदयस्थानक मांहेथी तिर्थगानुपूर्वी काढीयें अने औदारिकदिक, हुंमसंस्थान, ठेवहुं संघयण, उपघात अने प्रत्येक ए ठ प्रकृति जेलीयें, तेवारें ठवीश प्रकृतितुं उदयस्थानक होय. अहींआं पण पूर्वली पेरें जांगा त्रण थाय.

तेवार पठी शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात तथा अछुजखगति, ए बे प्रकृतिनो उदय वधे, तेवारें अछावीश प्रकृतितुं उदयस्थानक थाय. अहींआं यशःकीर्त्ति तथा अयशःकीर्त्तियें करीने जांगा बे थाय, केमके अछुजखगतियें अपर्याप्ता ना मनो उदय न होय ते माटें तेनो एक जांगो पूर्वाक्त त्रण मांहेथी टले शेष बे जांगा होय.

ते वली श्वासोद्वास पर्याप्तियें पर्याप्ता थया पठी श्वासोद्वासनो उदय वधे ते वारें अंगणत्रीशने उदयें पण तेमज पूर्वोक्तरीतें बे जांगा होय अथवा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने ते अछावीशना उदयमांहे उद्वासना उदय विना उद्योतनो उदय

नेलतां पण उंगणत्रीशनो उदय थाय. तिहां पण जांगा बे होय, एम उंगणत्रीश ने उदयें सर्व मली चार जांगा थाय.

ते उव्वास सहित उंगणत्रीश प्रकृतिमांहे सुस्वर, डुःस्वर मांहेला एकनो उदय नेलतां त्रीशनो उदय थाय. अर्हीआं यशःकीर्त्ति तथा अयशःकीर्त्ति साथें जांगा बे, ते बे जांगा सुस्वरना अने बे डुःस्वरना एवं चार जांगा थाय. अथवा श्वासोव्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने जिहां लगे जाणा पर्याप्ति पूर्ण करी न होय. तिहां लगे वेहु स्वरना उदय विना उद्योतनो उदय नेलतां पण त्रीशनुं उदयस्था नक होय. अर्हीआं यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्तिना विकल्पें बे जांगा थाय. एम सर्व मली त्रीशने उदयें ठ जांगा थाय.

तथा स्वर सहित त्रीशना उदय मांहे उद्योतनो उदय नेलतां एकत्रीशनो उदय जापापर्याप्तियें करी पर्याप्ता जीवने होय. अर्हीआं यश, अयशें तथा स्वर अने डुःस्वरना विकल्पें चार जांगा थाय. एम सर्व मलीने एकवीशने उदयें त्रण, षठीश ने उदयें त्रण, अष्टावीशने उदयें बे, उंगणत्रीशने उदयें चार, त्रीशने उदयें ठ, अने एकत्रीशने उदयें चार, एम ठ उदयस्थानकें अइने बावीश जांगा बेडियने तथा तेज बावीश जांगा तेंडियने तेमज चौरिंडियने पण तेतलाज उदय स्थानकें अइ बावीश जांगा होय. एम विकल्पेंडिय मध्ये सर्व मलीने जांगा ठाशठ होय.

हवे सामान्यें पंचेंडिय तिर्यंच मध्ये ठ उदयस्थानक होय, ते कहे ठे. एक वीश, षठीश, अष्टावीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए ठ उदय स्थानक होय. तिहां १ तिर्यंचदिक, २ पंचेंडियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त, अपर्याप्तमांहेली एक, ७ सौजाग्य, दौर्जाग्य मांहेली एक, ८ आदेय, अनोदयमांहेली एक, ९ यशःकीर्त्ति अयशःकीर्त्ति मांहेली एक, ९ नव तथा बार ध्रुवोदयी ए वं एकवीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक, पंचेंडिय तिर्यंचने पूर्वजवतुं शरीर ठामथा पठी मार्गें विचालें विग्रहगतियें होय. अर्हीआं पर्याप्त नामने उदयें वत्तताने सुजग डुर्जगने विकल्पें जांगा बे, ते वली आदेय अनादेयने विकल्पें जांगा चार, ते चार यशःकीर्त्ति साथें अने चार अयशःकीर्त्ति साथें एवं आठ जांगा थाय अने अपर्याप्त नामने उदयें वत्तताने सौजाग्य, आदेय अने यशःकीर्त्तिनो उदय न होय. तेमाटें विकल्पने अजावें बीजो जांगो पण न उपजे, माटें तिहां एकज जांगो जाणवो, एवं नव जांगा थया. अर्हीआं कोइएक आचार्य कहेठें के सुजग अने आदेयनो साथेंज समकालें उदय होय, तेम डुर्जग अने अनादेयनो पण उद

य सार्धेज होय, तेथी ए बे सार्धे बे जांगा ते यशःकीर्त्ति अने अयशःकीर्त्ति सार्धे गुणतां चार जांगा पर्याप्त सार्धे थाय. अने एक अपर्याप्तनो जांगो, एवं पांच जांगा थाय. एम ए सुजग, दुर्जग तथा आदेय, अनादेयने विषे आगळे पण सर्वत्र म तांतरना जांगानो जेद जाणवो. ते पोतानी मतियें विचारी लेवो.

तथा तेहिज पंचेंद्रिय जीव शरीरस्थने अवतत्त्वा पठी ते एकवीशना उदय मांहेथी तिर्यंचानुपूर्वीनो उदय टालीयें अने औदारिकदिक, ठ संघयण मांहेलुं एक संघयण, ठ संस्थानमांहेलुं एक संस्थान, उपघात अने प्रत्येक, ए ठनो उदय जेलीयें, तेवारें षष्ठीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां पर्याप्त सार्धे ठ संघयण गुणतां ठ जांगा थाय. तेने ठ संस्थानें गुणतां षष्ठीश थाय. ते सौजाग्य अने दौर्जाग्य सार्धे गुणतां बहोत्तेर थाय. ते आदेय अनादेय, सार्धे गुणतां एकशोने चुम्बालीश थाय. ते यश, अयश सार्धे गुणतां बरो ने अठ्याशी जांगा थाय, अने अपर्याप्ताने हुंमसंस्थान, ठेवहुं संघयण, दौर्जाग्य, अनादेय अने अयशःकीर्त्तिने उदयें एकज जांगो होय. केमके अपर्याप्ताने परावर्त्तमान अष्टुज प्रकृतिनोज उदय होय, पण अष्टुज प्रकृतिनो उदय न होय, तेमाटें एकज जांगो थाय. एम बरो ने नेव्याशी जांगा थया तथा मतांतरें षष्ठीशने उदयें एकशो पीस्तालीश जांगा पण होय.

ते शरीर पर्याप्त पर्याप्ता थया पठी एक पराघात, बीजी अष्टुज, अष्टुजस्वगति मांहेली एक, ए बेनो उदय जेलतां अष्टावीशनो उदय थाय. तिहां पर्याप्ताना पूर्वोक्त बरो अठ्याशी जांगाने बे विहायोगतियें गुणतां पांचशे ने बहोत्तेर जांगा थाय. अर्हींथां अपर्याप्तो न होय माटें तेनो एक जांगो न लेवो.

ते अष्टावीशमध्ये श्वासोद्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने एक उद्वासनो उदय वधा रतां उगणत्रीशनो उदय थाय. अर्हींथां पण पूर्वली परें जांगा (५७६) जाण वा, अथवा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने श्वासोद्वास विना एक उद्योतनो उदय अष्टावीशमांहे जेलतां उगणत्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय, तिहां पण (५७६) जांगा थाय, एम उगणत्रीशने उदयें सर्व अने (११५१) जांगा थाय.

तेवार पठी जाषाप्याप्तियें पर्याप्ताने ते उगणत्रीशमांहे सुस्वर अथवा दुःस्वर मांहेली एक जेलतां त्रीशनो उदय थाय. अर्हींथां जे पूर्वे श्वासोद्वासने उदयें (५७६) जांगा कइया तेने सुस्वर दुःस्वरने विकल्पें बमणा करतां (११५१) जांगा थाय, अथवा श्वासोद्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने स्वरना उदय विना उद्योतनो उद

य पूर्वोक्त उगणत्रीशमांहे जेलीयें, तेवारें त्रीशनो उदय थाय. तिहां पण पूर्ववत् (५७६) जांगा थाय. एम सर्व मली त्रीशने उदयें (१७३८) जांगा थाय.

तथा स्वर सहित त्रीशना उदयमांहे उद्योतनो उदय जेलतां एकत्रीशनुं उदय स्थानक थाय. अर्हीआं जे पूर्वे स्वर सहित त्रीशने उदयें जांगा (११५३) कहा ठे. तेटलाज जांगा जाणवा, एम सहज पंचेडिय तिर्यचने ए ठ उदय स्थानकें यइने जांगा (४९०६) थाय.

हवे पंचेडियतिर्यचने वैक्रिय करतां पञ्चीश, सत्तावीश, अष्टावीश, उगणत्रीश, अने त्रीश, ए पांच उदय स्थानक होय. तिहां १ वैक्रियदिक, २ समचतुरस्रसं स्थान, ४ उपघात, ५ तिर्यचगति, ६ त्रसचतुष्क, १० पंचेडियजाति, ११ सौजाग्य अथवा दौर्जाग्य, १२ आदेय अथवा अनदेय, १३ यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति, ए तेर प्रकृति सार्थे बार ध्रुवोदयी मेलवतां पञ्चीशनो उदय थाय. अर्हीआं सौजाग्य दौर्जाग्यना विकल्पें जांगा बे थाय तेने आदेय अनदेय सार्थे गुणतां चार ते वली यश अयशें गुणतां आठ जांगा थाय. अर्हीआं वैक्रिय शरीर करतां संघय ए न होय अने संस्थान तो एकज समचतुरस्र होय माटें तेना जांगा न थाय.

हवे ते वैक्रिय शरीरनी पर्याप्ति पूरी थया पठी, एक पराघात बीजी शुन विहायोग ति, ए बे जेलतां सत्तावीशनो उदय थाय. तिहां पण तेज आठ जांगा पूर्ववत् जाणवा.

ते पठी वैक्रिय शरीरें श्वासोद्वास पर्याप्ति पूरी थया पठी उद्भ्रमनो उदय जेलीयें, तेवारें अष्टावीशनो उदय थाय. अर्हीआं पण तेहिज आठ जांगा जाणवा. अथवा शरीर पर्याप्तिथें पर्याप्ताने उद्वासने अनुदयें उद्योतनो उदय जेलीयें, ते वारें पण अष्टावीशनो उदय थाय. तिहां पण एज आठ जांगा जाणवा. एम सर्व मली अष्टावीशने उदयें शोल जांगा थाय.

ते वैक्रिय जाषा पर्याप्तिथें पर्याप्ताने सुस्वरनो उदय, ते पूर्वोक्त उद्वास सहित अष्टावीशमांहे जेलतां उगणत्रीशनो उदय थाय. तिहां पण जांगा आठ अथवा श्वासोद्वास पर्याप्ताने स्वरने अनुदयने अने उद्योतने उदयें उगणत्रीशनो उदय थाय. तिहां पण जांगा आठ जाणवा. एम उगणत्रीशने उदयें सर्व मली जांगा शोल थाय.

तथा सुस्वर सहित उगणत्रीश मांहे उद्योतनो उदय जेलतां त्रीशनो उदय थाय. तिहां पण जांगा आठ जाणवा. एम सर्व मली वैक्रिय शरीर करतां तिर्यच पंचेडियने उष्यन्न जांगा थाय. एटले सर्व मली पंचेडिय तिर्यचने (४९६३) जांगा थाय अने एकेंडियादिक सर्व तिर्यचगति मांहे (५०७०) जांगा उपजे.

हवे मनुष्यने सामान्ये एकवीश, तवीश, अष्टावीश, उगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय. ए पांचे स्थानके सहज जांगा पंचेंद्रिय तिर्यचनी पेरे जाणवा. पण एटलुं विशेष जे तिर्यचगति अने तिर्यचानुपूर्वीने स्थानके मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वी कहेवी, तथा उगणत्रीश प्रकृतिनो उदय, उद्योतरहित कहेवो तेथी उगणत्रीशने उदये (५३६) जांगा थाय. केम के तिहां उद्योतना जांगा टले तथा त्रीशने उदये पण (११०३) जांगाज थाय पण अधिक न थाय जे जणी वैक्रिय तथा आहारक शरीर करतां मात्र साधुने उद्योतनो उदय होय, पण बीजा मनुष्यने न होय. एम शरवाले सामान्ये मनुष्यने (३६०३) जांगा होय.

तथा मनुष्यने वैक्रिय शरीर करतां पञ्चीश, सत्तावीश, अष्टावीश, उगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां प्रथम १ मनुष्यगति, २ उपघात, ३ पंचेंद्रियजाति, ४ वैक्रियद्विक, ६ समचतुरस्रसंस्थान, १० त्रसचतुष्क, ११ सो जाग्य अथवा दौर्जाग्य, १३ आदेय अथवा अनादेय, १३ यशःकीर्ति अथवा अयशःकीर्ति अने बार ध्रुवोदयी, एवं पञ्चीशानो उदय होय. तिहां पूर्वे जे वैक्रिय तिर्यचना जांगा कहा, तेनी पेरे आठ जांगा जाणवा.

पढी ते वैक्रिय शरीर पर्याप्तिये पर्याप्ताने पराघात अने प्रशस्तगतिने उदये सत्तावीशानो उदय होय, तिहां पण एज आठ जांगा जाणवा.

तेवार पढी तेने श्वासोद्वास पर्याप्ति पूरी थये थके सत्तावीशाना उदयमांहे उड्डासनो उदय जेजतां अष्टावीशने उदये पण आठ जांगा जाणवा अथवा साधुने वैक्रिय करतां शरीर पर्याप्ति पूरी कखा पढी श्वासोद्वासना उदय विना उद्योतनो उदय जेले थके अष्टावीशानो उदय होय. अहींआं एकज जांगो थाय. जे जणी साधुने दौर्जाग्य, अनादेय अने अयशःकीर्तिनो उदय न होय, एम अष्टावीशने उदये सर्व मली नव जांगा थाय.

ते पढी श्वासोद्वास सहित अष्टावीशमध्ये जाणा पर्याप्तिये पर्याप्ता थया पढी सुस्वरनो उदय जेजतां उगणत्रीशानो उदय थाय. अहींआं पण पूर्वली पेरे जांगा आठ जाणवा अथवा साधुने स्वरनो उदय थया विना उद्योतनो उदय जेजतां उगणत्रीशने उदये जांगो एक थाय. सर्व मली उगणत्रीशाने उदये नव जांगा थाय.

तथा सुस्वर सहित उगणत्रीशाना उदयमांहे उद्योतनो उदय जेजतां त्रीशतुं उदयस्थानक थाय. अहींआं पण पूर्ववत् एकज जांगो साधुने जाणवा. एम सर्व संख्याये वैक्रिय मनुष्यना पांच उदयस्थानके अड्डने पांत्रीश जांगा थाय.

तथा संयतने आहारकशरीर करतां पण वैक्रिय मनुष्यने कहां तेहीज पांच उदयस्थानक जाणवां. पण एटलुं विशेष जे वैक्रियदिकने तामें आहारकदिक क हेवुं तथा अहिंयां केवल प्रशस्त पदज होय, एटले संयतने दुर्जग, अनादेय अ ने अयशनो उदय न होय, तेमाटें पञ्चीशने उदयें एकज जांगो जाणवो. तेवार प ढी शरीर पर्याप्ताने पराघात अने प्रशस्तविहायोगति जेले अके सत्तावीशनो उदय थाय. तिहां पण पूर्वली पेरें एकज जांगो जाणवो ते पढी प्राणपान पर्याप्ताने उ ङ्वासनो उदय जेले अके अष्टावीशने उदयें पण एकज जांगो होय अथवा शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने उङ्वासने अनुदयें अने उद्योतने उदयें पण अष्टावीशनो उ दय थाय. अहिं पण एक जांगो होय. एम अष्टावीशने उदयें शरवाजे वे जांगा थाय. ते पढी जाषा पर्याप्तियें पर्याप्ताने उङ्वास सहित अष्टावीशना उदय मांहे सुस्वरनो उदय जेले, उंगणत्रीशजुं उदयस्थानक थाय. तिहां पण जांगो एक जा णवो अथवा श्वासोङ्वास पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वरने अनुदयें अने उद्योतने उद यें पण उंगणत्रीशजुं उदयस्थानक थाय. अहींयां पण एकज जांगो जाणवो. एम उंगणत्रीशने उदयें सर्व मली वे जांगा थाय.

ते पढी जाषा पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वर सहित उंगणत्रीशना उदयमांहे उद्यो तनो उदय जेले, त्रीशनो उदय थाय. तिहां पण एकज जांगो जाणवो. एम सर्व मलीने आहारक शरीर करतां संयतने पांच उदयस्थानकें अङ्गने सात जांगा उपजे.

हवे केवली मनुष्यने वीश, एकवीश, ढवीश, सत्तावीश, अष्टावीश, उंगणत्रीश, त्रीश, एकत्रीश, नव अने आठ, ए दश उदयस्थानक होय. तिहां १ मनुष्यगति, २ पंचेंद्रियजाति, ३ त्रस, ४ वादर, ५ पर्याप्त, ६ सुजग, ७ आदेय, ८ यशःकी र्ति, तथा वार ध्रुवोदयी, एवं वीश प्रकृतिनो उदय सामान्य केवलीने केवल स मुद्रघात करता वचला त्रण समय पर्यंत कार्मण काययोगें वर्त्तताने होय. तिहां जांगो एक जाणवो.

तथा तीर्थीकर केवलीने तीर्थीकरनाम सहित एकवीशनो उदय, तीर्थीकरने केवल समुद्रघात करता वचला त्रण समय जगें होय. तिहां पण जांगो एक जाणवो.

तथा पूर्वोक्त वीशमांहे औदारिकदिक ढ संस्थान मांहेलुं एक संस्थान, प्रथम संघयण, उपघात अने प्रत्येक, ए ढ प्रकृति जेलतां ढवीशनो उदय सामान्य केव लीने समुद्रघात करता बीजे, ढठे अने सातमे, ए त्रण समय सुधी औदारिक मि श्रयोगें वर्त्ततां होय. अहींयां ढ संस्थानें ढ जांगा थाय, परंतु ते सामान्य मनुष्य

ना उदयस्थानकमध्ये गणाणा ठे, तेमाटें अर्हीच्यां गल्या नथी तथा ते ढवीश मांहे तीर्थकरनामकर्म जेलतां सत्तावीशजुं उदयस्थानक तीर्थकरनो समुद्घात करतां बीजे, ठेठे अने सातमे समयें होय. तिहां जांगो एकज जाणवो: अर्हीच्यां संस्थान एकज समचतुरस्र होय, तेशी जांगाना विकल्प न थाय.

तथा ते ढवीश मध्ये १ पराघात, २ उद्वास, ३ शुज अथवा अशुजखगति, ४ सुस्वर अथवा दुःस्वर मांहेली एक, ए चार जेजे त्रीशनो उदय, ए सामान्य केवली ने औदारिक काययोगें वर्त्तताने होय. अर्हीच्यां ठ संस्थानने बे विहायोगतियें गणतां बार तेने सुस्वरें, दुःस्वरें गणतां चोवीश जांगा थाय परंतु ते सामान्य मनुष्यना उदयस्थानकमांहे गणाणा ठे माटें अर्हीच्यां षष्ठकू गल्या नथी.

ए त्रीशने जिननाम सहित करतां एकत्रीशजुं उदयस्थानक थाय, ते तीर्थकर सयोगी केवलीने औदारिककाययोगें वर्त्तताने जाणवो. अर्हीच्यां समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति अने सुस्वरनोज उदय होय तेमाटें एकज जांगो होय. ते एकत्रीशमांहेथी औदारिक काययोग रुंधाय तेवारें वचनयोगनो पण रोध थाय माटें वचन योग रुंधे स्वरना उदय विना त्रीशनो उदय थाय. अर्हीच्यां पण एक जांगो तीर्थकरने जाणवो. ते मांहेथी वली उद्वास रुंधे थके लंगणत्रीशनो उदय थाय. तिहां पण जांगो एक, तीर्थकरनेज जाणवो.

हवे सामान्य केवलीने पूर्वोक्त त्रीशमांथी वचनयोग रुंधे थके, लंगणत्रीशनो उदय, तिहां ठ संस्थान अने बे विहायोगतिना जांगा बार थाय. ते सामान्य मनुष्यमां गणाणा ठे माटें अर्हिं षष्ठकू न गणवा. तेमध्येथी वली उद्वास रुंधे अछा वीशनो उदय थाय. अर्हीच्यां पण ठ संस्थान अने बे विहायोगतिना जांगा बार थाय तेपण सामान्य मनुष्यमां गल्या ठे माटें षष्ठकू न गणवा.

तथा १ मनुष्यगति, २ पंचेंद्रियजाति, ३ त्रस, ४ बादर, ५ पर्याप्त, ६ सुजग, ७ आदेय, ८ यशःकीर्ति, अने नवसुं तीर्थकरनामकर्म, ए नवनो उदय तीर्थकर अयोगी केवलीने चरमसमयें वर्त्तताने होय. तिहां जांगो एक जाणवो तथा ते नवमांहेथी एक तीर्थकरनामकर्म विना शेष आठ प्रकृतिनो उदय, सामान्य अयोगी केवलीने चरम समयवर्त्तताने होय. तिहां पण जांगो एकज जाणवो. एम केवलीना दश उदयस्थानकना मली जांगा बाशठ थाय. तेमध्ये ३०-२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३० ए आठ स्थानकनो प्रत्येकें एकेक जांगो लेवो. तेमां बे सामान्य केवलीना उदयस्थानकना बे जांगा अने ठ तीर्थकरना उदय स्थानकना

ठ नांगा लेवा. एम आठ नांगा, अहीं गणत्रीमां लेवा अने शेष चोपन नांगा तो सामान्य मनुष्यना नांगामांहेज अंतर्भूत गणाणा ठे तेमाटे ते पृथक् ग्रहण न करवा. एम सर्व संख्यायें सर्व मनुष्यना नांगा (३६३५) थाय.

हवे देवताने एकवीश, पञ्चीश, सत्तावीश, अष्टावीश, उंगणत्रीश, अने त्रीश, ए ठ उदयस्थानक होय. तिहां १ देवदिक, ३ पंचेंद्रियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त, ७ सुजग, दुर्जगमांहेली एक, ८ आदेय, अनादेय मांहेली एक, ए यश, अयशमां हेली एक अने बार ध्रुवोदधी, ए एकवीशनुं उदयस्थानक जवनी अपांतरालगतियें वर्त्तताने होय. तिहां सुजग, दुर्जग आदेय, अनादेय अने यश, अयश साथें नांगा आठ होय, अहिं दौर्जाग्य अनादेय अने अयशनो उदय, ते पिशाचादिकने जाणवो.

पठी तेहीज शरीरस्थ थया पठी ते एकवीश प्रकृतिमांहे वैक्रियदिक, उपघात, प्रत्येक, समचतुरस्रसंस्थान, ए पांच प्रकृति जेलीयें अने वैक्रियानुपूर्वी काढीयें, तेवारें पञ्चीशनुं उदयस्थानक थाय. तिहां पण तेमज आठ नांगा जाणवा. ते पठी शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात तथा प्रशस्तविहायोगति, ए बे प्रकृति जेले थके सत्तावीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक थाय. तिहां पण आठ नांगा उपजे. अहिं देवताने अष्टजविहायोगतिनो उदय न होय, तेथी नांगा वधे नहिं.

ते पठी प्राणपान पर्याप्ताने उद्धासनो उदय जेले थके अष्टावीशनुं उदय स्थानक थाय. तिहां पण नांगा आठ पूर्ववत् जाणवा. अथवा शरीर पर्याप्ताने उद्धासने अनुदयें अने उद्योतने उदयें पण अष्टावीशनो उदय थाय. तिहां पण नांगा आठ जाणवा. एम अष्टावीशना उदयें सर्व मली शोल नांगा होय.

ते पठी जाषाप्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वरनो उदय जेले थके उंगणत्रीशनो उदय थाय, तिहां पण नांगा आठ थाय, देवताने दुःस्वरनो उदय न होय. अथवा श्वासोद्धास पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वरने अनुदयें अने उद्योतने उदयें पण उंगणत्रीश नो उदय होय. तिहां पण नांगा आठ जाणवा. जे जणी उत्तरवैक्रिय करतां देवता ने पण उद्योतनो उदय पामीयें सर्व मली उंगणत्रीश उदयें शोल नांगा उपजे.

ते पठी जाषा पर्याप्तियें पर्याप्ताने सुस्वर सहित उंगणत्रीशमांहे उद्योतनो उदय जेले थके त्रीशनुं उदयस्थानक होय. अहीं पण नांगा आठ पूर्ववत् जाणवा. एम देवताने ठ उदय स्थानकें थइने सर्व मली नांगा चोशठ उपजे.

हवे नारकीने एकवीश, पञ्चीश, सत्तावीश, अष्टावीश अने उंगणत्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां १ नरकदिक, ३ पंचेंद्रियजाति, ४ त्रस, ५ बादर, ६ पर्याप्त,

७ दुर्नग, ८ अनादेय, ९ अयशःकीर्ति, तथा बार ध्रुवोदयी मलीने एकवीशनोज उदय, विग्रहगतियें वर्त्ततां होय. अहींआं जांगो एक होय, जे जणी नारकीने प रावर्त्तमान प्रकृति मांदेली अद्युज प्रकृतिनोज उदय होय. तेथी विकल्प न होय.

पढी ते एकवीशमांदे १ वैक्रियदिक, ३ हुंमसंस्थान, ४ उपघात, ५ प्रत्येक, ए पां चनो उदय जेलीयें अने नरकातुपूर्वीनो उदय टालीयें, तेवारें पञ्चोश प्रकृतिनो उदय, नरकमांदे अवतत्या पढी शरीरस्थाने जाणवो. तिहां पण जांगो एक थाय. ते पढी शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ताने पराघात तथा अद्युजखगति, ए बेनो उदय जेलीयें, तेवारें सत्तावीशना उदयें पण जांगो एक जाणवो. ते पढी प्राणपान पर्याप्तियें पर्याप्ताने श्वासोच्छ्वासनो उदय जेले अष्टावीशना उदयें पण जांगो एकज थाय. ते पढी जाषापार्याप्तियें पर्याप्ताने डःस्वरनो उदय जेले अके, उगणत्रीशना उदयें पण जांगो एक होय. एम पांचे उदय स्थानकें अइने नारकीने जांगा पांच उपजे. एम ए चारे गतिना उदयस्थानकना शरवाले जांगा (७७९१) थाय ॥ इति उदय जांगा संपूर्ण १० हवे कया उदयस्थानकें केटला जांगा शरवाले होय, ते कहे ठे.

इक बयालि क्कारस, तिचीसा ठस्मयाणि तिचीसा ॥

बारस सत्तरससया, एहिगाणि बि पंच सीईहिं ॥१९॥

अर्थ-वीश प्रकृतिने उदय स्थानकें (इक के०) एक जांगो केवलीने होय. तथा एकवीशने उदयस्थानकें एकेंडियना पांच, विकलेंडियना नव, पंचेंडिय तिर्यचना नव, मनुष्यना नव, केवलीनो एक, देवताना आठ, तथा नारकीनो एक, एवं (बयाल के०) बेतालीश जांगा होय. तथा चोवीशने उदयस्थानकें (इ क्कारस के०) अगीअार जांगा एकेंडियना होय. तथा पञ्चोशने उदयें एकेंडियना सात, वैक्रियतिर्यचना आठ, वैक्रियमनुष्यना आठ, आहारकनो एक, देवताना आठ, अने नारकीनो एक, एवं (तिचीसा के०) तेत्रीश जांगा होय, तथा ठवी शना उदयें एकेंडियना तेर, विकलेंडियना नव, पंचेंडिय तिर्यचना बशें ने नेव्या शी, अने सहेज मनुष्यना बशेंने नेव्याशी, एवं (ठस्मयाणि के०) ठशें जांगा होय. तथा सत्तावीशने उदयें एकेंडियना ठ, वैक्रियतिर्यचना आठ, वैक्रियमनुष्यना आठ, आहारकनो एक, केवलीनो एक, देवताना आठ अने नारकीनो एक, एवं (तिचीसा के०) तेत्रीश जांगा होय. तेवार पढी (बारससत्तरससया के०) बारस एटले बारशें अने सत्तरस एटले सत्तरशें ते (बि के०) बे अने (पंचसी

इहिं के०) पञ्चाशीर्ये करी (अद्दिगाणि के०) अधिकानि एटले अधिक, जाण वा एटले अनुक्रमे बारशे उपर बे अधिक अने सत्तरशे उपर पञ्चाशी अधिक, एम अनुक्रमे अष्टावीशने उदये बारशे ने बे तथा अंगणत्रीशने उदये सत्तरशे ने पच्या शी जांगा जाणवा, तेज कही देखाडे ठे. तिहां अष्टावीशने उदये विकलेंडियना ठ, पंचेंडियतिर्यचना पांचशे ने बहोत्तेर, मनुष्यना पांचशेने बहोत्तेर, वैक्रियति र्यचना शोल, वैक्रिय मनुष्यना नव, आहारकना बे, देवताना शोल, अने नार कीनो एक, एवं बारशे ने बे जांगा थाय. तथा अंगणत्रीशने उदये विकलेंडियना बार, पंचेंडियतिर्यचना अगीआरशे ने बावन, मनुष्यना पांचशे बहोत्तेर, वैक्रिय तिर्चचना शोल, वैक्रिय मनुष्यना नव, आहारकना बे, केवलीनो एक, देवताना शोल अने नारकीनो एक, एवं सत्तरशे ने पञ्चाशी जांगा होय ॥ इति ॥ १९ ॥

अणुएत्ती सिक्कारस, सयाणि हिय सतर पंच सचीहिं ॥

इक्किक्क गंच वीसा, दद्दुदयंतेसु उदयविही ॥ ३० ॥

अर्थ-तथा (अणुएत्तीसिक्कारसयाणि के०) अंगणत्रीशशे अने अगीआरशे ए बे उपर अनुक्रमे (सतर के०) सतर अने (पंचसचीहिं के०) पांचश, (अहिय के०) अधिक करीये, तेवारें त्रीशने उदये बे हजार, नवशे ने सतर जांगा थाय अने ए कत्रीशने उदये अगीआरशे ने पांचश जांगा थाय, तेकही देखाडे ठे. एटले त्रीशने उदये विकलेंडियना अठार, तिर्च पंचेंडियना सत्तरशेने अष्टावीश, मनुष्यना अगी आरशे बावन, वैक्रियतिर्यचना अठ, वैक्रिय मनुष्यनो एक, आहारकनो एक, के वलीनो एक अने देवताना अठ, एवं सर्व मली (१९१७) जांगा थाय. तथा एक त्रीशने उदये विकलेंडियना बार, पंचेंडिय तिर्चचना अगीआरशे ने बावन अने केव लीनो एक, एवं (११६५) जांगा थाय. तथा (इक्किक्कगंच के०) उदये पण अंगणत्रीश अने आठना उदयने विषे केवलीने होय एटले नवने उदये एक वैक्रिय करतां देवता उदये एक जांगो होय. (वीसावद्दुदयंतेसु के०) ए वीशना उदये न जांगा उपजे. आठना उदयस्थानक पर्यंत बार उदयस्थानक तेने विषे (उदये उद्योतनो उदय यना प्रकार जाणवा. सर्व उदयना जांगानी संख्या (७७९१) जा

॥ अथ सत्तास्थानान्याह ॥ हवे नामकर्मनां सत्तानां स्थानक वत जाणवा.

ति इनउई गुण नउई, अडसी उलसी असीइ गुणसीई त्रीश, ए पांच अठय षण्णत्तरि, नव अठय नाम संताणि ॥ ३१ ॥ र, ६ पर्याप्त,

अर्थ—(तिडनउई के०) एक त्र्याणु प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, बीजुं बाणु प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (गुणनउई के०) त्रीजुं नेव्याशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (अडसी के०) चोथुं अछ्याशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (बलसी के०) पांचमुं अघाशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक. (असीइ के०) षडुं एंशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (गुणसीई के०) सातमुं अगोण्यांशी प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (अठ्यठप्यत्र चरि के०) आठमुं अछोत्तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, नवमुं बहोत्तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, दशमुं पञ्चोत्तेर प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, (नव के०) अगीआरमुं नव प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, अने (अठ्य के०) बारमुं आठ प्रकृतिनुं सत्ता स्थानक, एवं बार, (नामसंताणि के०) नामकर्मनां सत्तास्थानक होय ॥ इत्यङ्कार्थः ॥ ३१ ॥

हवे ए बार सत्ता स्थानकनुं विवरण लखीयेँ ठैयेँ. तिहां नामकर्मनी सर्व प्रकृतिना समुदायनी सत्ता होय, तेवारें त्र्याणुनुं सत्तास्थानक, तेमांहे जिननामनी सत्ता जेवारें न होय तो बाणुनुं सत्तास्थानक तथा त्र्याणुमांहेषी १ आहारकशरीर, २ आहारक अंगोपांग, ३ आहारकबंधन, ४ आहारकसंघातन, ए चारनी सत्ता न होय, तेवारें नेव्याशीनुं सत्तास्थानक, तेमध्ये वली जिननामनी सत्ता न होय तेवारें अछ्याशीनुं सत्तास्थानक तेमांहेषी देवदिक अथवा नरकदिक उवेले थके अघाशीनुं सत्तास्थानक तथा अठ्याशीमांहेषी तेउ अने वायु मांहे वैक्रियाष्टक उवेली एंशीनी सत्तावंत थको पंचेंद्रियपणुं पामीने देवगतियोग्य बांधे तो देवदिक अने वैक्रियचतुष्कने वंधें अघाशीनुं सत्तास्थानक होय तथा ते पंचेंद्रियमांहे नरकगति प्रायोग्य बांधतो नरकदिक अने वैक्रिय चतुष्कने बंधें पण अघाशीनुं सत्तास्थानक होय. ते पठी नरकदिक तथा वैक्रियचतुष्कने उवेले थके अघाशीनुं सत्ता होय अथवा देवदिक अने वैक्रियचतुष्कने उवेले पण एंशीनी सात. वैक्रियतिर्येचमनुष्यदिक उवेले थके अछोत्तेरनुं सत्तास्थानक होय, ए आठ, अने नारकीनक रूपक टालीने अनेरा जीवने होय तेमां अजव्यने तथा शना उदयेँ एकेंद्रित्वने ७८-८०-८६-८८-ए चारज सत्तास्थानक होय. शी, अने सहैउ ठ सत्तानां स्थानक होय, ते कहे ठे. त्र्याणु मध्येषी नरकदिक, होय. तथा एकेंद्रिय, बेंद्रिय, तेंद्रिय, चौरिंद्रिय, ए चार जाति तथा स्थावर, आ आठ, आठ सूक्ष्म अने साधारण ए तेर प्रकृतिने ह्येँ एंशीनी सत्ता तथा बाणु (तिचीसा अने ह्येँ उगणांशीनी सत्ता तथा नेव्याशी मांहेषी तेरने ह्येँ बहोत्तेर बारस एटप्या अछाशी मांहेषी तेरने ह्येँ पञ्चोत्तेरनी सत्ता होय. तथा १ मनुष्य

गति, ३ पंचेदियजाति, ३ त्रस, ४ बादर, ५ पर्याप्त, ६ सुजग, ७ आदेय, ८ यशः
कीर्त्ति, ९ तीर्थकरनामकर्म, १० नव प्रकृतिनुं सत्तास्थानक तथा तेमध्येथी तीर्थकरं
नामकर्म टालीयें, तेवारें बीजुं आठ प्रकृतिनुं सत्तास्थानक, ११ वे सत्तानां स्थानक
अथोगी केवलीने ठेहजे समयें होय. ए नामकर्मनां सत्तानां स्थानक कहां इत्यर्थः ३ ?
हवे संवेधनो अर्थे कहे ठे.

अद्य बारस बारस, बंधोदय संत पयडिठाणाणि ॥

उहेणाऽएसेणय, जड जहा संजवं विजजे ॥ ३५ ॥

अर्थ-नामकर्मना (बंध के०) बंधस्थानक, (अद्य के०) आठ अने (उद
य के०) उदयस्थानक, (बारस के०) बार तथा (संत के०) सत्तानां स्थान
क, (बारस के०) बार ठे. (पयडिठाणाणि के०) ए प्रकृतिनां स्थानक ते (उ
हेणाऽएसेणय के०) उघादेशेन एटले सामान्यादेशें जाणवा. (जडजहासंजवं
के०) जिहां जेटला संजवे, तिहां तेटला (विजजे के०) विजजेत् एटले वहेंचि
यें, अमुक बंधस्थानकें एटलां उदयस्थानक तथा एटलां सत्तानां स्थानक, एवो
संवेध, ते सामान्यादेश कहीयें तथा अमुक गुणठाणे अथवा अमुकजीवस्थानकें
एटलां बंधस्थानक वली ते अमुक बंधस्थानकें एटलां उदय स्थानक, एटलां सत्ता
नां स्थानक एम परस्परें संवेधनुं विचारवुं तेने विशेषादेश कहीयें ॥ इति ॥ ३५ ॥
॥ आदौ सामान्येन संवेधमाह ॥ तिहां प्रथम सामान्यपणे बंध, उदय अने
सत्तानो संवेध कहे ठे.

नव पण गोदयसंता, तेवीसे पणवीस ढवीसे ॥

अद्य चत्तरढवीसे, नव सत्ति गुण तीस तीसम्मि ॥ ३६ ॥

अर्थ-(तेवीसेपणवीसढवीसे के०) त्रेवीशने, तथा पणवीशने अने ढवीशने
ए त्रण बंधस्थानकें प्रत्येकें प्रत्येकें (नवपणगोदयसंता के०) नव नव उदयनां
स्थानक होय. अने पांच पांच सत्तानां स्थानक होय. ते केम? जे नणी त्रेवीश
नो बंध अपर्याप्त एकेंदिय प्रायोग्यज होय, तेना बांधनारा एकेंदिय तथा विक
लेदिय अने पंचेदिय तिर्यच तथा मनुष्य होय. एउने ११-१४-१५-१६-१७-
१८-१९-२०-२१. ए नव उदयनां स्थानक होय. तेमांहेजा जावे ते उदय
स्थानकें वर्त्तता अपर्याप्ता एकेंदियप्रायोग्य त्रेवीश प्रकृतिनो बंध करे, तिहां एकवीशनो

उदय तो विग्रहगतिये वृत्ता एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रिय तिर्यच तथा मनुष्य ने होय तिहां सत्तानां स्थानक बाणु, अछ्याशी, ठ्याशी, एंशी, अने अछोत्तेर, ए पांच सर्व जीवने होय पण मनुष्यने अछोत्तेरनी सत्ता न होय. जे जणी अछोत्तेरनी सत्ता मनुष्यदिक उवेले थाय ते उवेळुं नथी माटे मनुष्यने चार सत्तानां स्थानक होय.

अने चोवीशिनो उदय एकेंद्रिय पर्याप्तापर्याप्ताने होय. तिहां पण पूर्वे कहां तेज पांच सत्तानां स्थानक होय पण एटलुं विशेष जे वायुकायने वैक्रिय करतां चोवीशने उदये वृत्ताने एंशीनुं तथा अछोत्तेरनुं ए वे सत्तास्थानक न होय. जे माटे तेने वैक्रियपट्टक अने मनुष्यदिक निश्चये तेज केमके वैक्रियतो साहात् अनुभवे ठे, तेमाटे ते उवेळतो नथी अने ते उवेळ्या विना नरकदिक तथा देवदिक पण न उवेले समकालेंज वैक्रियपट्टक उवेले, एवा निश्चय माटे. अने वैक्रिय पट्टक उवेळ्या पढी ज मनुष्य दिक उवेले. परंतु तेथी पूर्वे न उवेले, तेमाटे एंशीनुं तथा अछोत्तेरनुं ए वे सत्तानां स्थानक वर्जिने बाकी बाणु अछ्याशी, तथा ठ्याशी, ए त्रण सत्तास्थानक होय.

तथा पञ्चीशिनो उदय पर्याप्ता एकेंद्रिय, अने वैक्रियतिर्यच तथा वैक्रिय मनुष्यने होय. तिहां तेउ अने अवैक्रिय वायुने तो जे पांच सत्तास्थानक कहां, तेज पांच सत्तास्थानक कहेवां जे जणी अछोत्तेरनी सत्ता तेनेज ठे, बीजाने नथी बीजा सर्व पर्याप्ता जीव अवश्य मनुष्यदिक बांधे, तथा बीजा एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रिय, तिर्यच, जे तेउ अने वायु माहेथी आवी अवतत्या होय, ते ज्यां लगे मनुष्यदिक बांधे नहीं, त्यां लगे अपर्याप्तावस्थायें तेने अछोत्तेरनी सत्ता होय तेथी तेने पांच सत्तास्थानक होय अने बीजा पर्याप्ताने अछोत्तेरनी सत्ता विना बाकी चार सत्तास्थानक वैक्रिय तिर्यच मनुष्यने त्रेवीशने बंधें अने पञ्चीशने उदये होय.

तथा षष्ठीशिनो उदय, पर्याप्ता एकेंद्रिय तथा पर्याप्तापर्याप्ता विकलेंद्रिय अने तिर्यच तथा मनुष्यने होय. तिहां पण पूर्वलां पांच सत्तास्थानक होय. तेमध्ये अछोत्तेरनुं सत्तास्थानक तेउ तथा अवैक्रिय वायुनी अपेक्षायें लेउं अने बाकीनां चार सत्तास्थानक बीजा जीवो आशी त्रेवीशने बंधें अने षष्ठीशने उदये होय.

सत्तावीशिनो उदय तेउ वायु वर्जिने पर्याप्ता बादर एकेंद्रिय तथा वैक्रिय तिर्यच मनुष्यने होय. तिहां अछोत्तेर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक जाणवां जे जणी तेउ तथा वायुने आतप अने उद्योतनो उदय नथी तेथी तेने सत्तावीशनुं उदय स्थान

क पण न होय अने तेउ तथा वायु विना तो अतोतेरनी सत्ता बीजे क्यांही न पामीये तेथी त्रेवीशने बंधे अने सत्तावीशने उदये चार सत्तानां स्थानक जाणवां.

अत्रवीश, उगणत्रीश, अने त्रीश ए त्रण उदयस्थानक पर्यासा विकर्षेडिय तथा पंचेडिय तिर्येच मनुष्यने होय. तथा एकत्रीशनो उदय पर्यासा विकर्षेडिय तथा ति र्येच पंचेडिय मिष्याहृष्टिने होय. अर्हीआं मनुष्यादिकनी सत्ता होय माटे एक अ तोतेरनुं सत्तास्थानक टाली शेष चार सत्तास्थानक होय. एम त्रेवीशना बंधक ने यथायोग्य नव उदयस्थानके अने चालीश सत्तास्थानक होय.

पञ्चीश तथा ढवीशना बंधकने पण एमज नव नव उदय स्थानके सत्तानो संवेध जाणवो. एटले चालीश जांगा सामान्यादेशे होय. अने विशेषादेशे पण पर्यासि एके ड्य प्रायोग्य पञ्चीशना बंधक देवताने ३१-३५-३४-३८-३९-३० ए ठ उदय स्थानकने विषे बाणु तथा अछ्याशी, ए बे सत्तानां स्थानक प्रत्येके होय अने अपर्या सा विकर्षेडिय तथा अपर्यासा पंचेडिय तिर्येच अने मनुष्य प्रायोग्य पञ्चीश प्रकृ तिनो तो देवताने बंध नथी केमके अपर्यासामांहे देवताने उपजबुं नथी तेमाटे. एटले ए त्रेवीश, पञ्चीश तथा ढवीशना बंधकना सर्व नव उदये अने एकशोने वीश जांगा थया. ए सर्व मिष्यात्वीना जाणवा.

तथा (अचचउरठवीसे के०) अत्रवीशना बंधकने एकवीश, पञ्चीश, ढवीश, सत्तावीश, अत्रवीश, उगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए आठ उदय स्थानक हो य अने बाणुं, अछ्याशी, उद्याशी, तथा एंशी, ए चार सत्तास्थानक एकेका उदये होय, ए अत्रवीशनो बंध, बे जेदे ठे. एक देवगतिप्रायोग्य अने बीजो नरकगति प्रायोग्य, तिहां देवगति प्रायोग्य अत्रवीशने बंधे आठ उदयस्थानक अनेक जीव नी अपेहाये पामीये अने नरकगति प्रायोग्य अत्रवीशने बंधे त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उदयस्थानक पामीये. तिहां देवगति प्रायोग्य अत्रवीशने बंधे एकवीशनो उदय तो द्वायिक सम्यकृष्टिने अथवा हायोपशमिक सम्यकृष्टिने पण पंचेडिय ति र्येच तथा मनुष्यने जवापांतरालगतिये एटले बे गतिनी वचाले वर्त्तताने होय. पण मिष्याहृष्टिने न होय, केमके तिहां मिष्याहृष्टि देवगति प्रायोग्य अत्रवीश न बांधे. केमके मिष्याहृष्टि तो सर्व पर्यासिये पर्यासोज देवगति प्रायोग्य अत्रवीश बांधे. अ र्हीआं कोइ कदेशे के जो एम कहो ठो, तो वैक्रिय करतां तिर्येच अने मनुष्य ३५-३४-३८-३९-ने उदये वर्त्तता मिष्याहृष्टि देवगति प्रायोग्य अत्रवीश बांधे ठे ते केम घटे ? तत्रोत्तरं. तेणे जवने आदे पर्यासि पूरा करी ठे. पठी वैक्रिय शरीर क

रतां औदारिक शरीरनी निवृत्ति पर्याप्तपणै उदयशी निवर्त्ते तथापि तेने पर्याप्त ज कहीयें तेमाटे पर्याप्तावस्थायें तो तिहां मिथ्यात्वने पण अछावीशनो बंधवि रोध नथी. ए देवगति प्रायोग्य अछावीशना बंधक एकवीशने उदयें वर्त्तताने बाणुं अने अछ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय. पण अहींआं जिननामनी सत्ता न होय; जो कदापि जिननामनी सत्ता होय, तो तेनो बंध पण होवो जोइयें. तेवारें तो उंगणत्रीशनो बंधक थाय, तेमाटे जिननामनी सत्ता अहीं न होय.

तथा पञ्चीशनो उदय, आहारक साधु तथा वैक्रिय तिर्यंच अने मनुष्य सम्यक्दृष्टि ने होय तथा मिथ्यादृष्टिने पण होय. तिहां पण सामान्यें एज बे सत्ता स्थान क होय पण एटलुं विशेष जे आहारकना धणने आहारक चतुष्क अवश्य होय, तेथी तेने एकज बाणुं सत्तास्थानक होय. शेष बीजा जीवोने बे सत्ता स्थानक होय. ए अछावीशने बंधें पञ्चीशने उदयें बे सत्तास्थानक जाणवां.

तथा षष्ठीशनो उदय ह्याधिक अने ह्यायोपशमिक सम्यक्दृष्टि शरीरस्थ पंचेंडिय तिर्यंच मनुष्यने अछावीश, देवगति प्रायोग्य बांधतां बाणु, अने अठ्याशी ए बे सत्तानां स्थानक होय. तथा सत्तावीशना उदयें आहारक साधु तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्य सम्यक्दृष्टिने तथा मिथ्यादृष्टिने तेहीज बे सत्तानां स्थानक जाणवां. तेमज अछावीश अंगणत्रीशनो उदय पण अनुक्रमें शरीर पर्याप्तियें करी प र्याप्ताने अछावीशनो उदय होय, अने श्वासोद्वास पर्याप्तियें करी पर्याप्ताने अंगण त्रीशनो उदय होय, ते ह्याधिक अथवा वेदक सम्यक्दृष्टिने तथा आहारक साधु अने वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने देवगति प्रायोग्य अछावीशने बंधें होय. तिहां बाणुं अने अछ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा त्रीशनो उदय पंचेंडिय तिर्यंच मनुष्य सम्यक्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि तथा आहारक करतां साधुने तथा वैक्रिय करतां साधुने होय. तिहां सामान्यें बाणुं नेव्याशी, अछ्याशी, षष्ठाशी, ए चार सत्तास्थानक होय. अने विशेषादेशें पंचेंडि य तिर्यंच मनुष्य मिथ्यादृष्टिने नरकगति प्रायोग्य अछावीश बांधतां त्रीशने उद यें बाणुं नेव्याशी, अछ्याशी अने षष्ठाशी, ए चार सत्ता स्थानक होय. तिहां बाणु अने अछ्याशी, ए बे पूर्वली पेरें जाववां अने नेव्याशीनी सत्तानां विधि कहे ठे. कोइएक जीव, नरकायु बांध्या पठी सम्यक्त्व लहीने तीर्थकर नाम कर्म बांधुं, ते जीव, नरकें जावाने सन्मुख थको सम्यक्त्व वमे. तिहां मिथ्यात्वे ग्या पठी तीर्थकरनो बंध मटे, अने तीर्थकरनी सत्ता होय ते तीर्थकरनी सत्ता

ठतां आहारकनी सत्ता मिथ्यात्वे न होय “नोनयसंतोमिहो” ए वचनयी तिहां नेव्याशीनी सत्ता होय. हवे बघाशीनी सत्ता केम होय? ते कहे ठे. कोइ एक सर्व पर्याप्तिये पर्याप्तो एवो पंचेंद्रिय तिर्यंच अथवा मनुष्य ते तीर्थकरनामकर्म, आहारकचतुष्क, वैक्रियचतुष्क. देवदिक, नरकदिक, ए तेर प्रकृति विना एंशीनी सत्तायें वर्त्ततो जीव, संक्लिष्टपरिणामे नरक गति प्रायोग्य अछावीश बांधतो वैक्रिय चतुष्क अने नरकदिक, ए ठ प्रकृतिनो अवश्य बंध करे; तेवारें तेने बघाशीनुं सत्तास्थानक थाय, तथा तेहीज विच्छेद परिणामें वर्त्ततो देवगति प्रायोग्य अछा वीश बांधतो वैक्रियचतुष्क अने देवदिकनो अवश्य बंध करे, तेवारें पण बघाशी नुं सत्तास्थानक थाय. एम अछावीशने बंधें त्रीशने उदर्यें चार सत्तास्थानक होय.

तथा एकत्रीशने उदर्यें ७१-७७-७६-ए त्रण सत्तानां स्थानक होय. अर्द्धां नेव्याशीनी सत्ता न होय जे जणी एकत्रीशनो उदय, तिर्यंचने होय अने ते तिर्यंचमां तो तीर्थकर नामकर्मनी सत्ता न होय. अने नेव्याशीनी सत्ता तो तीर्थकर नामकर्म सहित होय, तेमाटें नेव्याशी वर्जीने शेष त्रण सत्तास्थानक होय. एम अछावीशने बंधें आठ उदय स्थानकें अइने चार सत्ताने संवेधें जांगा उगणीश होय.

हवे (नवसत्तिगुणतीसतीसम्मि के०) उगणत्रीशने बंधें अने त्रीशने बंधें प्रत्येकें एकवीश, चोवीश, पञ्चीश, षष्ठीश, सत्तावीश, अछावीश, उगणत्रीश, त्रीश, अने एकत्रीश, ए नव उदय स्थानक अने त्र्याणु, बाणु, नेव्याशी, अछाशी, बघाशी, एंशी अने अछोत्तेर. ए सात सत्तास्थानक होय.

तिहां पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य प्रायोग्य उगणत्रीश बांधतां पर्याप्ता अपर्याप्ता एवा एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य तथा देवता नारकीने विभ्रंहगतियें एकवीशनो उदय होय. तिहां बाणुं, अछाशी, बघाशी, एंशी अने अछोत्तेर, ए पांच सत्तास्थानक होय पण एटलुं विशेष जे वायुकाय विना बीजा पर्याप्ता एकेंद्रिय विकलेंद्रिय तिर्यंच, मनुष्य, देवता तथा नारकीने एक अछोत्तेर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय. एनुं कारण पूर्वे कहुं ठे, तेम जाणवुं.

एम चोवीश, पञ्चीश अने षष्ठीश, ए त्रण उदर्यें पण एज पांच पांच सत्तानां स्थानक जाणवां.-तिहां जे त्रेवीशने बंधें, उदय, सत्ता, संवेध जांगा विचारतां कहुं, तेम अर्द्धां पण जाणवुं. पण एटलुं विशेष जे अर्द्धां पञ्चीशने उदर्यें मिथ्या ली देव-नारकीने पण उगणत्रीशनो बंध कहेवो.

तथा सत्तावीशनो उदय पर्याप्ता एकेंद्रिय, देवता, नारकी, वैक्रिय तिर्यंच, मनु

ष्य मिथ्यात्वीने विकर्षेण्डिय अने तीर्थेच मनुष्य प्रायोग्य ओगणत्रीशना बंध बांधतां बाणु, अछाशी, उघाशी अने एंशी, ए चार सत्तास्थानक होय.

तथा अछावीश, ओगणत्रीश, ए बे उदय विकर्षेण्डिय पंचेण्डिय तीर्थेच अने मनुष्य तथा वैक्रिय पंचेण्डिय तीर्थेच मनुष्य देव अने नारकी ओगणत्रीश बांधतां होय. तिहां पण तेहीज पूर्वोक्त चार सत्तास्थानक जाणवां:

तथा त्रीशना उदय विकर्षेण्डिय तथा पंचेण्डिय तीर्थेच अने मनुष्यने तथा उद्योतने उदये देवताने होय तथा एकत्रीशना उदय विकर्षेण्डिय अने पंचेण्डिय तीर्थेचने उद्योतने उदये होय. तिहां मनुष्यगति प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां चार सत्तास्थानक, एकेंडिय, विकर्षेण्डिय अने पंचेण्डिय तीर्थेचने होय. तथा तीर्थगति अने मनुष्यगति प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां मनुष्यने पोतपोतानां उदय स्थानकने विषे यथायोग्यपणे वर्त्तताने पण अछोत्तेरनुं सत्तास्थानक न होय, जे जणी मनुष्यदिक उतां अछोत्तेरनी सत्ता न होय, तेमाटे तेहीज चार सत्तानां स्थानक जाणवां. तथा देव नारकीने पंचेण्डिय तीर्थेच तथा मनुष्य प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां स्वस्वोदये वर्त्तताने बाणुं अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय; तिहां मिथ्यात्वी नारकीने तीर्थेकरनामकर्म उतां मनुष्यगति प्रायोग्य ओगणत्रीश बांधतां स्वस्वोदये यथायोग्यपणे वर्त्तताने एक नेव्याशीनुं सत्तास्थानक होय जे जणी मिथ्यात्वीने आहारकचतुष्क तो जिननाम उतां न होय. तेमाटे ज्याणुमांदेशी आहारकचतुष्क काढतां नेव्याशीनुं सत्तास्थानक होय. एम विकर्षेण्डिय, पंचेण्डिय तीर्थेचने ए बेहुने अहींआं चार सत्ताना स्थानकनी जावना जेम त्रेवीशने बंधे कही तेमज सर्वत्र जाणवी पण एटलुं विशेष जे मनुष्यगति प्रायोग्य ओगणत्रीशने बंधे अछोत्तेर विना बीजां चार सत्तानां स्थानक होय. तीर्थगति प्रायोग्य ओगणत्रीशने बंधे पांच सत्ता स्थानक होय तथा देवगति प्रायोग्य उगणत्रीश बांधतां अविरति सम्यक्दृष्टिने एकवीश, उघीश, अछावीश, ओगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच तथा आहारक अने वैक्रिय करतां साधुने पञ्चीश, सत्तावीश, अछावीश, ओगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय, तथा देशविरति मनुष्यने वैक्रिय करतां उद्योतना उदय न होय, तेमाटे त्रीशना उदय विना बीजां चार उदयस्थानक होय. तिहां देवगति प्रायोग्य तीर्थेकरनामकर्म सहित ओगणत्रीश बांधतां ज्याणुं तथा नेव्याशी, ए बे सत्तानां स्थानक पांचे उदय स्थानके होय. तथा आहारक साधुने देवगति प्रायोग्य ओगण

त्रीश प्रकृति बांधतां एकज ज्याणुनुं सत्तास्थानक होय. एम सामान्यपणे ओगण त्रीशने बंधें नव उदयें करी जांगा चोपन शरवाले थाय.

तथा त्रीशना बंधस्थानकें जेम तिर्यग्गति प्रायोग्य उंगणत्रीशनो बंध बांधतां एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यंच, पंचेंद्रिय मनुष्य, देव अने नारकीने जेम उदय स्थानक कहां, तेम उद्योत सहित तिर्यग्गति प्रायोग्य त्रीशने बंधें एकेंद्रियादिकने पण उदय सत्तास्थानकनो संबेध जाववो.

तथा मनुष्यगति प्रायोग्य तीर्थकरनाम कर्म सहित त्रीशनो बंध करतां देवता अने नारकीने जे विशेष ठे, ते कहीयें ठेयें. देवताने एकवीशने उदयें वर्त्ततां ज्या णु अने नेव्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय, तथा नारकीने एकवीशने उदयें वर्त्ततां मनुष्यगति प्रायोग्य त्रीश प्रकृति बांधतां एकज नेव्याशी प्रकृतिजुं सत्तास्थानक होय, परंतु नारकीने ज्याणुनी सत्ता न होय, जे जणी तीर्थकरनाम तथा आहारक चतुष्क ए बेहुनी सत्ता, नारकीने जेली न होय, चूर्णिकारें कष्टुं ठे के "जस्स तिथ्यगराहा, रगाणि जुगवंसंति, सोनिरइएसु न उववच्छइ" तथा एमज पञ्चीश, सत्तावीश, अछावीश अने उंगणत्रीश, ए चार उदयस्थानकें पण देवताने ए बे वे सत्तास्थानक होय, अने नारकीने त्रीशजुं उदयस्थानक न होय, जे जणी उद्योत जेलतां त्रीशजुं उदयस्थानक थाय. ते उद्योतनो उदय तो नारकीने नथी ए म सामान्यपणे त्रीशने बंधें एकवीशने उदयें सात, चोवीशने उदयें पांच, पञ्चीशने उदयें सात, षष्ठीशने उदयें पांच, सत्तावीशने उदयें ८, अछावीशने उदयें ८, उंगत्रीशने उदयें ८, त्रीशने उदयें ८ अने एकत्रीशने उदयें चार. एम सर्वमली त्रीशने बंधें नव उदयस्थानकें अइने जांगा बावन थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३३ ॥

एगेग मेगतीसे, एगे एगुदय अठ संतंमि ॥

उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि ठाणाणि ॥ ३४ ॥

अर्थः—तथा (एगेगमेगतीसे के०) एकत्रीशने बंधें एगेग एटले एकज उदय स्थानक तथा एकज सत्तास्थानक पण होय. ते आवी रीतें के देवगति प्रायोग्य जिननाम तथा आहारकदिक सहित एकत्रीशजुं बंधस्थानक अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणवाणे होय ठे. तिहांतो वैक्रिय तथा आहारकशरीरजुं करवा पणुं नथी तो ते विना बीजा पञ्चीश, षष्ठीश, इत्यादिक अल्प प्रकृतिना उदय न होय अने आहारिक शरीरनी तो सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्तो ठे माटे तेने तो त्रीशनोज उदय

होय. तिहां तो एकज त्र्याणुं सत्ता स्थानक होय परंतु बीजां न होय. केमके ए कत्रीश प्रकृतिनो बंध तो आहारकचतुष्क तथा जिननाम सहितज होय.

तथा (एगेएगुदयअठसंतमि के०) एक यशःकीर्तिरूप एकने बंधें पण एकज त्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय, तथा तिहां आठ सत्तानां स्थानक होय, जे न एनी नामकर्मनी एकज यशःकीर्तिरूप प्रकृतिनो बंध अपूर्वकरणना सातमा जाग थी मांमीने दशमा गुणगणा पर्यंत होय, ते अतिविद्युद्द माटें वैक्रिय तथा आहारक करे नहीं. तेषी तेने बीजा पञ्चीशादिकनां उदय स्थानक वैक्रियादिकनी पर्याप्ति योग्यनां न होय, मात्र एकज त्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक होय. तिहां त्र्याणु, बाणुं, नेव्याशी, अठ्याशी, एंशी, आगणाएंशी, बहोत्तेर अने पञ्चोत्तेर, ए आठ सत्ता स्थानक होय, तेमांहेलां ९३-९२-८९-८८- ए चार प्रथमनां सत्तास्थानक उपशमश्रेणिनी अपेक्षार्यें होय, अथवा रूपकश्रेणीयें पण ज्यां लगें अनितृत्तिबादरना प्रथमजागें जइने १ स्थावर, २ सूक्ष्म, ४ तीर्थचदिक, ६ नरकदिक, १० जातिचतुष्क, ११ साधारण, १२ आतप, १३ उद्योत, ए तेर प्रकृति न खपावे तिहां लगें होय अने ए तेर प्रकृति क्य कखा पढी अनेक जीवनी अपेक्षार्यें उपरलां ८०-७९-७६-७५-ए चार सत्तास्थानक रूपकश्रेणीयें होय.

(उवरयबंधो के०) तथा उपरांत बंधें बंधने अजावें (वेयग के०) वेदकने उदयनां स्थानक, (दस के०) दश होय अने (संतमिगणाणि के०) सत्तानां स्थानक पण, (दस के०) दश होय, तिहां वीश, एकवीश, षड्वीश, सत्तावीश, अष्टावीश, आगणत्रीश, त्रीश, एकत्रीश, नव अने आठ, ए दश उदयनां स्थानक अने ९३-९२-८९-८८-८०-७९-७६-७५-९-८-ए दश सत्ता स्थानक होय.

तेमध्ये केवलीने आठ समयनो केवल समुद्घात करतां, वचालें त्रीजे, चोथे अने पांचमे ए त्रण समय पर्यंत कार्मण योगें वर्त्ततां १ पंचेंद्रियजाति, ४ त्रस त्रिक, ५ सुजग, ६ आदेय, ७ यशःकीर्ति, ८ मनुष्यगति, अने बार ध्रुवोदयी, एवं वीश प्रकृतिनो उदय होय. तिहां सत्ता स्थानक आगणाएंशीनुं तथा आहारक चतुष्क विना पञ्चोत्तेरनुं ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा तीर्थकरने केवली समुद्घात करतां एज वचला त्रण समय पर्यंत तीर्थ कर नामकर्म सहित एकवीशनुं उदय स्थानक होय. तिहां जिननाम सहित ठे माटें एंशी अने बहोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा केवलीने समुद्घात करतां औदारिक मिश्रयोगें वर्त्ततां औदारिकदिक,

वज्ररूपनाराचसंघषण, ठ संस्थान माहेलुं एक संस्थान, उपघात अने प्रत्येक, ए ठ प्रकृति पूर्वोक्त वीशमांहे जेले अके ठवीशानो उदय होय. तिहां बीजे, ठेठे अने सातमे ए त्रण समय पर्यंत आगणाएंशी अने पञ्चोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा तीर्थकरने तेज स्थानकें तीर्थकरनाम सहित सत्तावीशानो उदय होय. तिहां एंशी अने ठहोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा ते ठवीशमध्ये पराघात, उद्वास, छुन तथा अछुनखगति माहेली एक अने बे स्वर माहेली एक ए चार जेलतां त्रीशानो उदय, औदारिक योगें वर्त्तता केवलीने अथवा अगीआरमे गुणगणो पण होय. तिहां त्र्याणुं, बाणुं. नेव्याशी, अठघाशी, एंशी, आगणाएंशी, ठहोत्तेर, अने पंचोत्तेर, ए आठ सत्तास्थानक ते माहेला पहेलां चार, उपशमश्रेणीनी अपेहायें अने ठेहेलां चार ढीण कषायने तथा सयोगी केवलीने अने तीर्थकरने होय. तिहां आहारकचतुष्कनी सत्ता सहित तीर्थकरने एंशी अने अतीर्थकरने आगणाएंशी आहारक वर्जीने तीर्थकरने ठहोत्तेर, अतीर्थकरने पञ्चोत्तेर, ए बे बे सत्ता स्थानक होय.

तथा एकत्रीशने उदयें एंशी अने ठहोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक तीर्थकर केवली नेज जाणवां जे जणी सामान्य केवलीने तो एकत्रीशानो उदय नज होय. ते एक त्रीश मध्येथी तीर्थकरने वचनयोग रुंधे त्रीशानो उदय होय तिहां एंशी अने ठहोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय तथा सामान्य केवलीने औदारिक योगें वर्त्तता त्रीशने उदयें आगणाएंशीने पञ्चोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

ते त्रीशमध्येथी वचनयोग रुंधे सामान्य केवलीने आगणत्रीशानो उदय होय. तिहां आगणएंशी अने पंचोत्तेर, ए बे सत्ता स्थानक होय तथा तीर्थकरने वचनयोग रुंधे त्रीश तेमांथी श्वासोद्वास रुंधे आगणत्रीशानो उदय होय. तिहां एंशीने ठहोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय. एवं आगणत्रीशने उदयें चार सत्तास्थानक होय.

तथा सामान्यकेवलीने वचनयोग रुंधे आगणत्रीशानो उदय हतो ते मध्येथी श्वासोद्वास रुंधे अष्टावीशाना उदयें आगणाएंशी अने पञ्चोत्तेर, ए बे सत्तास्थानक होय.

तथा नवना उदयें तीर्थकरने अयोगी गुणगणो एंशी अने ठहोत्तेर तथा ठेले समयें नवतुं ए त्रण सत्तास्थानक होय. तथा सामान्यकेवलीने आठना उदयें अयोगीना द्विचरमसमय जणें आगणाएंशी अने पञ्चोत्तेर अने ठेहेले समयें आठतुं, एवं त्रण सत्तास्थानक होय. एम संवेधें जांगा त्रीश होय. ए रीतें ए नामकर्मनी वंधोदयसत्ता संवेध सामान्यदेशें कह्यो ॥ इत्यर्थः ॥ ३४ ॥

॥ अथैतेषां जीवस्थानानि गुणस्थानानि वाश्रित्य, स्वामी दर्शयते ॥
हवे अनुक्रमेण एवाथ कर्मनी प्रकृतिनां स्थानक अने तेना जांगा चौद जीवस्थानक
अने चौद गुणस्थानक आश्रयिने स्वामी प्रत्ये निर्णय करिने विगोषादेशे देखाडे ठे.

तिविगप्य पगइ ठाणे, हिं जीव गुणसन्निपसु ठाणसु ॥
जंगा पठजियवा, जह जहा संजवो जवइ ॥ ३५ ॥

अर्थ-बंध, उदय अने सत्ता, ए (तिविगप्य के०) त्रण विकल्प, तेना (पग
इठाणोहिं के०) अथ कर्मनी प्रकृतिनां स्थानक एक, बे, इत्यादिक तेने संवेधे
जे जांगा उपजे, ते जांगा (जीव के०) चौद जीव स्थानकने विषे अने (गुणस
न्निपसुठाणसु के०) चौद गुणस्थानक विषे पूर्वे जे कहा, ते रीते तेना अनुसा
रे (जंगापठजियवा के०) जांगा प्रयुजवा. (जहजहासंजवोजवइ के०) जिहां जे
जांगो संजवे, तिहां ते जांगो लगाडवो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३५ ॥

॥ अथ प्रथमजीवस्थानान्यधिकृत्याह ॥ हवे प्रथम चौद जीवस्थानक
आश्रयिने ज्ञानावरणीय तथा अंतरायकर्मना जांगा कहे ठे.

तेरससु जीव संखे, वएसु नाणंतराय तिविगप्यो ॥

इकंमि ति छ विगप्यो, करणं पइ इह अविगप्यो ॥ ३६ ॥

अर्थ-(तेरससुजीव के०) एक संज्ञी पर्याप्तो टाळीने पहेजां तेर जीवस्था
नकने विषे (संखेवएसु के०) संक्षेपे एटले थोडामांहे घणा जीव नाम कहीये.
ते जणी संक्षेप जीव जेद पाठ कह्यो. तिहां (नाणंतराय के०) एक ज्ञानावर
णीय अने बीजं अंतराय, ए बे कर्मना बंध, उदय अने सत्ता, ए (तिविगप्यो
के०) त्रण विकल्पनो एक जांगो होय. एटले पांचनो बंध, पांचनो उदय अने
पांचनी सत्ता होय. एना बंध, उदय अने सत्ता ध्रुव ठे. ते जणी सर्वने होय,
तथा (इकंमि के०) एक संज्ञी पंचेदिय पर्याप्तो जीवजेदने विषे (तिहुविगप्यो के०)
त्रण विकल्प तथा बे विकल्पनो एकेक जांगो होय. एटले पांचनो बंध, पांचनो उ
दय अने पांचनी सत्ता, ए त्रणनो विकल्प, दशमा गुणठाणा लगे होय, अने ते
वार पंठी ज्ञानावरणीय तथा अंतरायनो बंध नधी माटे पांचनो उदय
अने पांचनी सत्ता, ए बेनो विकल्प अगीश्रारमा अने बारमा गुणठाणा लगे
होय, तथा (करणंपइइहअविगप्यो के०) करण एटले इव्यमननी अपेकार्ये सं

झीउं जे सयोगी केवली तथा अयोगी नवस्थ केवली, तेने विपे ज्ञानावरणीय अने अंतरायनो बंध, उदय अने सत्तानो एक पण विकल्प नथी माटे अविकल्प ठे. अहींआं इव्यमननी अपेहायें केवलीने संझी कह्यो. चूर्णिकारें असंझी कह्यो ठे. "मणकरणं केवलियो, विअठि तेणसन्निणोबुद्धंति ॥ मणोविनाणपडुच्च, तेणसन्निणोन हवंति" ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३६ ॥

अथ दर्शनावरणजीवस्थानेप्वाह ॥ हवे दर्शनावरणियना बंधोदय सत्तास्थानक ना जांगा चौद जीवस्थानकने विपे विचारे ठे.

तेरे नव चउ पणगं, नव सत्ते गम्मि जंगमिक्कारा ॥

वेअणिएअ आउ गोए, विज्जुमोहं परं बुठं ॥३७॥

अर्थ- (तेरेनवचउ के०) संझी पंचेंडिय पर्याप्ता विना तेर जीवस्थानकने विपे दर्शनावरणियकर्मनो नवनो बंध, चारनो उदय अने (नवसत्ते के०) नवनी सत्ता, तथा नवनो बंध, (पणगं के०) पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए वें जांगा होय. अने (एगम्मिजंगमिक्कारा के०) एक संझी पंचेंडिय पर्याप्ता जीवस्थानकने विपे पूर्वे जे दर्शनावरणियना संवेधें सामान्यें अगीअर जांगा कह्या, ते अगीअर अहींआं लेवा. हवे (वेअणीअआउगोए के०) वेदनीय, आयु अने गोत्र, ए त्रण कर्मने विपे बंध; उदय अने सत्तायें प्रकृतिनां स्थानक अने जांगा ते आगमोक्त प्रकारें जीवस्थानकने विपे कहीने (विज्जुमोहंपरंबुठं के०) पढी मोहनी य कर्मना जांगा वहेचने कहेने ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३७ ॥

अथ वेदनीयगोत्रयोर्जगज्ञानार्थमियमंतर्जाप्यगाथा. हवे वेदनीय अने गोत्रकर्मना जांगा चौद जीवजेदें वहेचवाने जाप्यनी गाथा कहे ठे.

पङ्कतग सन्निअरे, अठ चउक्कं च वेयणिय जंगमा ॥

सत्तय तिगं च गोए, पत्तेअं जीवठाणेसु ॥ ३८ ॥

अर्थ- (पङ्कतगसन्नि के०) संझी पंचेंडिय पर्याप्ताने विपे वेदनीयकर्मना (अठ के०) आठ जांगा जे पूर्वे सामान्यपणे कह्या, ते अहींआं विशेषपणे लेवा तथा (इअरे के०) ए संझी पंचेंडिय पर्याप्ता विना बीजा तेर जीवस्थानके ? अशातानो बंध, अशातानो उदय अने वेदुनी सत्ता, १ अशातानो बंध, शातानो उदय अने वेदुनी सत्ता, २ शातानो बंध, अशातानो उदय अने वेदुनी सत्ता, ३

शातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए (चउकंचवेयणियजंगा के०) ए चार जांगा वेदनीयना तेर जीवजेदें होय. अहींआं सयोगी केवलीने अ योगी केवलीनी परें इव्यमनना संबंध नणी संझी लेखवतां विरोध नहीं. अन्यथा आगला आठ मांहेला चार जांगा तो केवलीनेज होय, ते कारणमाटे पर्याप्त संझीने विषे वेदनीयना आठ जांगा कहा ततां विरोध नथी.

तथा (सत्तयतिगंचगोए के०) गोत्रकर्मना जे पूर्वे बंध, उदय अने सत्तानो संवेध करतां सामान्यादेशें सात जांगा कहा, तेज अहींआं पर्याप्ता सन्निपंचेंडिय ने सात जांगा लेवा. तेमांहे नीचैर्गोत्रनो बंध, नीचैर्गोत्रनो उदय, नीचैर्गोत्रनी सत्ता, ए प्रथम जांगो तेउ, वाउमांहे घणो काल रहेतां जे जीवें उच्चैर्गोत्र उवेळ्युं होय, ते जीव, तेउ वाउ मांहेथी आवी पर्याप्ता संझी पंचेंडियपणे अवतरे, ते ने केटला एक काल पर्यंत, ए जांगो पामीर्यें, परंतु बीजा जीवने विषे ए जांगो न पामीर्यें तथा बीजा जांगा जेम पूर्वे कहा, तेम अहींआं पण लेवा. तथा बीजा ते र जीवजेदें १ नीचैर्गोत्रनो बंध. नीचनो उदय अने नीचनी सत्ता, २ नीचनो बंध, नीचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, ३ उंचनो बंध, नीचनो उदय अने वेहुनी सत्ता, ए त्रण जांगा होय. तेमांहे पहेलो जांगो तो तेउ, वाउमांहेथी उच्चैर्गोत्र उवेलीने बीजे जीवजेदें अवतरे, तेनी अपेक्षार्यें लेवो. परंतु बीजानें न होय, तथा उच्चैर्गोत्रनो उदय तो तिर्यंचगतिमांहे तथा अपर्याप्तानेविषे न होय तेमाटे बीजा चार जांगानो तेर जीव जेदें निषेध जाणवो. परंतु जे जांगाने विषे नीचनो उदय होय, ते अहीआं लेवा. (पत्तेअंजीवगणोसु के०) ए तेर जीवस्थानकने विषे प्रत्येकें त्रण जांगा होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३७ ॥

अथ आयुर्जंगप्ररूपणार्थमियमंतर्जाष्यगाथा ॥ हवे ए चौद जीवजेदें आयुःकर्मना जांगा प्ररूपवाने अर्थे जाष्यनी गाथा लखीर्यें ठैर्यें.

पङ्कता पङ्कतग, समणा पङ्कत अमण सेसेसु ॥

अष्टावीसं दसगं, नवगं पणगं च आउस्स ॥ ३९ ॥

अर्थ—(पङ्कतापङ्कतगसमणा के०) पर्याप्ता अने अपर्याप्ता समणा एटले मन सहित तेने संझी कहार्यें, एटले संझी पंचेंडिय पर्याप्ता अने बीजा संझी पंचेंडिय अपर्याप्ता जाणवा. तिहां संझी पंचेंडिय पर्याप्तामांहे आयुःकर्मना जांगा, (अष्टावीसं के०) अष्टावीश होय. तेमध्ये नारकीना पांच तिर्यंचना नव, मनुष्य

ना नव, अने देवताना पांच. एम अष्टावीश जांगा पूर्वे कह्या ठे तेम जाणवा. तथा संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तामांहे आयुःकर्मना जांगा (दशगं के०) दश होय. केम के ए अपर्याप्ता लब्धिशी जाणवा. ते लब्धि अपर्याप्ता तो मनुष्य अने तिर्यंचज होय. तथा देव अने नारकी, ए बेहु लब्धि अपर्याप्ता नज होय, माटे देवताना पांच अने नाकीना पांच, एवं दश जांगा पूर्वोक्त अष्टावीशमांहेशी टले, तेवारें अठार जांगा रहे. तेमध्येशी वली सन्निधा अपर्याप्ताने देव नारकीनो बंध न होय तेमाटे.

देव नारकीना बंधप्रायोग्य जे मनुष्य तिर्यंचने विषे जे आयुःकर्मना नव नव जांगा कह्या ठे तेमध्येशी पण एक देवायुनो बंध तिर्यंचायुनो उदय अने बेहु आयुनी सत्ता, बीजो नरकायुनो बंध, तिर्यंचायुनो उदय अने बेहु आयुनी सत्ता, ए बे जांगा, आयुर्बंधकालावस्थाना जाणवा. तथा उत्तरावस्थायें बंधन्यशून्य कालें तिर्यंचायुनो उदय अने देवायु तथा तिर्यंचायुनी सत्ता, चोथो तिर्यंचायुनो उदय अने नरकायु तथा तिर्यंचायुनी सत्ता, ए चार जांगा तिर्यंचना, तेवाज चार जांगा मनुष्य मांहेला, एवं आठ जांगा टले, तेवारें शेष दश जांगा रहे, तिहां तिर्यंचगतिमध्ये एक आयुर्वंधशी पूर्वावस्थानो तथा बे बंध कालावस्थाना अने एक तिर्यंचायुनो उदय, तथा बे तिर्यंचायुनी सत्ता, बीजो तिर्यंचायुनो उदय, अने तिर्यंच तथा मनुष्यायुनी सत्ता, ए बे उत्तरावस्थायें बंधशून्य कालें होय. एवं पांच तिर्यंचगतिना तेमज पांच मनुष्यगतिमांहेला, एवं दश जांगा आयुना संज्ञी अपर्याप्तामांहे लाजे.

तथा (पञ्चतन्त्रमण के०) मनरहित एटले पर्याप्ता असंज्ञी पंचेंद्रियने विषे (नवगं के०) आयुःकर्मना नव जांगा जे पूर्वे तिर्यंचगतिमध्ये सामान्यें कह्या, ते अर्धांयां पण लेवा, केमके देव अने नारकी तो असन्निधा होयज नहीं अने मनुष्य पण असन्निध पर्याप्तो न होय, मात्र तिर्यंचज असन्निध पर्याप्तो होय, तेने चारे गतिना आयुनो बंध होय, माटे एने तिर्यंचगति मांहेला नवे जांगा होय.

ए रीतें एक संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तो, बीजो संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तो, त्रीजो अ संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तो, ए त्रण जीव जेद टाली, (तेसेसु के०) शेष रह्या जे अ गीअर जीवजेद, तेने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें (पणगंचआवस्स के०) आयुःकर्मना पांच पांच जांगा होय. ए अगीअरे जीव स्थानकें तिर्यंच होय, अने ते देव तथा नारकीनुं आयु न बांधे, तेमाटे आयुर्वंध कालशी पूर्वे एक जांगो तथा आयुर्वंध कालें वे गतिना वे जांगा अने आयुर्वंधकाल पढी वे जांगा, एवं पांच जांगा होय. एमां असंज्ञी पंचेंद्रिय संमूर्द्धिम अपर्याप्ता मनुष्य पण होय, तेवारें पांच तिर्यंचना

अने पांच तेना पण जांगा उपजे. एवं दश जांगा उपजे पण ते अहींआं सूत्रकारें कह्या नथी, ते शृं जाणियें शा हेतुयें विवक्षा करी नहीं? ते विचारवुं ॥ इति ॥३९॥

॥ अथ जीवस्थानेषु मोहनीयकर्माह ॥ हवे चौद जीवस्थानकने विपे मोहनीय कर्मेना बंध, उदय अने सत्तानां स्थानकनो संवेध विवरीने कहे ठे.

अष्टसु पंचसु एगे, एग ड्रुगं दसय मोह बंध गए ॥ ति
ग चतु नव उदय गए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥४०॥

अर्थ—(अष्टसुपंचसुएगे के०) आठ जीवस्थानकने विपे तथा पांच जीव स्थानकने विपे अने एक जीवस्थानकने विपे अनुक्रमें (एगड्रुगंदसय के०) एक, वे अने दश, (मोहबंधगए के०) मोहनीयप्रकृतिनां बंधस्थानक होय तथा अनुक्रमें ते एकेका बंधस्थानकें (तिगचतुनवउदयगए के०) त्रण, चार अने नव, उदयनां स्थानक होय. अने अनुक्रमें (तिगतिगपन्नरससंतंमि के०) त्रण, त्रण अने पंदर सत्तानां स्थानक होय ॥ इत्युक्तार्थः ॥ ४० ॥

१ सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, २ बादर एकेंद्रिय अपर्याप्ता, ४ बेंद्रिय अपर्याप्ता, ५ तेंद्रिय अपर्याप्ता, ६ चौरिंद्रिय अपर्याप्ता, ७ असंज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता, अने ८ संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता, ए आठ जीवजेदें एकज बावीश प्रकृतिनुं बंधस्थानक होय. जे नणी ए लब्धिनी अपेक्षायें अपर्याप्ता कह्या ठे, माटें तेने तो मिथ्यात्वज होय. ते मिथ्यात्वे तो बावीशनोज बंध होय, तिहां त्रण वेदें वे युगल साथें जांगा ठ पूर्वली परें लेवा तथा आठ, नव अने दश, ए त्रण उदय स्थानक होय. अहींआं सातनुं उदयस्थानक न होय, केमके सातनो उदय अनंतानुबंधीआ विना होय ठे तेतो उपशमश्रेणीथी पडतां मिथ्यात्वे आवे, तिहां आवलिकामात्र लगें होय, ए आठ जीवजेदें श्रेणी नथी माटें सातनो उदय न होय तथा एकेका उदयें अष्टावीश, सत्तावीश अने षड्वीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय.

बादर एकेंद्रिय तथा त्रण विकलेंद्रिय अने असन्नीआ पंचेंद्रिय, ए पांच पर्याप्ता जीवजेदने विपे बावीश अने एकवीश, ए बंधस्थानक होय. तिहां लब्धि पर्याप्ता केटला एकने करण अपर्याप्तावस्थायें सास्वादनजावें मिथ्यात्वनो बंध न होय, तेवारें एकवीशनो बंध पामीयें. अहींआं बावीशना बंधें सात, आठ, नव अने दश, ए चार उदय स्थानक होय. अने एकेका उदयें अष्टावीश सत्तावीश, अने षड्वीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय तथा एकवीशने बंधें सात, आठ अने नव, ए त्रण उदय

स्थानक होय अने ते एकेके उदयस्थानके एकेकुं अष्टावीशतुं सत्तास्थानक होय. केमके एकवीशानो बंध, ते सास्वादनेज होय. तिहां सास्वादने तो निश्चं अष्टावीश तुंज सत्तास्थानक होय.

तथा एक संझीपंचेंडिय पर्याप्ताना जीवजेदने विपे दशे बंध स्थानक होय. अने नवे उदय स्थानक होय. तथा पंदरे सत्तास्थानक होय. तेनुं स्वरूप अने नांगा पूर्वली परें जाणी लेवा ॥ इत्यर्थः ॥ ४० ॥

अथ नामकर्म जीवस्थानपवाह ॥ हवे चौद जीवस्थानकने विपे नामकर्मना बंध, उदय अने सत्तानां स्थानक वे गाथार्ये करी कहे ठे.

पण डग पणगं पण चतु, पणगं पणगा ह्वंति तिस्रोव ॥

पण षण्णगं षष्ठ, षण्णगं अष्ट ष दसगंति ॥ ४१ ॥ सत्ते

व अपङ्कता, सामी सुदुमाय वायराचेव ॥ विगलिंदि

आठ तिनित्त, तह्य असन्नी अ सन्नीअ ॥ ४२ ॥

अर्थ-अहीआं प्रथम गाथार्ये बंध, उदय अने सत्तानां स्थानक कहे ठे. अने बीजी गाथार्ये तेना स्वामी कहे ठे माटे वे गाथानो अर्थ जेलो जोडीये, एटले (पणडग के०) पांच बंधस्थानक, अने वे उदय स्थानक, (पणगं के०) पांच सत्ता स्थानक एना (सत्तेवअपङ्कतासामी के०) सात अपर्याप्ता जीव जेद. ते एना स्वामी जाणवा तथा (पणचउपणगं के०) पांच बंधस्थानक, चार उदयस्थान क, अने पांच सत्तास्थानक, तेना स्वामी (सुदुमाय के०) सूक्ष्म एकेंडिय पर्याप्ता जाणवा तथा (पणगाह्वंतितिस्रोव के०) त्रणे पांच पांच स्थानक जाणवां एटले पांच बंधस्थानक, पांच उदयस्थानक अने पांच सत्तास्थानकना स्वामी होय, ते कोण होय? तोके (वायराचेव के०) बादर एकेंडिय पर्याप्ता एना स्वामी होय तथा (पणषण्णगं के०) पांच बंधस्थानक, ष उदयस्थानक अने पांच सत्तास्थानक एना स्वामी (विगिंदिआठतिनित्त के०) वेंडिय, तेंडिय अने चौरिंडिय, ए त्रणे विकलेंडि य पर्याप्ता जाणवा. तथा (षण्णगं के०) ष बंधस्थानक, ष उदयस्थानक अने पांच सत्तास्थानक, एना स्वामी (असन्नीअ के०) असंझी पंचेंडिय पर्याप्ता जी व जाणवा. (तह्य के०) तेमज (अष्टदसगंति के०) आठ बंधस्थानक, आठ उदयस्थानक अने दश सत्तास्थानक, एना स्वामी (सन्नीअ के०) संझी पंचें डिय पर्याप्ता जाणवा ॥ इति गाथा व्याह्वरार्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

हवे विस्तारें अर्थ लखीयें तैयें. अपर्याप्ता सूक्ष्मादिक सात जीव जेद, तेने देव, नरकगति प्रायोग्य बंध न होय, तेमाटें अष्टवीश, एकत्रीश अने एक, ए त्रण बंधस्थानक विना त्रेवीश, पञ्चीश, षष्ठीश, उगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच बंधस्थानक तिर्यंच अने मनुष्य प्रायोग्यज होय. तिहां एकेका अपर्याप्ताने विषे (१३ए१७) बंध जांगा उपजे तथा ए सात जीव जेदमाहेला अपर्याप्ता सूक्ष्म अने बादर एकेंद्रिय, ए बे जीव जेदने विषे एकवीश अने चोवीश, ए बे उदयस्थानक होय, तिहां एकवीशने उदयें सर्व अष्टुन पद जणी एकज जांगो होय तथा चोवीशने उदयें प्रत्येक अने साधारणना विकल्पें बे जांगा होय. एम बेदुना मली एकेका जीवजेदें त्रण त्रण जांगा होय. अने शेष पांच अपर्याप्ताना जीवजेदें एकवीश अने षष्ठीश, ए बे बे उदयस्थानक प्रत्येकें होय. अहींआं षष्ठीशना उदय माहे साधारणनो उदय नथी माटें एकेका उदयें एकेक जांगोज उपजे तथी बन्ने उदयना बे बे जांगा एकेका जीव जेदें होय तथा सन्नीच्या अपर्याप्तामां बे तिर्यंच पंचेंद्रियना अने बे मनुष्यना, एम चार जांगा प्रत्येकें होय. ए सात अपर्याप्ता जीव जेदें प्रत्येकें बाणु, अष्टाशी, षष्ठाशी, एंशी अने अष्टोत्तर, ए पांच पांच सत्तास्थानक होय. अहींआं तिर्यंचगतिमाहे जिननामनी सत्ता न होय, माटे ज्याणुं अने ने व्याशी, ए बे सत्तास्थानक न होय. जे आहारकचतुष्क संयम प्रत्ययिक बांधीने व ली मिष्यात्वं गयो होय तेने जिहां सुंधी आहारक चतुष्क उवेळे नहीं तिहां सु धी बाणुनी सत्ता होय अने चोक उवेळ्या पढी अष्टाशीनी सत्ता होय तथा तेउ, वाउ माहे मनुष्यदिक उवेळीने ए स्थानकें अवतखो होय तेनी अपेक्षायें अष्टोत्तरनुं सत्तास्थानक जेवुं. एमज एंशी तथा षष्ठाशी, ए सर्व सत्तास्थानकनुं स्वरूप अने जांगा उपजाववा ते पूर्वली पेरें जाणवा.

तथा सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ताने २३-२५-२६-२७-३० ए पांच बंधस्थानक होय. एने तिर्यंच मनुष्य माहेज जावुं ते माटे तत्प्रायोग्य एज बंधस्थानक बे. अहीं बंधना जांगा (१३ए१७) होय. एने २१-२४-२५-२६, ए चार उदयस्थानक होय. तिहां एकवीशने उदयें एक जांगो, चोवीशने उदयें बे, पञ्चीशने उदयें बे अने षष्ठीशने उदयें बे, एम चार उदयस्थानकें जांगा सात होय. तथा प्रत्येकें एकेका उदयस्थानके १२-१५-१६-१७-२० ए पांच सत्तास्थानक होय. तेम थ्यें तेउ वायु विना बीजा सर्व जीव शरीर पर्याप्तियें पर्याप्ता थका निश्चें मनुष्यदिक बांधे, माटे ते दिक ढतां अष्टोत्तरनुं सत्तास्थानक न होय. प्रत्येक पर्याप्ता

जीवमांहे पण तेउ वायु विना बीजा सर्व जीवने पञ्चीश अने ष्ठीश, ए बे उद य साधारण पद सहित ठे माटे ए स्थानके अछोत्तेर विना बीजां चार सत्ता स्था नक होय. ए पञ्चीश तथा ष्ठीशानो उदयतो शरीर पर्याप्तियें पर्याप्तानेज होय, तेमाटे साधारण सूक्ष्मपर्याप्ताने पञ्चीश, ष्ठीशने उदयें अछोत्तेरनी सत्ता न पा मीयें अने प्रत्येक पदमांहे तेउ तथा वायु जेजा आव्या, ते माटे ते अपेक्षायें प्रत्येकमांहे अछोत्तेरनी सत्ता पामीयें. ए बे जागे चार सत्तास्थानक अने पांच जागे पांच सत्तास्थानक होय. तिहां बाणुहुं सत्तास्थानक तो आहारक बांधी मिष्यात्वें गयो, तिहां आहारकचतुष्कनी सत्ता ठतां मिष्यात्वने वशें सूक्ष्ममांहे अवतरे, तेनी अपेक्षायें लेवो.

तथा बादर एकेंद्रियपर्याप्ताने विषे पण ३३-३५-३६-३७-३८ ए पांच बंधस्थानक तिर्यंच मनुष्य प्रायोग्य जाणवा. केमके एने मनुष्य अने तिर्यंच ए बे गति मध्यें जाहुं ठे माटे तत्प्रायोग्य बांधे. तिहां जांगा १३ए१४ होय. अ हींजां उदयस्थानक ३१-३४-३५-३६-३७ ए पांच होय. तिहां एकवीशने उ दयें बे, चोवीशने उदयें पांच, पञ्चीशने उदयें पांच, ष्ठीशने उदयें अगीअार अने सत्तावीशने उदयें ठ. एम सर्व मली पांच उदयस्थानके जांगा उंगणत्रीश होय. अने २१-२८-२९-३०-३१ ए पांच पांच सत्तास्थानक होय. अहींजां पञ्ची श अने ष्ठीशने उदयें प्रत्येक अने अयशःकीर्तिं साथें एकेको जांगो ठे, ते बे स्था नकना बे जांगा तथा एकवीशना उदयना वैक्रिय वायु विनाना जांगा तथा चोवी शना उदयना बे जांगा, एम आठ जांगाने विषे पांच सत्तास्थानक होय. अने शेष एकवीश जांगाने विषे अछोत्तेर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय.

तथा त्रण विकर्षेन्द्रिय पर्याप्ताने प्रत्येके त्रेवीश, पञ्चीश, ष्ठीश, उंगणत्रीश, अने त्रीश, ए पांच बंधस्थानक मनुष्य तिर्यंच प्रायोग्य होय. एने देव तथा ना रक, ए बे गतिमध्यें जाहुं नथी तेथी बीजां बंधस्थानक न होय. अहीं जांगा १३ए१४ तथा ३१-३६-३७-३८-३९-४०-४१-४२ उदयस्थानक होय. तिहां जांगां वीश पूर्वे कइया ठे, ते रीतें जाणवा तथा २१-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४-३५-३६-३७-३८-३९-४०-४१-४२ ए पांच सत्तास्थानक होय. तेमध्यें एकवीशना उदयना जांगा बे तथा ष्ठीशना उदय ना जांगा बे. एवं चार जागे तो प्रत्येके पांच पांच सत्तास्थानकज होय केमके तेउ अने वायु मांहेथी आवेला विकर्षेन्द्रिय पर्याप्ताने पण करण अपर्याप्ता पयो क्रियत्काल लगें अछोत्तेरहुं सत्तास्थानक पामीयें, पढी, चार सत्तास्थानक होय. अ

ने शेष शोल जांगे एक अछत्तेर वर्जने चार चार सत्तास्थानक प्रत्येके होय. जे जणी शोल जांगा शरीरपर्याप्तिये पर्याप्तानेज होय. तिहां तो अवश्य मनुष्यदि कनो बंध होय तेवारे तेने अछत्तेरनी सत्ता न होय बाकी चार सत्तास्थानक होय. ए रीते बेंडिय, तेंडिय अने चौरिंडिय पर्याप्ताने एकेकाने प्रत्येके उ उदयस्थान के बीस जांगा होय ते मांहे चार चार जांगा, पांच पांच सत्तास्थानक वाला अने बीजा शोल शोल जांगा, चार चार सत्तास्थानकवाला जाणवा.

तथा असन्नीआ पंचेंडिय पर्याप्ताने ३३-३५-३६-३७-३९-३०-ए उ बंधस्थानक होय. जे जणी देव अने नरकगति प्रायोग्य अछत्तेरनी बंध पण एने होय. केमके ए मरीने चारे गतिमध्ये जाय ठे तेमाटे तत्प्रायोग्य बंध होय. अर्ही जांगा १३ए३६ एने ३१-३६-३७-३९-३०-३१-ए उ उदयस्थानक होय. ते उ उदयना जांगा ४ए०४ होय. ए वैक्रिय न करे माटे वैक्रियनो जांगो. न होय. तेमध्ये एकवीशना उदयना जांगा आठ अने ढवीशना उदयना जांगा (३७७) एवं (३९६) जांगे वाणु, अठ्याशी, ढ्याशी, एंशी अने अछत्तेर, ए पांच सत्तास्थानक होय अने शेष (४६०७) जांगा शरीर पर्याप्ति पूरी कखा पढी होय ते जणी एक अछत्तेर विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय.

तथा सन्नीआ पंचेंडिय पर्याप्ताने ३३-३५-३६-३७-३९-३०-३१-१-ए आठे बंधस्थानक होय. केमके एमां मनुष्य पण आख्या माटे तेने सर्वे बंधस्थानक होय, तिहां जांगा १३ए४५ अने ३१-३५-३६-३७-३९-३०-३१ ए आठ उदयस्थानक होय. ३०-३४-७-ए ए चार न होय केमके अर्हीआं केवलीने जाव मनशून्य जणी सन्नीआ मांहे गखा नहीं तेशी ३०-७-ए ए त्रण केवलीनां न गण्या अन्यथा अगीआर उदयस्थानक कहेत. अने बारमो चोवीशनो उदय तो एकेंडियनेज होय बीजाने न होय तेशी तेना अगीआर जांगा टले तथा एकवीशने उदये सात अपर्याप्ताना सात जांगा अने संझीआ असंझीआ जे ला गुणतां पंचेंडियतिर्थेचनो एक जांगो तथा मनुष्यअपर्याप्तानो एक तथा ढवीशने उदये, त्रण विकलेंडियना त्रण, अने असन्नी पंचेंडियतिर्थेच तथा मनुष्यना बे, एम पांचना पांच जांगा अपर्याप्ताना टले, तथा वीश, आठ अने नव, ए त्रण उदयना त्रण जांगा. एवं सर्व अइने अछत्तेर जांगा पूर्वोक्त उदय जांगा (३७ए१) मांशी काढतां शेष (३७६३) जांगा उदयस्थानकना सन्नीआ पंचेंडिय पर्याप्ति जीवमांहे पामीये, तेमध्ये एकवीशना उदयना (४०) ढवीशना उदयना (५९५)

एवं (६३५) जागे प्रत्येके पांच सत्तास्थानक कहेवां. अने बीजां चार सत्ता स्थानक ते सामान्यादेशे नव अने आठना उदय विना दश, सत्तास्थानकना जीवनी अपेहार्ये लेवा. हवे संवेध लखीये ठैये.

सूक्ष्म अपर्याप्ता एकेडियने त्रेवीशने बंधे एकवीशने उदये पांच सत्ता स्थानक, तेम चोवीशने उदये पण पांच सत्तास्थानक. एवं बे उदयना मली दश सत्ता स्थानक थयां. तथा पञ्चीशने बंधे पण एज बे उदय होय, तिहां पण सत्तास्था नक दश होय. तेम त्वीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधे पण दश दश नांगा करतां पांच स्थानके थइ, पञ्चाश सत्तास्थानक होय. तथा ए सूक्ष्म अप र्याप्ता एकेडिय विना शेष ठ अपर्याप्ताना जीवस्थानके पण एज रीते पञ्चाश पञ्चाश बंध, उदय अने सत्ता संवेधे नांगा होय, पण एटलुं विशेष जे वेडियादि क पांच अपर्याप्ताने चोवीशना उदयने स्थानके त्वीशानो उदय लेवो.

तथा सूक्ष्म एकेडिय पर्याप्ताने पण एहीज पांच बंधस्थानक ठे. तिहां एकेक बंधस्थानके ११-१४-१५-१६ ए चार उदयस्थानक गणतां वीश थयां. ते एकेका उदयस्थानके पांच पांच सत्तास्थानक गणतां एकशो नांगा थाय.

तथा बादर एकेडिय पर्याप्ताना एहीज पांच बंधस्थानक तिहां एकेके बंधस्था नके ११-१४-१५-१६-१७ ए पांच उदयस्थानक गणतां पञ्चीश उदयस्थानक थाय, तेमांहे पांच उदय स्थानके अछोत्तेर विना चार चार सत्ता स्थानक होय. तेना वीश नांगा अने वीश उदयस्थानके पांच पांच सत्तास्थानक लेतां शो नांगा थाय. एम शरवाले एकशोने वीश बंध उदयसत्ता संवेधे नांगा होय.

तथा वेडियपर्याप्तामांहे चोवीशने बंधे ठ उदयस्थानक होय, ते मांहेजा एकवीश अने त्वीश, ए बे उदये पांच पांच सत्तास्थानक होय. अने १७-१९-२०-२१ ए चार उदयस्थानके चार चार सत्तास्थानक होय. शरवाले त्वीश नांगा एक बंधस्थानके होय. एम पांच बंधस्थानकना एकशो ने त्रीश नांगा वेडिय पर्याप्ताना थाय. तेम तेंडिय पर्याप्ताना तथा चौरिडियपर्याप्ताना पण एटलाज नांगा जाणवा.

तथा असन्नी पंचेंडिय पर्याप्ताने पण त्रेवीश, पञ्चीश, त्वीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच बंधस्थानके तो प्रत्येके विकलेडियनी परें त्वीश त्वीश नांगा गणतां (१३०) सत्तानां स्थानक थाय अने अछावीशने बंधे त्रीश अने एकत्री श, ए वे उदयस्थानक होय. तिहां एकेका उदये बाणु, अछाशा, अने त्वाशा, ए त्रण सत्तास्थानक होय. तेना नांगा ठ थाय. जे जणी अछावीशानो बंध, देव

तथा नरकगति प्रायोग्यज होय. तिहां तो एंशी अने अछोत्तरनी सत्ता न होय केमके देव नरकगति प्रायोग्यनो बंध तो पूर्ण पर्याप्तानेज होय. एम शरवाले अ संझी पंचेदियने उ बंधस्थानके थइ उदय सत्ताना जांगा (१३६) थाय.

तथा पर्याप्ता संझी पंचेदियने त्रेवीशने बंधें तो जेम पूर्वे उवीश सत्तानां स्थान क असंझीने कहां, तेम अर्हीआं पण जाणवां तथा पञ्चशने बंधें एकवीश तथा उवीशने उदयें पांच पांच सत्तास्थानक होय तथा पञ्चशने उदयें अने देव नारकी ने सत्तावीशने उदयें, ए बे उदयें बाणु अने अछ्याशी, ए बे बे सत्तास्थानक होय, एवं चौद थयां. तथा शेष चार उदयस्थानके चार चार सत्तास्थानक होय. एम सर्व मली पञ्चशने बंधें त्रीश सत्तास्थानक होय, तेवीज रीतें उवीशने बंधें पण त्रीश सत्तास्थानक होय. तथा अछावीशने बंधें आठ उदय स्थानक होय, तेम ध्यें एकवीश, पञ्चश, उवीश, सत्तावीश, अछावीश अने उंगणत्रीश ए उ उदयें बाणु अने अछ्याशी, ए बे बे सत्तास्थानक होय. तथा त्रीशने उदयें बाणु, अ छ्याशी, उद्याशी अने एंशी, ए चार सत्तास्थानक होय. अने एकत्रीशने उदयें बाणु, अछ्याशी, अने उद्याशी, ए त्रण सत्तास्थानक होय. एम सर्व अछा वीशने बंधें उंगणीश सत्तास्थानक होय. तथा उंगणत्रीशने बंधें पण पञ्चशना बंधकनी पेरें सत्तास्थानक त्रीश लेवां. वली विशेषें बीजां पण ठे, ते क हीयें ठैयें. अवरिति सम्यक्दृष्टिने देवगति प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां ३१- ३६-३८-३९-३८ ए पांच उदयें ए३-८ए ए बे बे सत्तास्थानक होय तथा ए ज बे बे सत्तास्थानक पञ्चश तथा सत्तावीशने उदयें वैक्रिय देशविरतिने पण होय, अथवा आहारक साधुने पण तेहीज बे उदयें ज्याणुनी सत्ता होय. एवं चौद सत्तास्थानक पूर्वजा त्रीशमांहे मेलवतां उंगणत्रीशने बंधें चुम्मालीश सत्ता स्थानक होय. एम त्रीशने बंधें पण पञ्चशना बंधनी पेरें त्रीश सत्तास्थानक ले वां, ते उपर जे विशेष ठे, ते कहे ठे. मनुष्यगति प्रायोग्य, जिननाम सहित त्रीश बांधतां एकवीश, पञ्चश, सत्तावीश, अछावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए उ उदयें ए३-८ए ए बे बे सत्तास्थानक लेतां बार जांगा थाय. ते जेलतां बैताली श सत्तास्थानक त्रीशने बंधें थाय. तथा एकत्रीश बांधनारो जिननाम तथा आ हारकदिक सहित बांधे, तेवारें तेने एकज ज्याणुनी सत्ता होय तथा एकने बंधें आठ सत्ता स्थानक होय. तिहां ए३-ए३-८ए-८८ ए चार उपशमश्रेणीनी अपेकार्यें तथा ८०-८९-९६-९५- ए चार रूपकश्रेणीनी अपेकार्यें होय.

तथा बंधने अज्ञावें पण एज आठ सत्तास्थानक होय, परंतु एटलुं विशेष जे प्रथमनां चार सत्तास्थानक अग्नीआरमे गुणठाणे आगली तेर प्रकृतिना ह्य कखा पठी ह्रीणमोहने लेवा. एम सर्व मली पर्याप्ता संज्ञी पंचेंद्रियने (३०८) सत्तास्था नक होय अने जो इव्य मनने संबंधें केवलीने पण सन्नीठ कहीयें, तो तेना वली ठवी श सत्तास्थानक मेजवतां (३३४) सत्तास्थानक, संज्ञीपंचेंद्रिय पर्याप्तानां थाय ॥४३॥

अथ गुणस्थानान्यधिकृत्याह ॥ हवे आठ कर्मना बंधोदय सत्तास्थानकना

जांगा, चौदगुणठाणा आश्रयीने कहे ठे.

नाणं तराय ति विहम, वि दससु दो हुंति दोसु ठाणेषु ॥

मिह्नासाणे बीए, नव चउ पण नव य संतंसा ॥ ४३ ॥

अर्थ- मिथ्यात्वथी मांकीने दशमा सूक्ष्मसंपराय गुणठाणासुधीना (दससु के०) दज्ञे गुणठाणाने विषे (नाणंतराय के०) ज्ञानावरणीय अने अंतराय ए बेहु कर्मनो (तिविहमवि के०) त्रिविध एटले पंचविध बंध, पंचविधउदय, अने पंचविध सत्ता, ए जांगो होय. तेवार पठी (दोसुठाणेषु के०) उपशांतमोह अने ह्रीणमोह, ए बे गुणठाणे बंधने अज्ञावें (दोहुंति के०) डुविध एटले पांचनो उदय अने पांचनी सत्ता होय अने तेवार पठी तो उदय अने सत्ता पण न होय. हवे (बीए के०) बीजुं दर्शनावरणीय कर्म तेनो (मिह्नासाणे के०) मिथ्यात्व अने सास्वादन गुणठाणे (नव के०) नवविधबंध, (चउपण के०) चतुर्विध अथवा पंचविध उदय अने (नवयसंतंसा के०) नवविध सत्ता होय. ए बे गुणठाणे थीण-क्षीत्रिकनुं नियमाबंध होय माटें नवविधबंध कह्यो. अहीं बे जांगा थाय. एक नवविध बंध, चतुर्विध उदय अने नवविधसत्ता. बीजो नवविध बंध, पंचविध उदय अने नवविधसत्ता. ए बे जांगा होय ॥इति समुच्चयार्थः॥४३॥

मिस्साइ नियट्टीउ, ठ चउपण नवय संतं कम्मंसा ॥

चउ बंधतिगे चउ पण, नवंस डसु जुअल ठस्संता ॥ ४४ ॥

अर्थ-(मिस्साइनियट्टीउ के०) मिश्रगुणठाणाथी मांकीने निवृत्तिकरण नामे आठगुं गुणठाणुं ठे, तेना पहेला जाग लगे, थीण-क्षीत्रिकनो बंध टळ्यो माटें (ठचउपणनवयसंतंकम्मंसा के०) ठनो बंध, चार तथा पांचनो उद य अने नवविध सत्ता होय. एटले ठनो बंध, चारनो उदय अने नवनी सत्ता, ए

प्रथम जांगो तथा ठनो बंध, पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बीजो जांगो. ए बे जांगा निश्चै होय. तैवार पढी अपूर्वकरणना शेष ठ जाग अने अनिवृत्तिकरण तथा सूक्ष्मसंपराय, ए त्रण गुणगणो निडा अने प्रचला, ए बे पण बंधयकी ट ली माटे (चउबंध के०) चतुर्विधबंध, चतुर्विध उदय अने नवविधसत्ता, ए (ति गे के०) बंध, उदय अने सत्ता, त्रणेनो एक जांगो तथा (चउपणनवंस के०) चतुर्विधबंध, पंचविध उदय अने नवविध सत्ता. अर्ही अंशशब्दे सत्ता जाणवी. ए बीजो जांगो. ए बे जांगा त्रण गुणगणो होय. ए बे जांगा उपशम श्रेणीनी अपे ह्यार्ये जाणवा. हवे ह्येपकश्रेणीनी अपेह्यार्ये कहे ठे. (छुसु के०) नवमे अने द शमे ए बे गुणगणो (जुअल के०) बंध अने उदयनुं जोडनुं एटले चतुर्विधबंध अने चतुर्विध उदय होय. अर्हीआं चारनी संख्या पाठलथी लेवी अने (उस्संता के०) षड्विधसत्ता एटले चारनो बंध, चारनो उदय अने ठनी सत्ता, ए एक जांगो रूपकने होय. नवमा गुणगणाना बीजा जागे थिएकीत्रिकनो ह्य थया पढी नवमे अने दशमे गुणगणो एज जांगो होय. जे नणी कम्मपयडीनी चूर्णिमध्यं कह्युं ठे के, रूपकने अतिविद्युदि नणी निडा अने प्रचलानो उदय न होय ते माटे पंचविध उदयनो जांगो पण न होय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४४ ॥

उवसंते चउ पण नव, खीणे चउ रुदय ठच्च चउसत्ता ॥
वेअणिय अ आउगोए, विजळ मोहं परं वुडं ॥ ४५ ॥

अर्थ—(उवसंते के०) उपशांतमोह नामा अगीआरमे गुणगणो बंधने अजा वें (चउपण के०) चतुर्विध उदय, तथा पंचविध उदय अने (नव के०) नव विध सत्ता, एटले चारनो उदय अने नवनी सत्ता तथा पांचनो उदय अने नवनी सत्ता, ए बे जांगा होय. उपशांतमोहने तथाविध विद्युदिने अजावें निडा प्रचला नो पण उदय संजवे, ते माटे पंचविध उदय कह्यो तथा (खीणे के०) हीण मोहगुणगणो (चउरुदय के०) चतुर्विध उदय अने (ठच्च के०) षड्विधसत्ता, ए जांगो ठेहला समय विना बाकीना सघला समयें होय, एटले दिचरम समय लगें होय अने चरमसमयें तो बे निडानी सत्ता पण टले माटे, चतुर्विध उदय अने (चउसत्ता के०) चतुर्विधसत्ता ए जांगो होय. एम बे जांगा रूपकने होय. ते पढी उदय तथा सत्ता सर्व टले. हवे (वेअणियअआउगोए के०) वेदनीय, आ

यु अने गोत्र, ए त्रण कर्मना नांगा गुणगणो (विजळ के०) कहिने. (मोहंपरंतु ङ के०) पढी मोहनीय कर्मना नांगा कहिछुं ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४५ ॥

अथ वेदनीय गोत्रयोर्नैगज्ञानार्थमियं जाष्यगाथा ॥ तिहां वेदनीयकर्म अने गोत्रकर्मना नांगा जाणवाने माटे जाष्यनी गाथा कहे ठे.

चउ ठस्सु छन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेअणि अ जंगा ॥

गोए पण चउ दो तिसु, एगऽरुसु छन्नि इकंमि ॥ ४६ ॥

अर्थ—(ठस्सु के०) मिथ्यात्वची मांभीने प्रमत्तांत लगें ठ गुणगणो अशाता नो बंध, अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, बीजो अशातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, त्रीजो शातानो बंध, अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, चोथो शातानो बंध, शातानो उदय अने बेहुनी सत्ता; ए (चउ के०) चार नांगा, ठछा गुणगणा लगें सघलें होय. अने अप्रमत्तची मांभीने तेरमा गुणगणा सुधीना (सत्तसु के०) सात गुणगणो एक शाताज बांधे माटे. वेदनीयना आठ नांगा मांहेलो त्रीजो अने चोथो, ए (छन्नि के०) बे नांगा होय. तथा (एगेचउगुणिसु के०) एक अयोगी गुणगणो चार नांगा होय. एक शातानो उदय, बेहुनी सत्ता, बीजो अशातानो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए बे नांगा द्विचरम समय लगें होय अने चरम समयें एक शातानो उदय अने शातानी सत्ता, बीजो अशातानो उदय अने अशातानी सत्ता, ए बे नांगा होय एवं चार नांगा होय. ए (वेअणियजंगा के०) वेदनीयकर्मना आठ नांगा चौद गुणगणो कहा.

हवे गोत्रकर्मना नांगा गुणगणो कहे ठे. (गोए के०) गोत्रकर्मना (पण के०) पांच नांगा पहेले गुणगणो होय, ते कहे ठे. एक नीचगोत्रनो बंध, नीचनो उदय अने नीचनी सत्ता, बीजो नीचनो बंध, नीचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, त्रीजो नीचनो बंध, उंचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, चोथो उंचनो बंध, नीचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, पांचमो उंचनो बंध, उंचनो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए पांच नांगा, मिथ्यात्व गुणगणो होय अने सास्वादन गुणगणो तो पूर्वोक्त मिथ्यात्वना पांच नांगा मांहेलो पहेलो नांगो न होय. बाकी (चउ के०) चार नांगा होय, केमके पहेलो नांगो तो तेउ वायु मांहे होय अथवा तेउ वाउ मांहेथी चवीने बीजे स्थानकें अवतरतां के टलो एक काल पर्यंत होय. तिहांतो सम्यक्त्व नथी माटे क्यांथी पढीने सास्वादने आवे? तेमाटे प्रथम जंग निवेथ्यो तथा मिश्र अने अविरति सम्यक्दृष्टि तथा देश

विरति ए (तिसु के०) त्रण गुणठाणे चोथो अने पांचमो ए (दो के०) बे जांगा होय, केमके नीचगोत्रनो तिहां बंध नथी, ते जणी प्रथमना त्रण जांगा न होय तथा कोइ एक आचार्य कहे ठे के देशविरतिने एकज पांचमो जांगो होय, परंतु बीजो जांगो न होय जे जणी "गइजाइ पदुच्च उच्चगोअ उच्चठ होइ" ए वचने उच्चैर्गोत्र नोज तिहां उदय होय, तथा (अछसु के०) प्रमत्त गुणठाणाथी मांतीने आठ गुणठाणे प्रत्येके (एग के०) एकेक जांगो होय. तिहां प्रमत्तथी सूक्ष्म संपराय लगे पांच गुणठाणे तो उंच गोत्रनोज बंध, उदय होय माटे एक पांचमो जांगोज होय. अने उपशांतमोह, क्लीणमोह अने सयोगी ए त्रण गुणठाणे गोत्रनो बंध नथी माटे उच्चैर्गोत्रनो उदय अने बेहुनी सत्ता, ए ठठो जांगो होय, तथा (इकं मि के०) एक अयोगी गुणठाणे (इन्नि के०) बे जांगा होय. तिहां उंचनो उदय अने बेनी सत्ता, ए ठठो जांगो, द्विचरम समयलगे होय अने उंचनो उदय तथा उंचनी सत्ता, ए सातमो जांगो चरम समये लगे होय ॥ इति समु० ॥ ४६ ॥

॥ अथ आयुर्नैर्गज्ञानार्थमियमंतर्जाष्यगाथा ॥ हवे आयुःकर्मना
जांगा जाणवाने अर्थे जाष्यनी गाथा कहे ठे.

अच्छाद्दिगवीसा, सोलस वीसं च बारस ठ दोसु ॥
दो चउसु तीसु इकं, मिन्नाइसु आउए जंगा ॥४७ ॥

अर्थ- (अच्छाद्दिगवीसा के०) प्रथम गुणठाणे अछावीस जांगा अने बीजे गुणठाणे ठवीस जांगा, त्रीजे गुणठाणे (सोलस के०) शोल जांगा, चोथे गुणठाणे (वीसंके०) वीस जांगा, पांचमे गुणठाणे (बारस के०) बार जांगा, (दोसु के०) ठठे अने सातमे गुणठाणे (ठ के०) ठ ठ जांगा, (चउसु के०) आठमे, नवमे, दशमे अने अगीआरमे ए चार गुणठाणे (दो के०) बे बे जांगा. (तीसु के०) बारमे, तेरमे अने चौदमे, ए त्रण गुणठाणे (इकं के०) एक जांगो. ए रीते (मिन्नाइसुआउएजंगा के०) मिथ्यात्वादिक चौद गुणठाणे आयुः कर्मना जांगा जाणवा ॥ इत्युक्तार्थः ॥ ४७ ॥

मिथ्यात्व गुणठाणे तो पूर्वे कहेला अछावीसो जांगा आयुना होय, जे जणी चारे गतिना जीव मिथ्यादृष्टि होय. तथा मिथ्यात्वे चारे आयुनो पण बंध ठे, तेथी देवना पांच, नारकीना पांच, तिर्थचना नव अने मनुष्यना नव, ए सर्व होय.

तथा सास्त्रादने नरकायुनो बंध नथी माटें तिर्यंच तथा मनुष्यने आयुर्बंध कालावस्थाना नरकायु बंधना बे जांगा टले, तेवारें शेष उन्नीश जांगा होय.

तथा मिश्रगुणगणो आयुनो बंधज नथी माटें बंधकालावस्थाना देव नारकीना बे बे तथा तिर्यंचना मनुष्यना चार, चार, एवं बार जांगा टले तेवारें शोल जांगा रहे.

तथा अविरति सम्यक्दृष्टिमांतो तिर्यंच अने मनुष्यने एक देवगति विना शेष त्रण गतिनां आयु न बांधवा संबंधिना त्रण त्रण जांगा टले अने देव तथा नारकी मर्घ्ये तिर्यंचायु बंधनो एकेको जांगो टले. एवं आव जांगा टले, तेवारें शेष वीश जांगा रहे.

तथा देशविरतिगुणगणुं तो मनुष्य अने तिर्यंचने होय, ते तो देशविरति उ तां देवायुज बांधे तेमाटें मनुष्य, तिर्यंचने प्रत्येकें बंधकालावस्थायें एकज जांगो तथा परजवायुर्बंधकाल थकी पूर्वे एकेको जांगो अने आयुर्बंधकाल पढी चारे जांगा होय. जेजणी कोइ एक तिर्यंच अथवा मनुष्य चारे आयु मांहेजुं एक आयु बांधीने पढी देशविरतिपणु पामे तेनी अपेक्षायें उत्तरावस्थाना चार जांगा कह्या. ए रीतें उ उ जांगा तिर्यंच अने मनुष्यना जेतां बार जांगा पांचमे गुणगणो पामीयें.

तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त, ए बे गुणगणां मनुष्यनेज होय माटें मनुष्यना उ जांगा देशविरतिनी पें जाणवा, ए गुणगणो तिर्यंच नथी तेथी तेना जांगा टव्या.

तथा आठमे, नवमे, दशमे अने अगीआरमे, ए चार गुणगणो उपशमश्रेणी नी अपेक्षायें बे बे जांगा होय, एक मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए जांगो, आयुर्बंधकालथी पूर्वलो होय, अने मनुष्यायुनो उदय तथा मनुष्यायु अने देवायुनी सत्ता ए बीजां जांगो आयुर्बंध काल पढी उत्तरावस्थानो होय, ए बे जांगा होय. एने बंधकालावस्थानो जांगो न होय जे जणी ए अत्यंतविद्युद ठे माटें आयु न बांधे अने आयु बांध्या पढी उपशमश्रेणी पडिवजे, तोपण देवायु बांध्या पढी पडिवजे. परंतु बीजां त्रण गतिनां आयु बांध्या पढी उपशमश्रेणी पडिवजे नही जे जणी कम्मपयडीमर्घ्ये शिवशर्मसूरियें कहुं ठे “तिसु आवगेसु व देसु, जेण सेठि न आरोहइति” अने पूर्वे आयुर्बंध कखा पढी रूपकश्रेणी करे नही माटें रूपकने मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, रूपकश्रेणीयें ए चार गुणगणो आयुःकर्मनो एकज जांगो होय तथा ह्रीणमोह सयोगी अने अयोगी ए त्रण गुणगणाने विषे मनुष्यायुनो उदय अने मनुष्यायुनी सत्ता, ए एकज जांगो होय. ए मिथ्यात्वादिक चौद गुणगणो आयुःकर्मना बंधोदय सत्ता संवेधें जांगा क ह्या. ते सर्व मज्जीने (१३५) थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४७ ॥

अथ गुणस्थानेषु मोहनीयस्य बंधस्थानान्याद् ॥ हवे चौद गुणगणा
ने विषे मोहनीयकर्मनां बंधस्थानक विवरिने कहे ठे.

गुणगणगेषु अष्टसु, इक्किं मोह बंधगणं तु ॥
पंचानिअट्टि गणा, बंधोवरमो परं तत्तो ॥ ४८ ॥

अर्थ- (गुणगणगेषुअष्टसु के०) मिथ्यात्वादिक आठ गुणगणो (इक्किंमो
हबंधगणंतु के०) मोहनीयकर्मनुं एकेकुं बंधस्थानक होय, एटले मिथ्यात्वे बावी
शानो बंध,सास्वादने एकवीशानो बंध,मिश्र अने अविरतियें सत्तर सत्तरनो बंध, देश
विरतियें तेरनो बंध तथा प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरण, ए त्रण गुणगणो नव
नव प्रकृतिनुं एकेकुं बंधस्थानक होय, तिहां जांगा मिथ्यात्वे ठ, सास्वादने चार,
मिश्रें बे, अविरतियें बे, देशविरतियें बे, प्रमत्तें बे अने अप्रमत्तें तथा अपूर्वकरणें
अरतिशोक, ए युगलना अजावें एकविध बंधने लीधे एकेको जांगो होय. तथा
(पंचानिअट्टिगणा के०) अनिवृत्ति वादरें पांच, चार, त्रण, बेअने, एक, ए पांच
बंधस्थानक, पांच जागें होय. तिहां जांगो एकेको होय. (बंधोवरमोपरंतत्तो के०)
तेवार पढी सूक्ष्मसंपरायादिक गुणगणो मोहनीय कर्मनो बंध नथी, माटें बंधने अ
जावें मात्र उदयस्थानकज होय, ते कहे ठे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ४८ ॥
अथ उदयस्थानान्याद् ॥ हवे चौद गुणगणो मोहनीयकर्मनां उदयस्थानक कहे ठे.

सत्ताइ दसठ मिहे, सासायण मीसए नवुक्कोसो ॥
ढाई नवनु अविरई, देसे पंचाइ अठेव ॥ ४९ ॥

अर्थ- (मिहे के०) मिथ्यादृष्टिने (सत्ताइदसठ के०) सातथी दश पर्यंत
४-८-९-१० ए चार उदयस्थानक होय. तिहां जांगानी चोवीशी पूर्वे कही, तेरीतें
अहीं पण आठ चोवीशी जाणवी. तथा (सासायणमीसएनवुक्कोसो के०) सास्वा
दन अने मिश्र, ए बे गुणगणो सातथी मांझिने नव पर्यंत सात, आठ अने नव,
ए त्रण उदयस्थानक होय. तिहां सास्वादने चार चोवीशी अने मिश्रें पण चार
चोवीशी जांगानी उपजे तथा (ढाईनवअविरई के०) अविरति गुणगणो तथी
मांझिने नव पर्यंत एटले ठ, सात, आठ अने नव, ए चार उदयस्थानक होय.
तिहां जांगानी चोवीशी आठ उपजे तथा (देसेपंचाइअठेव के०) देशविरति गु

गुणताये पांचथी मांमीने आठ पर्यंत एटले पांच, ष, सात अने आठ, ए चार उदय स्थानक होय. तिहां पण जांगानी आठ चोवीशी उपजे ॥ इति स० ॥ ४९ ॥

विरए खनुवसमिए, चउराई सत्त षड्ध पुर्वमि ॥

अनियट्टि बायरे पुण, इक्कोव ड्डवेव उदयसा ॥ ५० ॥

अर्थ—(विरएखनुवसमिए के०) श्रेणीथी हेते वर्ततो तेने ह्यायोपशमिक विरतो कहीये. ते ह्यायोपशमिक विरति प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणतायावालो जाणवो. तिहां प्रमत्त अने अप्रमत्त प्रत्येके प्रत्येके, (चउराईसत्त के०) चारथी मांमीने सात पर्यंत चार, पांच, ष अने सात, ए चार उदयस्थानक होय, तिहां जांगानी आठ चोवीशी प्रमत्त अने आठ चोवीशी अप्रमत्त उपजे तथा (षड्धपुर्वमि के०) अपूर्वकरणगुणताये चारथी मांमीने ष पर्यंत एटले चार, पांच अने ष, ए त्रण उदयस्थानक होय. तिहां चार चोवीशी जांगानी थाय. तथा (अनियट्टि बायरेपुण के०) वली अनिवृत्तिबादर गुणतायाने विषे (इक्कोवड्डवेवउदयसा के०) एक अथवा बे उदयस्थानक होय. तिहां संज्वलना चार कषाय मांहेलो एक कषाय अने त्रण वेदमांहेलो एक वेद, ए बे प्रकृतिनुं स्थानक होय. तिहां चार कषायने त्रण वेदना विकल्पें गुणतां बार जांगा थाय. तेवार पढी वेदनो उदय टले थके एकना उदयनुं स्थानक रहे, ते चतुर्विध, त्रिविध, द्विविध अने एकविध बंधने विषे पामीये. तिहां यद्यपि पूर्वे चतुर्विधबंधें चार, त्रिविधबंधें त्रण, द्विविधबंधें वे अने एकविधबंधें एक, एवं दश उदय जांगा कहा ठे. तो पण अहीं आं सामान्य विवहायें चार, त्रण, बे अने एक, ए चार बंधस्थानकनी अपेहायें एकेक जांगो लेखवतां चार जांगा विवहीये, एटले नवमे गुणताये शोल जांगा होय.

एगं सुहुम सरागो, वेएइ अवेअगा जवे सेसा ॥

जंगाणं च पमाणं, पुवुद्धिणेण नायवं ॥ ५१ ॥

अर्थ—(एगंसुहुमसरागो के०) सूक्ष्म संपराय गुणताये एक कीटिकृत संज्वलनो लोच (वेएइ के०) वेदे, ते माटें एकनुं उदयस्थानक होय. तेनो एक जांगो होय एटले दशमे गुणताये बंध विना एक संज्वलना लोचनो उदय होय. अने (अवेअगानवेसेसा के०) शेष उपरला उपशांतमोहादिक चार गुणताये मोहोदय नथी माटें अवेदक होय केमके तिहां मोहनीयनो उदय न होय. अहींआं

ध्यात्वादिक गुणगणो उदयस्थानकना (जंगाणंचपमाणं के०) जांगानुं प्रमाण
अने जांगानुं उपजावतुं ते, (पुबुद्धिष्ठेणनायवं के०) पूर्वे मोहनीयना उदयस्थान
क विचारवाने अवसरें देखाड्यां ठे तेमज पूर्वोक्त प्रकारें जाणवां ॥ इति ॥ ५१ ॥
हवे ए दशादिक उदयस्थानकें गुणगणा आश्रयी जांगानी संख्या कहे ठे.

इक्कग षडिक्रियारि, क्कारस इक्कार सेव नव तिन्नि ॥
एए चनुवीस गया, बारडुगं पंच इक्कमि ॥ ५२ ॥

अर्थ- दशनें उदयें (इक्कग के०) एक चोवीशी जांगानी मिथ्यात्व गुणगणो
जाणवी, केमके ए दशनो उदय, मिथ्यात्वेज ठे माटे. तथा नवने उदयें (षड
के०) ष चोवीशी जांगानी, तेमध्यें मिथ्यात्वे त्रण, सास्वादने एक, मिश्रें एक अने
अविरतियें एक. तथा आठने उदयें (इक्कियार के०) अगीअार चोवीशी. ते मध्यें
मिथ्यात्वे त्रण, सास्वादने बे, मिश्रें बे, अविरतियें त्रण अने देशविरतियें एक. तथा
सातने उदयें पण (इक्कारस के०) अगीअार चोवीशी, तेमध्यें पहले, बीजे अने
त्रीजे, गुणगणो एकेकी, चोथे अने पांचमे त्रण त्रण, तथा षठे अने सातमे एकेक,
तथा ठने उदयें पण (इक्कारसेव के०) अगीअार चोवीशी, तिहां चोथे अने आ
ठमे एकेकी तथा पांचमे, षठे अने सातमे त्रण त्रण, तथा पांचने उदयें (नव
के०) नव चोवीशी. तिहां एक देशविरतियें तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त त्रण त्रण
अने अपूर्व करणे बे. तथा चारने उदयें (तिन्नि के०) त्रण चोवीशी. तिहां प्रम
त्त, अप्रमत्त अने अपूर्व करणें एकेकी जाणवी. (एएचउवीसगया के०) ए सर्व
मलीने बावन चोवीशी थइ. तथा (डुगं के०) बेने उदयें (बार के०) बार जां
गा अने (इक्कमि के०) एकने उदयें (पंच के०) पांच जांगा, एम सर्व मली बा
वन चोवीशी अने उपर सत्तर जांगा थया ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५३ ॥

हवे सर्व जांगानी शरवाले संख्या कहे ठे.

बारस पणसठिसया, उदय विगण्णेहि मोहिआ जीवा ॥
चुलसीई सत्तुत्तरि, पयविंद सण्हि विन्नेआ ॥ ५३ ॥

अर्थ- बावन चोवीशीने चोवीश गुणा करी द्विकोदयना बार अने एकोदयना
पांच, एवं सत्तर जांगा नेलीयें, तेवारें (बारसपणसठिसया के०) बारस ने पांशठ
जांगा थाय. (उदयविगण्णेहिमोहिआजीवा के०) एटला उदयने जागे करीने सर्व

संसारी जीव मोहनीयकर्म मोह्या मुंजाणा पड्या ठे. हवे तेनी पदसंख्या कहे ठे. अर्हीआं मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी क्रोध इत्यादिक मोहप्रकृतिने (पय के०) पद एवी संज्ञा कही ठे. तेना (विंदसएहि के०) वृंद जे दश, नव, इत्यादिक उदय नांगाना पद एटले प्रकृति तेना शतक एटले शेंकडा केटला थाय ? ते कहे ठे. (चुलसी ई के०) चोराशी शो अने उपर (सनुचरी के०) सचोतेर थाय एटला मोहनीय कर्मना पदवृंद करी सर्व जीव मुंजाणा थका (विन्नेआ के०) जाणवा. अर्ही एकेका नांगामांहे मोहनीयनी जेटली प्रकृति बोलाय ते नांगामांहे तेटला पद कहीयें. जेम दशने उदयें एक चोवीशी माटे दशने दश गुणा करीयें तेवारें दश चोवीशी थाय. नवने उदयें ठ चोवीशी माटें ठ गुणा करतां चोपन चोवीशी थाय, एम आठने उदयें अगीआर चोवीशीयें गुणतां अठ्याशी, सातने अगीआरें गुणतां सच्योतेर, ठने अगीआरें गुणतां ढाशठ, पांचने नवें गुणतां पीस्तालीश, चारने त्रयो गुणता बार, ए सर्व मलो त्रयणें बावन चोवीशी थाय. ते एकेकमध्ये चोवीश ठे माटे चो वीश गुणा करतां (८४४८) थाय. तेमध्ये द्विकोदयना बारने डुगुणा करतां चो वीश थाय तथा एकोदयना पांच, एवं उंगणत्रीश जेलीयें तेवारें ८४४४ एटला मोहनीयतां पदवृंद गुणताणानी अपेह्यें थाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५३ ॥

अय मिथ्यादृष्ट्यादिषु उदयजंगसूचिकाजाण्यगाथामाह ॥ हवे मिथ्यात्वादिक गुणताणे प्रत्येकें मोहनीयना उदय नांगा प्ररूपवाने अर्थे जाण्यगाथा कहे ठे.

अठग चउ चउ चनुर, ठगाय चउरो अ-हुंति चउवीसा ॥

मिहाइ अपुवंता, बारस पणगं च अनिअट्टी ॥ ५४ ॥

अर्थ—(मिहाइअपुवंता के०) मिथ्यात्वथी मांझीने अपूर्वकरणनामा आठमा गुणताणा पर्यंत अनुक्रमें नांगा कहे ठे. एटले मिथ्यात्वे (अठग के०) आठ चोवीशी, सास्वादने (चउ के०) चार चोवीशी, मिश्रें (चउ के०) चार चोवी शी, तेवार पढी चोथे, पांचमे, ठठे अने सातमे, ए (चउरठगाय के०) चार गु णताणे आठ आठ चोवीशी अने आठमे गुणताणे (चउरोअहुंतिचउवीसा के०) चार चोवीशी नांगानी उपजे. एम मिथ्यात्वथी मांझीने अपूर्वकरण लगे बावन चोवीशी नांगानी थाय. पढी (बारसपणगंचअनिअट्टी के०) अनिवृत्ति गुणताणे वेने उदयें बार नांगा अने एकने उदयें चार नांगा तथा एक नांगो एकोदयें

सूक्ष्मसंपरायनो, एवं सत्तर जांगा उपर आय. तेनी साथें बावन्न चोवीशीना १३४७
मेजवतां (१३६५) जांगा आय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५४ ॥

अथैषां जंगानां पदानां योगादिनिर्गुणानाह ॥ हवे ए मोहनीयना उदय जांगा
तथा उदय पदवृंद ते योग, उपयोग अने लेख्या साथें गुणवा, ते उपदेश कहे ठे.

जोगोवउंग लेसा, इएहिं गुणिआ हवंति कायवा ॥

जे जळ गुणछाणे, हवंति ते तळ गुणकारा ॥ ५५ ॥

अर्थ-(जोगोवउंगलेसाइएहिं के०) योग, उपयोग, अने लेख्यादिकें करीने
उदय जांगा तथा पदवृंद ते (गुणिआहवंतिकायवा के०) गुणा करवा ते (जेजळ
गुणछाणे के०) मिथ्यात्वादिक गुणगणें जे जिहां योग, उपयोग, लेख्या, जेट
जां (हवंति के०) होय. (तेतळगुणकारा के०) ते तिहां तेतळा गुणा करवा ॥ ५५ ॥

तिहां प्रथमयोगना गुणाकारनी जावना लखीयें ठैयें. चार मनोयोग, चार व
चन योग अने औदारिक काययोग, ए नव योग तो मिथ्यात्वथी मांदिने दशमा
गुणगणा पर्यंत दश गुणगणे होय. ते दश गुणगणाना सर्वसंख्यायें उदयजांगा
(१३६५) ठे. तेने नव योग साथें गुणतां (११३७५) उदयना जांगा आय.

तथा वली मिथ्यादृष्टिने वैक्रिय काययोगें वर्त्ततां आठ चोवीशी जांगानी होय.
तथा वैक्रियमिश्र, औदारिकमिश्र अने कार्मण, ए त्रण योगें वर्त्ततां मिथ्यात्वीने
प्रत्येकें आठना उदयनी एक, नवना उदयनी बे अने दशना उदयनी एक, एवं
चार चार चोवीशी जांगानी अनंतानुबंधीआ सहितवाली पामीयें, परंतु बीजी
चार चोवीशी अनंतानुबंधीआना उदय विनानीन पामीयें, जे जणी जेणे पूर्वे सत्य
क्त्वे करी अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या होय, तेवली कर्मवर्गें परिणामनी पराव
र्त्तियें मिथ्यात्व पामे, तेवारें फरी अनंतानुबंधीआ बांधवा मांमतां मात्र बांधवल
का जगेंज अनंतानुबंधीआना उदय न पामीयें अने एवीरीतें जे अनंतानुबंधीआ
विसंयोजीने मिथ्यात्वे आवे, तेतुं जघन्यथी पण अंतरमुहूर्तायुतो अवश्य होय.
केमके अनंतानुबंधीआना उदय विना मिथ्यात्वीने काल करवा निषेधो. ठे. ते
जीव, तिहां रह्यो मिथ्यात्व प्रत्ययें वली अनंतानुबंधीआ बांधे, ते उदय आख्या
पढी मरण पामीने जेवारें बीजे स्थानकें जाय, तेने वचालें अपांतरालगतियें वर्त्त
तां तथा उपजती वेलायें ए त्रण योग अनंतानुबंधीआना उदय विनाना मिथ्यात्वीने
होय. तिहां कार्मणयोग वाटें वर्त्ततां जीवने होय तथा औदारिकमिश्र योग ति

थैच मनुष्यने उपजती वेलायें होय अने वैक्रियमिश्र देव तथा नारकीने उपजती वेलायें होय. ए प्रायिक बोलठे. अन्यथा मिष्यात्वी तिर्थेच मनुष्यने वैक्रियशरीर करतां तथा मूकतां पण वैक्रियमिश्र योग होय पण ते चूर्णिकारें अहींआं विव द्युं नथी, एम अगल पण चूर्णिकारनो मत जाववो. ते माटें ए त्रण योगने वि पे अनंतानुबंधीआना उदय रहितनी चार चार चोवीशी जांगानी ठे. ते न पामी यें बाकी चार चार चोवीशीज पामीयें शरवाले वीश चोवीशी मिष्यात्वे होय. तथा सास्वादने कार्मणयोगें चार, वैक्रियकाय योगें चार, अने औदारिक मिश्रकाययोगें चार, एवं बार चोवीशी होय तथा मिश्रदृष्टिने वैक्रिय काययोगें चार चोवीशी होय. तथा अविरति सम्यक्दृष्टिने मात्र वैक्रिय काययोगेंज आठ चोवीशी होय.

तथा देशविरतियें वैक्रिययोगें आठ अने वैक्रियमिश्र योगें आठ, एवं शोल चो वीशी थाय तथा प्रमत्त साधुने पण वैक्रियें तथा वैक्रियमिश्रयोगें प्रत्येकें आठ आठ चोवीशी गणतां, शोल चोवीशी थाय तथा अप्रमत्त साधुने वैक्रिय योगें आठ चोवीशी अने वैक्रिय मिश्रतो अप्रमत्तने न होय केमके चोथा गुणठाणाथी उप रांत वैक्रिय तथा वैक्रियमिश्रकाय योग लब्धि प्रत्ययिक होय. तेमांहे वैक्रिय मिश्रकाययोग तो वैक्रियशरीर आरंजतां तथा मूकतां वखतज होय अने अप्रमत्त साधुने तो विद्युदपणाथी लब्धि प्रयुंजवाने अजावें वैक्रियनुं आरंजनुं नथी तथा मूकनुं पण नथी अने प्रमत्त साधुने वैक्रिय आरंजी पठी विद्युदिने वज्ञें वैक्रिय शरीर ठतां अप्रमत्त थाय, ते अपेहायें अप्रमत्तने वैक्रियकाययोग होय, ते माटें अप्रमत्तें वैक्रियनी आठ चोवीशी कही एटले शरवाले वैक्रिययोगें मिष्यात्वे आठ, सास्वादने चार; मिश्रें चार, अविरतियें आठ, देशविरतियें आठ, प्रमत्तें आठ, तथा अप्रमत्तें आठ, एवं अडतालीश चोवीशी अइ. तथा वैक्रियमिश्रकाययोगें मिष्यात्वे चार देशविरतियें आठ अने प्रमत्तें आठ, एवं वीश चोवीशी अइ तथा औदारिक मिश्रयोगें मिष्यात्वे चार अने सास्वादने चार, एवं आठ चोवीशी थाय. तथा कार्मण योगें पण मिष्यात्वे चार अने सास्वादने चार, एवं आठ चोवीशी थाय. एम सर्व मली चोराशी चोवीशी जांगानी थाय. तेने चोवीशें गुणतां (३०१६) जांगा थाय. ते पूर्वोक्त नव योग साथें गुणोला (११३८५) जांगा साथें मेजवतां (१३४०१) जांगा थाय.

हवे वैक्रियमिश्रने सास्वादने तथा चोथे गुणठाणे कार्मणयोगें वर्त्तताने विज्ञे प ठे. ते नणी तेना जांगा जूदा कही देखाडे ठे. वैक्रिय-मिश्रयोगें सास्वादने वर्त्तताने नपुंसकवेदना उदय न होय, जे नणी वैक्रिय-मिश्रयोगी नपुंसकवेदने

नारकी प्रमुखमांहे सास्वादने वर्त्ततां उपजतुं नथी ते नणी वैक्रियमिश्रयोगे जे चार चोवीशी उदय जांगानी ठे, ते मध्येंथी नपुंसकवेदथी उत्पन्न थयेला आठ, आठ जांगा टले. बाकी शोल शोल जांगा रहे माटे चार चोवीशीने ठामे चार षोडशक जांगा सास्वादने वैक्रियमिश्र योगीने होय.

तथा अवरिति सम्यक्दृष्टि वैक्रियमिश्र तथा कर्मणयोगी, ए बेदुने स्त्रीवेदनो उदय न होय जे नणी वैक्रिय काययोगी अवरिति सम्यक्दृष्टि जीव, स्त्रीवेदमां हे न उपजे, ते माटे चोथे गुणठाणे ए बेदु योगे वर्त्तताने आठ, आठ चोवीशीने ठामे आठ आठ षोडशक जांगा होय. अहींथां केवल स्त्रीवेदना विकल्पथी उपजेला आठ आठ जांगा, चोवीशी चोवीशीमांहेथी काढीये. ए टीकाकारनुं मत अवलंबीने कहुं ठे अन्यथा चूर्णिमांहे तो कदाचित् स्त्रीवेदी मांहे पण अवतरे. एम पण कहुं ठे. तेनो पाठ " कयावि दुक्त विवेच्येसुवि वेदवि मीसगस्त "

तथा प्रमत्तसाधुने आहारक तथा आहारक मिश्र ए बे योगे वर्त्ततां स्त्रीवेदनो उदय न होय जे नणी आहारक मिश्रयोग चौद पूर्वधर पुरुषनेज होय स्त्रीने तो चौद पूर्वनुं नणतुं निषेधुंठे जे नणी सूत्रे कहुंठे के "तुहागारवबहुला, चलिंदिया दुब्बलाअधीइए ॥ इय अइवसेस ज्ञायणा, नूअवाठ अ नो ङीणं ॥१॥ (नूतवाद के०) दृष्टिवाद जे बारसुं अंग, ते स्त्रीने न जणावतुं, जे नणी स्त्री जाति स्वनावें तोढडी होय ठे तेमाटे गर्व घणो करे, विद्या जीरवी न शके. इडिय चंचल होय, बुद्धि उढी होय ते माटे ए अतिशय पाठ नणी स्त्रीने निषेधुं ठे ते दृष्टिवादमांहे चोथे अधिकारें पूर्व ठे माटे पूर्व जण्या विना स्त्रीआहारक शरीर न करे, ते माटे प्रमत्त अप्रमत्त गुणठाणे प्रत्येक एकेकार्योगे उदय जांगानी आठ आठ चोवीशी मांहे थी स्त्री वेदना त्रीजा जागना आठ जांगा कहाडतां शेष शोल षोडशक जांगा होय.

तथा अप्रमत्त साधु एक आहारकयोगीज होय परंतु आहारकमिश्रयोगी न होय केमके ए योगतो आहारक शरीर आरंजतां तथा मूकतां होय ते तो अप्रमत्त साधुने लब्धिनुं प्रयुंजतुं नथी तेनणी अहीं जांगानां आठ षोडशक होय. ए सर्व चुम्मालीश षोडशक थयां. ते चुम्मालीशने शोले गुणतां (४०४) जांगा थया, ते पूर्वोक्त (३३४०१) मध्यें मेलवतां (१४१०५) उदय जांगा थया.

तथा औदारिक मिश्रकाययोगीने चोथे गुणठाणे स्त्रीवेद अने नपुंसकवेदनो उदय न होय, तेमांहे औदारिक मिश्रयोगी सम्यक्दृष्टिने उपजतुं नथी ते नणी ए चोथे गुणठाणे आठ चोवीशीने स्थानके केवल पुरुषवेद विकल्पना औ

दारिकमिश्रयोगें आठ अष्टक जांगा होय. अर्हीआं बे वेदना शोल जांगा प्रत्येक चोवीशी मध्येची टालवा. ए प्रायिक बोल जाणवो अन्यथा ब्राह्मी, सुंदरी, मल्लीनाथ, राजीमती प्रमुख सम्यक्दृष्टि थकां अर्हीआं स्त्रीवेदें उपन्यां, तिहां उपजतां औदारिकमिश्र योग केम न होय, माटे ए केम घटे? ए आठ अष्टकना चोशठ जांगा पूर्वला (१४१०५) मांहे मेलवतां (१४१६९) उदय जांगा थया ॥ ५५ ॥

अथ पदवृंदानि योगगुणितानि जाव्यंते. तत्रोदयप्ररूपिका जाष्यगाथामाह ॥ हवे उदयपदवृंद योग साथें गणवां, ते जावे ठे. तिहां चौद गुणठाणे उदय पदवृंद प्ररूपवाने अंतर जाष्यगाथा कहे ठे.

अष्टद्वी बत्तीसं, बत्तीसं सति मेव बावन्ना ॥

चोआल दोसु वीसा, मिह्ना माईसु सामन्नं ॥५६॥

अर्थ- मिथ्यात्व गुणठाणे (अठ्ठी के०) अडशठ पद, सास्वादनें (बत्तीसं के०) बत्तीस पद, मिश्रें (बत्तीसं के०) बत्तीस पद, अविरतियें (सति के०) शाठ पद, (मेव के०) एमज देशविरतियें (बावन्ना के०) बावन पद, तेवार पढी प्रमत्त अने अप्रमत्त ए (दोसु के०) बे गुणठाणे प्रत्येकें (चोआल के०) चुम्मालीश चुम्मालीश पद होय. तथा अपूर्वकरणें (वीसा के०) वीश पद होय. ए सर्व मली (३५३) पद होय. एटली चोवीशी थाय. माटें एने चो वीश गुणा करतां (८४४८) थाय अने अनिवृत्तिबादरें द्विकोदयना बार जांगा तेमाटें तेने बमणा करीयें, तेवारें चोवीश थाय. तेनी साथें एकोदयना पांच जांगा मेलवतां उगणत्रीश थाय. ते पूर्वला (८४४८) मध्ये जेलतां (८४४९) एटलां मोहनीयना उदय पदवृंद (मिह्नामाईसुसामन्नं के०) मिथ्यात्व आदें देइने सर्व गुणठाणे थइने सामान्यपणे थाय. हवे उदय पदवृंद योग साथें गणवां. ते जावीयें ठेयें. तिहां पूर्वोक्त (८४४९) पदवृंद थयां ठे तेने चार मनोयोग, चार वचन योग, तथा औदारिककाययोग, ए नव योग तो दशमा गुणठाणा जगें ध्रुव होय माटें नवे योग साथें गुणतां (९६३९३) पदवृंद नव योगसाथें गुणतां थाय. मिथ्यात्व गुणठाणे सातना उदयनी एक चोवीशी जांगानी ठे ते माटें सात एकुं सात तथा आठना उदयनी त्रण चोवीशी ठे माटें आठ त्रिक चोवीश, एम नव त्रिक सत्तावीश, दश एकुं दश, एम मिथ्यात्वे अडशठ पद थाय तथा तेवार पढी सर्व गुणठाणे जेटलां जेटलां उदयरुथानक होय. ते एकेका उदयें जेटली जेटली जांगानी चोवीशी ठे. तेटली उदयना आंक साथें गुणीयें, तेवारें पद थाय.

हवे वैक्रिययोगे मिथ्यात्वे अदशत पद, आठ चोवीशी ठे तेमाटे. अने वैक्रियमिश्रे अनंतानुबंधी सहित चार चोवीशी पामीथें, तेमाटे आठनो उदय एक जे दे, माटे आठ एकुं आठ अने नवनो उदय बे जेदे, माटे नवे डु अठार अने दशानो उदय एक जेदे, माटे दश एकुं दश, एवं त्रिशी पद थयां. तेमज औदारिकमिश्रे पण त्रिशी अने कार्मणें पण त्रिशी, शरवाले (१७६) मिथ्यात्व गुणठाणे चार योगनां उदय पद थाय. तथा सास्वादने वैक्रिययोगें बत्रीश, औदारिक मिश्रे बत्रीश, कार्मणें बत्रीश, मली ठुं थाय. तथा मिश्र गुणठाणे वैक्रिययोगें बत्रीश थाय. एम त्रण गुणठाणे मली (३०४) उदय पद थाय. तथा वैक्रिययोगें चोथे गुणठाणे शाठ, पांचमे बावन्न, ठेठे चुम्मालीश अने सातमे चुम्मालीश, शरवाले बशी उदयपद थाय. तेनी साथें आगल त्रण गुणठाणाना (३०४) जेलतां (५०४) थाय.

तथा वैक्रियमिश्रयोगें देशविरतियें बावन्न, प्रमत्तें चुम्मालीश, शरवाले ठुं थया. तेपूर्वोक्त पांचशो चार साथें जेलतां तशो उदयपदनी चोवीशी थाय, ए सर्वे नो विधि पूर्वें उदय जांगामां कह्यो ठे तेने चोवीशगुणा करतां (१४४००) पद थाय.

तथा वैक्रियमिश्रयोगें सास्वादने नपुंसकवेद न होय, ते जणी. बत्रीश षोडशक थाय तथा चोथे गुणठाणे वैक्रियमिश्र तथा कार्मणयोगें स्त्रीवेद न होय माटे शाठ शाठ षोडशक होय. एवं (१५१) षोडशक थयां. तथा प्रमत्तें अने अप्रमत्तें, ए बे गुणठाणे आहारक योगीने स्त्रीवेद न होय माटे. बे वेद आश्री प्रत्येक गुणठाणे चुम्मालीश चुम्मालीश षोडशक थाय अने प्रमत्तें आहारक मिश्रयोगीना चुम्मालीश षोडशक जेवां. एवं सर्व मली (३८४) षोडशकने शोल गुणां करतां (४५४४) थाय तेनी साथें पूर्वला (७६३९३) तथा (१४४००) जेलवतां (९५३३७) थया. तथा औदारिकमिश्रयोगीने चोथे गुणठाणे स्त्रीवेद तथा नपुंसकवेद न होय ते जणी तिहां मात्र पुरुषवेदनाज शाठ अष्टक जांगा जेवा तेना (४८०) थाय. ते पूर्वला राशिमांहे जेलतां (९५७१७). एठला पदवृंद योगसाथें गुणतां थाय. यदुक्तं “ सत्तरस सत्तसथा, पण नउई सहस्त पयसंखा ” इति वचनात्.

हवे उपयोग साथें गुणतां जे उदय जांगा होय ते कहियें ठैयें. तिहां मिथ्यात्व अने सास्वादने ए बे गुणठाणे प्रत्येकें एक मतिअज्ञान, बीछुं श्रुतअज्ञान, त्रीछुं विचंगअज्ञान, चोथुं चक्रुदर्शन, पांचमुं अचक्रुदर्शन. ए पांच उपयोग होय तथा त्रीजे, चोथे अने पांचमे ए त्रण गुणठाणे त्रण ज्ञान अने अवधिदर्शन सहित त्रण दर्शन, एवं त उपयोग प्रत्येकें होय तथा ब्रह्मशी दशमा गुणठाणा जगें

तेहीज ङ उपयोग साथें सातसुं मनःपर्यवज्ञान पण होय माटे सात उपयोग होय.

तिहां मिथ्यात्वें आठ अने सास्वादने चार, एवं बार चोवीशी जांगानी वे गुण गुणारो मलीने ठे. तेने पांच उपयोग साथें गुणतां शाठ चोवीशी थाय. तथा मिश्रें चार, अविरतियें आठ अने देशविरतियें आठ, एवं त्रण गुणारो वीश चोवीशी जांगानी ठे. तेने ङ उपयोग साथें गुणतां (११०) उदय जांगानी चो वीशी थाय. तथा प्रमत्तनी आठ, अप्रमत्तनी आठ, अपूर्वकरणनी चार, एवं त्रण गुणारो वीश चोवीशीने सात उपयोग साथें गुणतां (१४०) चोवीशी उदय जांगानी थाय. अहीं सुधी सर्व मली (३१०) चोवीशी उदय जांगानी थइ. तथा जे आचार्य, मिश्र गुणारो पण पांच उपयोग माने ठे. तेना मते (३१६) चोवीशी थाय. तिहां पहेला मते (३१०) ने चोवीश गुणा करतां (४६००) जांगा थाय. अने बीजा आचार्यना मते चार चोवीशी काहाडी नाख तां (३१६) ने चोवीश गुणा करतां (४५०४) जांगा थाय. तेवार पढी द्विकोदय ना बार जांगा अने एकोदयना पांच, एवं सत्तर जांगाने सात उपयोग साथें गुणतां (११९) जांगा थाय ते पूर्वली राशिमांहे जेलतां (४४९९) उदय जांगा थाय, तथा मिश्र गुणारो पांच उपयोग माने, तेना मते (४४०३) उदयस्थान जांगा थाय.

हवे एनां पदवृंद विचारें ठे. तिहां मिथ्यात्वें सामान्य पद अडशठ अने सास्वादने बत्रीश, एवं एकशो अयां तेने पांच उपयोग साथें गुणतां पांचशें पद थाय. ए चोवीशीना आदि पद ते नणी चोवीश गुणा करतां बार हजार पदवृंद थाय.

तथा मिश्रें बत्रीश, अविरतियें शाठ अने देशविरतियें बावन्न, ए त्रण गुणारो एना (१४४) सामान्यपद ठे तेने ङ उपयोग साथे गुणतां (०६४) चोवीशी उदयपदनी थाय, तेने चोवीश गुणा करतां (१०४३६) पदवृंद थाय.

तथा प्रमत्तें चुम्मालीश, अप्रमत्तें चुम्मालीश, अने अपूर्वकरणो वीश, एम त्रण गुणारो थइ (१००) सामान्यपद थाय. तेने सात उपयोग साथें गुणतां (४५६) पद थाय. तेने चोवीश गुणा करतां (१०१४४) पदवृंद थाय. ए सर्व मली (५००००) एटलां दश उपयोग साथें आठ गुणारो पदवृंद थाय. तेमध्ये द्विकोदयना चोवीश अने एकोदयना पांच, ए उगणत्रीशने सात उपयोग साथें गुणतां (१०३) थाय. ते पूर्वला पदवृंद राशिमध्ये जेलीयें, तेवारें (५१००३) एटला दश उपयोगना दश गुणारो थइ पदवृंद थाय तथा पूर्वला मतांतरें सर्व सामान्य पद (१०००) होय तेने चोवीश गुणा करतां (५०१११) थाय ते

मांहे (१०३) द्विकोदयवालां पद जेलतां (५०३१५) पदवृंद उपयोग साथें थाय.

हवे लेख्यासाथें मोहनोयना उदय जांगा विचारे ठे, तिहां मिथ्यात्वथी मांमिने चोथा गुणगणा लगे ठए लेख्या होय माटे चार गुणगणानी चोवीश चोवीशी ने ठ लेख्या साथें गुणतां (१४४) चोवीशी थाय. तथा पांचमे, ठेठे अने सातमे ए त्रण गुणगणे कृष्णादिक त्रण लेख्या मांहे देशविरति तथा सर्वविरतिनुं प डिवजनुं न होय तेथी प्रथमनी त्रण लेख्या अर्हीआं निषेधी माटे वाकी तेजो, पद्म अने शुक्ल, ए त्रण लेख्या होय अन्यथा देशविरति तथा सर्व विरति लह्या पती तो ठ लेख्या पण होय. ए वचन विरोध न विचारवो, माटे ए त्रण गुणगणानी चोवीश चोवीशीने त्रण लेख्यायें त्रिगुणा करतां बहोत्तर चोवीशी थाय. तथा अपूर्वकरण गुणगणे एक शुक्ललेख्याज होय माटे चार चोवीशी होय. ए सर्व मली बरों ने वीश थाय तेने चोवीश गुणा करतां (५१८०) जांगा थाय. तेमध्ये द्विकोदयना बार अने एकोदयना पांच, ए सत्तरमध्येतो एकज शुक्ल लेख्या होय, माटे ते सत्तर जांगा जेलतां (५१९४) उदय जांगा लेख्या साथें थाय.

हवे लेख्यायें पदवृंद कहे ठे. तिहां मिथ्यात्वें अडशठ, सास्वादने वत्रीश, मिश्रें वत्रीश अने अविरतियें शाठ, शरवाले (१९१) सामान्य पद होय. तेने ठ लेख्यायें गुणतां (११५१) थाय. तथा देशविरतियें बावन्न, प्रमत्तें चुम्मालीश अने अप्रमत्तें चुम्मालीश. एवं (१४०) तेने त्रण लेख्यायें त्रिगुणा करतां (४३०) थाय. तथा अपूर्व करणे वीश तिहां एक शुक्ल लेख्यायें गुणतां वीश थाय एम शरवाले (१५९१) लेख्यायें सामन्यपद थाय. तेने चोवीश गुणा करतां (३८१०८) थाय. तेमध्ये द्विकोदयना चोवीश अने एकोदयना पांच, जेलतां (३८१३४) एटला पदवृंद लेख्या साथें गुणतां थाय. एनी गाथा कहे ठे “ तिगहीणा तेवन्ना, सयाळ उदयाण हुंति सेसाळ ॥ अडतीस सहस्साईं, पयाण सयदोय सगतीसा ॥ १ ॥ ” एम योग उपयोग लेख्या साथें मोहनोयना उदयस्थानकना जांगा विचारवा वली सुबुद्धियें विशेषें विचारवा ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ५६ ॥

अथ सत्तास्थानान्याह ॥ हवे गुणगणे मोहनोयकर्मनां सत्तास्थानक कहे ठे.

तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग पुवे ॥

इक्कारबायरंमिठ, सुद्धुमो चउतिनि उवसंते ॥ ५७ ॥

असं—(तिन्नेगे के०) एक मिथ्यात्वगुणगणे त्रण सत्ता स्थानक होय, ति

हां जे त्रण पुंज करी मिथ्यात्वे जाय, तेने अष्टावीशनी सत्ता, तेमध्येथी सम्यक्त्व पुंज उवेव्या पढी सत्तावीशनी सत्ता, मिश्रपुंज उवेव्या पढी अथवा अनादि मिथ्या त्वीने षष्ठीशनी सत्ता जाणवी. एनी जावना सर्व पूर्वे मोहनीयनां सत्तास्थानक सामान्ये विचारवाने. प्रस्तावे विस्तारें जावी ठे. तेमाटे अर्हीआं नथी जावता तथा (एगेगं के०) एकःसाखादने एकज अष्टावीशनुं सत्तास्थानक होय, जे नणी ए गुणठाणुं त्रण पुंज ढतां सम्यक्त्व वमतांज होय, तेमाटे. तथा (तिगमीते के०) मिश्रगुणठाणे त्रण सत्तास्थानक होय. तिहां त्रिपुंजीने अष्टावीशनुं, सम्यक्त्व उवेजे सत्तावीशनुं तथा अनंतानुबंधीआ विसंयोज्या पढी जे पढतो मिश्रे आवे, तेने चोवीशनुं सत्तास्थानक जाणवुं तथा चोथे, पांचमे, ढठे अने सातमे ए (चउसु के०) चार गुणठाणे प्रत्येके (पंच के०) पांच पांच सत्तास्थानक होय, तिहां त्रण पुंज ढतां अष्टावीशनुं, अनंतानुबंधीआ विसंयोज्ये चोवीशनुं, तेमध्येथी मिथ्यात्व ह्य गये त्रेवीशनुं, तेमाथी मिश्रह्ये बावीशनुं, तेमाथी सम्यक्त्व ह्ये एकवीशनुं एःसत्तास्थानक ह्यायिक सम्यक्दृष्टिने होय. तथा (तिगपुवे के०) अपूर्वकरथ गुणठाणे त्रण सत्तास्थानक होय, तिहां ह्यायिक सम्यक्दृष्टिने कृपकश्रेणीये अथवा उपशमश्रेणीये एकवीशनुं सत्तास्थानक तथा औपशमिक सम्यक्त्वे उपशमश्रेणीये अष्टावीश अने चोवीशनुं सत्तास्थानक होय तथा (इकारबायरं मिउ के०) बादर संपराये अगीआर सत्तानां स्थानक होय. तिहां अष्टावीश अने चोवीश उपशमश्रेणीनी अपेहाये अने एकवीशनी सत्ता, उपशमश्रेणीये ह्यायिक सम्यक्दृष्टिने होय अथवा कृपकश्रेणीये पण ज्यां सुधी आठ कषायनो ह्य नथी कसो, तिहां लगे एकवीशनी सत्ता होय; तेवार पढी आठ कषायना ह्ये तेरनी सत्ता तेमाथी नपुंसकवेदह्ये बारनी सत्ता, स्त्रीवेद ह्ये अगीआरनी सत्ता, हास्य षट्कने ह्ये पांचनी सत्ता, पुरुष वेद ह्ये चारनी सत्ता, संज्वलनक्रोध ह्ये त्रण नी सत्ता, संज्वलनमान ह्ये बेनी सत्ता, संज्वलन मायाह्ये एकनी सत्ता होय. तथा (सुदुमोचउ के०) सूक्ष्म संपराय गुणठाणे चार सत्तास्थानक होय. तिहां अष्टावीश, चोवीश, उपशमश्रेणीनी अपेहाये तथा एकवीशनुं ह्यायिक सम्यक्दृष्टिने उपशमश्रेणीनी अपेहाये अने एक प्रकृतिनुं सत्तास्थानक कृपकश्रेणीनी अपेहाये जाणवुं तथा (तिन्निठवसंते के०) उपशांतमोह गुणठाणे अष्टावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. ए पूर्वली परें जाववां.

हवे एनो संवेध कहे ठे. मिथ्यात्वे बावीशनुं एकज बंधस्थानक ठे. तिहां सां

त, आठ, नव अने दश, ए चार उदयस्थानक ठे. तेमध्ये सातने उदयें एकज अष्टावीशनी सत्ता होय अने बीजा त्रण उदयें अष्टावीश, सत्तावीश अने षष्ठीश, ए त्रण त्रण सत्ता प्रत्येकें होय. एवं मिष्यात्वे सर्व थइ दश सत्तास्थानक होय.

तथा सास्वादने एकवीशना बंधस्थानकें सात, आठ अने नव, ए त्रण उदय स्थानकने विषे प्रत्येकें अष्टावीशनी सत्ता होय. एम त्रण सत्तास्थानक होय.

तथा मिश्रें सत्तरनो बंध ठे, तिहां सात, आठ, नव, ए त्रण उदय स्थानकें प्रत्येकें अष्टावीश, सत्तावीश अने चोवीश, ए त्रण सत्ता गणतां नव सत्तास्थानक होय.

अविरतियें सत्तरनो बंध ठे, तिहां ठ, सात, आठ अने नव, ए चार उदय स्थानक होय. तिहां ठने उदयें अष्टावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय तथा सात अने आठ, ए बे उदयें प्रत्येकें अष्टावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच पांच सत्तास्थानक होय तथा नवने उदयें एकवीश विना बाकीनां चार सत्तास्थानक होय. एवं शरवाजे सत्तर सत्तास्थानक होय.

देशविरतियें तेरनो बंध ठे तिहां पांच, ठ सात अने आठ, ए चार उदय स्थानक होय. तिहां पांचने उदयें अष्टावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता होय. तथा ठने उदयें अष्टावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच सत्ता. तेमज सातने उदयें पण एज पांच सत्तानां स्थानक होय तथा आठने उदयें एक वीश विना शेष चार सत्ता होय. एम सर्व थइ सत्तर सत्तानां स्थानक होय.

प्रमत्तें नवनो बंध, तिहां चार, पांच, ठ अने सात, ए चार उदयस्थानक होय, तिहां चारने उदयें अष्टावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता होय. पांच अने ठने उदयें अष्टावीश, चोवीश, त्रेवीश, बावीश अने एकवीश, ए पांच सत्ता प्रत्येकें होय अने सातने उदयें एकवीश विना चार सत्ता होय. एम सर्व थइ सत्तर सत्तास्थानक होय. तेबीज रीतें अप्रमत्तें पण एज सत्तर सत्तास्थानक जाणवां.

तथा अपूर्वकरणे नवनो बंधठे, तिहां चार, पांच अने ठ, ए त्रणे उदयस्थानकें प्रत्येकें अष्टावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्ता गणतां नव सत्ता होय.

अनिवृत्तियें पांच, चार, त्रण, बे अने एक, ए पांच बंधस्थानक होय. तिहां पांचने बंधें बेने उदयें अष्टावीश, चोवीश, एकवीश, तेर, बार अने अगीअार, ए ठ सत्तास्थानक होय. तथा चारने बंधें एकने उदयें अष्टावीश, चोवीश, एकवीश, अगीअार, पांच अने चार, ए ठ सत्ता होय तथा त्रणने बंधें एकने उदयें अष्टावीश, चोवीश, एकवीश, चार अने त्रण, ए पांच सत्ता होय. तथा बेने बंधें एकने उदयें

अष्टावीश, चोवीश, एकवीश, त्रण अने बे, ए पांच सत्ता होय. तथा एकने बंधे एकने उदये अष्टावीश, चोवीश, एकवीश, बे अने एक ए पांच सत्ता होय. एवं सर्व मली पांच बंध स्थानके अने शरवाजे सत्तावीश सत्तास्थानक होय.

सूक्ष्मसंपराये बंध विना एकने उदये अष्टावीश, चोवीश, एकवीश अने एक. ए चार सत्तास्थानक होय तथा उपशांतमोहे बंधोदय विना अष्टावीश, चोवीश अने एकवीश, ए त्रण सत्तास्थानक होय. एम सर्व गुणठाणे सर्व मली (१३३) मो हनीयना सत्तास्थानक होय. एतुं स्वरूप सर्व पूर्वे जाव्युं ठे. इति समुण्ण ॥ ५७ ॥
अथ नामकर्मणि बंधस्थानादीत्याह ॥ हवे चौद गुणठाणे नामकर्मना बंधोदय सत्तास्थानक अने जांगा कहे ठे.

ठन्नव ठक्क तिग सत, डुगं डुगं तिगडुगं तिअठ चउ ॥

डुग ठचउ डुगपण चउ, डुगचउ चऊ पणग एगचउ ॥ ५८ ॥

अर्थ- मिथ्यात्व गुणठाणे (ठन्नवठक्क के०) ठ बंधस्थानक, नव उदय स्थानक अने ठ सत्ता स्थानक. होय. बीजे गुणठाणे (तिगसतडुगं के०) त्रण बंध स्थानक, सात उदय स्थानक, अने बे सत्तास्थानक होय. त्रीजे गुणठाणे (डुगं तिगडुगं के०) बे बंधस्थानक, त्रण उदयस्थानक अने बे सत्तास्थानक होय. चौथे गुणठाणे (तिअठचउ के०) त्रण बंधस्थानक, आठ उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय. पांचमे गुणठाणे (डुगठचउ के०) बे बंधस्थानक, ठ उदय स्थानक अने चार सत्तास्थानक होय. ठठे गुणठाणे (डुगपणचउ के०) बे बंध स्थानक, पांच उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय. सातमे गुणठाणे (डुग चउचऊ के०) बे बंधस्थानक, चार उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय, आठमे गुणठाणे (पणगएगचउ के०) पांच बंधस्थानक, एक उदय स्थानक अने चार सत्तास्थानक होय. इत्यह्वरार्थः ॥ ५८ ॥

हवे संवेध कहेठे. तिहां मिथ्यात्व गुणठाणे १३-१५-१६-१७-१९-२० ए ठ बंधस्थानक ठे. तिहां अपर्याप्ता एकेंडिय प्रायोग्य त्रेवीश बांधतां बादर सूक्ष्म अने प्रत्येक साधारण पदे चार जांगा आय तथा पर्याप्ता एकेंडिय प्रायोग्य पञ्चीश बांधतां वीश जांगा अने अपर्याप्ता त्रण विकलेंडिय तथा पंचेंडिय तिर्थेच मनुष्य प्रायोग्य पञ्चीश बांधतां, एकेको जांगो सर्व संख्याये पञ्चीशने बंधे पञ्चीश जांगा होय. तथा पर्याप्त एकेंडिय प्रायोग्य ठवीश बांधतां शोल जांगा, तथा देव

गति प्रायोग्य अक्षावीश बांधतां आठ जांगा, नरकगति प्रायोग्य अक्षावीश बांध तां एक जांगो. एवं नव जांगा अक्षावीशने बंधे होय. तथा पर्याप्त बेंडिय, तेंडिय अने चौरिडिय, प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां प्रत्येके आठ आठ जांगा होय. तथा पर्याप्ता पंचेंडिय तिर्थेच प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां (४६०८) जांगा तथा पर्याप्ता पंचेंडिय मनुष्य गति प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां (४६०८) जांगा सर्व मली उंगणत्रीशने बंधे (१२४०) जांगा आय. अर्ही तीर्थेकरसहित देवगति प्रायोग्य उंगणत्रीश प्रकृतिना बंधना जांगा आठ न पामीये, केमके सम्यक्त्व विना तीर्थेकर नाम कर्मनो बंध न होय. तथा पर्याप्त बेंडिय, तेंडिय, अने चौरिडिय प्रायोग्य त्रीश बांधतां प्रत्येके आठ, आठ जांगा होय तथा पंचेंडियतिर्थेच प्रायोग्य त्रीश बांधतां (४६०८) शरवाले त्रीशने बंधे (४६३२) जांगा आय. एवं ठ बंधस्थानके अइने मिष्यात्व गुणगणे सर्व मली (१३९३६) जांगा होय. अर्हीआ आहारकदिक सहित देवगति प्रायोग्य त्रीशना बंधनो जांगो एक तथा जिननाम सहित मनुष्यगति प्रायोग्य त्रीशना बंधना जांगा आठ, एवं नव जांगा न होय. बाकीना जांगा होय.

मिष्यात्वे ३१-३४-३५-३६-३७-३८-३९-४०-४१- ए नव उदय स्था नक होय. तिहां आहारक संयत वैक्रियसंयत अने केवली, एटला मिष्यात्वे न होय. माटे ते संवंधी जांगा अर्ही न कहेवा. शेष सर्व ४१-११-३२-६००-३१-११९९-१७८१-३९१४-११६४- शरवाले (७७७३) जांगा होय, एटले नव उदय स्थानकना जांगा (७७९१) पूर्वे सामान्यादेशे जाव्या ठे. तेमध्येंथी केवलीना आठ, आहारकसाधुना सात, अने उद्योत सहित वैक्रिय मनुष्यना त्रण जांगा, उंगणत्रीश, त्रीश, अने एकत्रीश ए त्रण उदयनो एकेको जांगो उद्योत सहित वैक्रिय साधुने तथा देवताने होय. तेमां देवताने उत्तरवैक्रियना जांगा जूदा नथी जेखव्या अने साधुतो ठे, सातमे गुणगणे होय, पण मिष्यात्वे न होय. माटे ए अहार उदय जांगा टाली बाकी (७७७३) उदय स्थानकना जांगा सर्वजीवनी अपेक्षायें होय, ते सर्व पूर्वे कह्या ठे. तिहांथी जोइ जेवा.

हवे मिष्यात्वे ठ सत्तास्थानक होय, ते कहे ठे. तिहां बाणुनी सत्ता चारे गतिना मिष्यात्वी जीवने होय तथा जेवारें कोइएक वेदक सम्यक्दृष्टिजीवें पूर्वे नरकायु बांध्युं ठे तेमाटे ते अंत समय सम्यक्त्व वमीने नरके जाय तेने अंतर मुहूर्त पर्यंत नेव्याशीनी सत्ता होय तथा अंतरमुहूर्त पढी ते वली सम्यक्त्व पा मे. अर्ही आहारकचतुष्क, तथा जिननाम ए बेहुनी समकालें नरकमाहे सत्ता न

होय, तेजणी ज्याणुं सत्तास्थानक नरकमांहे न होय, तथा अछाशीनी सत्ता पण चारे गतिना मिथ्यात्वी जीवने होय, तथा ढ्याशीनुं सत्तास्थानक, एकेंद्रियने विषे देवगति प्रायोग्य अथवा नरकगति प्रायोग्य उवेल्ये थके पामीयें तथा एं शीनुं सत्तास्थानक तो ज्याणु मध्येंथी तीर्थकरनाम, आहारकचतुष्क, वैक्रियषट् क, नरकदिक, ए तेर प्रकृति उवेले थके एकेंद्रियमध्ये पामीयें, तेवार पढी ते ए केंद्रिय मध्येंथी नीकलीने विकलेंद्रिय तथा पंचेंद्रियतिर्यच मनुष्य मांहे अचतरी प र्याप्ती थया पढी पण अंतरमुहूर्त्त जगें तेमांहे एंशीनुं सत्तास्थानक पामीयें अने ते अं तरमुहूर्त्त वीत्या पढी अवश्य वैक्रियादिकनो बंध होय, तेमाटें. तथा ते एंशीमां हेथी वली मनुष्यगति अने मनुष्यानुपूर्वी उवेले थके तेउ, वाउ मध्यें अछोत्तेरनी सत्ता पामीयें अथवा तेउ वाउ मध्येंथी आवेला विकलेंद्रिय तथा पंचेंद्रियतिर्यच तेमध्ये पण अछोत्तेरनुं सत्तास्थानक अंतरमुहूर्त्त जगें पामीयें अने पर्याप्ता थया पढी अवश्य मनुष्यदिक बांधे, माटे तिहां अछोत्तेरनी सत्ता न होय. एम सामो न्यें बंध, उदय अने सत्तानां स्थानक मिथ्यात्व गुणतापो कहां.

हवे सत्ता संवेधें जांगा कहे ठे. तिहां मिथ्यात्वीने अपर्याप्ता एकेंद्रिय प्रायोग्य त्रेवीशीं बांधतां सर्व नवे उदयस्थानक संजवे पण तेमध्ये पञ्चीशने उदयें देवता ना जांगा आठ अने नारकीनो जांगो एक, एवं नव तथा सत्तावीशने उदयें देव ताना आठ तथा नारकीनो एक तथा अछावीशने उदयें देवताना शोल अने ना रकीनो एक, तेटलाज वली उंगणत्रीशना उदयना पण लेवा. तथा त्रीशने उदयें देवताना आठ, एवं शाठ जांगा त्रेवीशना बंधें न होय, जे जणी नारकी तो एकें द्रियमांहे जाय नहीं अने देवता पण अपर्याप्ता एकेंद्रियमध्ये न जाय तेमाटें तेना शाठ जांगा टाली बाकी बऱ्हा उदयना (७७१३) उदय जांगा त्रेवीशने बं धें होय तिहां बाणु, अछाशी, ढ्याशी, एंशी अने अछोत्तेर, ए पांच सत्तास्थानक तो एकवीश, चोवीश, पञ्चीश अने ढवीश, ए चार उदयस्थानकें प्रत्येकें होय. ति हां पञ्चीशने उदयें तेउ वाउना जे उदयें सात जांगा ठे, तिहां अछोत्तेरनी सत्ता परंतु बीजे जांगे न होय. अने ढवीशना उदयें मनुष्यना जांगा विना बाकी (३११) जांगे तेउ वाउमांहेथी आव्या होय, तेनी अपेकार्यें अछोत्तेरनी सत्ता हो य. बीजे जांगे न होय तथा बीजा सत्तावीश, अछावीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश. ए पांच उदयें अछोत्तेर विना बाकीना चार चार सत्तास्थानक होय. ए म शरवाले त्रेवीशने बंधें चालीश सत्तास्थानक होय. एमज पञ्चीशने बंधें पण

चालीश अने उद्येशने बंधे पण चालीश सत्तास्थानक होय पण एटलुं विशेष जे पर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य पञ्चीशने बंधे आपणे उदर्ये देवताना पण उदय जांगा होय, तेथी ७७६८ उदय जांगे ए बे बंधस्थानक होय. अने नारकीना पांच उदय जांगा अर्हीअं न होय पण देवता जे एकेंद्रिय प्रायोग्य पञ्चीश प्रकृतिनो बंध करे तिहां वादर प्रत्येक पर्याप्त प्रायोग्य आठ जांगा बांधे. बाकी बार जांगा न बांधे केमके सूक्ष्म साधारण अपर्याप्ता मध्ये देवताने उपजतुं नथी ते माटे.

अष्टावीशने बंधे मिथ्यात्वाने त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उदयस्थानक होय. तिहां त्रीशनुं पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यने होय अने एकत्रीशनुं पंचेंद्रिय तिर्यंचने होय. त्रीशने उदर्ये पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने देवगति प्रायोग्य तथा नरकगति प्रायोग्य अष्टावीशनो बंध होय. बाकी विकर्षेंद्रियना त्रीश जांगा उदयना न होय. ए बे उदर्ये ४७ (४७४८) जांगे अष्टावीशनो बंध होय. तिहां त्रीशने उदर्ये बाणु, ने व्याशी, अठ्याशी अने उद्याशी, ए चार सत्ता होय अने एकत्रीशने उदर्ये नेव्याशीनी सत्ता न होय, तीर्थकर सहित नेव्याशीनी सत्ता, तिर्यंचने विषे न पामीये, तेथी त्रण सत्ता होय, तथा त्रीशने उदर्ये पण जे वेदक सम्यक्त्व वमी, जिनना म सहित मिथ्यात्वे गयो, तेने नरक प्रायोग्य अष्टावीश बांधतां पण नेव्याशीनी सत्ता होय. एम अष्टावीशने बंधे सात सत्तानां स्थानक जाणवां.

देवगति प्रायोग्य विना बीजा मनुष्य, तिर्यंचगति प्रायोग्य उगण त्रीशने बंधे वीश, नव अने आठ, ए त्रण विना बीजां सर्व उदय स्थानक होय. तथा बाणु, नेव्याशी, अठ्याशी, उद्याशी, एंशी अने अछोत्तेर, ए ठ सत्तास्थानक होय, तिहां ए कवीशने उदर्ये ठ सत्ता होय. ते कहे ठे. जिननाम बांधी सम्यक्त्व वमीने नरके जाय तेनी वच्चे एकवीशनो उदय होय. तिहां नेव्याशीनी सत्ता होय तथा बाणु अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थान चतुर्गतिना जीवने विग्रहगतिये एकवीशने उदर्ये होय, तथा उद्याशी अने एंशी ए बे सत्ता, देव नारकी विना बीजा जीवोने होय. अने अछोत्तेरनी सत्ता देव नारकी तथा मनुष्य विना बीजा जीवोने होय. एम एकवीशने उदर्ये ठ सत्ता स्थानक होय तथा चोवीशने उदर्ये एक नेव्याशी विना बाकी नां पांच सत्तास्थानक, एकेंद्रियने होय. बीजा जीवोने ए उदय न होय तथा पञ्चीशने उदर्ये ठ सत्तास्थानक होय तथा उद्येशने उदर्ये नेव्याशीनी सत्ता विना बाकी पांच सत्ता होय, जे जणी नेव्याशीनी सत्ता नारकीने होय तेने तो उद्येशनुं उदयस्थानकज नथी तथा सत्तावीशने उदर्ये अछोत्तेर विना पांच सत्ता होय, ते

एकवीशना उदयनी परें जाववां. जे जणी तेउ, वाउने सत्तावीशनो उदय नथी बाकी एकेंद्रियादिकने पण पर्यासावस्थायें ए उदय होय, तेणे ते मनुष्यदिक अ वश्य बांधे, माटें अछोत्तेरनी सत्ता अर्हीं ए उदयमां नथी तथा अछावीशने उदयें पांच सत्ता होय तेमध्ये उगाशीनी सत्ता विकलेंद्रिय, तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यनी अपे ह्यार्यें जेवीं अने बीजां सत्तास्थान पूर्वली परें जाववां तथा उगणत्रीशने उदयें पण एज पांच सत्ता पूर्वली परें जाववी तथा त्रीशने उदयें नेव्याशी विना, बाकी तेही ज चार सत्ता, विकलेंद्रिय अने तिर्यंच मनुष्यनी अपेह्यार्यें होय अने नेव्याशीनी सत्ता तो जिननाम बांधी सम्यक्त्व दमी नरकें जाता एवा मिथ्यात्वी नारकीने होय. तिहांतो त्रीशनुं उदयस्थानक न होय, तथा तेहीज चार सत्तास्थानक एकत्रीश ने उदयें पण मनुष्य विना बीजा जीवोने होय जे जणी एकत्रीशनो उदय, सामान्य मनुष्यने नथी केवलीने ठे एम सर्व थइ उगणत्रीशने बंधें (४५) सत्ता होय.

देवगति प्रायोग्य त्रीशना बंध विना विकलेंद्रिय तथा पंचेंद्रिय प्रायोग्य त्रीशने बंधें सामान्यें वीश, आठ अने नव ए त्रण उदय स्थानक विना बाकीनां नव उदय स्थानक होय, तिहां नेव्याशी विना पांच सत्ता होय जे जणी तिर्यंचगति मध्ये जि ननामनी सत्ता न होय. तिहां एकवीश, चोवीश, पञ्चीश, अने उव्वीश ए चार उद यें पांच पांच सत्ता स्थानक होय अने बीजा पांच उदयें अछोत्तेर विना चार चार सत्ता स्थानक होय. एवं नव उदयें थइ चालीश सत्ता होय. अर्हींआं नेव्याशीनुं स त्तास्थानतो देवगति प्रायोग्य आहारकदिक सहित त्रीशने बंधें अने जिननाम सहित मनुष्य प्रायोग्य त्रीशने बंधें होय ए बेहु मिथ्यात्वी न बांधे. एटले ए मि थ्यात्व गुणताणो ठ बंधस्थानकें नव उदयें थइ बरौने बार सत्ता स्थानक होय.

हवे सास्वादने बंध स्थानक कहे ठे. सास्वादनें वर्त्ततां अछावीश, उगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधस्थानक होय. देवगति प्रायोग्य अछावीशना आठ जांगा सास्वादने बंधाय, तेना बांधनार पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य होय अने नरक प्रा योग्य अछावीशनो बंध तो मिथ्यात्व प्रत्ययिठ ठे ते- जणी सास्वादने न बंधाय तथा पंचेंद्रियतिर्यंच प्रायोग्य अने मनुष्य प्रायोग्य उगणत्रीश प्रकृति बंधना जांगा (६४००) नो बंध, एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय तथा तिर्यंच, मनुष्य, देवता, नारकीने सा स्वादने होय. तिहां हुंरु संस्थान अने ठेवहुं संघयण, न बंधाय तेशी पांच संघयण अने पांच संस्थान तथा सप्त युगलना विकल्पें करी बत्रीशरौं जांगा प्रत्येकें मनुष्य तिर्यंचगति प्रायोग्य उगणत्रीशना बंधें होय. ए बेहुना मली (६४००) जांगा होय.

तथा पूर्वे कह्यो जे एकेंडियादिकने सास्वादने उद्योत सहित त्रीशनो बंध-पंचेंडिय तिर्थेच प्रयोग्यज करे, तिहां जांगा (३१००) होय. ते पूर्वे विस्तारें कह्या ठे ति हांथी समजी लेवा. शरवाले त्रणे बंधस्थानकें थडने जांगा (६६०८) होय.

सास्वादनें एकवीश, चोवीश, पच्चीश, ढवीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए सात उदयस्थानक होय. तिहां नारकी विना त्रणे गतिना जीवनी अपेह्यायें एकवीशनो उदय, वे गतिने विचालें वाटें वहेतां जीवने होय. तिहां उदय जांगा बत्रीश होय. ते केवी रीतें? तोके एकवीशने उदयें सर्व मली बेंतालीश जांगा कह्या ठे तेमध्येथी सात अपर्याप्ताना, एक सूद्ध पर्याप्तानो, एक नारकीनो अने एक के वलीनो. एवं दश जांगा सास्वादने न होय शेष बत्रीश जांगा होय. तथा चोवीश नो उदय तो एकेंडियने उत्पन्नमात्रने होय. अहींआं पण, बादर पर्याप्ताने यश अयशना विकल्पें वे जांगा सास्वादने लाजे बाकी सूद्ध साधारण वाजा जांगा न होय अने वैक्रियवालो जांगो तेउ वाउने होय ते पण तिहां सास्वादने न होय: ते जणी ते पण न लेवो. तथा पच्चीशनो उदय तो देवतामांहे उत्पन्न मात्रनेज होय अने कोइएक नें न पण होय. तिहां देवताना आठ जांगा सुजग, डुर्जग, आदेय, अनादेय, अयश, यशें उपजे तथा ढवीशनो उदय तो विकलेंडिय पंचेंडिय तिर्थेच मनुष्यमांहे उत्पन्न मात्र नेज होय. तिहां अपर्याप्तानो एकेको जांगो टालीने विकलेंडिय पर्याप्ताना ढ, पंचें डिय तिर्थेचना (१८८) मनुष्यना (१८८) एवं (५८१) जांगा, ढवीशने उदयें होय. तथा सत्तावीश अने अठ्ठावीशनो उदय तो सास्वादने होयज नहीं केमके ए बे उदयस्थानकतो उपना पढी अंतर मुहूर्त्त गया पढी होय ठे अने सास्वादनतो ढ आवली माठेरी जगेंज होय, ते माटें ते न होय. तथा उंगणत्रीशनो उदय तो देव नारकीने पर्याप्तावस्थायें प्रथम प्राप्त सम्यक्त्व थकी पढताने पामीयें, तिहां देव ताना आठ अने नारकीनो एक, एवं नव जांगा होय. तथा त्रीशनो उदय तो पंचेंडिय तिर्थेच मनुष्यने सर्व पर्याप्ति पूरी कह्या पढी औपशमिक सम्यक्त्वथी पढतां होय. तथा उत्तर वैक्रियें वर्त्ततां देवताने उद्योतनाउदयें होय. तिहां मनुष्य अने तिर्थेचना प्रत्येकें प्रत्येकें (११५१) जांगा लेवा तथा देवताना आठ जांगा लेवा एम सर्व मली (१३११) उदय जांगा होय. तथा एकत्रीशनो उदय पंचेंडिय तिर्थेच पर्याप्ताने प्रथ म सम्यक्त्व वमतानें होय. तिहां जांगा (११५१) होय. एम शरवाले सात उदयना थड सास्वादनें उदय जांगा (४०९९) होय.

सास्वादने सत्तास्थानक बाणु अने अठ्ठाशी, ए बे होय. तिहां आहारक च

तुष्क बांधी उपशमश्रेणीची पढतां सास्वादन गुणगणु पामे, तेने बाणुनुं सत्तास्थानक होय अने अछ्याशीनी सत्ता तो चारे गतिना सास्वादनीने होय.

हवे संवेध कहे ठे. अछावीशने बंधें सास्वादने त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उदय स्थानक होय. जे जणी देवगति प्रायोग्य अछावीश प्रकृति, करण अपर्याप्तो न बांधे तेमाटें बीजां उदय स्थानक एने न होय. तिहां मनुष्य बंधकनी अपेह्यायें त्रीशने उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय. अने तिर्यंचने उपशमश्रेणी न होय माटे उपशमश्रेणीची पढवाने अजावें बाणुनी सत्ता न होय. एक अछ्याशीनीज होय तथा तिर्यंच मनुष्य प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां, सास्वादनीने साते उदयस्थानक होय. तिहां पोत पोताने उदय स्थानकें एकेकुं अछ्याशीनुं सत्तास्थानक होय तथा मनुष्यने त्रीशने उदयें वर्तताने बाणु अने अछ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय, शेष सर्वेने एकज अछ्याशीनुं होय. तथा एम त्रीशना बंधकने पण संवेध कहेवो, सर्व मली सास्वादनें अठार सत्ता स्थानक होय.

हवे मिश्रगुणगणो नामकर्मना अछावीश अने उंगणत्रीश, ए बे बंधस्थानक होय. तिहां मिश्रदृष्टि तिर्यंच मनुष्यने देवगति प्रायोग्य अछावीशनो बंध होय, तिहां जांगा आठ होय अने मनुष्य प्रायोग्य उंगणत्रीशनो बंध मिश्रदृष्टि देव नारकीने होय. तिहां स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यश, अयशने विकल्पें जांगा आठ पामोयें बीजा जे ठ संस्थानादिकना विकल्पें जांगा उपजे, ते अहींच्यां न होय, एम आगळे गुणगणो पण जाणुं. शरवाले बंध जांगा शोल होय.

मिश्रें उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश ए त्रण उदय स्थानक होय तिहां उंगणत्रीशने उदयें देवना जांगा आठ अने नारकीनो एक, एवं नव जांगा होय. तथा त्रीशने उदयें पंचेंद्रिय तिर्यंचना उदय जांगा (१७१८) मनुष्यना (११५२) एवं (३८८०) त्रीशने उदयें उदय जांगा होय. तथा एकत्रीशनुं उदयस्थानक, पंचेंद्रिय तिर्यंचने होय तिहां जांगा (११५२) सर्व थड मिश्रगुणगणो उदय जांगा (४०४१) होय. अहींच्यां सत्तास्थानक बाणु अने अछ्याशी, ए बे होय.

हवे संवेध लखे ठे. अछावीशने बंधें मिश्रदृष्टिने त्रीश अने एकत्रीश, ए बे उदय स्थानक होय. तेने विपे प्रत्येकें बाणु अने अछ्याशी. ए बे सत्तास्थानक होय तथा उंगणत्रीशना बंधकने एकज उंगणत्रीशनुं उदयस्थानक होय तिहां पण तेहीज वे सत्तास्थानक जाणवां. सर्व मली मिश्रगुणगणो ठ सत्तास्थानक होय. अचिरति गुणगणो अछावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए त्रण बंधस्थानक होय.

तिहां तिर्यंच मनुष्यने चोथे गुणगणे देवप्रायोग्य बांधतां अष्टाविंशतो बंध होय. तिहां जांगा आठ, तथा मनुष्यने देवगति प्रायोग्य जिननाम सहित बांधतां उंग एत्रीशतो बंध होय. अर्हीआं पण आठ जांगा तथा देवता अने नारकीने चोथे गुणगणे मनुष्यगति प्रायोग्य उंगएत्रीश बांधतां जांगा आठ तथा देव नारकीने सम्यक्त्व प्रत्ययें जिननाम सहित मनुष्य प्रायोग्य त्रीश बांधतां पण जांगा आठ होय, एवं बंधजांगा बत्रीश थया. अर्हीआं अविरति सम्यक्दृष्टि जीव अपर्याप्ता मध्ये न उपजे माटे अपर्याप्तानो एक जांगो टालीयें, बाकी आठ जांगा लेवा.

अविरति गुणगणे एकवीश, पञ्चश, षष्ठीश, सत्तावीश, अष्टावीश, उंगएत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए आठ उदयस्थानक होय. तिहां एकवीशने उदयें देवताना उदय जांगा आठ, मनुष्यना आठ, पंचेंद्रियतिर्यंचना आठ लेवा. केम के अविरति सम्यक्दृष्टि अपर्याप्तामध्ये न उपजे, माटे अपर्याप्तानो जांगो टाली शेष आठ आठ जांगा लेवा तथा नारकीनो एक, एवं पञ्चश उदय जांगा होय. ए ह्याधिक सम्यक्दृष्टि पूर्वबन्धायुवालो चारे गतिने विषे उपजे पण ते अपर्याप्ता मध्ये न उपजे, तेनी अपेक्षायें एकवीशनो उदय लेवा. पञ्चश तथा सत्तावीशनो उदय देव अने नारकीने तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय. तिहां नारकी ह्याधिक तथा वेदक सम्यक्दृष्टि जाणवा अने देवता त्रिविध सम्यक्त्वी होय. एम चूर्णिमध्ये कष्टं ठे तथा षष्ठीशनो उदय, पंचेंद्रियतिर्यंच मनुष्य ह्याधिक तथा वेदकसम्यक्दृष्टिने होय जे जणी उपशम सम्यक्दृष्टि तो तिर्यंच मनुष्य मध्ये न उपजे तेमां हे पण वेदक सम्यक्दृष्टि तो मोहनीयनी बावीश प्रकृतिनी सत्तावालो ज होय तथा अष्टावीश अने उंगएत्रीश, ए बे उदय नारकी तिर्यंच मनुष्य अने देवताने होय तथा त्रीशनो उदय, एक नारकी विना बीजी त्रणे गतिमध्ये होय. तथा एकत्रीशनो उदय, पंचेंद्रिय तिर्यंचने होय. अर्हीआं सर्वना पोत पोताना उदयजांगा लेवा.

अविरतियें सत्तास्थानक चार होय. तिहां जे अप्रमत्त, तथा अपूर्वकरण गुणगणे आहारकदिक तथा जिननाम सहित देवप्रायोग्य एकत्रीश बांधीने वल तो मरण पामी देव थाय. तेनी अपेक्षायें ज्याणुनी सत्ता जाणवी. तथा आहारक चतुष्क बांधी वली परिणाम परावर्तियें मिथ्यात्व पामी चारगतिमाहेली जावे ते गति माहे उपजीने वली तिहां सम्यक्त्व पामे, तेने बाणुनी सत्ता जाणवी. ए सत्ता देव मनुष्य माहे मिथ्यात्वे गथा विना पण होय माटे अर्ही लोधी तथा नेव्याशीनी सत्ता तो देव मनुष्य अने नारकी अविरति सम्यक्दृष्टिने जिननामनो

बंध ठे, ते माटें होय, तथा अठ्याशीनी सत्ता चारे गतिना सम्यक्दृष्टिनें होय. हवे सत्ता संवेध कहे ठे. अविरति सम्यक्दृष्टि पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यने देव प्रायोग्य अष्टावीशने बंधें आठ उदय स्थानक होय. तिहां पच्चीश अने सत्तावीश नो उदय, वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय. बीजाठ सामान्यें होय. ते एकेका उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे बे सत्तास्थानक होय. एम आठ उदयनां शोल सत्ता स्थानक होय, तथा उंगणत्रीशनो बंध एक देवगति प्रायोग्य, बीजा मनुष्यगति प्रायोग्य होय. तिहां देवगति प्रायोग्य जिननाम सहित उंगणत्रीशना बंधक मनुष्यज होय परंतु तिर्यंच न होय तेने एकत्रीशना उदय विना साते उदय स्थानक होय, केमके मनुष्यने एकत्रीशनो उदय नथी, ते एकेका उदयें ज्याणु अने नेव्याशी, ए बे बे सत्तास्थानक होय. तथा मनुष्यगति प्रायोग्य उंगणत्रीशनो बंध, देव नारकीने होय. तिहां ३१-३५-३९-४०-४१- ए पांच उदयस्थानक होय. एकेका उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे बे सत्ता होय तथा मनुष्यगति प्रायोग्य जिननाम सहित त्रीशनो बंध पण देव नारकीने होय. तिहां ३१-३५-३९-४०-४१-ए ठ उदय स्थानक होय. तिहां प्रत्येकें ज्याणु अने नेव्याशी ए बे बे सत्ता, देवताने होय अने नारकीने पांच उदय स्थानक होय. तिहां प्रत्येकें एकज नेव्याशीनी सत्ता होय केमके, जिननामनी सत्ता ठतां आहारकनी सत्ता नरकमध्ये न होय ते माटें ज्याणुनी सत्ता नारकी मध्ये न पामीयें, अने एकत्रीशने उदयें बे सत्ता होय, सर्व अइ चोपन्न सत्ता अइ.

देशविरति गुणताणे अष्टावीश अने उंगणत्रीश ए बे बंधस्थानक होय. तिहां मनुष्य अने तिर्यंच देशविरति, देवगति, प्रायोग्य अष्टावीश बांधे, तिहां जांगा आठ. तथा तेहीज जिननाम सहित उंगणत्रीश प्रकृति एकला मनुष्य देशविरति ज बांधे पण तिर्यंच न बांधे तिहां जांगा आठ सर्व मली जांगा शोल होय.

देशविरतियें सामान्यें ३५-३९-४०-४१-ए ठ उदय स्थानक होय. तिहां अष्टावीशने बंधें प्रथमना चार उदय तो वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय तिहां एकेको जांगो करतां चार जांगा अथा तथा अष्टावीश, उंगणत्रीश, ए बे उदय सामान्य तिर्यंच मनुष्यने तथा वैक्रियने पण होय. तिहां उदय जांगा ठ तथा त्रीशनो उदय तिर्यंच मनुष्यने तिहां ठ संघयण, ठ संस्थानना विकल्पें जांगा ठत्रीश ते सुस्वर डुःस्वरें बहोत्तर ते गुजाछुज खगतियें (१४४) प्रत्येकें एकेका उदयें होय. अर्हीआं दौर्जाग्य अनादेय अने अयशाःकीर्तिनो उदय गुण प्रत्यय जणी

न होय तेषी तेना विकल्पना जांगा न होय तथा वैक्रिय तिर्यचनो उदय जांगो एक, मली (१८९) जांगा थाय. तथा एकत्रीशनो उदय तिर्यचने होय. तिहां जांगा (१४४) एम शरवाले (४४३) अछावीशने बंधें उदय जांगा होय. तथा उंगणत्रीशने बंधें मनुष्यने १५-१४-१८-१९-२० ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां प्रथमनां चार उदयस्थानक वैक्रियनां ठे तेनो जांगो एकेक तथा त्रीशना उदयजांगा (१४४) मली (१४८) जांगा थाय शरवाले (५९१) जांगा थाय.

देशविरतियें ९३-९२-८९-८८ ए चार सत्तास्थानक होय. तिहां जे अप्रमत्त, अपूर्वकरणवालो तीर्थकर तथा आहारक बांधीने पडे, ते परिणामे देशविरति थाय तेने ज्ञ्याणुनी सत्ता होय. शेषनी जावना अविरतिनी परें जाणवी.

हवे संवेध कहे ठे. देशविरति मनुष्यने अछावीशने बंधें पञ्चीश, सत्तावीश, अछावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक होय. तिहां प्रत्येकें बाणुं अने अठ्याशी, ए बे बे सत्ता होय. तेम तिर्यचने पण एकत्रीश सहित उ उदयें बे बे सत्ता होय. तथा उंगणत्रीशनो बंध देशविरति मनुष्यनेज होय, तिहां पञ्चीशथी त्रीश वाला तेहीज पूर्वलां पांच उदयस्थान लेवां. तिहां ज्ञ्याणु अने नेव्याशी ए बे बे सत्तास्थानक होय. सर्व थइ देशविरतियें बावीश सत्ता होय.

हवे प्रमत्तें बंधादिक संवेध कहे ठे. प्रमत्त साधुने अछावीश, उंगणत्रीश, ए बे बंधस्थानक देशविरति मनुष्यनी परें जाववां. तिहां प्रत्येक बंधें मनुष्यना जांगा आठ आठ लेतां शोल जांगा थाय तथा १५-१४-१८-१९-२० ए पांच पांच उदयस्थानक होय. तिहां प्रथमना चार उदय तो आहारक अने वैक्रिय शरीर करनारा साधुनी अपेक्षायें लेवा. तिहां पञ्चीश अने सत्तावीशना उदयें बे बे जांगा तथा अछावीश अने उंगणत्रीशना उदयें चार चार जांगा अने त्रीशनो उदय, सहज मनुष्यने होय. तिहां जांगा बे आहारक वैक्रियना अने (१४४) सहज ना मलीने (१४६) एम सर्व मली एकेका बंधस्थानकें (१५८) जांगा करतां (३१६) उदय जांगा थाय, तिहां ज्ञ्याणु, बाणु, नेव्याशी अने अठ्याशी ए चार सत्तास्थानक होय. हवे संवेध देखाडे ठे. अछावीशने बंधें पांचे उदये बाणुं अने अठ्याशी ए बे सत्ता होय. तिहां आहारकें बाणुनीज सत्ता होय अने जिननाम सत्तायें उ तां अछावीशनो बंध न होय तेमाटे ज्ञ्याणु अने नेव्याशी ए बे सत्ता उंगणत्रीशने बंधें पांचे उदयस्थानकें प्रत्येकें होय जेजणी उंगणत्रीशनो बंध जिननाम बांधतां ज होय. एम सर्व थइ वीश सत्तास्थानक प्रमत्तें होय.

हवे अप्रमत्तं बंधादिक सत्ता संवेध कहे ठे. अप्रमत्त साधुने अछावीश, उगण त्रीश, त्रीश, एकत्रीश, ए चार बंधस्थानक होय तिहां प्रथमना बे तो प्रमत्तनी परें जाववां तथा आहारकदिक सहित बांधतां अनुक्रमे त्रीश एकत्रीशनो बंध होय. ए चार बंधस्थानकें प्रत्येकें एकेको जांगो करतां चार बंध जांगा थाय केमके अहीं अस्थिर, अशुच, अयशनो बंध अप्रमत्तं नथी माटे. तथा प्रत्येक बंधस्थानकें उगणत्रीश अने त्रीश ए बे बे उदयस्थानक होय. तिहां जे प्रमत्त थको वैक्रिय तथा आहारक आरंजी अप्रमत्तं आवे तेने उद्योतने उदयें उगणत्रीशनो उदय होय, तथा त्रीशनो उदय सहज होय, तिहां प्रत्येक उदयें एक जांगो वैक्रियनो तथा आहारकनो एवं बे उदयें बे जांगा तथा सहज शरीरें अप्रमत्तने त्रीशने उदयें पूर्वे देशविरतिस्थाने (१४६) जांगा कहा, ते होय सर्व मली एकेका बंधें उदय जांगा (१४७) होय. शरवाले चार बंधना मलीने (५९४) उदय जांगा होय तिहां अछावीशने बंधें बेहु उदयें प्रत्येकें अठ्याशीनी सत्ता होय अने उगणत्रीशने बंधें बेहु उदयें प्रत्येकें नेव्याशीनी सत्ता होय तथा त्रीशने बंधें बेहु उदयें प्रत्येकें बाणुनी सत्ता होय तथा एकत्रीशना बंधें बेहु उदयें प्रत्येकें त्र्याणुनी सत्ता होय. अहींआं जे तीर्थकर तथा आहारक निश्चें बांधे, तेने एकेकी सत्ता होय. एवं आठ सत्ता थाय.

हवे अपूर्वकरणे बंधोदय सत्ता संवेध कहे ठे. अपूर्व करणे अछावीश, उगण त्रीश, त्रीश, एकत्रीश अने एक, ए पांच बंध स्थानक होय. तिहां प्रथमनां चार, अप्रमत्तनी परें लेवां, तथा एक यशःकीर्त्तिनो बंध, ते सातमे जागे देवगतिप्रायोग्य बंधना विभेदें होय तिहां जांगो प्रत्येकें एकेक होय. सर्व थइ बंध जांगा पांच होय. तिहां प्रत्येक बंधस्थानकें एकत्रीशतुंज उदयस्थानक होय. तिहां प्रथम संघयणने ठ संस्थानना विकल्पें ठ जांगा ते शुजाशुच स्वगतियें बार अने सुस्वर ड स्वरे चोवीश जांगा थाय. अने कोइएक आचार्य, पहेला त्रण संघयणे उपशमश्रेणीनो आरंज माने ठे. तेना मतें बहोत्तर उदय जांगा होय. शरवाले पांच उदयना (३६०) जांगा थाय तथा तिहां प्रथम चार बंधस्थानकें त्रीशने उदयें अनुक्रमें अठ्याशी, नेव्याशी, बाणु अने त्र्याणुं, ए एकेक सत्तास्थानक होय, अने एकने वंधें त्रीशने उदयें ए चार सत्ता होय, शरवाले आठ सत्ता स्थानक होय ॥५८॥

एगेग मठ इगेग, मठठ ठउमठ केवल जिणाणं ॥

एगं चउ एगं चउ, अठ चउ ड ठकमुदयंसा ॥५९॥

अर्थ— नवमे गुणगणे (एगेमठ के०) एक बंधस्थानक, एक उदयस्थानक अने आठ सत्तास्थानक होय. दशमे गुणगणे (इगेमठ के०) एक बंधस्थानक, एक उदयस्थानक अने आठ सत्तास्थानक होय. तथा (ठउमठ के०) बद्धस्थ य तिने उपशांतमोह, ह्रीणमोह अने (केवलजिणाणं के०) केवली जिन ते सयो गी केवली तथा अयोगी केवली, ए चार गुणगणा वालाने नामकर्मनो बंध न होय. तिहां उपशांतमोहने (एगंचउ के०) एक उदयस्थानक अने चार सत्ता स्थानक होय. तथा ह्रीणमोहने (एगंचउ के०) एक उदयस्थानक, अने चार सत्तास्थानक होय. सयोगी केवलीने (अछचउ के०) आठ उदयस्थानक अने चार सत्तास्थानक होय अने अयोगी केवलीने (डुठक के०) बे उदयस्थानक अने ठ सत्तास्थानक होय, ए रीते (मुदयंसा के०) उदय अने अंश एटले सत्ता तेनां स्थानक चार गुणगणे जाणवां.

हवे अनिवृत्तिबादर तथा सूक्ष्मसंपरायें बंधादिक कहे ठे. ए बे गुणगणे एक यशःकीर्त्तिनो बंध अने त्रीशनो उदय होय. तिहां कृपकने जांगा चोवीश अने औपश मिकने त्रण संघयणना विकल्पें जांगा बहोत्तेर उदयना जाणवा तथा ज्याणु, बाणु, नेव्याशी, अठचाशी, एंशी, उंगणाएंशी, बहोत्तेर अने पच्चोत्तेर, ए आठ सत्तास्थान क होय. तिहां पहेजां चार सत्तास्थानक तो उपशमश्रेणीनी अपेक्षायें होय तथा कृपकश्रेणीयें पण ज्यां सुधी नामकर्मनी तेर प्रकृति ह्य न थाय. त्यां जगें जा एवां अने तेर प्रकृतिना ह्य पठी ८०-८१-८२-८५ ए चार सत्तास्थानक होय. अहींआं बंधोदयनो चेद नथी ते माटें संवेध नथी देखाड्यो.

उपशांतमोहें बंधने अजावें एकज त्रीश प्रकृतिनुं उदयस्थानक ठे. तिहां जांगा बहोत्तेर होय अने ज्याणु, बाणु, नेव्याशी अने अठचाशी, ए चार सत्ता होय.

तथा ह्रीणमोहें एकज त्रीशनुं उदयस्थानक ठे. तिहां जांगा चोवीश तिहां प ए तीर्थकर नाम सहितने सर्व संस्थानादिक प्रशस्तज होय तेमाटें. तिहां ८०-८६ ए बे सत्ता तीर्थकरने तथा ८१-८५ ए बे सत्ता, अतीर्थकरने, एवं चार सत्ता होय.

सयोगीकेवलीने वीश, एकवीश, बद्दीश, सत्तावीश, अछवीश, उंगणत्रीश, त्रीश अने एकत्रीश, ए आठ उदयस्थानकना जांगा ठजें पूर्वे सामान्यादेशें विचाखा ठे. तिहांथी जाणवा. अहीं सत्तास्थानक चार ह्रीणमोहनी परेंज लेवां तथा संवेध चौद जीव स्थानक विचारें संझी पर्याप्ता वारें कह्यो ठे, तिहांथी लेवो.

अयोगी गुणगणे नव अने आठ, ए बे उदय होय तेना जांगा बे अने ८०-

४९-४६-४५-९-८-९ ठ सत्ता होय. तिहां तीर्थकरने नवने उदर्यें ८०-४६-
९- ९ त्रण सत्ता होय तथा सामान्य केवलीने आठने उदर्यें-४९-४५-८ ए त्र
ण सत्ता होय. एम चौद गुणगणे आठ कर्मनो बंध उदय संत्ता संवेध देखाडयो॥५९॥

अथ मिथ्यात्वस्य त्रयोविंशत्यादि बंधस्थानषट्के क्रमेण जंगप्ररूपिकां जाष्य
गाथामाह ॥ हवे मिथ्यात्वगुणगणानां जे त्रेवीशादिक ठ बंधस्थानक ठे, तेने विषे
अनुक्रमें केटला बंधना जांगा उपजे, ते प्ररूपवाने जाष्यगाथा कहे ठे.

चतु पणवीसा सोलस, नव चत्तालासयाय बाणउइ ॥

बत्ती सुत्तर ढाया, लसया मिह्रस्स बंध विही ॥ ६० ॥

अर्थ- त्रेवीशने बंधस्थानकें (चउ के०) चार जांगा, पञ्चीशने बंधें (पणवीसा
के०) पञ्चीश जांगा, ढवीशने बंधें (सोलस के०) शोल जांगा, अछावीशने बंधें
(नव के०) नव जांगा, उगणत्रीशने बंधें (चत्तालासयायबाणउइ के०) बाणुशें ने
चालीश जांगा, त्रीशने बंधें (बत्तीसुत्तरढायालसया के०) ठेंतालीशें ने बत्तीश जांगा
उपजे, ए (मिह्रस्सबंधविही के०) मिथ्यात्वगुणगणे ठ बंधस्थानकें अइने (१३९३६)
जांगा होय. एनी जावना पूर्वे कही ठे त्यांथी जाणवी ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ६० ॥

॥ अथ सास्वादानेऽष्टाविंशत्यादि बंधस्थानत्रयजंगप्ररूपकजाष्यगाथामाह ॥

हवे सास्वादन गुणगणानां जे अछावीशादिक त्रण बंधस्थानक ठे, तेने विषे
बंधना केटला जांगा उपजे, ते प्ररूपवाने जाष्य गाथा कहे ठे.

अठ सया चउसठी, बत्तीस सयाइं सासणे जेअ ॥

अछावीसाईसु, सवाणछाहिअ उन्नउइ ॥ ६१ ॥

अर्थ- अछावीशने बंधें (अठ के०) आठ जांगा अने उगणत्रीशने बंधें (स
याचउसठी के०) चोशठशें जांगा, त्रीशने बंधें (बत्तीससयाइं के०) बत्तीशशें
जांगा, ए रीतें (सासणेजेअ के०) सास्वादन गुणगणे जांगा उपजे. (अछावी
साईसु के०) अछावीशादिक त्रण बंधस्थानकें अइने (सवाणछाहिअउन्नउइ के०)
सर्वे मली उन्नशें ने आठ जांगा उपजे, तेनी जावना पूर्वे कही ठे अने मिश्रादिक
गुणगणे तो बंधस्थानकना जांगा थोडा ठे तेमाटें ते पूर्वे कही ठे, तेम जाणवा.

॥ अथ मिथ्यात्वसत्कैकविंशत्याद्युदयस्थानके जंगप्ररूपिका गाथा ॥ हवे मिथ्या
त्व गुणगणे एकवीश आदे देइने नव उदय स्थानकें जांगा प्ररूपवा गाथा कहे ठे.

एगचत्तिगार बत्ती, स ढसय इगतिसिगार नव ननुइ ॥

सत्तरिगंसिगुत्तिस, चउद इगार चउसदि मिडुदया ॥ ६२ ॥

अर्थ— एकवीशने उदयें (एगचत्त के०) एकतालीश जांगा, चोवीशने उदय स्थानकें (इगार के०) अगीअर जांगा, पञ्चीशने उदयें (बत्तीस के०) बत्तीश जांगा, ढवीशने उदयें (ढसय के०) ढशें जांगा, सत्तावीशने उदयें (इगतिस के०) एकत्रीश जांगा, अछवीशने उदयें (इगारनवनउइ के०) अगीअरशें ने नवाणु जांगा, उंगणत्रीशने उदयें (सत्तरिगंसि के०) सत्तरशें ने एक्याशी जांगा उपजे. त्रीशने उदयें (इगुत्तिसचउद के०) उंगणत्रीशें ने चौद जांगा, एकत्रीशने उदयस्थानकें (इगारचउसदि के०) अगीअरशें ने चोशठ जांगा उपजे, (मिडुदया के०) मिथ्यात्वगुणठाणे ए नव उदयस्थानकें अइने (४४४३) जांगा होय ॥ ६० ॥ ६३ ॥

॥ अथ सास्वादनैकविंशत्याद्युदयस्थानसप्तकजंगप्ररूपिकाज्ञाप्यगाथामाह ॥

हवे सास्वादने एकवीशादि सात उदयस्थानकें जांगा प्ररूपवा ज्ञाप्यगाथा कहे ठे.

वत्तीस डुन्नि अछय, वासीइ सयाय पंच नव उदया ॥

बारहिआ तेवीसं, बावन्निकार ससयाय ॥ ६३ ॥

अर्थ— एकवीशने उदयें (वत्तीस के०) बत्तीश जांगा, तिहां आठ मनुष्यना, ढ विकलेंडियना, आठ देवताना, आठ तिर्थचना, बे एकेंडियना. चोवीशने उदयें (डुन्नि के०) बे जांगा तिर्थचना जाणवा. तथा पञ्चीशने उदयें (अछय के०) आठ जांगा देवताना होय, ढवीशने उदयें (वासीइसयायपंच के०) पांचशें ने ब्याशी जांगा होय. तिहां (१००) मनुष्यना, (१००) तिर्थचना, ढ विकलेंडिना. उंगणत्रीशने उदयें (नवउदया के०) नव उदय जांगा होय, तेमथ्यें आठ देवताना, एक नारकीनी जाणवो. त्रीशने उदयें (बारहिआतेवीसं के०) त्रेवीशशें ने बार जांगा, तेमथ्यें (११५१) मनुष्यना (११५१) तिर्थचना, आठ देवताना जाणवा. एकत्रीशने उदयें (बावन्निकारससयाय के०) अगीअरशें ने बावन जांगा तिर्थचना होय. सर्व मली साते उदय स्थानकें अइने (४०९७) उदय जांगा थाय. एनी जावना पूर्व वत्. अने मिश्रादिक गुणठाणे उदयजांगा पोतानी मेल्लेंज विचारिने कहेवा ॥ ६३ ॥

॥ अथ गतिचतुष्क्रमेण बंधोदयसत्तास्थानान्याह ॥

हवे गत्यादिक बाशठ मार्गणा धारें नामकर्मनां बंधोदय सत्ता स्थानक कहे ठे.

तिहां प्रथम नरकादिक चारगति मार्गणाने विषे अनुक्रमें बंधोदय सत्तास्थानक कहेले.

दो ठक्क ४ चउक्कं, पण नव इक्कार ठक्कगं उदया ॥

नेरइ आइ सु सत्ता, ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥ ६४ ॥

अर्थे— नरकादि चार गति अनुक्रमें लेवी. तिहां नरकगतिने विषे उंगणत्रीशने त्रीश, ए (दो के०) बे बंधस्थानक, तिहां उंगणत्रीशतुं मनुष्यगति प्रायोग्य, तथा तिर्यंचप्रायोग्य होय, अने त्रीशतुं तिर्यंच प्रायोग्यज होय. एना जांगा पूर्वे कहा ले, तेम लेवा तथा तिर्यंचने ३३-३५-३६-३७-३९-३० ए (ठक्क के०) ठ बंधस्थानक होय, तथा मनुष्यने ३३-३५-३६-३७-३९-३०-३१-१ ए (अठ के०) आठ बंधस्थानक होय, तथा देवताने ३५-३६-३९-३० ए (चउक्कं के०) चार बंधस्थानक होय. ए चार गतिने विषे बंध स्थानक कहा. हवे चार गतिने विषे अनुक्रमें उदय स्थानक कहे ले. नारकीने ३१-३५-३७-३७-३९ ए (पण के०) पांच उदयस्थानक होय. तिर्यंचने ३१-३४-३५-३६-३७-३७-३९-३०-३१ ए (नव के०) नव उदयस्थानक होय. मनुष्यने ३०-३१-३५-३६-३७-३७-३९-३०-३१-ए-७ (इक्कार के०) अगीअार उदय स्थानक होय. देवताने ३१-३५-३७-३७-३९-३० ए (ठक्कगंउदया के०) ठ उदयस्थानक होय. हवे (नेरइआइसुसत्ता के०) नरकादिकगतिने विषे अनुक्रमें सत्तास्थानक कहे ले. नारकीने बाणु, नेव्याशी अने अठ्याशी, ए (ति के०) त्रण सत्तास्थानक होय. तिर्यंचने बाणु, अठ्याशी, ठ्याशी, एंशी अने अछोत्तेर, ए (पंच के०) पांच सत्तास्थानक होय, मनुष्यने एक अछोत्तेर विना बाकीनां (इक्कारस के०) अगीअार सत्तास्थानक होय. अने देवताने त्र्याणु, बाणु, नेव्याशी अने अठ्याशी, ए (चउक्कं के०) चार सत्तास्थानक होय.

हवे संवेध कहे ले. नारकीने पंचेंडियतिर्यंच प्रायोग्य उंगणत्रीश बांधतां पो ताना पांच उदयस्थानकें प्रत्येकें बाणु अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक होय. तीर्थकरनामनी सत्तायें तिर्यंचगति प्रायोग्य बंध न होय ते जणी नेव्याशीनी सत्ता न होय तथा मनुष्यगति प्रायोग्य उंगणत्रीशने बंधें पांच उदय स्थानकें नेव्याशी सहित त्रण त्रण सत्ता होय तथा उद्योत सहित तिर्यंचगति प्रायोग्य त्रीशने बंधें उंगणत्रीशना बंधनी पेरें पांचे उदयें बे बे सत्ता होय. तथा जिननाम सहित

मनुष्यगति प्रायोग्य त्रीशने बंधें पांचे उदयें एक नेव्याशीनी सत्ता, प्रत्येकें होय. सर्व थइ नरकगतिने विषे चालीश सत्तास्थानक होय.

तिर्यचगतिने विषे बंधोदय सत्ता संवेध कहे ठे. त्रेवीशने बंधें एकवीश, चोवीश, पच्चीश, ढवीश, ए चार उदयें ११-८८-८६-८०-४८ ए पांच पांच सत्ता अने बाकीनां १४-१८-१९-३०-३१ ए पांच उदयें अछोत्तेर विना चार चार सत्ता होय. सर्व त्रेवीशने बंधें चालीश सत्ता थइ. तेम पच्चीश तथा ढवीशने बंधें पण चालीश, चालीश सत्ता जाणवी तथा उंगणत्रीश अने त्रीशने बंधें पण एमज चालीश सत्ता कहेवी. पण एटलुं विज्ञेप जे मनुष्यगति प्रायोग्य उंगणत्रीशने बंधें सर्व उदयस्थानकें अछोत्तेरनी सत्ता न होय, बाकी चार सत्ता सर्व उदयें होय. तथा अछावीशने बंधें चोवीशनो उदय न होय केमके चोवीशनो उदय एकेंडियने होय. तेने अछावीशनो बंध नथी जेमाटे देव, नारकी, ए बे गतिमध्ये एकेंडियने जातुं नथी अने अछावीशनो बंध तो देव नरक प्रायोग्य ठे. माटें बाकी आठ उदय होय, तिहां एकवीश, ढवीश, अछावीश, उंगणत्रीश अने त्रीश, ए पांच उदयस्थानक ह्यायिक सम्यक्दृष्टि तथा वेदक सम्यक्दृष्टि तो जेने मोहनीयनी बावीशनी सत्ता होय, एवाने पूर्वे आरु बांध्या उदय होय. तेनी अपेहार्ये जाणवा. तिहां एकेका उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे सत्तास्थानक प्रत्येकें होय, तथा पच्चीश अने सत्तावीश, ए बे उदयस्थानक वैक्रिय करतां पंचेंडिय तिर्यचने होय. तिहां पण ते हीज बे सत्तास्थानक होय तथा त्रीश, एकत्रीश, ए बे उदय सर्व पर्यासियें पर्यासा एवा सम्यक्दृष्टि तथा मिष्यादृष्टिने जाणवा, तिहां बाणु, अठ्याशी अने ढ्याशी, ए त्रण सत्ता होय. तिहां ढ्याशीनी सत्ता, मिष्यादृष्टिनेज होय अने सम्यक्दृष्टिने अवश्य देवदिकनो बंध होय, तेथी तेने ए सत्ता न होय सर्व अछावीशने बंधें अद्वार सत्ता होय. एम तिर्यचगति मध्ये सर्व बंधस्थानकें (११८) सत्ता होय.

मनुष्यगतिने विषे संवेध कहे ठे. तिहां मनुष्यने त्रेवीशने बंधें ११-१५-१६-१४-१८-१९-३०- ए सात उदयस्थानक होय, तेमध्ये पच्चीश अने सत्तावीश ए बे उदय, वैक्रिय करतां लेवा. पण आहारकें त्रेवीशनो बंध नथी तेचणी ते आहारक न लेवो. ए बे उदयें बाणु अने अठ्याशी, ए बे सत्ता होय अने बीजा पांच उदयें ढ्याशी, एंशी, ए बे अधिक होय तेमाटें तिहां चार सत्तास्थान लेवां. सर्व थइ त्रेवीशने बंधें चोवीश सत्ता होय, एम पच्चीशने बंधें तथा ढवीशने बंधें पण चोवीश चोवीश सत्ता लेवी तथा मनुष्यगति अने तिर्यचगति प्रायोग्य उंगण

॥ अर्थेऽियमाश्रित्याह ॥ हवे इंदिय आश्रयी नामकर्मनां बधोदय सत्ता कहे ठे.

इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अद बंध ठाणाणं ॥

पण ठक्किरुदया, पण पण बारसय संताणि ॥ ६५ ॥

अर्थ—(इगविगलिंदिअसगले के०) एकेडिय, विकलेडिय अने सकल ते पंचेडियने अनुक्रमे बंधस्थानक कहे ठे. तिहां एकेडियने १३-१५-१६-१७-१८ ए (पण के०) पांच बंधस्थानक होय, तथा त्रयो विकलेडियने एहीज (पंचय के०) पांच बंध स्थानक होय, तथा पंचेडियने १३-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२ एवं (अठबंधठाणाणं के०) आठ बंधनां स्थानक होय. तथा एकेडियने ११-१४-१५-१६-१७-१८-१९ (पण के०) पांच उदयस्थानक होय. तथा त्रयो विकलेडियने ११-१६-१७-१८-१९-२०-२१ ए (ठक्क के०) ठ उदय स्थानक होय, तथा पंचेडियने १०-११-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२ ए (इकारुदया के०) अगीआर उदयस्थानक होय. तथा एकेडियने ११-१७-१८-१९-२०-२१-२२ ए (पण के०) पांच सत्तास्थानक होय. तथा त्रयो विकलेडियने ११-१७-१८-१९-२०-२१ एज (पण के०) पांच सत्तास्थानक होय. तथा पंचेडियने १३-१४-१५-१६-१७-१८-१९ (बारसयसंताणि के०) बार सत्तानां स्थानक होय ॥ एनो संवेध पूर्वे चौद जीव जेदे नामकर्मनो संवेध विचाखो ठे, तिहांथी जोइ जेवो तथा निपुण बुद्धियें विचारी करवो ॥ ६५ ॥

इय कम्म पगइछाणा, णि सुद्धु बंधुदय संत कम्माणं ॥

गइआएहिं अठसु, चउप्पयारेण नेआणि ॥ ६६ ॥

गइइंदिए अकाए, जोए वेए कसाय नाणेअ ॥

संयम दंसण लेसा, जवसंमे सन्निआहारे ॥ ६७ ॥

संत पयपरूवणया, दवपमाणं च खित्त फुसणाय ॥

कालं तरंच जावो, अप्पा बहुयं च दाराइ ॥ ६८ ॥

अर्थ—(इय के०) ए उक्तप्रकारें (सुद्धु के०) सुद्धु एटले जले प्रकारें अत्यंत उपयोग राखीने (कम्मपगइछाणाणि के०) आठे कर्म प्रकृतिनां स्थानक, (बंधुदयसंतकम्माणं के०) बंध, उदय, सत्ता, कर्मनीतेना संवेधें (गइआएहिं के०) गत्यादिक एटले गति, इंदिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेखा,

ज्व्य, सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारी, ए चौद जीव स्थानकें तथा ए चौदना उत्तर वा शक मार्गणा जेदने स्थानकें करीने सत्पद प्ररूपणादिक (अक्षु के०) आठ अनुयोग द्वारने विषे (चउष्यपारेण के०) प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, रसबंध अने प्रदे शबंध, ए चार प्रकारें कहेवाने (नेआणि के०) जाणवा ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

हवे ए आठ अनुयोग द्वार, जखीयें ठैयें. (संतपयपरूवणाए) एटले उता प दनी प्ररूपणा, ए एक पद नणी घट पदनी परें अठतुं न होय, जे उता पदार्थनुं वाचक पद न होय, ते एक पद पण न होय. जेम वंध्यापुत्र ए शब्द बे पदनो माटे ते पद अठतुं ठे. तेनी परें ए पद नथी ते नणी ए पद साचां ठे एटले अर्थ प्ररूप णाना जेद ते अनु कहेतां वस्तु प्रतिपादन कखा पठी योग कहेतां सर्व प्रकारें वस्तु आठ अनुयोग द्वार अणु कहेतां सूत्र तेनी साथें योग कहेतां अर्थनुं जोडतुं, तेनां द्वार, कहेतां बारणां एटले वस्तुनो निर्णय करवो, तेनां द्वार आठ जाणवां. ति हां प्रथम उता पदनी प्ररूपणा, ते जेम बंध, उदय, सत्ता तथा प्रकृति, स्थिति, र स. प्रवेश, ए सर्व पद साचां ठे आप आपणा पदार्थनां वाचक ठे एकेक पद न णी घटपदनी परें उतां ठे, पण वंध्या पुत्रनी परें अठतां नथी तेनां स्थानक, जेनो जिहां सजाव, ते तिहां कहेवां. ते प्रथम उता पदनी प्ररूपणा नाम द्वार जाणतुं.

तथा बीजुं इव्यप्रमाण द्वार, ते एम के ए प्रकृति स्थानकना इव्य केटलां होय ? एम प्रमाणनुं कहेवुं, ते बीजुं द्वार. तथा एकेक प्रकृतिस्थान इव्य, केट ला आकाश प्रदेश क्षेत्र रुंधे, ए अर्थ कहे ते क्षेत्रप्रशंसानामा त्रीजुं द्वार. तथा एकेकस्थानकें जीव केटला काल पर्यंत रहे, एम कहेवुं ते चोथुं काल द्वार. तथा ए बंधस्थानक तथा उदयस्थानक ठाम्युं ते वली केटले कालें जघन्य तथा उरुष्टें आंतरे लहे, ए पांचमुं अंतर द्वार. तथा लोकने केटले जागें एकेक स्थानक होय, एम कहेवुं, ते उछा जाग द्वारनो विचार जाणवो. तथा कयुं स्थानक उदयिकादिक ठ जाव मध्ये कया जावें होय ? ते सातमुं जाव द्वार. तथा कया स्थानकथी कयुं स्थानक इव्य, क्षेत्र, काल अने जावनी अपेक्षायें घणुं होय तथा थोडुं होय अ थवा बराबर होय ? एम विचारतुं ते आठमुं अठपबहुत्व द्वार. ए आठ अनुयोग द्वारें करी विचारतां पदार्थनुं सम्यक्ज्ञान होय, तिहां सत्पदप्ररूपणायें करीने गुणगणाने विषे गति तथा इंद्रियमार्गणायें बंधोदय सत्तानो संवेध कह्यो. एने अनुसारे कययोगादिक मार्गणायें पण कहेवो, अने शेष जे इव्यप्रमाण क्षेत्र, स्पष्टीनादिक सात अनुयोग द्वार, ते कर्मप्रकृति कर्मप्राचृत प्रमुख ग्रंथोने सम्यक् प्र

कारें जोऽने कहेवां. पण आज ते ग्रंथना अनावयकी लेशमात्र पण कही न शकी
यें तेमाटें प्रकृति, स्थिति, रस अने अनुनाग, ए चार प्रकारें कहेवां. तिहां प्रकृति
आश्रयी बंध उदय सत्ता स्थानक पूर्वे कर्ह्यां, तेना अनुसारें स्थितिना बंधादि स्था
न, रसस्थान तथा प्रदेशस्थान पण मार्गणा द्वारें एवाज अनुक्रमें कहेवां ॥६०॥
अर्हींआं बंधोदय सत्तानो संवेध कर्ह्यो. तिहां उदय कर्ह्यो, पण उदीरणा न
कही, ते शामाटें न कही? ते कहे ठे.

उदयस्सुदीरणाए, सामित्तानं न विच्छद्द विसेसो ॥
मुत्तूणय इगयालं, सेसाणं सव्व पयडीणं ॥ ६१ ॥

अर्थ—(उदयस्सुदीरणाए के०) अर्हींआं बंधोदय सत्ता संवेध विचारतां उदीर
णा, उदयमध्ये कहेवाणी पण उदीरणा उदययकी जूदी न कही तेतुं कारण
कहे ठे. अर्हींआं काल प्राप्त कर्मेतुं अनुभवतुं ते उदय कर्ह्ये. अने काल अप्रा
प्त उदयावलिथकी बाहेर रर्ह्यां एवां जे कर्मदल तथा रस, जेनो उदय काल आ
व्यो नथी ते कर्मदलने जीव, कषाय सहित्त योग, एवे नामें जे वीर्यविशेष, तेणे
करी आकर्षीने उदय आच्या दलमांहे जेलीने उदय प्राप्त कर्मपरमाणु साथें अतु
जवे, ते करणतुं नाम उदीरणा कर्ह्ये. तेमाटें उदय अने उदीरणातुं (सामित्तानं
नविच्छद्दविसेसो के०) स्वामित्वपणा आश्रयीने कांइ विशेष नथी एटले ज्ञानाव
रणादिक जे कर्म तेना उदयनो स्वामी तेहीज जीव ज्ञानावरणादि कर्मेनी उदीरणा
नो पण स्वामी जाणवो. “ जह उदय तह उदीरणा, जह उदीरणा तह उदय ”
ए वचन प्रमाण थकी एमज जाणवुं. परंतु एटलुं विशेष जे (मुत्तूणयइग
यालं के०) एकतालीश प्रकृति आगली गाथार्ये कहेरो, ते मूकीने (सेसाणंसव्वप
यडीणं के०) शेप सर्व प्रकृतिनो उदय अने उदीरणा साथेंज समकारें प्रवर्त्ते,
तेमाटें जे उदयनो स्वामी तेहीज उदीरणानो पण स्वामी जाणवो ॥ ६१ ॥

॥ एकचत्वारिंशत्प्रकृतीराह ॥ हवे एकतालीश प्रकृतिने उदय उदीरणार्ये फेर
ठे एटले उदय उदीरणातुं अंतर होय, ते विशेषें बे गाथार्ये करी कहे ठे.

नाणंतराय दसगं, दंसण नव वेयणिज्ज मिच्चंतं ॥
संमत्तलोच वेत्था, उच्चाणि नव नाम उच्चं च ॥ ६० ॥

मणुय गइ जाइ तस बा,यरं च पकृत सुजग आइऊं ॥
जस किती तिढयरं, नामस्स हवंति नव एया ॥ ७१ ॥

अर्थ—(नाणंतरायदसगं के०) पांच ज्ञानावरणीय अने पांच अंतराय, एवं दश प्रकृति तथा (दंसणनव के०) दर्शनावरणीय नव, (वेयणिकु के०) वेदनीयनी बे प्रकृति, (मिञ्चत्तं के०) मिथ्यात्वमोहनीय, (संमत्त के०) सम्यक्त्वमोहनीय, (लोच के०) संज्वलनलोच, (वेआउआणिके के०) त्रण वेद अने चार आयु, (नवनाम के०) नामकर्मनी नव प्रकृति जे चौदमे गुणगणो रहे ठे ते तथा (उच्चं के०) उच्चैर्गोत्र, एवं एकतालीश प्रकृति जाणवी ॥ इत्यह्वरार्थः ॥७०॥

तिहां ज्ञानावरणीय पांच, अंतराय पांच, तथा चार दर्शनावरणीय, एवं चौद प्रकृतिनो उदय अने उदीरणा, बारमा गुणगणानी एक आवली थाकती होय, तिहां सुधी सर्व जीवने साथेज प्रवर्त्ते अने उदय, उदीरणा विहेद थया पठी केवल उदयावलीका थाकती होय तेमध्ये सर्व कर्मदल पेसे पण बाहीर बीछुं कोइ कर्मदल रहे नहीं तो पठी शानी उदीरणा करे? माटे ए चौद प्रकृतिनी बारमा गुणगणानी ठेहली आवलिकार्ये उदीरणा न होय. तथा पांच निज्ञानीज उदीरणा, शरीरपर्याप्ति पूरी थया पठी ज्यां लगे इंडियपर्याप्ति पूरी न करे, तिहां लगे उदीरणा न होय. केवल उदयज होय अने शेष कालेंतो उदय उदीरणा साथेज प्रवर्त्ते, तथा साथेज निवर्त्ते. तथा वेदनीयनी बे प्रकृतिनां उदय तथा उदीरणा ठाठ गुणगणा सुधी साथेज प्रवर्त्ते अने ते उपरांत तो उदयज होय पण उदीरणा न होय. तथा प्रथम सम्यक्त्व उपार्जेतां अंतर करण कखा पठी मिथ्यात्वनी प्रथमस्थितिनी एक आवलि रहे त्यांसुधी-मिथ्यात्व मोहनीयना उदय तथा उदीरणा साथेज प्रवर्त्ते, अने ठेहली आवलिये मिथ्यात्वनो उदय होय पण उदीरणा न होय.

तथा वेदकसम्यक्दृष्टिने ह्यायिक सम्यक्त्व उपजावतां मिथ्यात्व मोहनीय अने मिश्रमोहनीय, ए बेहु खपाव्या पठी सम्यक्त्वमोहनीय सर्व अपवर्त्तनार्ये अपवर्त्तिने अंतरमुहूर्त्त स्थितिमात्रनुं करे, तेने उदय तथा उदीरणार्ये जोगवतां जेवारें शेष एक आवलीमात्र रहे तेवारें उदीरणा टले केवल उदयावली लगे उदयज होय.

अथवा उपशमश्रेणी पडिवजतां सम्यक्त्वमोहनीयनुं अंतर करण कखा पठी प्रथमस्थिति आवलिका मात्र रहे, तिहां लगे सम्यक्त्व मोहनीयनां उदय तथा उदीरणा साथेज होय अने पठी ठेहली आवलीये उदीरणा न होय मात्र उदयज होय.

संज्वलना लोचना उदय तथा उदीरणा ज्यां लगें सूक्ष्मसंपरायनी एक आवलिका थाकती होय, त्यां लगें सार्थेज होय अने बेहली आवलीये तो मात्र उदयज होय पण उदीरणा न होय.

तथा त्रण वेद मांहेली जे वेदें श्रेणी पडिवळे तिहां अंतर करण कीधे थके ते वेदनी प्रथमस्थिति आवलिका थाकतां लगें उदय तथा उदीरणा सार्थेज होय अने बेहली आवलीये तो उदीरणा न होय, मात्र उदयज होय.

तथा चारे आयुनो पोत पोताना जवनी बेहली आवलिकार्ये उदय होय, पण उदीरणा न होय अने मनुष्यायुनो प्रमत्त गुणगणा लगेज उदय तथा उदीरणा होय, आगले गुणगणे केवल उदयज होय पण उदीरणा न होय ॥ इत्यर्थः ॥ ४० ॥

तथा मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुजग, आदेय, यशःकीर्ति अने तीर्थकरनाम, ए नव नामकर्मनी प्रकृति तथा उच्चैर्गोत्र ए दश प्रकृतिनां स योगी केवली गुणगणा लगे उदय तथा उदीरणा सार्थेज समकाले प्रवर्त्ते तैवार पढी अयोगी गुणगणे ए दश प्रकृतिनो उदय होय पण उदीरणा न होय. एम ए ए कतालीश प्रकृतिनां उदय अने उदीरणानुं विशेष देखाड्युं अने शेष पञ्चाशी प्रकृतिनां उदय तथा उदीरणा समकाले प्रवर्त्ते अने समकाले निवर्त्ते ॥ इति समु० ॥ ४१ ॥

॥ अथ कस्मिन् गुणस्थानके काः प्रकृतीर्बिभ्रंतीत्याह ॥

हवे कथा गुणगणे कइ प्रकृति बांधे ठे. ? एवो बंधविशेष सर्व गुणगणे कहे ठे.

तिष्ठयरा हारग विर, हिंश्राउ अषेइ सव पयडीठ ॥

मिहत्तवेअगो सा, साणोगुणवीस सेसाठ ॥ ४२ ॥

अर्थ— बंध योग्य एकशो वीश प्रकृति मध्येथी (तिष्ठयराहारग के०) तीर्थकरनाम अने आहारकदिक, ए त्रण प्रकृति (विरहिंश्राउ के०) रहित करीने (अवे इतवपयडीठ के०) बाकी एकशो सत्तर प्रकृति सर्वे उपार्जे, एटले बांधे ते कोण जीव क्यां बांधे ? तोके (मिहत्तवेअगो के०) मिथ्यात्वनो वेदक एवो मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्व गुणगणे रह्यो थको बांधे अने जिननाम सम्यक्त्व प्रत्ययिठ ठे तथा आहारकदिक संयम प्रत्ययिठ ठे तेथी मिथ्यात्वे सम्यक्त्व तथा संयम बेहुने अनावे ए त्रण प्रकृति न बांधे तथा (सासाणोगुणवीससेसाठ के०) सास्वादन गुणगणे वर्त्ततो जीव ? जिननाम, ३ आहारकदिक, ४ नपुंसकवेद, ५ नरकगति, ६ नरकालु पूर्वी, ७ नरकायु, ८ हुंमसंस्थान, ९ ठेवहुं संघयण, १० आतप, ११ स्यावर,

१२ सूक्ष्म, १३ साधारण, १४ अपर्याप्त, १५ एकेंद्रिय, १६ बेंद्रिय, १७ तेंद्रिय, १८ चौरिन्द्रियजाति, १९ मिथ्यात्वमोहनीय, ए उगणीश प्रकृति विना शेष एक शोने एक प्रकृति बांधे जे जणी नपुंसकादिक शोल प्रकृतिनो बंध, मिथ्यात्व प्रत्ययिठ ठे, ते अहींआं सास्वादने न बंधाय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७२ ॥

ढायल सेस मीसो, अविरय सम्मो तिआल परिसेसा ॥

तेवन्न देस विरठ, विरठ सगवन्न सेसाठ ॥ ७३ ॥

अर्थ—उगणीश प्रकृति पूर्वे कही ते तथा तिर्यंचत्रिक, धीणद्भित्रिक, दौर्नाग्यत्रिक, अनंतानुबंधिचतुष्क, मध्यसंस्थान चार, मध्यसंघयण चार, नीचैर्गोत्र, उद्योत, अष्टुजविहायोगति, स्त्रीवेद, मनुष्यायु अने देवायु, ए (ढायल के०) ठेंतालीश प्रकृति वर्जीने (सेसमीसो के०) शेष चमोत्तेर प्रकृति मिश्रगुणगणो वर्त्ततो जीव बांधे अने (अविरयसम्मो के०) अविरति सम्यक्दृष्टि गुणगणो पूर्वोक्त ठेंतालीश मध्यैथी तीर्थेकरनाम, मनुष्यायु अने देवायु, ए त्रण बांधे माटे (तिआल परिसेसा के०) ठेंतालीश प्रकृति वर्जीने शेष सत्त्योतेर प्रकृति बांधे तथा (देस विरठ के०) देशविरति गुणगणो वर्त्ततो जीव, वज्ररूपनाराच संघयण, मनुष्यत्रिक, अप्रत्याख्यानीआ चार कषाय, औदारिकदिक, एवं दशप्रकृति पूर्वोक्त त्रेंतालीशमां जेलीये, तेवारें (तेवन्न के०) त्रेपन प्रकृति न बांधे, ते वर्जीने शेष शडशठ प्रकृति बांधे. तथा (विरठ के०) सर्वविरति प्रमत्त साधु, ठेठे गुणगणो पूर्वोक्त त्रेपन्ननी साथे प्रत्याख्यानावरण कषाय चार जेलतां (सगवन्न के०) सत्तावन्न प्रकृति न बांधे, ते वर्जीने (सेसाठ के०) शेष त्रेशठ प्रकृति बांधे ॥ ७३ ॥

इगुसठि मप्पमत्तो, बंधइ देवाउअस्स इअरोवि ॥

अछावस्स मपुवो, ढप्पन्नं वावि ढवीसं ॥ ७४ ॥

अर्थ— तथा ते पूर्वोक्त त्रेशठ प्रकृतिमध्यैथी शोक, अरति, अघिर, अष्टुज, अयश अने आशाता, ए ढ प्रकृति काठीये अने आहारकदिक जेलीये, तेवारें (इगुसठि के०) उगणशाठ प्रकृति, (अपमत्तो के०) अप्रमत्त गुणगणो (बंधइ के०) बांधे. अथवा (देवाउअस्सइअरोवि के०) देवायु पण प्रमत्त बांधवा मांढे, ते बांधतो थकोज प्रमत्त थकी इतर अप्रमत्त आवे, तिहां ते बंध पुरो करे, पण अप्रमत्त थको देवायु बांधवा न मांढे तेमाटे देवायु विना (अछावस्स के०) अछावन्न प्रकृति

बांधे तथा (मपुत्रो के०) अपूर्वकरण गुणगणाना सात जाग कल्पीयें. तिहां पहेले जागें तो तेहीज पूर्वोक्त अष्टावन्न बांधे, अने बीजे, त्रीजे, चौथे, पांचमे, अने ठेके, ए पांच जागें निष्ठादिक न बांधे. शेष (उप्यन्न के०) उपन्न प्रकृति बांधे, (वावि के०) अथवा ठेहले जागें देवादिक, पंचेंद्रियजाति, शुचस्वगति, त्रसादि नव, औदारिक विना चार शरीर, बे उपांग, समचतुरस्र, निर्माण, तीर्थकर, वर्णादि चार तथा अगुरुजघु चतुष्क, ए त्रीश प्रकृति पण न बांधे, तेवारें (ठवीसं के०) ठवीश प्रकृतिनो बंध पण होय ३४

बावीसा एगूणं, बंधइ अछारसंत अनिअट्टी ॥

सत्तर सुद्धम सरागो, साय ममोहो सजोगिती ॥ ३५ ॥

अर्थ-हवे (अनिअट्टी के०) अनितृत्तिगुणगणाना पांच जाग कल्पीयें, तिहां पहेले जागें हास्य, रति, जय, कुब्जा, ए चार पण न बांधे तेवारें (बावीसा के०) बावीशिनो बंध होय. तेवार पढी द्वितीयादिक जागें (एगूणं के०) एकेक प्रकृति कणी करता जइयें एटले बीजे जागें पुरुषवेद न बांधे तेवारें एकवीशिनो बंध, त्रीजे जागें संज्वलनक्रोध टले वीशिनो बंध, चौथे जागें संज्वलन मान टले उगणीशिनो बंध, पांचमे जागें संज्वलनी माया टले, तेवारें (अछारसंत के०) अठार प्रकृति पर्यंतज (बंधइ के०) बांधे तथा (सत्तरसुद्धमसरागो के०) सूद्धसंपरायगुणगणो संज्वलनो लोन पण न बांधे, तेमाटें सत्तर प्रकृति बांधे, तेवार पढी ज्ञानावरणीय पांच, दर्शनावरणीय चार, अंतराय पांच, उच्चैर्गोत्र अने यशःकीर्ति, एवं शोल प्रकृति पण न बांधे तेवारें एकज (साय के०) शातावेदनीयनो बंध, (अमोहोसजोगिती के०) अमोही गुणगणाना धणाने होय. एटले अगीआरमा, बारमा अने सयोगी तेरमा गुणगणावालाने एकज शातानो बंध होय ॥ इति ॥ ३५ ॥

एसो उ बंधसामि, त उहो गइआइएसुवि तहेव ॥

उहाउं साहिऊइ, जह जहा पयडि सप्रावो ॥ ३६ ॥

अर्थ- (एसोउबंधसामित्त के०) ए उंध पणे चौद गुणगणो बंधस्वामित्व कछुं. जेम बीजा कर्मग्रंथमध्यें कछुं ठे, तेम अहीआं पण जाणतुं. (तहेव के०) तेमज (गइआइएसुवि के०) गत्यादिक मार्गणाने विषे पण (उहु के०) उंधयकी कहेवो. जे रीतें त्रीजे कर्मग्रंथें बाशठ मार्गणायें बंध कह्यो ठे, तेम अहीआं पण कहेवो. (उहाउंसाहिऊइ के०) प्रथम सामान्य प्रकारें कछुं ठे तेमज कहेवुं. (ज

वज्रहापयदिसप्लावो के०) जिहां जे गुणगणो जेटली प्रकृति बांधवानो सजाव होय, एटले जेने जेटली प्रकृति बांधवी घटे तेने तेटली विचारीने कहेवी ॥ ७६ ॥

हवे जे गतिने विपे जेटली प्रकृति सत्तायें पामीयें ते कहे ठे.

तिह्यर देव निरिआ, उअंच तिसु तिसु गईसु बोधवं ॥

अवसेसा पयडीठ, हवंति सवासु विगईसु ॥ ७७ ॥

अर्थ— (तिह्यरदेवनिरिआउअंच के०) तीर्थंकर नामकर्म देवायु अने नरकायु, ए त्रण प्रकृति (तिसुतिसुगईसुबोधवं के०) त्रण त्रण गतिने विपे होय एम जाणवुं. तिहां तीर्थंकरनामकर्मनी सत्ता नारकी, देवता तथा मनुष्यगतिने विपे होय, पण तीर्थंचगतिमध्ये न होय. केमके, तीर्थंकर सत्कर्मा तीर्थंचमध्ये जाय नहिं तेमाटे. तथा देवायुनी सत्ता मनुष्य तीर्थंच अने देवगति मध्ये होय, पण नारकी मध्ये न होय, तथा नरकायुनी सत्ता मनुष्य, तीर्थंच अने नरकगति मध्ये होय, पण देवगतिमध्ये न होय, अने (अवसेसापयडीठ के०) अवशेष सर्व प्रकृतिनी सत्ता, (हवंतिसवासुविगईसु के०) सर्व चारेगतिने विपे पण होय. एटले तीर्थंच मध्ये तीर्थंकरनाम विना सर्व प्रकृति सत्तायें होय, देवगतिमध्ये नरकायु विना सर्व प्रकृतिसत्तायें होय. नरकगतिमध्ये देवायु विना सर्वप्रकृति सत्तायें होय ॥७४॥

हवे गुणगणाने विपे पूर्वे जे वंधोदय सत्तास्थानकनो संवेध कह्यो, ते गुण गणां तो प्रायें उपशमश्रेणीयें तथा रूपकश्रेणीयें होय, तेमाटे ते श्रेणी कहे ठे.

तिहां प्रथम उपशमश्रेणि कहे ठे.

पढम कसाय चउकं, दंसण तिग सत्तगावि उवसंता ॥

अविरय सम्मत्ताठ, जाव नियद्वित्ति नायदा ॥ ७८ ॥

अर्थ—(पढमकसायचउकं के०) पहेला अनंतानुबंधीआ चार कपाय तथा (दंसणतिग के०) दर्शनत्रिक, ते मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए (सत्तगाविउवसंता के०) सात प्रकृति उपशांत होय. ते (अविरयसम्मत्ताठ के०) अविरतिसम्यक्दृष्टि गुणगणायकी मांतीने (जावनियद्वित्तिनायदा के०) यावत् निवृत्तिनामे आवमा गुणगणा लगें जाणवी. तिहां सातमा लगें यथायोग्यपणे उपशांत होय अने अपूर्वकरणे तो निश्चयधकीज उपशांत होय ॥७८॥

प्रथम अनंतानुबंधीआ चार कपाय तथा दर्शन त्रिक एटले मिथ्यात्वमोहनी

य, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए सात मोहनीयनी प्रकृतिना रसोदयनी अपेक्षायै अविरतिसम्यक्दृष्टि गुणगणायी मांसीने अपूर्वकरणनामा आठ मे गुणगणे चढतां पर्यंत उपशांत पामीयै अने कोइएकने प्रवेशोदयनी अपेक्षायै पण अविरति सम्यक्दृष्टिने एज चोथै गुणगणे उपशांत पामी कहियै. तथा अपूर्वकरणे तो ए साते प्रकृति रसोदय आश्री तथा प्रवेशोदय आश्री पण उपशांत पामी कहियै. तिहां प्रथम अनंतानुबंधीअनी उपशमनानो प्रकार कहे ठे.

अविरतिसम्यक्दृष्टि, देशविरति, प्रमत्त तथा अप्रमत्त, ए चार गुणगणे वर्त्तता जीवमांहेलो कोइ पण जीव, जघन्य परिणामे तेजो, मध्यम परिणामें पद्म अने उत्कृष्टपरिणामें शुक्ल, ए त्रण विद्युद्वेद्यमांहेली कोइ पण वेद्यायै वर्त्ततो ज्ञानो पयोगें उपयुक्त एक आयुःकर्म विना बीजा साते कर्मनी स्थिति जोगवीने बाकी कांइ एक कणी एक कोडाकोडी सागरोपम मात्र जोगववी रहे, तेवारें अंतरमुहूर्त्त पर्यंत अवदायमान परिणामें एटले विद्युद्व चित्तवृत्तिवंतथको रहे. एवीरीतें रह्यो थको प रावर्त्तमान प्रकृतिमांहेली सर्वें शुंज प्रकृतिनेज बांधे, पण अशातादिक अशुंज प्रकृति न बांधे अने जे अपरावर्त्तमान ध्रुवबंधिनी ज्ञानावरणीयादिक अशुंज प्रकृति बांधे, तेनो पण चौठाणीठ रसबंध टालीने, बेठाणीठ रस बंध करे, अने शुंज प्रकृतिनो बेठाणीठ रसबंध टालीने चौठाणीठ रसबंध करे अने एकस्थितिबंध पूर्ण करीबी जो स्थितिबंध बांधवा माने, ते पूर्व पूर्व स्थितिबंधनी अपेक्षायै पद्योपमसंख्येय जागहीन स्थिति करीने बांधे. ए रीतें जे जे आगलो आगलो स्थितिबंध करे, ते ते पूर्व पूर्व स्थितिबंधथी पद्योपमसंख्येय जागहीन स्थितिनो बंध करे.

एम करण कालथकी पूर्वे अंतरमुहूर्त्त काल पर्यंत रहीने तेवार पढी अनुक्रमें प्रत्येकें अंतरमुहूर्त्त प्रमाणना एवां त्रण करण करे, तिहां प्रथम यथाप्रवृत्तिकरण, बीजुं अपूर्वकरण अने त्रीजुं अनिवृत्तिकरण, चोथी उपशांत अक्षा, तेनी पण स्थिति अंतरमुहूर्त्तनीज जाणवी. तिहां प्रथम यथाप्रवृत्तिकरणें प्रवेश करतो प्रतिसमय अनंतगुण वृद्धि विद्युद्धियै करी प्रवेश करे, तिहां पूर्वोक्त शुंजप्रकृतिना बंधादिकने वे गणिआ रसने चौठाणीठ करतो बांधे अने अशुंज प्रकृतिना चौठाणीआ रसने बेठाणीठ रस करतो बांधे, परंतु तिहां तथाविध तत्प्रायोग्य विद्युद्धिने अज्ञावै स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी अने गुणसंक्रम, ए चार वानां मांहेलुं एक वानुं पण नहीं करे. ए करणमां प्रवर्त्तमान जीवने समय समय प्रत्ये नाना जीवनी अपेक्षायै असंख्यात लीकाकाश प्रदेश प्रमाण अथ्यवसायस्थान प्रथम समयें होय.

ते पण षट्स्थानपतित होय. ते वली पहेला समयनां अथ्यवसायस्थानथकी बीजा समयनां अथ्यवसायस्थान विशेषाधिक होय. एम बीजा समयना अथ्यवसायस्थानथकी त्रीजा समयनां अथ्यवसायस्थान विशेषाधिक होय, एम आगला समयनां अथ्यवसायस्थानक ते पूर्व पूर्व समयनां अथ्यवसायस्थानकथकी विशेषाधिक विशेषाधिक होय. एम करतां तेनी स्थापना विषमचतुरस्र क्षेत्र रुंधे ठे. ए रीतें यथाप्रवृत्तिकरणनो ठेहलो समय आवे. त्यां सुधी कहेवुं. अर्होआं अथ्यवसायस्थानक विद्युदिनी अपेक्षायें एक एकथी बघाण वडीआं होय, ते आवी रीतें जेम असत्कल्पनायें बें पुरुष, युगपत् यथाप्रवृत्तिकरणप्रतिपन्न ठे ते मांहे एक तो सर्व जघन्य विद्युदि श्रेणीयें प्रतिपन्न ठे अने बीजो सर्वोत्कृष्ट विद्युदिनां अथ्यवसाय स्थानक श्रेणीयें प्रतिपन्न ठे. ते बेहुनी विद्युदिनुं तारत म्यपणुं देखाडे ठे. त्यां प्रथम जीवने प्रथम समयने विषे सर्व जघन्य मंद विद्युदि सर्वस्तोक ठे. तेथकी ते पुरुषनेज वली बीजे समयें जघन्यविद्युदि अनंतगुणी ठे. तेथी वली त्रीजे समयें जघन्यविद्युदि अनंतगुणी ठे. एम त्यां लगे कहेवुं. ज्यां लगे यथाप्रवृत्तिकरण कालनो संख्यातमो जाग जाय त्यां लगे कहेवुं. ते वार पढी ते जघन्य पद विद्युदिवाला पुरुषनी जे ठेहला समयनी जघन्यविद्युदि थड ते थकी बीजा पुरुषनी पहेला समयनी उत्कृष्ट विद्युदि अनंतगुणी होय. ते थकी पण जे जघन्यविद्युदि स्थानथकी निवस्थो हतो ते पुरुषने उपरितन जघन्यविद्युदि अनंतगुणी होय ठे ते थकी बीजा समयनी उत्कृष्ट विद्युदि अनंतगुणी, तेथी त्रीजा समयनी जघन्यविद्युदि अनंतगुणी, तेथी वली आगला समयनी उत्कृष्ट विद्युदि अनंतगुणी. एम उपर अने हेते एकांतरें एकेकुं विद्युदिस्थानक, अनंतगुणी करतां वेहु जीवने त्यांसुधी कहेवुं ज्यांसुधी यथाप्रवृत्तिकरणना ठेहला समयने विषे जघन्यस्थानक होय त्यांसुधि कहेवुं. तेपढी उत्कृष्टविद्युदि स्थानक ते नथी कहेलां तेने निरंतर पणे ठेहला समयलगे अनंतगुणी वृद्धिवालां कहेवां ते यावत् चरम समयनुं उत्कृष्ट विद्युदिस्थानक आवे, त्यां लगे कहेवा. एम यथाप्रवृत्तिकरण कसुं.

हवे अपूर्वकरण कहीयें ठेयें. तिहां अपूर्वकरणें प्रतिसमय असंख्यात लोका काश प्रदेश प्रमाण अथ्यवसायस्थानक होय, ते प्रतिसमयें बघाणवलिथा होय, एटले ठ वृद्धि अने ठ हाणि होय. तिहां एक उत्कृष्ट विद्युदिस्थानकथकी बीजुं विद्युदिस्थानक विद्युदिनी अपेक्षायें जो हीन होय, तो अनंतजाग हीन

होय, तथा असंख्यातजागहीन होय, तथा संख्यातजाग हीन होय, तथा संख्यातगुणहीन होय, तथा असंख्यात गुणहीन होय तथा अनंतगुण हीन होय. ए रीते ङ हाणिनां स्थानक कर्त्ता तथा एक अध्यक्षस्थानकविद्युद्धिनी अपेक्षायें बीजं अध्यक्षस्थानक वधतुं होय, तो पण ङ जेवें होय, ते कहे ठे. एक अनंतजागाधिक, बीजं असंख्यातजागाधिक, त्रीजं संख्यातजागाधिक, चोषुं संख्यातगुणाधिक, पांचमुं असंख्यातगुणाधिक, ङुं अनंतगुणाधिक, एम परस्परें ङ वृद्धिनां तथा ङ हानिनां घटतां वधतां अध्यक्षस्थानक होय. तिहां अपूर्वकरणना प्रथम समयें जघन्यविद्युद्धि सर्वथकी थोडी होय, ते पण यथाप्रवृत्ति करणना चरम समयनी उत्कृष्टी विद्युद्धिस्थानथकी अनंतगुणी अधिकी जाणवी. तेथकी वली प्रथम समयनीज उत्कृष्ट विद्युद्धि अनंतगुणी होय, तेथकी वली बीजे समय जघन्यविद्युद्धिअनंतगुणी, तेथकी वली तेहीज बीजे समयें उत्कृष्टविद्युद्धि अनंतगुणी, तेथकी त्रीजा समयनी जघन्यविद्युद्धि अनंतगुणी होय, तेथकी वली तेहीज त्रीजा समयनी उत्कृष्टविद्युद्धि अनंतगुणी होय, एम अपूर्वकरणना चरम समय जगें कहेतुं. ए अपूर्वकरणने विषे प्रवेश करतो जीव, प्रथम समय थोज १ स्थितिघात, २ रसघात, ३ गुणश्रेणि, ४ गुणसंक्रम, ५ अन्यस्थितिबंध, ए पांच वानां समकालें एकठां करवाने प्रवर्त्ते.

तिहां प्रथम स्थितिघात एटले शुं ? तोके जे क्रोधादिकनी स्थिति नोगववी रही होय, ते सत्तामध्येंथी अग्रजागनी स्थिति उकेरे, एटले ते स्थितिसत्तानो अग्रजाग उत्कृष्टो तो घणा सागरोपम प्रमाण होय अने जघन्यथी तो पळ्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण होय. ते स्थितिखंमने खंमं ठे एटले उकेरे ठे. ते उकेरीने तेनुं दलिक जे हेतली आद्यस्थिति खंमन करवाने रही ठे. ते दलमध्ये तेना दलने प्रक्षेपे. ए रीते अंतरमुहूर्त्तकालें ते स्थितिखंमने उकेरे. एमज वली जे शेष स्थिति रहे, तेना अग्रजागथकी पळ्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण स्थिति करी तेनुं दल अंतरमुहूर्त्तें पूर्वोक्त प्रकारेंज बाकी रहेला, हेतला स्थितिदलमध्ये जेले, एम अंतरमुहूर्त्तें अंतरमुहूर्त्तें स्थितिमाहे तेनुं दल जेततां अपूर्वकरणना काल माहे घणा हजाए स्थितिना खंम खपी जाय, तेवारें जे अपूर्वकरणने प्रथम समयें जेटली कर्मनी स्थितिनी सत्ता हती, तेथकी संख्यातगुणहीन स्थितिनी सत्ता थइ. ए स्थितिघातनुं स्वरूप कहुं.

हवे रसघात कहे ठे. रसघात ते जे अष्टाज कर्मनो रस नोगव्याविनानो रह्यो ठे, ते

रसनो अनंतमो जाग मूकीने शेष अनुजागना जाग सर्व अंतरमुहूर्त्तैज खपावे, विनाशो, तेवार पढी वली पण जे अनंतमो जाग रह्यो ठे तेनो वली अनंतमो जाग मूकीने शेष अनुजागना जाग सर्व अंतरमुहूर्त्तै खपावे, तेवार पढी वली ते पूर्वे मूक्यो एवो जे अनंतमो जाग रह्यो ठे, तेनो वली अनंतमो जाग मूकीने शेष अनुजाग जाग अंतरमुहूर्त्तै विनाशो. एम अनुजाग खंमनां अनेक सहस्र, एकस्थितिखंमने विषे व्यतिक्रमे अने ते स्थितिखंमना अनेक सहस्रें अपूर्वकरण समाप्त थाय, रसखंमना कालथकी स्थितिखंमनो काल संख्यातगुणो अधिक जाणवो. तेथकी अपूर्वकरण काल संख्यातगुणो अधिक ठे.

हवे गुणश्रेणि कहे ठे. गुणश्रेणि ते अंतरमुहूर्त्त प्रमाण कर्मस्थितिथकी उपरली कर्मस्थिति जे वत्तै ठे, ते मध्येथी दलिक जेइने पोतानी उदयावलिकानी उपरली स्थितिमांहे समय समय प्रत्ये असंख्यातगुण असंख्यातगुण चढतुं दल संक्रमावे, जेजे, ते आवी रीतें जे प्रथम समयें स्तोक, तेथकी बीजे समयें असंख्यातगुणुं चढतुं जेजे, तेथकी वली त्रीजे समय असंख्यातगुणुं वधतुं जेजे, एम यावत् अंतरमुहूर्त्तना चरम समय पर्यंत कहेतुं. ते अंतरमुहूर्त्त तो अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिकरणना कालथकी लगारेक अधिक जाणवुं. ए प्रथम समयें ग्रहं जे दल, तेनो निक्षेपविधि कह्यो. एम द्वितीयादिक समयथी मांहीने यावत् ठेहला समय पर्यंत समयें समयें ग्रहीत दलियानो पण निक्षेपविधि जाणवो. एटले जे समय समय प्रत्ये दलिक लीये, ते सर्व प्रत्ये कें अंतरमुहूर्त्तना सधलां प्रति समयना दल मध्ये एमज असंख्यातगुणुं चढतुं जेजे. एम करता जे समय जोगवतो जाय, ते सामयथी आगला शेष समयना दलमांहे जेजे एटले अपूर्वकरणना समयें अनिवृत्तिकरणना समयें अनुक्रमे घटते थके शेष शेषने विषे गुणश्रेणी दलिकनो निक्षेप शेष शेषने विषे होय ते उपरांत वधे नहिं.

हवे गुणसंक्रम कहे ठे. गुण संक्रम ते जे अपूर्वकरणना प्रथम समयने विषे अणबंधाती एवी जे अनंतानुबंधीआदिक अशुचप्रकृति तेतुं दल बंधाती एवी जे संज्वलनादिक परप्रकृति, तेमध्ये समय समय दीठ असंख्यातगुणुं चढतुं संक्रमावे, संक्रमावीने पर प्रकृतिरूपपणे परिणमावे, तेने गुणसंक्रम कह्यीये. ते पहेले समयें सर्वस्तोक संक्रमावे, तेथकी बीजे समयें असंख्यातगुणुं संक्रमावे, एम समय समय दीठ असंख्यातगुणुं चढतुं दल संक्रमावे.

हवे अन्यस्थितिबंध कहे ठे. अन्यस्थितिबंध ते अपूर्वकरणथी पूर्वला समयें जे कर्मनो स्थितिबंध कह्यो, तेनी अपेहायें अपूर्वकरणना प्रथम समयें जे बीजो

स्थितिबंध आरंभे, ते स्तोक जाणवो. माटे अपूर्वस्थिति बंध कह्यो. अर्हीआं स्थितिबंध अने स्थितिघातनो काल, सरखोज जाणवो. ए बेने समकालें प्रारंभें ठे, अने समकालें सरखाज नीठे पूरा पाडे. एम ए पांच पदार्थ अपूर्वकरणें प्रवर्तें ठे.

हवे अनिवृत्तिकरण कहीयें ठैयें. अनिवृत्तिकरण आरंभतां तुल्य कालना एटले एकज कालें अनिवृत्तिकरणें प्रवेश करनारा सर्व जीवोने प्रथम समयें एकज सरखुं अथ्यवसायस्थानक होय, एटले अनिवृत्ति करणना प्रथम समयने विषे जे वत्त ठे अने जे पूर्वे वत्त्या अने आगमिककालें जे वर्तज्ञो, ते सर्वनुं पण सरखुंज अथ्यवसायस्थान ठे तेमज बीजा समयने विषे जे वर्तें ठे, वत्त्या ठे अने वर्तज्ञो, ते सर्वनुं पण एकरूपज अथ्यवसाय स्थान ठे. हवे पहेला समयनां अथ्यवसाय स्थानकथकी बीजा समयनां अथ्यवसायस्थानक अनंत गुणविद्युद्विधें होय. एम जे टला समय अनिवृत्तिकरणना ठे, तेटला समयनां अथ्यवसायस्थानक ते पाठला पाठला अथ्यवसायस्थानकथकी आगलुं आगलुं अथ्यवसाय स्थानक अनंतगुण विद्युद्विवाळुं होय. अर्हीआं एने अनिवृत्ति एवुं नाम ते माटे कहीयें ठैयें. जे माटे जे एने विषे प्रवेश करे, ते सर्वने अथ्यवसायस्थानकनी परस्पर निवृत्ति अने व्यावृत्ति न होय, तेनी अपेक्षायें अनिवृत्ति एटले जेद न होय. सर्व जीव सरखे अथ्यवसायस्थानें होय माटे अनिवृत्ति कहीयें. अर्हीआं समय समय दीठ एकेक अथ्यवसाय स्थानक, तेनी स्थापना मुक्तावलीनी पेरें स्थापवी ०।०।०।०।० अर्हीआं पण पहेला समयशीज स्थितिघातादिक पांच पदार्थ, समकालें अपूर्वकरणनी पेरें सायेंज प्रवर्तें. ए रीतें अनिवृत्तिकरण कालना संख्याता जाग गये थके शेष एक जाग रहे थके अनंतानुबंधीआनी हेतली उदयावलिका मात्र स्थिति मूकीने बाकी अंतरमुहूर्त प्रमाण संक्रमावी जोगवे. जेम मनुष्यगतिमध्ये शेष त्रणे गति संक्रमावीने अयोगी द्विचरम समयें जोगवे, ते स्तिबुकसंक्रम कहीयें. अंतरकरणने अजिनवस्थिति बंधना काल प्रमाण अंतरमुहूर्तनो करे ठे एटले ते अंतरमुहूर्त नवी स्थितिबंधाक्षा समान जाणवो. ते अंतरकरणनुं दलीउं उकेरी, उकेरी बंधाती पर प्रकृतिने विषे संक्रमावे, अने प्रथम स्थितिनुं दलीउं आवलिकामात्र ते वेद्यमान उदयवती पर प्रकृतिने विषे स्तिबुकसंक्रमें करीने संक्रमावे, स्तिबुक संक्रम एटले जे अमुदय प्रकृतिनुं दल ते उदयवती प्रकृति मध्ये संक्रमावुं तेने स्तिबुक संक्रम कहीयें.

हवे अंतरकरण कख्या पठो बीजे समयें अनंतानुबंधीआनी उपरली स्थितिनुं दलीउं उपशमाववा माने, ते आवी रीतें, प्रथम समयें स्तोक उपशमावे, बीजे सम

यें तेषी असंख्यातगुणुं उपशमावे, ते संक्रमावी जोगवे. जेम मनुष्यगति मांहे शेष त्रण गति संक्रमावी अयोगी केवली दिचरम समयें जोगवे, तेम जाणवुं. एम समय समय असंख्यातगुणुं चढतुं उपशमावतां अंतरमुदूर्तने चरमसमयें अनंता नुबंधीआनुं सर्व दल उपशमित थाय. (उपशमाव्या के०) जेम धूलना पुंजने पाणीना विंडुथी सींची सींचीने घणादिकें, पत्तरादिकें कूटयो थको निस्पंद एटजे हीन वारीक सूक्ष्म थाय, ते कोझे ग्राह्य पण न होय, एवो थाय. तेम कर्मरूपरेणुना स मूहने पण विच्छिदिरूप पाणीना प्रवाहंथी सींची सींचीने अनिवृत्तिकरणरूप प हरथी कूटी लासोडीने एवी सूक्ष्म करे, के जे थकी ते बंधन, संक्रमण, उदय, उ दीरणा, निदत्त अने निकाचनादिक करणने पण अयोग्य थाय. तेने उपशमना कहीयें. ए कोइएक आचार्यना मत आश्री अनंतानुबंधीआनी उपशमना कही.

हवे कोइएक आचार्य कहे ठे के अनंतानुबंधीआनी उपशमना न होय, पण विसंयोजनाज होय. विसंयोजना एटजे ह्पणाविशेष, तेनो प्रकार कहीयें ठैयें. अर्हीआं श्रेणी अणपडिवजतां पण चारे गतिना संज्ञी पंचेंडिय पर्याप्ता अविरति सम्यक्दृष्टि जीव तथा तिर्यंच अने मनुष्य, ए बेहु गतिना देशविरति जीव, तथा प्र मत्त अने अप्रमत्त मनुष्य, ते अनंतानुबंधीआ चार कषाय खपाववाने अर्थे जे रीतें पूर्वे कद्या, तेमज यथाप्रवृत्त्यादिक त्रण करण करे. पण एटलुं विशेष जे अ निवृत्तिकरणे पेगो थको अंतरकरण न करे, तो छुं करे ? ते कहे ठे. उ दलना संक्रमें करीने हेवली एक आवलिकामात्र मूकीने उपरला निर्विशेषपणे समस्त अनंता नुबंधीयानां दल खेरू करे,

तिहां उ दलमान संक्रमनुं स्वरूप, कर्मप्रकृतिथी लखीयें ठैयें. जे अनंतानुबंधी आदिक प्रकृतिनुं दल, प्रथमसमयें पव्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण स्थिति खंम ठे तेने अंतरमुदूर्तने उकेरीने परप्रकृतिमध्ये संक्रमावे. एम बीजे समयें बीजो स्थितिखंम करी, तेनो केटलो एक जाग परप्रकृतिमध्ये संक्रमावे तथा केटलोएक पोतानी हेवली स्थितिमध्ये संक्रमावे पण पर प्रकृतिमध्ये जेटलुं संक्रमावे, तेथ की आपणी हेवली स्थितिमध्ये जे संक्रमावे, ते असंख्यातगुणुं जाणवुं. एम स मय समय जे स्थितिखंम करे, ते पाठजा पाठला स्थितिखंमनी अपेकार्यें विशेष हीन दलनी अपेकार्यें असंख्यातगुणुं होय. अने संक्रमाववाने समयें पण आपणी हेवली स्थितिमध्ये असंख्यातगुणुं संक्रमावे, तथा पर प्रकृतिमध्ये विशेष हीन हीन घटतुं घटतुं संक्रमावे, एम दिचरसमय जगें संक्रमावे. अने ठेहले समयें

तो आपणी स्थितिशेषने अजावें सर्व दल परप्रकृति मध्ये संक्रमावे, तेतुं नाम सर्वसंक्रम कहीयें ठैयें. एम उद्वलना संक्रमे करी आवलिकामात्र सूकी बाकी सर्व अनंतानुबंधीया खपावे अने जे आवलीमात्र रहे, तेने स्तिबुकसंक्रमे करी बेद्यमान प्रकृतिमध्ये संक्रमावी खपावे. ते अनंतानुबंधीया विसंयोज्या कहेवाय ते अंतरमुहूर्त पढी अनिवृत्तिकरणे बेहडे शेष कर्मनां स्थितिघात, रसघात अने गुणश्रेणी न होय. केमके ते जीव स्वभावस्थज रहे, सहज अवस्थायें रहे, ए रीतें अनंतानुबंधीयांनी विसंयोजनानी रीत कही.

हवे दर्शन मोहनीयत्रिकनी उपशमनानो प्रकार लखीयें ठैयें. तिहां मिथ्यात्वनी उपशमना मिथ्यात्वने तथा ह्यायोपशमिक सम्यक्दृष्टि ए बेदुने होय. अने सम्यक्त्व तथा मिश्र, ए बेनी उपशमना तो ह्यायोपशम सम्यक्दृष्टिनेज होय. तिहां मिथ्यात्वने तो ग्रंथिजेद करतां प्रथम उपशम सम्यक्त्व उपजाववा वाला ने मिथ्यात्वनी उपशमना होय, ते प्रकार कहीयें ठैयें. कोइ संज्ञी पंचेंद्रिय जीव, सर्व पर्याप्तियें करी पर्याप्तो करणकालथकी पूर्वे अंतर मुहूर्त काल लगे समय समय प्रत्ये अनंतगुणवधती विद्युदियें प्रवर्ततो एवो अजव्यसैदिक जीवनी विद्युदिनी अपेहायें अनंतगुणविद्युदिमंत एवो मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान, अने विज्ञ गज्ञान, ए मांहेला अनेरे साकारोपयोगें उपयुक्तथको मनादिक त्रणयोग मांहेला कोइ पण अनेरे योगें वर्ततो जघन्य परिणामें तेजोलेझायें अने मध्यमपरिणामें पद्मलेझायें तथा उत्कृष्टपरिणामें शुक्कलेझायें वर्ततो मिथ्यादृष्टि चारे गतिमां हेलो कोइ पण गतिनो जीव कांइ एक कंणी एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, साते कर्मनी थाकती रही होय. इत्यादिक सर्व पूर्वोक्त प्रकारें ज्या सुधी यथा प्रवृत्तिकरण अने अपूर्वकरण ए बेदु मिथ्यात्व उपशमाववाने परिपूर्ण करे, तिहां लगे कहेवुं. पण एटलुं विशेष जे अर्दीयां अपूर्वकरणे गुणसंक्रम न करे. किंतु? अर्दी स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी अने अन्यस्थितिबंध, ए चार वानांज प्रथम समयशी आरंजे. गुणश्रेणीदलिक रचना पण उदय समयशी मांढीने जाणवी. ते वार पढी अनिवृत्तिकरणे विषे पण एमज कहेवुं. हवे अनिवृत्तिकरणादना संख्यातजाग गये थके अने एक संख्यातमो जाग थाकतो रहे, तेवारें मिथ्यात्वनी हेवली प्रथम स्थिति अनंतानुबंधीनी परें अंतरमुहूर्तमात्र जेटली नीचें सूकी बांढीने उपरें अंतरमुहूर्त मात्र अनिनवस्थिति बंधना अंतर मुहूर्त जेवडी पहेली स्थितिना अंतर मुहूर्तथी कांइ. एक जाजेरी अनिनवस्थितिबंधना काल सरखी

एवो मिथ्यात्वनी अंतरकरणाद्वा करे, ते अंतरकरण वालुं कर्मदल कांइ एक उकेरीने प्रथम स्थितिमध्ये जेले अने कांइएक बीजी उपरली स्थितिमध्ये जेले. तिहां प्रथमस्थितिने विषे वर्त्ततो जीव, उदीरणा प्रयोगें करीने प्रथम स्थितिनुं दल उदयावलिका उपरलुं ठे तेने आकर्षीने उदयावलिकामध्ये घाले, तेने उदीरणा कहीये. अने जे वली बीजी स्थितिना समीपथकी उदीरणा प्रयोगें करीनेज ते मांहेलुं दल आकर्षीने उदयावली मध्ये नाखी, जोगवे, ते आगालने पण पूर्वाचार्ये उदीरणानुंज विशेषनाम विशेष प्रतीपत्तिने अर्थे बीछुं नाम कहुं ठे. हवे उदय उदीरणाये करीने प्रथम स्थितिनुं दल जोगवतो जोगवतो जेवारें ते प्रथमस्थिति शेष वे आवलिका रहे, तेवारें आगालनो ठेह आवे, तेवारें एक आवलिका लगें उदय उदीरणा प्रवर्त्ते अने ठेहेली आवलियें तो उदीरणा पण विरमे, तेवारें ठेहली आवलियें केवल उदयज जोगवे, पठी ते आवलिकाने ठेहले समयें बीजी स्थितिनां दलिकनो रस जेद करी त्रण पुंज करे, एटले तेने त्रण जागें वहेची नाखे, ते आवीरीतें के तेमध्ये जे देशघाती एकठाणीआ रसस्पर्धक तथा उत्कृष्ट रसोदीरणापे ह्याये वेठाणीआ रस सहित जे दल, ते प्रथम सम्यक्त्वपुंज तथा केटजा एक एकठाणीआ रस स्पर्धक सर्वघाती सहित ठे तथा केटजा एक बेठाणीआ रसनां स्पर्धक सर्वघाती सहित ठे. ते बीजो मिश्रपुंज तथा सर्वघातीआ चोठाणीआ तथा त्रिताणीआ रसस्पर्धक सहित जे दल ठे, ते त्रीजो मिथ्यात्वपुंज जाणवो. उक्तंच कर्मप्रकृतिचूर्णौ “चरम समय मिह्वदिधि. सेकाळे उवसमसम्मदिधि उं होइ तंहे विइ अंतपि तं अणुजाग करेइ तं जहा सम्मत्तं सम्मा मिह्वत्तं मिह्वत्तचेति ततोणंतर समये मिह्वादिघी” तेवार पठी आंगल तेथी अनंतर समयें मिथ्यात्व दलिकना उदयना अजावथकी औपशमिक सम्यक्त्व पामे, जे जणी ग्रंथें कहुं ठे के “ मिह्वतुदए खीणे जहइ सम्मत्तमोवसमिअं सोलंजेण जस्स लंज इ आयहिय मलइपुवंज ” ए रीतें मिथ्यात्वनी सर्व प्रकारें उपशमनाथकी प्रथम सम्यक्त्वनो जाज होय ठे. ए सम्यक्त्व पामतो कोइ एक देशविरति सहित अने कोइ एक सर्व विरति सहित पण पडिवजे, जे जणी कहुं ठे के “ सम्मत्तेणं सम्मग, सर्वं देसं च कोइ पडिवळे ” ते माटें देशविरति तथा प्रमत्त अने अप्रमत्त संयतने विषे पण मिथ्यात्वनी उपशमना पामीये ठैये.

हवे वेदकसम्यक्दृष्टिने प्रदेशोदयनी अपेह्याये मिथ्यात्वनी उपशमनानो प्रकार कहे ठे. कोइएक वेदकसम्यक्दृष्टि जीव, संयमने विषे प्रवर्त्तमान थको अंतर

मुहूर्त्त मात्र कार्त्तं दर्शनत्रिकने उपशमावे ठे. तिहां दर्शनत्रिक उपशमावतां त्रण करण करवां पडे, तेनो विधि पूर्वे कह्यो. ते रीतें त्यां जगें जाणवो, ज्यांजगें अनिवृत्तिकर णाधाना संख्याता जाग गये थके अंतर करण करे ठे. ते अंतरकरणी अंतरकरण कर तो थको सम्यक्त्वनी प्रथमस्थिति अंतरमुहूर्त्त प्रमाण स्थापे अने मिथ्यात्व, मिश्र मोहनीयनी प्रथमस्थिति आवलिकामात्र स्थापे. पढी तेनां दलिक उकेरी उकेरी ने सम्यक्त्वनी प्रथम स्थितिमध्ये प्रक्षेपे. तिहां मिथ्यात्व अने मिश्र, ए बेहुनी प्र थम स्थितिजुं जे दलिक ठे तेने सम्यक्त्वनी प्रथम स्थितिमध्ये स्तिबुक संक्रमे करी संक्रमावे अने सम्यक्त्वनी प्रथमस्थितिना दलना रसोदय विपाकना अनुज ववाथकी जोगवतां ते अनुक्रमे ढीण थाय. तेवारें औपशमिकसम्यक्दृष्टि थाय अने ए त्रणे मोहनीयनी उपरली स्थितिजुं दल उपशमाववानो तो पूर्वे जेम अनं तानुबंधीअानी उपरली स्थितिनी उपशमनानो प्रकार कह्यो ठे. तेनी पेरें जाणवो. ए रीतें दर्शन मोहनीयने उपशमावीने पढी चारित्र मोहनीय, उपशमाववाने प्रव र्ततो पुरुष वली पण तेहीज यथाप्रवृत्यादिक त्रण करण करे. तिहां अप्रमत्तने अप्रमत्तगुणगणे यथाप्रवृत्तिकरण, तथा अपूर्वकरण गुणगणे अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिकरण गुणगणे अनिवृत्तिकरण, ए त्रण गुणगणे त्रण करण करे, तेजुं स्वरूप, पूर्वली पेरें जाणवुं, पण अर्हींआं एटलुं विशेष जे अपूर्वकरणे गुणसंक्र म तो न बंधाती एवी सधली अशुंन प्रकृतिनोज प्रवर्त्ते. तथा अपूर्वकरणाधाना सं ख्याता जाग गये थके निडा प्रचलानो बंधविभेद थते हुंते तेवार पढी घणा स्थि तिखंमनां सहस्र अतिक्रमते थके अपूर्वकरणाधाना संख्याता जाग गये थके शेष एक जाग थाकते थके देवदिक, पंचेंद्रियजाति. वैक्रियदिक, आहारकदिक, तेजस, कार्मेण, समचतुरस्रसंस्थान, वर्षचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसनवक, आदेय, निर्माण अने जिननाम, ए त्रीश प्रकृतिनो बंधविभेद थाय, तेवार पढी स्थितिखंम पृथक्त्व गये थके अपूर्वकरणे ठेहजे समयें हास्य, रति, जय अने जुगुप्सा, ए चार प्रकृतिनो बंधविभेद हुंते हास्य, रति, अरति, शोक, जय अने जुगुप्सा, ए ठनो उदय तिहां होय. अर्हींआं सर्व मोहनीयकर्मना ठेहजे समयें देशोपशमना, निधत्ति, निकाचनाना करणने विभेदे. तेवार पढी आग जे समयें अनिवृत्तिकरणे प्रवेश करे, तिहां पण स्थितिघातादिक पांच पदार्थ तेमज पूर्वली पेरेंज प्रवर्त्ते ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ३८ ॥

हवे अनिवृत्तिबादर गुणगणे उपशमश्रेणिवालाने मोहनीयकर्मनी पूर्वनी

सातथकी आरंभीने पञ्चीश पर्यंत प्रकृति उपशम पामे, तेहुं स्वरूप देखाडे ठे.

सत्तठ नवय पनरस, सोलस अछार सेव इगुवीसा ॥

एगाहि डु चठवीसा, पणवीसा बायरे जाण ॥ ७९ ॥

अर्थ- (सत्तठनवयपनरस के०) अंतरकरण कीधे अके सात प्रकृति उपशांत होय, ते पठी नपुंसकवेद उपशमे अके आतनो उपशांत आय, ते पठी स्त्रीवेद उ पशमे अके नवनो उपशांत आय. ते पठी हास्यादिषट्क उपशमे अके पंदरनो उपशांत आय. ते पठी (सोलसअछारसेवइगुवीसा के०) पुरुषवेदनो बंधोदय उप शमे अके शोलनो उपशांत आय, ते पठी अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी, ए बे क्रोध समकालें उपशमे अके अठारनो उपशांत आय. तेपठी संज्वलनक्रोधने उपश मे उगणीशनो उपशांत आय. (एगाहिडुचठवीसा के०) ते पठी अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान, ए बे मानने समकालें उपशमावे अके एकवीशनो उपशांत आय. ते पठी संज्वलन मानने उपशमाववे बावीशनो उपशांत आय. तेपठी अप्रत्याख्यान तथा प्रत्याख्यान, ए बेहु मायाने समकालें उपशमाववे करी चोवीश प्रकृतिनो उपशांत आ य. ते पठी संज्वलनी मायाने उपशमाववे करी (पणवीसा के०) पञ्चीश प्रकृतिनो उप शांत (बायरेजाण के०) अनिवृत्तिबादरगुणगणो उपशमित प्रकृति जाणवी ॥ ७९ ॥

हवे ते अनिवृत्तिकरण अक्षाना संख्याता जाग गये अके चारित्रमोहनीयनी ए कवीश प्रकृतिहुं अंतरकरण करे. तिहां चार संज्वलन कषायमाहेलो जे कषाय उ दय प्राप्त होय, ते कषाय अने त्रण वेदमध्ये पण जे वेद उदय प्राप्त होय, ते वेद ए बेहु प्रकृतिनी प्रथमस्थिति आपणा उदय काल प्रमाणनी होय. ते बेहु टाली ने तथा बाकी उगणीश प्रकृति जेनो उदय नथी, तेनी प्रथम स्थिति आवली मात्र होय. तिहां पोताना उदयकालना प्रमाणहुं अल्पबहुत्व कहियें ठैयें. त्रण वेद मध्ये स्त्रीवेद अने नपुंसकवेदनो उदय काल षोडो होय; अने स्वस्थानमां परस्पर तुंध्य होय, तेथी पुरुषवेदनो उदयकाल संख्यातगुणो जाणवो: तेथी संज्वलना क्रोध नो उदयकाल विशेषाधिक जाणवो. तेथी संज्वलना माननो उदयकाल विशेषाधिक, तेथी संज्वली मायानो उदयकाल विशेषाधिक, तेथी संज्वलना लोचनो उदयका ल, विशेषाधिक. तिहां संज्वलनक्रोधोदये करी उपशमश्रेणी आरंभे, तेने ज्यां लगे अ प्रत्याख्यानीयो अने प्रत्याख्यानीयो, ए बे क्रोध उपशमे नही, त्यां लगे संज्वलना क्रोधनो उदय होय. एमज संज्वलनमानोदये जे श्रेणी आरंभे तेने ज्यां लगे अप्र

त्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी मान, उपशमे नहीं, त्यां लगे संज्वलनमाननो उदय होय. एमज संज्वलन मायाना उदये उपशमश्रेणी पडिवजनारने ज्या सुधी अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी माया उपशमे नहीं, त्यां सुधी संज्वलन मायानो उदय होय. एमज संज्वलनलोचोदये उपशमश्रेणी पडिवजनारने अप्रत्याख्यानी तथा प्रत्याख्यानी ए वेदु लोन, ज्यां सुधी उपशमे नहीं त्यां सुधी वादर संज्वलना लोनो उदय होय. एम पोत पोताना उदय कालनी अपेक्षार्ये तेना उदये प्रवर्ततो श्रेणी आरंजे, ते जे कषाय तथा जे वेदना उदये प्रवर्ततो श्रेणी आरंजे, ते कषाय तथा ते वेदनो उदयकाल आकतो हुंतो तेनी तेटला कालनी तेवढी प्रथमस्थिति होय. बीजा सर्वनी आवलिमात्र प्रथमस्थिति होय. अर्हीआं जेटले काळें स्थिति खंननो घात करे, तथा बीजो जेटला कालनो अन्यस्थितिबंध करे, तेटला काळें अंतरकरण पण करे, ए त्रणे सार्ये एककाळें मदिने अने ए सार्येज पूर्ण करे, पण तेनो काल प्रथम स्थितिकी असंख्यातगुणो अधिक जाणवो.

हवे अंतरकरणना दलनो प्रहेपविधि लखीये तैये. जे प्रकृतिनो तिहां बंध अने उदय, ए वेदु ठे, ते प्रकृतिनां अंतर करणसत्कदल कांइएक प्रथमस्थिति मध्ये जेलीये अने कांइएक बीजा स्थितिमध्ये जेलीये, जेम पुरुषवेदने उदये श्रेणी आरंजे, तेने पुरुषवेदनो बंध होय. तथा उदय तो ठेज तेथी पुरुषवेदना अंतरकरणदल वेदु स्थितिमध्ये जेलीये तथा जे प्रकृतिनो उदय ठे, पण बंध नथी तेना अंतरकरणदल प्रथम स्थितिमध्येज जेलीये, जेम स्त्रीवेदनो तिहां उदय ठे. पण बंध नथी तेणे स्त्रीवेदोदये जे श्रेणी पडिवजे ते अंतरकरणसत्कदल आषी प्रथमस्थितिमध्येज जेले, तथा जे प्रकृतिनो तिहां उदय नथी अने बंध ठे, तेनां अंतरकरणदल, बीजा स्थितिमध्ये जेले, पण प्रथमस्थितिमध्ये न जेले. जेम संज्वलनक्रोधने उदये श्रेणी पडिवजे, ते शेष त्रण संज्वलनना कषायज बांधे ठे ते तेनां अंतरकरण दल बीजा स्थितिमध्ये जेले तथा जे प्रकृतिनो बंध तथा उदय, ए वेदु नथी तेनां अंतरकरण दल, पर प्रकृतिमध्ये जेले, जेम बीजा अप्रत्याख्यानीआ अने त्रीजा प्रत्याख्यानीआ कषायनां. अंतरकरण दल संज्वलन परप्रकृति ठे तेमध्ये जेले. अर्हीआं घणी वात लखवानी ठे परंतु ग्रंथ वधवाना जयथी नथी लख्युं पण जेने विशेष जाणवानी इहा होय, तेने कर्मप्रकृतिनी वृत्ति जोवी. एम अंतरकरण करी पढी पहेजो नपुंसक वेद उपशमावे, ते पहेले समयें थोडुं दल उपशमावे, बीजे समयें तेथी असंख्यातगुणुं, एम समय

समयने विषे असंख्यातगुणं चढतुं चढतुं उपशमावतां ठेहले समयें सर्व उपशांत होय. तिहां प्रथम समयशी मांफीने द्विचरम समय लगे उपशमाव्यां जे दल, ते थकी असंख्यातगुणं दल, परप्रकृतिमध्ये क्लेपवे, अने ठेहले समयें जे परप्रकृति मध्ये क्लेपवे, तेथकी असंख्यातगुणं उपशमावे, एम नपुंसकवेद उपशमावे थके पूर्वली अनंतानुबंधी चार तथा दर्शनत्रिक मली सात सहित आठ मोहनीयनी प्रकृति उपशांत होय, तेवार पढी उक्तप्रकारें अंतर सुहूर्त्त पर्यंत स्त्रीवेद उपशमावे, ते वार पढी हास्यादिक ठ प्रकृति अंतर सुहूर्त्त उपशमावे, तेवारें शरवाले मोहनीयनी पंदर प्रकृति उपशांत होय. ते समयें पुरुषवेदना बंध, उदय अने उदीरणानो विज्ञेद थाय अने तेनी प्रथमस्थितिनो पण विज्ञेद थाय. तिहां पुरुष वेदनी प्रथमस्थिति बे आवली शेष बते, पूर्वोक्त आगाल न थाय, तेवारें मार्गदल विशेष दल थया जणी तिहां हास्यादिक ठ प्रकृतिनां दल पुरुष वेदमां प्रक्षेप थाय न हीं. तेवारें ते हास्यादिक ठनुं दल, संज्वलनाक्रोधादिकमध्ये जेलीयें, जे जणी कम्मपय डीमध्ये कसुं ठे के, बे आवलि प्रथमस्थितिनी शेष होय, तेवारें वेदपतङ्गह न थाय. एम हास्यादिक ठ प्रकृति उपशमाव्या पढी एक समय जणी बे आवलीयें सर्व पुरुषवेद उपशमे, ते पण प्रथम समय सर्वस्तोक तेथी बीजे समयें असंख्यातगुणं उपशमावे, तेथकी त्रीजे समयें असंख्यातगुणं उपशमावे. एम समय सम य दीत असंख्यातगुणं चढतुं दल उपशमावे. एम यावत् समयें जणी बे आवलि का होय, तिहां सुधी कहेतुं अने केटलुं एक दल परप्रकृतिमध्ये यथाप्रवृत्त संक्रमें करी संक्रमावे, पण प्रथम समयशी बीजे समयें विशेष हीन संक्रमावे. एम समय समय विशेष हीन हीन संक्रमावतो आवलिकाना चरमसमय लगे जाय. ए रीतें पुरुषवेद उपशांत थये थके मोहनीयनी शोल प्रकृतिनुं उपशांतत्व थाय. तेवार पढी जे समयें हास्यादिक ठ प्रकृति उपशमे, ते समयशी पुरुषवेदनी प्रथम स्थिति हीण थइ. तदनंतर अप्रत्याख्यानीठ क्रोध अने प्रत्याख्यानीठ क्रोध तथा संज्वलनक्रोध, ए त्रणे क्रोधने साथेंज उपशमाववा मांफे, तेने पूर्वली पेरे उपशमावतां जेवारें संज्वलनक्रोधनी प्रथमस्थिति एक समय जणी त्रण आवली शेष रहे, तेवारें अप्रत्याख्यानीआ अने प्रत्याख्यानीआ, ए बेहु क्रोधनुं दल संज्वलना क्रोधने विषे न प्रक्षेपे पण संज्वलना मानादिकमध्ये जेजे, जे जणी त्रण आवलि शेष, संज्वलनो क्रोध रह्यो थको तेमध्ये कोइ प्रकृतिनां दल पतद्गृह न थाय, एटले तेमध्ये कोइ एक पण प्रकृतिनुं दल संक्रमाव्युं न जाय अने तेनी बे आव

लि शेष रहे, तेवारें तिहां आगाल विभेद आय अने एक आवलीशेष रहे तेवारें संज्वलनाक्रोधनो बंध, उदय, उदीरणा विभेद आय अने अप्रत्याख्यानी तथा प्रत्याख्यानी क्रोध उपशांत होय एटले अठार प्रकृति उपशांत आय. तेवारें संज्वलन क्रोधनी प्रथमस्थितिनी एक आवलिकानुं दल अने बे आवली एक समय कणी अर्हीअ्रां बांध्युं जे उपरली स्थितिनुं दल, तेविना बाकी सर्व उपशांत थ्युं ठे. ते पठी जे संज्वलन क्रोधनुं प्रथम स्थितिनुं एकावलिका दल ते संज्वलन मानमध्ये स्तिबुकसंक्रमे करी संक्रमावे अने समय कणी बे आवलिकाना वंधनुं उपरली स्थितिनुं दल, ते पुरुषवेद उपशमनाधिकारना प्रस्तावें जे रीतें उपाय कह्यो ठे, ते रीतें उपशमावे तथा पर प्रकृतिमध्ये संक्रमावे. एम समय कणी बे आवलीयें संज्वलन क्रोध उपरली स्थितिनुं तेने उपशमावे, एटले मोहनीयनी उगणीश प्रकृति उपशांत अइ. हवे जेवारें संज्वलनाक्रोधनो बंध, उदय, उदीरणा विभेद थयो, ते समयथी मांफीने संज्वलना माननी बीजी स्थितिमध्येथी दल आकर्षीने तेने प्रथमस्थितियें करी वेदे, तिहां उदय समयने विषे स्तोक प्रहेपे ठे अने ते थकी बीजा समयने विषे असंख्यातगुणो प्रहेपे. एम समय, समय असंख्यातगुणो चढतो चढतो प्रहेपतां यावत् प्रथम स्थितिना चरम समय पर्यंत लीजीयें. प्रथम स्थितिकरणना पहेला समयथी मांफीने अप्रत्याख्यानावरण तथा प्रत्याख्यानावरण अने संज्वलनमान, ए त्रणे मानने सार्थेज उपशमाववा मांफे, ते तेमज जेवारें संज्वलना माननी प्रथमस्थिति समयोन त्रण आवली शेष रहे, तेवारें पूर्वे कह्यो ते प्रकारें संज्वलन मानने विषे परप्रकृतिनुं पतद्ग्रह न आय, तेवारें प्रत्याख्यानीयादिक माननुं दल संज्वलनना मायामध्ये संक्रमावे. एम क्रोधनी पेरें माननी उपशमनानो विधि जाणवो. ए अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी मान उपशमावे, तेवारें मोहनीयनी एकवीश प्रकृतिनो उपशम थयो. ते समय संज्वलनमानना बंध, उदय, उदीरणा विभेद आय. तेवार पठी एक आवलिकायें संज्वलन क्रोधनी पेरें संज्वलन मानने उक्तप्रकारें उपशमावे. तेवारें बावीश प्रकृति उपशमी. तथा जे समयें संज्वलन माननो बंध, उदय, उदीरणा विभेद होय, तेथी आगले समयथी मांफीने संज्वलन मायानी बीजी स्थितिमध्येथी दल आकर्षीने पूर्वे कह्यो, ते प्रकारें प्रथमस्थितिगत करे करीने वेदे, ते समयथीज मांफीने त्रणे मायाने उपशमाववा मांफे ते पण माननी पेरें एक आवली दुंते संज्वलनी मायानां वंधोदय, उदीरणा विभेद आय, ते समयें अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी माया उपशांत आय, तेवारें

मोहनीयनी चोवीश प्रकृतिनो उपशांत आय. ते समयें संज्वलन मायानी प्रथम स्थितिगत एकावलिकाने तथा समयोन आवलिकादिकें बांधेलुं जे उपरली स्थितिगत दलिक तेने मूकिने शेष अन्य सर्व उपशांत आय ठे. ते पढी ते प्रथम स्थितिगत एकावलिकाने स्त्रिभुक्त संक्रमें करीने संज्वलन लोचने विपे संक्रमावे ठे अने समयोन आवलिकादिकें बांधेला दलिकने पुरुषवेदमां कहेला उक्तप्रकारें करी उपशांत आय. तेवारें मोहनीयनी पञ्चीश प्रकृति उपशांत थइ. जेवारें संज्वलनी मायानो बंधादिक विच्छेद होय, तेथी आगले समयें संज्वलन लोचनी बीजी स्थितिमांहेथी दल आकर्षीने प्रथम स्थिति रचे, ते प्रथम स्थिति लोचनेवेदनादाना त्रण विजाग द्वय प्रमाण करे करीने वेदे. तिहां प्रथम त्रिजागजुं नाम, अश्वकर्षकरणादा, बीजा त्रिजागजुं नाम, किट्टिकरणादा तिहां प्रथम अश्वकरणादा. त्रिजागें वर्ततो पूर्वस्पर्द्धकमध्येथी दल जेइने अपूर्वस्पर्द्धक करे. अहींआं स्पर्द्धक एटजे शुं ? तोके जीव अनंतानंत कर्म परमाणुयें निष्पन्न स्कंध तेने कर्मपणो ग्रहे ठे. तिहां एकेक कर्मस्कंधमध्ये जे सर्व जघन्य रस ठे ते पण केवलीना ज्ञानरूप शस्त्रें बेदातो, बेदातो पण सर्व जीवथकी अनंतगुण रसविजाग प्रत्ये आपे ठे. तथा एवां जे सरखां सरखां जघन्य रसनां कर्मस्कंधदल तेनो समुदाय, ते वर्गणा कहियें. तेथी एक रस विजागें चढता कर्मस्कंधनी बीजी वर्गणा, तेथी बे रस अविजागें चढता कर्मस्कंधनी त्रीजी वर्गणा, एम एकेका रसविजागें चढती चढती वर्गणा करतां अजव्यथी अनंतगुणी अने सिद्धने अनंतमे जाग प्रमाण वर्गणानो समुदाय, तेजुं नाम स्पर्द्धक कहियें. ते स्पर्द्धकनी उपरली वर्गणाना रस विजागथी एक रसविजागें अधिक, तथा बेहु रसविजागें अधिक रसविजाग सहित एम यावत् सर्वजीवथी अनंतगुण पर्यंतथी एक रसविजागें हीन रसोपेत कर्मस्कंध दल न पामियें, एट जे सर्व जीवथी अनंतगुण रसविजागें अधिक रस सहित जे कर्मस्कंधदल होय, एवा स्कंधनो समुदाय, ते बीजा स्पर्द्धकनी प्रथमवर्गणा जाणवी. तेथी एक रस विजागें अधिक कर्मस्कंधनो समुदाय, ते बीजी वर्गणा. एम एकेक रसविजागें चढती चढती अजव्यथी अनंतगुणी वर्गणा होय. तेना समुदायने बीजो स्पर्द्धक कहियें, एमज वली सर्व जीवथी अनंतगुण रसविजागें अधिक जेजतां कर्मस्कंधना समुदायनी त्रीजा स्पर्द्धकनी प्रथमवर्गणा, एम ते पण पूर्वोक्त अजव्यानंतगुण अनंत वर्गणायें स्पर्द्धक होय. एवा अनंता स्पर्द्धक जीवें पूर्वे बांध्या ठे ते जणी एने

पूर्वस्पर्शक कह्यौं. ते मध्यैषी दल लेइने ते दलने प्रकर्ष विशुद्धिना वशथकी अत्यंत रस हीन करीने अपूर्वस्पर्शक करे, केमके, आ संसार मध्ये परित्रमण करता जीवें कोइवारें बंध आश्री एवा रसस्पर्शक नथी कखा पण हमणाज विशुद्धिने वशें करे ठे. ते नणी एने अपूर्वरसस्पर्शक कह्यौं, ते अश्वकर्णकरणा-आ वीत्या पढी बीजो किट्टिकरणा-आयें प्रवेश करे. तिहां पूर्वस्पर्शकथी बीजा अपूर्वस्पर्शकथी दल लेइने तेना रसनी प्रतिसमयें अनंती किट्टि करे, किट्टि कहेतां जे पूर्व स्पर्शकथी तथा अपूर्व स्पर्शकथकी वर्गणा लेइ लेइने तेने अनंतशुण रस हीनताने पमाडीने घणो आंतरे आंतरे आपवुं. जेम अस्तकल्पनायें जेना एकशो रसविजाग ठे, अथवा एकोत्तरशो, बीडोत्तरशो, हता तेना पांच, पंदर, पच्चीश, रसविजाग राखवा. तेने किट्टि कह्यौं. ते किट्टिकरणा-आने ठेहले समयें समकालें अप्रत्याख्यानीउं अने प्रत्याख्यानीउं, ए वे लोच उपशमे अने ते समयेंज संज्वलना लोचनो पण बंधविच्छेद थाय. अने बादर संज्वलन लोचना उदय उदीरणानो व्यवच्छेद थाय. अने अनिवृत्तिबादर गुणठाणानो पण व्यवच्छेद थाय. एम नवमे गुणठाणे सातथी मांढीने पच्चीश पर्यंत मोहनीयनी प्रकृति उपशांत पामे ॥इति॥७९॥

सत्तावीसं सुहुमे, अष्टावीसं च मोह पयडीउं ॥

उवसंत वीअरागे, उवसंता हुंति नायवा ॥ ८० ॥

अर्थ- (सत्तावीसंसुहुमे के०) ते पढी अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान, ए वेहु लोचनो समकालें उपशम थये थके सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे सत्तावीश प्रकृति उपशांत थाय. (अष्टावीसंचमोहपयडीउं के०) तेवार पढी संज्वलनो लोच उपशमे थके अष्टावीश मोहनीयनी प्रकृति, (उवसंतवीअरागे के०) उपशांतवीतरागनामे अगीअरामे गुणठाणे (उवसंताहुंतिनायवा के०) उपशांत होय. ए री तें ज्ञातव्या इति एवुं जाणवुं ॥ इत्यह्वरार्थः ॥ ८० ॥

एम नवमाने ठेहले समयें अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी लोचनी बे प्रकृति उपशमे थके सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे सत्तावीश मोहनीयनी प्रकृति उपशांत पामी यें, ते सूक्ष्मसंपराय गुणठाणानो काल, अंतर सुहूर्त प्रमाण ठे. तेने विषे पेगो थको जीव, संज्वलनलोचनी उपरली स्थितिमध्येषी केटली एक किट्टि आकर्षीने तेनी प्रथमस्थिति सूक्ष्मसंपराय अ-आ जेटली करीने वेदे. सूक्ष्मकिट्टि कखुं जे दलिक अने

समय ऊणी वे आवलि बांधुं जे दल, ते उपशमावे, चरमसमयें संज्वलनो लोन उपशांत होय. तेहीज समयें ज्ञानावरण पांच, अंतराय पांच, दर्शनावरणीय चार, उच्चैर्गोत्र अने यशःकीर्ति, ए शोल प्रकृतिनो बंध, व्यवहृद करे, तेवार पढी बीजे समयें उपशांत कषाय थाय. तिहां मोहनीयनी अछावीश प्रकृति उपशांत थाय. ते उपशांत कषायवंतथको जीव, जघन्यथी तो एक समय रहे अने उत्कृष्टो अंतरमुहूर्त्त पर्यंत रहे, उपशांत अवश्य पडे, ते तिहांथी पढवाना बे प्रकार ठे. एक जवहूर्ये पडे अने बीजो कालहूर्ये पडे, तिहां जेनुं आयु पूर्ण थाय. तेवारें ते मनुष्यजवने हूर्ये मरण पामीने अनुत्तरविमानें देवता थाय. तिहां प्रथमसमयेंज बंध संक्रमणादिक आठे करण तथा उदय प्रवर्त्तावे, ते पाधरो अगीआरमा गुणता णाथी चोथे गुणताणे आवे. वचना गुणताणानो तेने स्पर्श थाय नहीं. तथा औ पशमिक सम्यक्त्वथी पढीने ते समय वेदकसम्यक्दृष्टि थाय. तथा जे जीव, काल हूर्ये अगीआरमा गुणताणानो अंतरमुहूर्त्त काल पूर्ण नोगवीने आगल चढवाने अजावें तिहांथी पाढो पडे, ते तो जिहां जिहां बंध, उदय, उदीरणादिक प्रकृति व्यवहृत्त यइ होय, तेने तेने फरी तिहां आरंजतो जे रीतें चढयो हतो, तेमज पडे. ते पढतो प्रमत्त थाय तथा कोइएक अविरतिपणाने पण पामे, कोइएक सा स्वादन पामी मिष्यात्वे पण जाय, ए श्रेणी उत्कृष्ट तो एक जवमध्ये बे वार करे, पण जे बे वार उपशमश्रेणी करे, ते नियमा तेहीज जवें हूपकश्रेणी न करे अने एकवार उपशमश्रेणी करीने बीजी वार हूपकश्रेणी करे तेनी ना नथी, ए रीतें उपशमश्रेणीनुं स्वरूप कहुं ॥ इत्यर्थे ॥ ८० ॥

॥ अथ हूपकश्रेणीमाह ॥ हवे हूपकश्रेणीनुं स्वरूप कहीयें ठैयें.

पढम कसाय चउकं, इत्तो मिळत मीस सम्मत्तं ॥

अविरय सम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीयंति ॥ ८१ ॥

अर्थ— (पढमकसायचउकं के०) प्रथम तो अनंतानुबंधीआ चार कषाय हूणे, विसंयोजना करे, (इत्तो के०) तेवार पढी (मिळतमीससम्मत्तं के०) मिष्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्वमोहनीय, ए त्रणेनो समकालें हूय करे ते (अविरयसम्मेदेसेपमत्तिअपमत्ति के०) अविरतिसम्यक्दृष्टि, देशविरति, प्रमत्त तथा अप्रमत्तगुणताणे (खीयंति के०) हूय करे, एटले सत्ताथी टाले. हूपकश्रेणीनो पडिवजनार पुरुष, आठ वर्षथी उपरनी उमरनो ढतां वज्ररूपज

नाराचसंघयणी, शुद्धध्यानवंत, अविरति, देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त, संयतिमांहे लो कोइ पण होय. पण एटलुं विशेष जे, केवल अप्रमत्त संयत होय. तो पूर्व नो जाण होय अने शुक्कध्यानोपगत होय अने बीजा सर्व धर्मध्यानोपगत होय. एवो जीव शुनयोगे वर्त्ततो रूपकश्रेणी आरंभे ते प्रथम चार अनंतानुबंधीआ विसंयोजीने खपावे, तेनी विसंयोजनानो प्रकार, पूर्वे कहाँ ठे, तेमज जाणवो. तेवार पढी त्रण दर्शनमोहनीय खपाववाने प्रवर्त्ते. तिहां यथाप्रवर्त्त्यादिक त्रण कर एा पूर्वे कहाँ, ते रीतेज करे पण एटलुं विशेष जे अपूर्वकरणना प्रथम समयथीज अनुदित मिथ्यात्व तथा मिश्रनां दल ते उदयवंत सम्यक्त्व मोहनीयमध्ये गुण संक्रमे करी संक्रमावे अने ते बेहुनो उदले एटले संक्रम पण करवा मांहे. तिहां पहेलो तो महोठो स्थितिखंड उवेले, तेथी बीजो स्थितिखंड विशेषहीन उवेले, तेथी वली बीजो स्थितिखंड विशेषहीन उवेले, एम करतां करतां अपूर्वकरणना बेहला समय पर्यंत कहेवुं. तिहां अपूर्वकरणना प्रथम समय जे स्थितिनो सत्तावंत होय तेथकी असंख्यात गुणहीन स्थितिनो सत्तावंत थाय.

तेवार पढी आगले समयें अनिवृत्तिकरणमध्ये प्रवेश करे, तिहां पण स्थिति घातादिक सर्वने तेहीज प्रकारें करे ठे. अनिवृत्ति करणना प्रथम समयें दर्शनत्रिकनी पण देशोपशमना, निवृत्ति, निकाचनानो व्यवहोद करे. तिहां प्रथम समय थकी दर्शनमोहनीयत्रिकनी स्थितिसत्तानो घात करतो, करतो सहस्रगमे स्थितिखंडें गये थके बाकी जेवारें असंखी पंचेंडियनी स्थितिसत्ता समान स्थिति रहे. तेवार पढी वली पण तेटलांज स्थितिखंडनां सहस्र गये थके चौरिंदि यनी स्थितिसमानसत्ता रहे. वली पण तेटलांज स्थितिखंडनां सहस्र गये थके तेंडियनी स्थिति समानसत्ता रहे. वली तेटलांज स्थितिखंडनां सहस्र गये थके बेंडियनी स्थिति समानसत्ता रहे, वली पण तेटलां स्थितिखंडनां सहस्र गये थके पद्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण दर्शन त्रिकनी स्थितिनी सत्ता रहे, तेवार पढी ते त्रणे दर्शनमोहनीयनो पण प्रत्येके एकेक संख्यातमो जाग सूकीने बाकीनी स्थिति सर्व खपावे, तेवार पढी वली पण बाकी मूकेला संख्यातमा जागनो एक संख्यातमो जाग सूकीने बाकी सर्व स्थितिनो घात करे. एरीते बाकी रहेला जागनो संख्यातमो जाग सूकी, सूकी, शेष सर्व स्थिति नो घात करतो, करतो स्थितिघातनां घणां सहस्र अतिक्रमे, तेवार पढी मिथ्यात्वना असंख्यात जागने खंडे अने मिश्र तथा सम्यक्त्वना तो संख्यात जागने खंडे, ते

पढी एम घणा स्थितिखंड गये थके जेवारें मिथ्यात्वनुं दल आवलिकामात्र रह्युं अने मिश्र तथा सम्यक्त्व ए बेदुनुं दल तो पढ्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण रहे. हवे ए स्थितिखंडना दलने खंडवानो प्रत्येक विधि कहीयें ठयें. तिहां खंडन करेलां एवां मिथ्यात्वनां दल तेने मिश्र, तथा सम्यक्त्व, ए बेदुमध्ये प्रेक्षेप करे अने मिश्रनां दलमात्र सम्यक्त्व मध्येज प्रेक्षेपे अने सम्यक्त्वनां दल सम्यक्त्वनी पोता नी हेठली स्थितिमध्ये प्रेक्षेपे, ते पढी जे मिथ्यात्व दलिक आवलिका मात्र रह्युं, तेपण स्तिबुकसंक्रमे करी सम्यक्त्वमध्ये संक्रमावे, एटले मिथ्यात्व क्लीण थाय, तेवार पढी मिश्रना तथा सम्यक्त्वना असंख्याता जाग करी तेने खंडे शेष एक जाग राखे. वली तेना पण असंख्याता जाग करे, तेमध्येथी एक जाग राखी बाकी सर्वेने खंडे, एम करतां करतां केटला एक स्थितिखंड गये थके, मिश्रमोहनी य एक आवलिकामात्र रहे, तेवारें सम्यक्त्वमोहनीयनी स्थितिसत्ता, आठ वर्ष प्रमाणनी रहे, ते वेलायें निश्चयनयने मतें सर्वे विघ्न टल्यां माटे एने दर्शनमोहनी यनो कूपक कहीयें. तेवार पढी वली सम्यक्त्वना स्थितिखंडने अंतरमुहूर्त्त प्रमाण उकेरे, तेजुं दल, उदयसमयथी आरंजीने सघली स्थिति सत्ता, समय समय संक्रमावे ठे. तेमध्ये पण उदय समय सर्वेस्तोक संक्रमावे. तेथकी बीजे समय असंख्यातगुणो, तेथकी त्रीजे समय असंख्यातगुणो, एम आगळे आगळे समय असंख्यातगुणो संक्रमावतां, संक्रमावतां ते गुणश्रेणीना माथा लगे जाणवुं. ते पढी उपर तो विशेषहीन विशेषहीन ज्यां लगे स्थितिना ठेहलो समय होय. त्यां लगे संक्रमावे. एम अंतर मुहूर्त्त, अंतर मुहूर्त्त प्रमाण अनेक स्थितिखंडने उकेरे ठे. अने निक्षेपण करे ठे. ते स्थितिदलमांहे संक्रमावतो द्विचरम स्थितिखंड लगे जाय, ते द्विचरम स्थितिखंडथकी ठेहलो खंड असंख्यातगुणो करे. ते ठेहलो स्थितिखंड, जेवारें उकेरे, एवाने कूपककृतकरण एवुं नाम कहीयें. ए कृतकरणा थयें वर्त्ततो एवो जीव, कोइ एकें पूर्वे आशु बांधुं होय तो ते आशुहयें मरण पामने चारे गतिमांहेली जावे ते गतिमध्ये अवतरे, अने लेश्याने विषे पण पूर्वे तो शुक्क लेश्यामां हतो अने सांप्रत तो अन्यतम लेश्या मध्ये जाय ठे. ते माटे सप्तक हयनो मांनार प्रस्थापक थइने मनुष्य, निष्ठापक ठतो चारगतिमांहेलो जीव कइतो ठे, तथा जे पूर्वे ब-आशु थको कूपकश्रेणी मणि, अने अनंतानुबंधीआ चार खपावीने पढी मरण पामवाना संजव थकी जो श्रेणी थकी विरमे तो पण अनंतानुबंधीआहुं बीजचूत मिथ्यात्व ठे, तेनो विनाश थयो नथी तेजणी वली

पण कदाचित् अनंतानुबंधीया सजीवन करतां जहे. पण जेणे मिथ्यात्व ह्य कष्टुं, ते मिथ्यात्वना विनाशथी वजी अनंतानुबंधीया न बांधे, जे जणी बीज नथी तो अंकूर केम होय? अने ए सात प्रकृति ह्य करीने जो चढते परिणामें वर्ततो मरण पामे. तो अवश्य देवगतिमध्येज उपजे अने जो पतितपरिणामें थाय, तो नानाप्रकारना परिणामना संजवथकी जेवा परिणामनी विद्युद्धियें प्रवर्ततो मरण पामे, तेवी गतिमध्ये अवतरे अने जेणे पूर्वे आयु बांध्युं ठे, एवो जीव, जो ते वखत तिहां काल न करे तो पण सात प्रकृतिने ह्ये निश्चये ते तेवाज परिणामें रहे, परंतु आगज बीजी चारित्रमोहनीयनी प्रकृति खपाववानो उद्यम न करे. तथा ह्योणसप्तक पूर्वबधायु जणी ते जवें मुक्ति न पामे, तो पण त्रीजे जवें अथवा चोथे जवें अवश्य मुक्ति पामे, केमके जेणे देवायु अथवा नरकायु बांध्युं होय, तो ते देव तथा नारकीनो जव करी तिहांथी मनुष्य यइने त्रीजे जवें मोह जाय. अने जे मनुष्य तथा तिर्येचायु बांध्या पढी सप्तकह्य करे, ते नियमा असंख्य वर्षायु बांधे पण संख्यातवर्षायु बांध्या पढी सप्तक ह्योण न करे, तेवारें ते युगजी या मध्ये जाय. तिहां तो जवप्रत्ययेज नियमा देवायुनोज बंध होय, तेथी ते देव गति मध्ये जाय अने देवगतिमध्ये तो जवप्रत्यये सम्यक्त्व ठतां मनुष्यायुनोज बंध होय. तेथी ते देवता चवी मनुष्य थाय. तिहां वलतुं आयु न बांधे, केवल चारि त्र जइ शेष एकवीश मोहनीयनी प्रकृति खपावी मुक्ति पामे, ते अपेकार्ये चोथे जवें मोह जाय, तिहां पंचसंग्रहनी साख लखीयें ठैये "तइय चउत्ते तम्मिव, न वम्मि सिबंति दंसणे खीणे ॥ जं देव निरअसंखा, उचरम देहेसुते हुंति ॥" ए सात नो ह्य अविरति गुणगणे होय. ए सूत्रनो अर्थ ठे. अन्यथा तो अविरतिसम्यक्त्व छि, देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त साधु, ए चार मांहेलुं जावे ते सप्तक ह्योण करे ठे, तथा जो अबधायु थको रूपकश्रेणी आरंजे तेवारें ए सप्तकनो ह्य करे, तो ते नियमथी अनुपरत परिणामवंत थको चढते परिणामें आगले चारित्र मोहनीयनी प्रकृति खपाववाने अर्थे उद्यम करे. एम जाण्यमध्ये कष्टुं ठे. "इय रो अणुवर उच्चिय, सयलं सेठि समाणेइ" हवे चारित्र मोहनीयनी शेष एकवी श प्रकृति खपाववाने अर्थे उद्यम करतो एवो पुरुष, यथाप्रवृत्त्यादिक त्रण करण करे. तिहां करणुं स्वरूप पूर्वली पेरेंज जाणवुं. अहीं अप्रमत्त गुणगणे यथाप्र वृत्तिकरण, तथा अपूर्वकरणगुणगणे अपूर्वकरण अने अनिवृतिबादर गुणगणे अनिवृत्तिकरण करे. तिहां अपूर्वकरणे स्थितिघातादिक करी अप्रत्याख्यानीया

चार अने प्रत्याख्यानीया चार, एवं आठ कषाय एवी रीतें खपावे, के जेवी रीतें अनिवृत्तिकरणादाने प्रथम समयेंज ते कषायाष्टकनी पढ्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण मात्रस्थिति शेष आय ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८१ ॥

तेवार पढी अनिवृत्ति बादर गुणगणणे शुं हणे? ते कहे ठे.

अनिअट्टि बायरेथी, ए गिद्धि तिग निरय तिरि अ
नामाउ ॥ संखिऊ इमे सेसे, तप्पाउगाउ खीयंति ॥ ८२ ॥

अर्थ—(अनिअट्टिवायरे के०) अनिवृत्तिबादर गुणगणाना प्रथम समयें आठ कषाय पढ्योपमना असंख्यात जाग प्रमाण स्थितिना आय. पढी (थीएगि द्वितिग के०) थीएद्वित्रिक, नरकद्विक, तिर्यचद्विक, एकेंद्रियजाति, वेंद्रियजाति, तेंद्रियजाति, चौरिंद्रियजाति, स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारण, ए (निरयतिरिअनामाउतप्पाउगाउ के०) नरक अने तिर्यच ए वे गति तत्प्रायोग्य ना मकर्मनी तेर प्रकृति तथा पूर्वोक्त थीएद्वित्रिक ते दर्शनावरणीयनी प्रकृति एवं शोल प्रकृतिने उद्वलनासंक्रमें करीने प्रतिसमय उवेली उवेली जेवारें पढ्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाणामात्र स्थिति शेष रहे, तेवारें ते शोल प्रकृतिने प्रतिसमय बंधाती प्रकृतिमर्थें गुणसंक्रमें करी संक्रमावी संक्रमावीने ह्मीण करतो करतो अनिवृत्तिबादर गुणगणाना (संखिऊइमेसेसे के०) संख्याता जाग गये थके अने शेष एक जाग थाकते थके ते सघली प्रकृति, (ह्मीयंति के०) ह्मीण करे. अर्दीयां अप्रत्याख्यानीया तथा प्रत्याख्यानीया आठ कषाय पूर्वे खपाववा मां न्या हता पण हजी ह्मीण थया नथी तेना वचमां पहेल वेलीज ए शोल प्रकृतिनी ह्य कखो अने कोइएक आचार्य वली एवं कहे ठे के, ए शोल प्रकृति खपावतां वचालें आठ कषाय खपावीने पढी ए शोल प्रकृति खपावे ॥इत्यर्थः॥ ८१॥

इतो ह्णइ कसाय, ढगंपि पञ्जा नपुंसगं इढी ॥

तो.नोकसायठकं, बुहइ संजलण कोहम्मि ॥८३॥

पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए ॥

मायंच बुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो ह्णइ ॥८४॥

अर्थ—(इतोहणइकसायअढगंपि के०) तेवार पढी वली प्रत्याख्यानीया चार अने अप्रत्याख्यानीया चार, ए आठ कषायने निःशेष पणे अंतरमुहूर्त्त मात्रकालें

करी तेहणे (पञ्चानपुंसगंड्डी के०) पढी नपुंसकवेद खपावे, पढी स्त्रीवेद खपावे. (तो नोकसायढक के०) तेवार पढी हास्यादिक ढ नोकषायनुं दल हेपवतां रहुं, ते (संज लणकोहम्मि के०) संज्वलन क्रोधने विषे (बुहइ के०) हेपवे, संक्रमावे ॥ इति समु० ॥७१॥ (पुरिसं के०) पुरुषवेदना बंधादिक विभेद थया पढी आवलिकाशेष प्रत्ये करणविशेषे करी संज्वलन (कोहे के०) क्रोधमध्ये गुण संक्रमे करीने संक्र मावे, अने (कोहं के०) संज्वलनक्रोधना बंधादिक विभेद थये थके आवलिका शेषप्रत्ये करण विशेषे करी संज्वलन (माणे के०) मानमध्ये गुणसंक्रमे करी संक्रमावे तथा (माणंच के०) संज्वलन मानना बंधादिक विभेद थये थके, आ वलिकाशेष प्रत्ये करणविशेषे करी (मायाए के०) संज्वलन मायामध्ये (बुह इ के०) संक्रमावे, नाखे, एटले गुणसंक्रमे करी संक्रमावे तथा (मार्यंच के०) संज्वलन मायाना बंधादिक विभेद थया पढी आवलिका शेषप्रत्ये करण विशेषे करी (लोहे के०) संज्वलनलोचमध्ये (बुहइ के०) गुणसंक्रमे करी संक्रमावे. तेवार पढी (लोहं के०) संज्वलन लोचना बंधादिक विभेद थया पढी आवलिका शेषप्रत्ये करण विशेषे करी हणे, (तो के०) तेवार पढी (सुहुमपि के०) अत्यंत सूक्ष्म थाकतो एवो सत्ता रूप जे लोच तेने पण (हणइ के०) हणे विनाशे सत्ताथी टाले, एम सूक्ष्म संपरायने अंतें मोहनीयकर्मने मूलथी टाली नाखे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७३ ॥

एटले आठ कषाय खपावीने अथवा मतांतरें शोल प्रकृति खपावीने पढी अंतर मुहूर्त्ते नव नोकषाय तथा चार संज्वलनानुं अंतरकरण करे, ते करीने प्रथम नपुंसकवेदनां उपरली स्थितिवाला दलिक उवेलवानो विधि करी खपाववा मांने ते अंतर मुहूर्त्त मध्ये उवेलतां उवेलतां पव्योपमना असंख्यातमा जाग प्रमाण स्थिति शेष रहे, तेवारें बंधाती प्रकृतिमध्ये तेनुं दल गुणसंक्रमे करी संक्रमावे एम करतां अंतर मुहूर्त्त कालें ते सघळुं व्हीण थाय.

हवे ते नपुंसकवेदनी हेठली स्थितिनुं दल, ते जो नपुंसकवेदने उदये श्रेणि मांने होय, तो वेदतां वेदतां खपावे अन्यथा तो आवलिकामात्र ते दल रहुं होय, तेने उदयवती वेद्यमान प्रकृतिने विषे स्तिबुकसंक्रमे करी संक्रमावे. एम नपुंसकवेद ह्य कखा पढी अंतर मुहूर्त्ते स्त्रीवेद पण एज रीतें खपावे, तेवार पढी हास्यादिक ढए प्रकृतिने सार्थेज समकालें खपाववा मांने. पढी ते नोकषायनां उपरली स्थि तिनां दल पुरुष वेदने विषे पतद्रग्रह न थाय, माटें तेने पुरुषवेदमध्ये न संक्रमावे किंतु ? संज्वलनक्रोधमध्ये पूर्वे कहुं ते रीतें तेने संक्रमावे. एम संक्रमावतां अंतर

सुहूर्त्त मात्रमां ते नो कषायत्क सर्वं ह्रीण श्याय. ते समयेंज पुरुष वेदनो बंध, उदय अने उदीरणानो विहेद श्याय अने एक समय ऊणी बे आवलियें बाध्युं जे पुरुष वेदनुं दल, ते सूकीने बाकी सगलो ह्रीण शयो, ते समयें अवेदक शयो. ए प्रकारें जे पुरुषवेदोदयें श्रेणी आरंजे, तेनो ए विधि कह्यो.

अने जो नपुंसकवेदोदयें श्रेणी आरंजे, तो ते पहेलोज स्त्रिवेद अने नपुंसक वेद ए बेहुनो समकालें ह्य करे, ते ह्यने समयेंज पुरुषवेदनो बंधादिक, विहेद श्याय. तेवार पढी अवेदक शको पुरुषवेद अने हास्यादिकषट्क समकालें ह्य करे.

अने जो स्त्रिवेदोदयें श्रेणि पडिवजे, तो प्रथम नपुंसकवेद खपावे. पढी स्त्री वेद खपावे, ते ह्यने समयेंज पुरुषवेदनो बंध, उदय अने उदीरणानो विहेद श्याय. तेवार पढी पुरुषवेद अने हास्यादि षट्कने समकालें ह्य करे.

हवे जे पुरुषवेदें श्रेणी आरंजे, ते आश्रयिनींज कहे ठे. क्रोध वेदतां पुरुषवेदो क्रोधना त्रण नाग करे. एक घोडाना काननी परें जे न्हाना न्हाना कर्मना पुत्रज तेना न्हाना न्हाना खंम करे, जे शकी काल विज्ञेणें तेने अश्वकर्णकरणांश कहीयें. ते रस सहित कर्मना दलिकने कूटी कूटीने किट्टिनी परें अत्यंत सूक्ष्म करे, तेने बीजो किट्टिकरणांश कहीयें. ते किट्टिकरणांश कह्या पढी ते किट्टि करी तेने वेदे, ते त्रीजो किट्टिवेदनांश कहीयें. तिहां अश्वकर्णकरणांशयें वर्त्ततो शको समय समय प्रत्ये अनंता अपूर्व स्पर्शक संज्वलना चतुष्कना अंतरकरण शकी उपरली स्थितिने विषे करे, एटले संज्वलन चतुष्कना अंतरकरणनी उपरली स्थितिना प्रतिसमयें अनंता अपूर्व स्पर्शक करे, ते स्पर्शकजुं स्वरूप, पूर्वे कहुं ठे, तिहांशी जाणवुं. अने ए अश्वकर्णकरणांशयें वर्त्ततो पुरुषवेदने पण समय ऊणी बे आवलिकारूप कालें करी क्रोधनेविषे गुणसंक्रमें करी संक्रमावतो शको ठेहजे समयें सर्व संक्रमें करी संक्रमावे. ए प्रकारें अहींआं पुरुषवेद ह्रीण शयो अने अश्वकर्णकरणांश पण पूर्ण शई.

तदनंतर किट्टिकरणांशयें पेटो शको संज्वलन चतुष्कनी उपरली स्थितिगत दलिकनी किट्टि करे, ते किट्टि परमायें तो अनंती ठे तथापि बाल समजाववाने अर्थे स्थूलनेदनी अपेहायें, असत्कल्पनायें एकेका कषायनी त्रण त्रण कल्पनायें कल्पियें; तेवारें बार किट्टि होय. ए क्रोधें ह्यक श्रेणी पडिवजताने जाणवुं.

अने जो मानोदयें श्रेणी पडिवजे, तो तेने उदलनाना विधियें करी, क्रोध ख पावे शके शेष त्रण कषायनी पूर्वक्रमें करी नव किट्टि करे, जो मायाने उदयें श्रेणी

आरंजी होय तो क्रोध अने मान, ए बे उद्वलनाविधियें खपावे अके शेष बे कषायनी उ किट्टि करे तथा जे लोनोदयें श्रेणी माने, ते क्रोध, मान, माया, ए त्रण उद्वलनाविधियें उवेली खपावे शेष एक लोजनीज त्रण किट्टि करे. ए किट्टि करवानो विधि कह्यो. ए किट्टिकरणा-क्षा पूर्ण अये अके पढी किट्टिवेदना-क्षाने विषे पेटो थको जे जीवें क्रोधें श्रेणी आरंजी ठे. ते क्रोधनी बीजी स्थिति मध्यें रहेलुं प्रथम किट्टिनुं दलिउं बीजी स्थितिमध्येथी आकर्षीने प्रथम स्थितिगत करे अने वेदे, ते ज्यां लगें समयाधिक एक आवलि शेष रहे त्यां लगें वेदे, तेवार पढी तेना अंतरसमयमां उपरली बीजी स्थितिमध्ये रहेलुं बीजी किट्टिनुं दल, तेने आकर्षी प्रथम स्थितिगत करी वेदे, ते पण त्यां लगें वेदे, ज्यां लगें समयाधिक आवलिमात्र शेष रहे. तेवार पढी वलो उपरली स्थितिनी त्रीजी किट्टिनां दल आकर्षीने प्रथम स्थितिगत करी वेदे. एम ए त्रणे किट्टिवेदना-क्षाने विषे उपरली स्थितिनुं दलिक तेने गुणसंक्रमें करी प्रतिसमय असंख्येय गुणवृद्धि लक्षण संज्वलनमानने विषे प्रहे पे ठे. एम त्रीजी किट्टिवेदना-क्षाना चरमसमयने विषे संज्वलनक्रोधनो बंध, उदय अने उदीरणानो सार्थेज व्यवच्छेद थाय अने सत्तायें पण ठेहली समयोन बे आवलियें बांध्युं दल रह्युं ठे पण ते विना बीजुं नथी. सर्वने मानने विषे प्रहेप्युं ठे.

तेने आगले समयें माननी बीजी स्थिति मध्येथी प्रथम किट्टिनुं दल, आकर्षी प्रथम स्थितिगत करी अंतरमुदूर्त्त लगें वेदे, तिहां जे क्रोधनुं दल शेष रह्युं ठे. तेने समयोन बे आवलिकायें गुणसंक्रमें करी संक्रमावे अने चरमसमयें तो सर्व संक्रमें करी संक्रमावे, एटले क्रोध ह्य अयो. एम माननी पहेली किट्टिनुं दल प्रथम स्थितियें करलुं ठे तेने वेदतां वेदतां समयाधिक आवली शेष रहे, तेवार पढी बीजा समयमां माननी उपरली स्थितिनी बीजी किट्टिनुं दल आकर्षी प्रथम स्थितिगत करी एज रीतें वेदतां वेदतां समयाधिक आवलि शेष रहे, ते पढी अ नंतरसमयमां माननी उपरली स्थितिनी त्रीजी किट्टिनुं दल आकर्षी तेने प्रथम स्थितिगत करीने वेदे, ते त्यां लगें वेदे, ज्यां लगें समयाधिक आवलिमात्र शेष रहे, तेवारें तेना चरमसमये माननो बंध, उदय अने उदीरणानो समकालें विच्छेद थाय. अने सत्तायें पण समयोन बे आवलिनुं बांध्युं दल रहे, ते विना बीजो सर्व मायाने विषे प्रेक्षेप करी खपाव्यो ठे माटे.

पढी मायानुं बीजी स्थितिगतनी प्रथम किट्टिनुं दल, तेने प्रथम स्थितिगत करी अंतरमुदूर्त्त पर्यंत वेदे, तेमध्ये शेष माननुं दल जे रह्युं हतुं, तेने समयोन बे

आवलिकार्ये गुणसंक्रमे करी अंतरमुहूर्त्त लगे मायाने विषे संक्रमावे, ठेहले समयें तो सर्व संक्रमे करी संक्रमावे, एटले माननो ह्य थाय अने मायानो पण प्रथम किट्टिदल वेदतां वेदतां समयाधिक आवलिमात्र रहे, ते पठी अनंतर समयें आगली बीजी किट्टिनां दलने प्रथमस्थितिगत करी वेदे, ते ज्यां सुधी समयधिक आवलिकामात्र शेष रहे त्यां सुधी वेदे. ते पठी अनंतर समयने विषे बीजी स्थितिगत रहेलुं एवुं त्रीजी किट्टिनुं दलिक तेने आकर्षीने प्रथम स्थितिगत करीने वेदे एम पूर्वली परें सर्व मायानी किट्टिनां दल वेदतो वेदतो, ठेहली किट्टिनां दल प्रथमस्थितिगत करी वेदतां जेवारें समयाधिक आवलिकामात्र शेष रहे, तेवारें मायानो बंध, उदय अने उदीरणा ए त्रणे सार्थेज विह्वेद थाय, मात्र समयोन बे आवलिनुं बांध्युं दल सत्तार्ये रहुं ठे. बाकी सर्व संज्वलनलोजमध्ये ह्येपव्युं ठे.

तेवार पठी संज्वलन लोजनी उपरली स्थितिनी प्रथम किट्टिनुं दल, आकर्षी प्रथम स्थितिगत करी, तेने अंतरमुहूर्त्त वेदे. तिहां शेष रहुं समयोन बे आवलि मात्र संज्वलन मायानुं दल, तेने अंतर मुहूर्त्त लगे गुणसंक्रमे करी लोजने विषे संक्रमावतो अंतर मुहूर्त्तने ठेहले समयें सर्व संक्रमे करी संक्रमावे, तेवारें संज्वलन लोजनी प्रथम किट्टिनुं दल पण समयाधिक आवलिमात्र रहे तेवार पठी अनंतर समयें संज्वलन लोजनी उपरली बीजी स्थितिनी बीजी किट्टिनुं दल खे चीने प्रथम स्थितिगत करी वेदे, ते वेदतो, वेदतो आगली त्रीजी किट्टिनां दलने ग्रहण करीने तेनी सूक्ष्म सूक्ष्म किट्टि करे, ते पण त्यां लगे करे, ज्यां लगे बीजी संज्वलन लोजनी किट्टिनुं दल जे प्रथम स्थितिगत कहुं ठे तेनी समयाधिक आवलिमात्र शेष रहे, त्यां लगे करे, ते समयेज संज्वलन लोजनो बंध विह्वेद थाय, तथा बादर कषायनो उदय अने उदीरणा पण विह्वेद थाय, अने अनिवृत्ति गुण स्थानकनो काल पण विह्वेद थाय. ए त्रणेनो सार्थेज विह्वेद थाय.

तेने आगले समयें लोजनी सूक्ष्म किट्टिनुं दल उपरली बीजी स्थिति मध्येची आकर्षीने तेने प्रथम स्थितिगत करी वेदे, तेने सूक्ष्मसंपराय कहीये. पूर्वे जे त्रीजी त्रीजी किट्टिनी शेष आवलिकानी ठेहली किट्टि रही ठे, ते सर्व वेदाती पर प्रकृतिमध्ये स्तिबुकसंक्रमे करी संक्रमावे, एटले लोजनी प्रथम किट्टिनी शेष आवलिका, ते बीजी किट्टिना दलमध्ये संक्रमावे, अने बीजी किट्टिनी शेष आवलिका, त्रीजी किट्टिना दलमध्ये संक्रमावी वेदे.

हवे लोजनी सूक्ष्म किट्टिनुं दल अने पूर्वे समयोन बे आवलिनुं बांध्युं दल, तेने

प्रतिसमयें स्थितिघातादिकें करी वेदतो वेदतो त्यां लगे खपावे, ज्यां लगे सूक्ष्मसंपराय अक्षाना संख्याता जाग जाय. अने एक जाग शेष रहे, त्यां लगे खपावे. हवे शेष एक जाग रहे, तेवारें संज्वलन लोचने सर्व अपवर्चनाकरणें अपवर्तने एटले अपवर्चना तेने कहीयें के जे कर्मनी स्थिति रसनं घटाडवुं एटले संज्वलन लोचनी स्थिति रस घटाडीने शेष सूक्ष्मसंपराय अक्षा जेटलो राखे, हजी पण सूक्ष्मसंपराय अक्षा अंतर मुहूर्त्त प्रमाण रही ठे, तेवारें मोहनीयना स्थिति घातादिक पांच पदार्थ विरम्या, परंतु हजी बीजा कर्मोनां स्थितिघातादिक प्रवर्त्तें ठे. अहींआं जे कर्मनी स्थिति तथा रसनं घटाडवुं तेने अपवर्चना कहीयें. एटले संज्वलना लोचनी स्थिति तथा रसने घटाडीने शेष सूक्ष्मसंपराय अक्षा जेटलो राखे. हवे ते लोचनी अपवर्त्तली स्थितिने वेदतो, वेदतो त्यां लगे गयो ज्यां लगे संज्वलन लोच समयाधिक आवलि मात्र रह्यो, तिहां एनी उदीरणा विराम पामी, केवल उदयें करीज वेदे ठे, ते ठेहला समय लगे जाणवुं. अने ठेहजे समयें ज्ञानावरणपंचक, अंतरायपंचक, दर्शनावरण चार, उच्चैर्गोत्र, यशःकीर्त्ति, ए शोल प्रकृतिनो बंधविहेद थाय तथा मोहनीयनो उदय अने सत्ता पण विवेद थाय ॥ इतिसमुच्चयार्थः ॥ ७४ ॥

स्त्रीण कसाय डुचरिमे, निदं पयलं च द्विण्डु उउ मडो ॥

आवरण मंतराए, उउ मडो चरम समयम्मि ॥ ७५ ॥

अर्थ—संज्वलन लोच सर्व कृत्य कथा पढी ह्रीण कषाय थयो तेने पण मोहनीय विना बीजां शेष कर्मोनी स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम तेमज पूर्वेली रीतें प्रवर्त्तें. ते ह्रीण कषायाक्षाना संख्याता जाग जाय, त्यां लगे प्रवर्त्तें अने शेष एक जाग रहे, तेवारें पांच ज्ञानावरण, पांच अंतराय, चार दर्शनावरण अने वे निडा एवं शोल प्रकृतिनी सत्तानी स्थिति सर्व अपवर्त्तनायें अपवर्त्तने एटले घटाडीने ह्रीण कषायनी अक्षा सरखी करे, पण निडादिकनी स्थिति स्वरूपनी अपेक्षा यें एक समय हीन करे अने कर्म रूपें बराबर होय ते ह्रीण कषाय अक्षा हजी अंतर मुहूर्त्त प्रमाण रही ठे, तेवारें ते शोल प्रकृतिनां स्थितिघातादिक विराम पा मे, बीजां शेष प्रकृतिनां स्थितिघातादिक हजी विराम पाम्यां नथी ए शोल प्रकृतिने उदय उदीरणायें करीने वेदतां वेदतां समयाधिक आवलि मात्र शेष रहे, त्यां लगे वेदे, पढी उदीरणा विरमे, तेवारें एक आवलिकामात्र केवल उदयें करीने वेदे. ते

यावत् (स्त्रीणकसायडचरिमे के०) क्लीणकषायना द्विचरम समयें एटले ठेहेला समयकी पूर्वलो समय तेने द्विचरम समय कहीयें त्यांशुधी वेदे पढी ते द्विचरम समयें (निहंपयलंचहिएणइठठमढो के०) निडा अने प्रचलाने ठदस्य थको ह्ये एटले निडादिक स्वरूप सत्तापेह्ययें ह्य थाय. पढी (आवरणं के०) ज्ञानावरण पांच, दर्शनावरण चार अने (अंतराएठठमढो के०) अंतराय पांच, एवं चौद प्रकृतिने पण ठदस्य थको (चरमसमयम्मि के०) ठेहेला समयने विषे ह्ये ॥ इति ॥ ८५ ॥

ते चौद प्रकृति ह्य कखा पढी आगले समयेंज व्यवहारनयमतें संयोगी के वली थाय अने निश्चयनयमतें तो तेहीज समय केवली कहीयें, ते केवलज्ञानें करी सर्व लोकांलोक सर्वांशें इव्य गुण पर्यायस्वरूपें देखे, जाणे. सर्वज्ञ सर्वदर्शी थाय. एवुं कांइ थयुं नथी, अशे पण नहीं अने थतुं पण नथी, के जे केवली न देखे. एम जघन्य तो अंतर मुहूर्त पर्यंत अने उत्कृष्टो तो आठ वर्षे ऊणी पूर्वकोटी वर्ष पर्यंत पृथ्वीतलने विषे विचरीने पढी जेने वेदनीयादिक कर्म आयुःकर्मथकी थधिका जोगववां रह्यां होय, तेवा शेष कर्मोने आयुःकर्मने बराबर करवाने अर्थे ते आठ समयनो समुद्घात करे, पण बीजा न करे तिहां पहेले समयें पोताना शरीर प्रमाण जामो तथा उंचो. नीचो, लांबो, चौद राजप्रमाण पोताना आत्मप्रदेशनो विस्तार, दंभाकार करे. तथा बीजे समयें ते दंममध्येथी बेदु पासें प्रदेश श्रेणि विस्तरे, ते लोकांत लगे उत्तर दक्षिणें पसरें, तेवारें कमाडने आकारें आकार देखाय. तेने कपाट कहीयें. त्रिजे समयें पूर्व अने पश्चिमें वली बे प्रदेशनी श्रेणि करे, ते पण लोकांत लगे पसरें, तेवारें मंथाणनी पेरें चार फडसुआं निकले. एवा आकारें आत्मप्रदेशनी श्रेणी पसरें तथा चोये समयें ते मंथाण आकारना चारे आंतराना आकाश प्रदेश समस्त रह्या ठे तेने आत्मप्रदेशें करी पूरीने समयलोक व्यापी थाय. पांच मे समयें वली मंथाणना आंतरानें संहरे, ठेठे समयें मंथाण संहरे, सातमे समयें कपाट संहरे, आठमे समयें दंम पण सद्दीने शरीरस्थ स्वभावस्थ थाय.

तिहां पहेले समयें अने आठमे समयें औदारिक काययोगी होय, तथा बीजे ठेठे अने सातमे, ए त्रण समयें औदारिक मिश्रकाययोगी होय. अने वचला त्रण समयें कार्मणकाय योगी होय. ए त्रणे समयें अणाहारी होय. इत्यादिक अर्हीथां थणो विचार ठे परंतु विस्तारना नयथी नथी लख्यो.

हवे कोइ एक केवली समुद्घात कखा विना पण मुक्तियें जाय. जे ऊणी श्री पन्नवणामथें कहां ठे सवेविषांजते केवली समुद्घातं गड्ढति गोयमा नोइणमठे स

मठे जस्सा ठएण तुलाइं बंधणेहिं विइहेय नवो पक्काइ कम्माइं ॥ नं समुग्घायं समगद्धई अग्रंतुण समुग्घाय मणंतकेवली जिणा जरामरण विण्णमुंका सिद्धिवर गयं गया ॥ जेने आद्युःकर्मनी स्थितिना कर्मपरमाणु सरखाज नवोपग्राही वेदनी यादिक कर्म होय, ते समुद्घात न करे अने जे करे, ते पण अंतरमुहूर्त्त वर्त्ता यु थाकतेज केवली समुद्घात करे. हवे ते बेहु सयोगी केवली पण नवोपग्राही कर्मक्य करवाने अर्थे लेख्यातीत अत्यंत अप्रकंप परम निर्द्वाराहुं कारण, एवां शुक्लध्याननो त्रीजो पायो ध्याववाने चांडता योगनिरोध करवा माने, तिहां अंतर मुहूर्त्तमां योग रुंधे, तेमध्ये प्रथम बादर वचनयोग निरोधने अर्थे प्रवर्त्तमान था य. तिहां बादरकाययोगे करीने बादर मनोयोगने अंतर मुहूर्त्त रुंधे. तेवार पढी सूक्ष्ममनोयोगे करी बादरवचनयोग रुंधे, तेवार पढी सूक्ष्मकाययोगे करी ने बादरकाययोग रुंधे, वली तेणे करीज सूक्ष्म मनोयोग रुंधे. ते पढी सूक्ष्मवचन योग रुंधे, ते पढी सूक्ष्मकाययोग रुंधतो थको सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति त्रीजे शुक्लध्याने चढे, तेना सामर्थ्यथकी वदनोदरादिक विवर पूरवे करीने देहनो त्रीजो जाग संकोचीने शेष बे जागनो प्रदेशघन करे.

ते ध्याने वर्त्ततां स्थितिघातादिके करी सयोगी गुणगणाने चरम समये एक आद्यु विना बीजां त्रण कर्मने अयोगी गुणगणानी अवस्थाना सरखा स्थिति वंत कखा पण एटलुं विज्ञेय के, जे कर्मनो अयोगी गुणगणे उदय नथी ते कर्म नी स्थिति, स्वरूपापेकार्ये समय ऊणी करे, कर्मस्वरूपनी अपेकार्ये अयोगी अव स्थासमान स्थिति करे.

ते सयोगी गुणगणाने चरमसमये ३ औदारिकदिक, ३ तैजस, ४ कर्मण, १० ठ संस्थान, ११ प्रथम संघयण, १५ वर्षचतुष्क, १६ अगुरुलघु, १७ उप घात, १८ पराघात, २० शुनाशुन विहायोगति, २१ प्रत्येक, २२ स्थिर, २३ अ स्थिर, २४ शुन, २५ अशुन, २६ निर्माण, २७ सुस्वर, २८ दुःस्वर, २९ उड्डा स अने ३० बे वेदनीय मांहेली एक वेदनीय, ए त्रीश प्रकृतिनां उदय अने उ दीरणा विबेद थाय, तेने आगले समये अयोगी केवली थाय. तेहुं कालमान पांच न्हस्व अहर उच्चार प्रमाण अंतर मुहूर्त्तहुं होय. तिहां सूक्ष्मक्रियाध्यान पूर्ण करीने व्युपरत क्रिया अप्रतिपातिनामे शुक्लध्यानने चोथे पाये चढे. ए गु णगणे स्थितिघातादिक रहित थको जेटली उदयवती प्रकृति ठे. तेने वेदतो थको स्वपावे अने जे प्रकृतिनो उदय नथी, मात्र सत्तार्येज ठे, तेनां दजिक स्तिडु

कसंक्रमे करी उदयवती प्रकृतिमध्ये संक्रमावी वेदी वेदीने खपावे. एम अयोगोना द्विचरम समय जगें करे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८४ ॥

हवे तिहां जे प्रकृति खनावें खपावे, ते कहे ठे.

देवगइ सहगयाउ, ड चरिम समयं नविअंमि खीअंति ॥

सविवागे अर नामा, नीआ गोअंपि तडेव ॥ ८५ ॥

अर्थ—(देवगइसहगयाउ के०) देवगति सहचारिणी एटले देवगतिना बंधन साथें एकांतेंज बंध ठे जेनो, एवी देवगति सहगति प्रकृति दश ठे, तेनां नाम कहे ठे. १ वैक्रिय अने आहारक शरीर अने ४ वैक्रियआहारक बंधन, ६ वैक्रियआहारकसंघातन, ८ वैक्रिय आहारकांगोपांग, ए देवगति, १० देवानुपूर्वी, ए दश प्रकृति देवगति सहगत कहीयें. ए दश प्रकृति, (डुचरिमसमयंनविअंमिखीअंति के०) नव्यमोहगामी जीवने द्विचरमसमयें ह्य जाय. तथा (सविवागेअरनामा के०) तथा तेहीज द्विचरमसमयें जे प्रकृति विपाकें वरें ठे. एटले जे नामकर्मनी नव प्रकृतिनां तिहां विपाक एटले उदय ठे,तेथकी इतर एटले बीजी प्रकृतिउ जे प्रकृतिउनो तिहां उदय नथी, तेवी प्रकृतिनां नाम कहे ठे. ३ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर, ६ तथा ए त्रणनां बंधन, ए ए त्रणनां संघातन, १५ ठ संस्थान, ११ ठ संघयण, १२ औदारिकांगोपांग, १६ वर्षचतुष्क, १७ मनुष्यानु पूर्वी, १८ पराघात, १९ उपघात, २० अगुरुलघु, २१ छुनाछुनखगति, २२ प्रत्येक, २३ अपर्थास, २५ उद्धास, २६ थिर, २७ अथिर, २८ छुन, २९ अछुन, ४० सुसर, ४१ डःस्वर, ४२ डुर्नग, ४३ अनादेय, ४४ अयशःकीर्त्ति, ४५ निर्माण, ए पिस्तालीश प्रकृति पण, द्विचरम समयें ह्य पामे तथा (नीआगोअंपितडेव के०) नीचगोत्र अने अपिशब्दथकी बे वेदनीयमाहेलुं एक वेदनीय, ए सर्व मली प्रथम नी दश जेलातां सत्तावन प्रकृति द्विचरमसमयें ह्य जाय, सत्ताथी टले ॥ ८५ ॥

अन्नयर वेअणिकं, मणुआउअ मुच्चगोअ नवनामे ॥

वेइअजोगि जिणो, उकोस जहन्न मिकारे ॥ ८६ ॥

अर्थ— हवे द्विचरम समय ह्य गयुं जे वेदनीय, तेथकी (अन्नयरवेअणिकं के०) अनेरुं शाता अशाता माहेलुं एक वेदनीय अने (मणुआउअ के०) मनुष्यायु, (वच्चगोअ के०) उच्चैर्गोत्र, (नवनामे के०) नामकर्मनी नव प्रकृति, एवं बार प्रकृ

तिने, (वेदश्चजोगिजिणो के०) अयोगी केवली वेदे ठे. ते (उक्कोस के०) उत्कृष्ट पणो तीर्थकर वेदे ठे अने (जहन्नमिकारे के०) जघन्यथकी तो सामान्य केवली होय. ते तीर्थकरनामकर्म विना अगिआर प्रकृति वेदे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८६ ॥
हवे नामकर्मनी नव प्रकृतिनां नाम कहे ठे.

मणुअगइ जाइ तस बा, यरं च पकृत सुजग आइऊं ॥
जसकिती तिन्नयरं, नामस्स हवंति नव एआ ॥ ८७ ॥

अर्थ—(मणुअगइ के०) मनुष्यगति, (जाइ के०) पंचेंद्रियजाति, (तस के०) त्रसनाम, (बायरंच के०) बादरनाम, (पकृत के०) पर्याप्तनाम, (सुजग के०) सुजगनाम, (आइऊं के०) आदेयनाम, (जसकिती के०) यशःकीर्तिनाम, (तिन्नयरं के०) तीर्थकरनाम, (नामस्सजवंतिनवएआ के०) ए नामकर्मनी नव प्रकृति होय, तेनां नाम कहां ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८७ ॥
हवे अर्हीआं वली ए गुणवाणे मतांतरपणुं देखाडे ठे.

तच्चाणु पुवि सहिआ, तेरस नवसिद्धिअस्स चरमंमि ॥
संतं सग मुक्कोसं, जहन्नयं बारस हवंति ॥ ८८ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त मनुष्यायु अने उच्चैर्गोत्र, ए वे प्रकृतिमध्यं (तच्चाणुपुविसहिआ के०) त्रीजी आनुपूर्वी एटले मनुष्यानुपूर्वी, ते मनुष्यानुपूर्वीयं सहित पूर्वोक्त बार प्रकृति करीयें, तेवारें (तेरसनवसिद्धिअस्सचरमंमि के०) तेर प्रकृति नव सिद्धिआ एटले तदूनवें मोहगामी जीव एवा अयोगीने चरम समयें (संतंसगमुक्को सं के०) उत्कृष्टपणो सत्तायें कर्मप्रकृति होय अने (जहन्नयंबारसहवंति के०) जघन्यथकी तो तीर्थकर नामकर्म विना बार प्रकृतिनी सत्ता होय ॥ इति समु० ॥ ८८ ॥
ए शा सारु होय? माटें हवें एनो हेतु कहे ठे.

मणुअ गइ सहगयाउं, नवखित्त विवाग जिअ विवागाउं ॥
वेअणिअ अन्नरुद्धं, चरम समयंमि खीयंति ॥ ८९ ॥

अर्थ—(मणुअगइसहगयाउं के०) मनुष्यगति सार्थेज जेनो उदय ठे, तेने मनुष्यगति सहगत अगीआर प्रकृति कहीयें, पण ते केवी ठे? तोके (नव के०)

जवविपाकी तो मनुष्यासु ठे, तथा (खिन्नविवाग के०) क्षेत्रविपाकी तो मनुष्यासु पूर्वी ठे, तथा बाकीनी नामकर्मनी नव प्रकृति जे पूर्वे कही, ते (जिअविवागाठ के०) जीवविपाकीनी जाणवी. तथा (वेअणिअअन्नरुद्धं के०) बे वेदनीय मां हेतुं अनेरुं एक वेदनीय अने उच्चैर्गोत्र, उत्कृष्टपदं ए तेर प्रकृति अने जघन्यपदं तीर्थकरनाम विना बार प्रकृति ठे ते नव्यसिद्धिक एवा जीवने अयोगी गुणगणा ना (चरमसमयमिखीर्यति के०) चरमसमयने विषे क्यें जाय ठे, अर्हीआं मनुष्यासुपूर्वी ते मनुष्यगति सहगति ठे, माटें तेर प्रकृति सार्थेंज क्य जाय. एम म तांतरें कयुं, अनेरा आचार्य वजी एम कहे ठे के मनुष्यासुपूर्वीनी द्विचरम समयें ज सत्ता व्युत्पेद थाय ठे, उदयना अजावथकी उदयवती प्रकृतिने स्तिबुकसंक्रम न होय तेमाटें स्वस्वरूपें करीने चरम समयने विषे तेनां दलिक देखाय ठे. एम युक्त ठे तेमनो चरम समयमां सत्ता व्युत्पेद होय ठे, आसुपूर्वी चार तो क्षेत्रविपाकी ठे माटें नवापांतरालगतियेंज एनो उदय होय, ते कारण माटें नवस्थ जीवने आसु पूर्वीनो उदय न होय अने उदय विना तो अयोगी अवस्थाने द्विचरम समयेंज मनुष्यासुपूर्वीनी सत्ता व्युत्पेद थाय, एवा मतने अनुसरीने पूर्वे द्विचरम समयने विषे सुदतालीश प्रकृतिनी सत्तानो व्यवहेद देखाडयो अने चरमसमयें तो उत्कृष्टथी बार प्रकृति अने जघन्यथी अगीअार प्रकृतिनो व्यवहेद ठे केमके अयोगी अवस्थायें तो जे प्रकृतिनो उदय होय, तेनोज चरम समयें सत्ताथी विहेद थाय ठे. अने जेनो उदय न होय ते द्विचरम समयेंज क्य थाय ठे.

तेथी आगल हवे जीवने कर्म संबंध मूकाणो, ते माटे मूकाणा फलथी जेम ए रंमफलनी पेरें एटले मोहें जातां केवी गति करे ? तोके जेम मोमामांहेथी मूका एं एरंमफल ते स्वजावविज्ञेपें करी आकाशें उडे अथवा जेम धूमनी गति सहे जें उंचीज होय अथवा जेम बाण, धनुष्यमांथी बूटयो पाधरोज जाय अथवा जेम तुंबहुं पाणीमध्यें नाखेलुं उंचुं चढी आवे, तेम दंरें फेरव्या चक्रमनी पेरें पूर्व सं योगें करी जीव, कर्मबंधनथकी मूकाणो तेथी जीवनी सहचारी गति उंची ठे माटें ते जीव, एक समयमां उंचो लोकांतें जाय, पण बीजो समय स्पर्शे नहीं. ते जीव उंचो जातो जे आकाशप्रदेशें अर्हीं अवगाही रह्यो होय, तेहीज आकाशप्रदेश नी समश्रेणीयें एक समयमां अन्य प्रदेशने अस्पर्शतो अंकुश समानगति करी जाय. उक्तं च आवश्यकचूर्णै "जत्तीए जीवोवगाहो, तावइयाएउ गाहूयाए उहंउ सुगं गहइ नवं कवीर्यं च समयं न फुसइति ॥ जे नणी वचला प्रदेशने स्पर्शतो घणा

समय थड जाय केम के जीव तथा परमाणु एक आकाशप्रदेशकी बीजे आ काश प्रदेशों जाय, ए उपाधें उपलक्षित काल तेने समयकाल कहियें तो तेम क रतां घणा समय लागे, तेथी अस्पृशकृतियेंज एक समयमां उंचो जाय तिहां शा श्वतां सुख अनुजवे, ते कहे बे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ७९ ॥

अह सुइअ सयल जगसिह, र मरुव निरुवम सहाव सिद्धिसुहं।
अनियण मवावाहं, ति रयण सारं अणु हवंति ॥ ८० ॥

अर्थ—(अह के०) अथ हवे कर्मकृत्य कखा पठी अनंतर समयेंज (सुइअ के०) अथि एकांत अह एटले राग द्वेषादिक रूप मल तेणें रहित (सयलजग सिहरं के०) सकल सपूर्ण जगत् जे सांसारिक सुख, तेनुं शेखरजुत सर्वोत्तम सं वथी अधिक जे नणी सिद्धनां सुख तो (अरुव के०) अरुज बे एटले रोगादिक तथा मनपीडादिककष्टें करी रहित होय केमके रोगतो शरीरने होय ते शरीर तो तिहां नथी अने संसारमध्यें तो ते बेहु कष्ट संजवे बे. माटें ते सरखुं संसारमध्यें कोइ सुख नथी के जेनी उपमा आपीयें? माटें (निरुवम के०) निरुपम बे. एट ले एवं कोइ पण सुख संसारने विषे नथी के जेनी उपमा आपीने तुल्यता करी यें? माटे सिद्धनां सुख निरुपम बे. वली ते सुख कहेतुं बे, तो के (सहाव के०) स्वभावथी उपजेतुं बे पण सांसारिक सुखनी परें कारमुं परकर्त्रिम नथी, एवं (सिद्धिसुहं के०) सिद्धपदतुं सुख अनिर्वचनीय (अनियण के०) अनिधन ए टले जेनो केवारें नाश नथी अर्थात् जेनो केवारें बेहडो नथी अंत न आवे, जेनो कृत्य नथी तथा राग द्वेषादिक जे सुखनां बाधक बे, तेने सर्वथा कृत्य क खाथी (मवावाहं के०) अव्याबाध एटले बाधाकारी पीडाकारी एवा जे रोगादि क तेने मूलथी उन्मूल्या बे ते नणी ते फरी प्रगट न थाय. ते विना पीडा न उ पजे तेमाटें अव्याबाध सुख बे. वली (तिरणसारं के०) त्रण रत्न जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, तेनो सार एटले फलजुत बे एटले रत्नत्रयिनो यत्न कखाथी कर्मकृत्य थाय बे अने कर्मकृत्य थयाथी मोहसुख लइयें तैयें. माटे सिद्धिसुखनो अनिलाप करनारायें अवश्य रत्नत्रयिनो आश्रय करवो केमके सिद्धना सुखतुं का रणजुत ते रत्नत्रयज बे एवा मोहसुख प्रत्यें ते परमात्मा सिद्ध जीव (अणु हवंति के०) अनुजवे बे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ ८० ॥

हवे विशेष जाणवानी अजिजाषावंतने उपदेश कहे ठे.

डुरधिगम निउण परम, ढ रुइर बहु जंग दिछिवायाउ ॥

अढा अणुसरिअवा, बंधोदय संत कम्माणं ॥ ११ ॥

अर्थ—(डुरधिगम के०) डुरधिगम ते गंजीरार्थ एटले प्रमाण, नय, निहेपादि के करी घणो छुज्ज लहीये, एवो अर्थ ठे जेने विषे, वली (निउण के०) निपु ए एटले सूक्ष्मबुद्धिने गम्य एवो (परमढ के०) परमउत्कृष्ट अथवा परमार्थ एटले यथावस्थित अर्थनो विचार, तेषो करी (रुइर के०) रुचिर एटले सुहाम एं सूक्ष्ममतिना धणीना मनने आढ्हादुं करनार, एउं तथा (बहुजंग के०) बंधो दय सत्ताना घणा जंगा एटले विकल्प ठे जेने विषे एउं जे (दिछिवायाउ के०) दृष्टिवादानामा बारसुं अंग ते थकी (बंधोदयसंतकम्माणं के०) बंधोदय सत्तावंत कर्मप्रकृतिना (अढाअणुसरिअवा के०) अर्हीआं जे अर्थ नथी कहा, ते अर्थ, सर्व तिहांथी जाणवा, जे नणी अर्हीआं तो संक्षेपरुचि जीवना अनुग्रहने अर्थ ले शमात्र अर्थ देखाड्यो ठे. पण विशेषार्थ तिहांथी समजवो ॥ इति समुच्च ॥ ११ ॥

हवे ग्रंथकर्ता आचार्य, पोतानुं मानरहितपणुं अने अनुदत्तपणुं देखाडे ठे.

जो जढ अपडिपुन्नो, अढो अप्पागमेण बंधोति ॥

तं खमिऊण बहुसुआ, पूरे ऊणं परिकहंतु ॥ १२ ॥

अर्थ—(जोजढअपडिपुन्नोअढो के०) ए सप्ततिकानामा ग्रंथने विषे जिहां बंधो दय सत्ताने विषे जे जे अर्थ अपरिपूर्ण एटले अधुरो कहेवाणो होय केमके (अप्पा गमेणबंधोति के०) में अल्पागमपणे बांध्यो ठे. एटले में अल्प शास्त्रने जाणवे करी बांध्यो ठे तेथी पूर्ण अर्थ बांध्यो न होय, इति एटले एवा हेतु माटें ते ते अर्थ बंधादिकने विषे जिहां जेटलो उढो कहेवाणो होय (तंखमिऊण के०) ते रूप म हारो अपराध जे अजाणपणुं तेने खमीने (बहुसुआ के०) बहुश्रुत बहुसिद्धतना जाण जे गीतार्थ होय तेमणे (पूरेऊणं के०) ते उढा अर्थनी प्रतिपादक एवो गा थादिकें करी पूरिने ते तत्प्रतिपादक गाथाउ ग्रंथमध्ये प्रक्षेपीने शिष्य आगलें तथा श्रोता जनो आगलें (परिकहंतु के०) परिसमाप्त एटले संपूर्ण अर्थ कहेवो. जे नणी बहुश्रुत सज्जन ते सहेजें परिपूर्ण ज्ञान सार संपत्तिनी युक्ततायें करी परोप कार करवाने रसिकज होय ठे. माटे महारी उपर तथा शिष्य उपर उत्कृष्ट उप

कारने कर्ता एवा ते बहुश्रुत सज्जन ते अर्चयेत् महारो अपरिपूर्ण अर्थनिधानेन
ए रूप अपराध, तेने सहन करी परिपूर्ण अर्थ पूरिने शिष्यने कहां. ते जणी बहु
श्रुतने ए प्रार्थना युक्तज ठे ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १२ ॥

हवे गाथामान कहे ठे.

गाह्गंगं सयरीए, चंद्र महत्तर मयाणु सारीए ॥

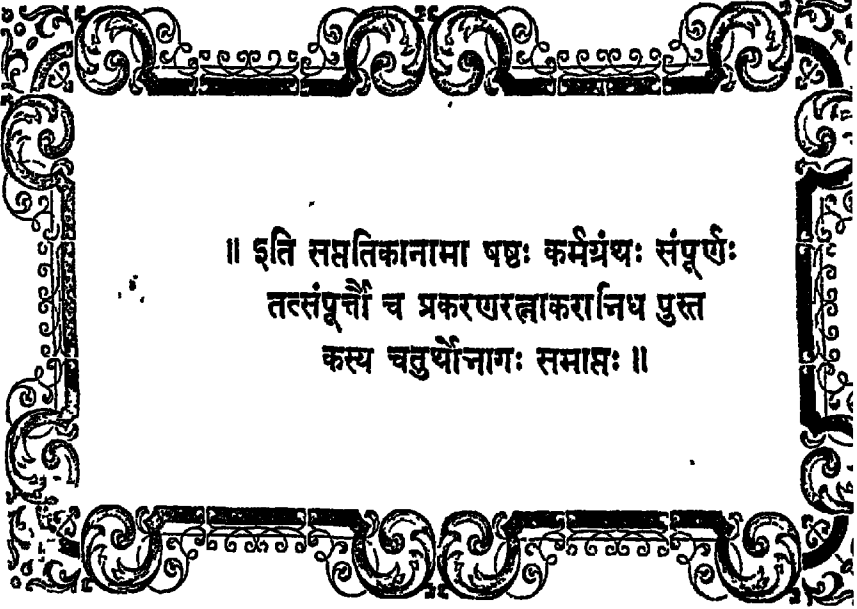
टीगाइ. नियमि आणं, एगूणा होइ नवईउ ॥ १३ ॥

॥ इति श्री सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रन्थः समाप्तः ॥ ६ ॥

अर्थ—(गाह्गंगंसयरीए के०) ए सप्ततिका ग्रंथना कर्ता चंद्रमहत्तराचार्ये पूर्वे
तो सीत्तेर गाथाज करी हती जेमाटे ए ग्रंथतुं सप्ततिका एतुं नाम थयुं. (चंद्रम
हत्तरमयाणुसारीएटीगाइ. नियमिआणं के०) तेवार पढी ए ग्रंथनी टीकाकर्तार्ये
ए इर्वोध ग्रंथ जाणीने ग्रंथकर्ता चंद्रमहत्तराचार्यनी मतने अनुसारें जिहां जोइ
यें, तिहां नाष्यनी गाथाठ जेलीने सुबोध कीधो, तेवारें ते चंद्रमहत्तरनी धंत्री
शाकली गाथाठ ते मूकीने टीकाकारें ए सप्ततिकानी गाथाठ (एगूणाहोइनवईउ
के०) एकूणी नेवुं एटले सर्व मज्जीने नेव्याशी गाथा संपूर्ण करी. ए रीतें ए सप्त
तिकानामें ठहो कर्मग्रंथ समाप्त थयो ॥ इति समुच्चयार्थः ॥ १३ ॥ इति सप्ततिका
नामा षष्ठः कर्मग्रन्थः समाप्तः ॥

॥ अथ प्रशस्तिः ॥

॥ श्रीचंद्रगङ्गांबरपूर्णचंद्रो, मेधाविधिष्योपगतो वितंडः ॥ प्राप्तप्रतिष्ठोयवनेश्वसत्सुं,
सूरीश्वरोऽनूद्विजयादिसेनः ॥१॥ तत्पट्टपूर्वांचलचित्रचानुः, कृपकृकहोवणचित्रचा
नुः ॥ महातपाख्यातधरो धराया, जीयात्स सूरिर्विजयादिदेवः ॥२॥ तत्पट्टनाटयप्रि
यमौलिपट्टोऽनूत्सूरिराजोविजयादिसिंहः ॥ यज्ञोचरस्पृथक्प्रशमोमृतोमात, इडुवुत
च्चित्रप्रूपलोमे ॥३॥ तदीयगङ्गांबुजराजहंसः, सदिग्नसंविग्रजनावर्तलः ॥ विध्वस्त
दोषकृतशेषशेषो, नवेद्यशस्तोमगुरुयशस्वी ॥४॥ किं बर्त्येऽन्यत्रुणगौरवंगिरा, मो
धौतु मोघाचरणस्य तस्य ॥ यदीयविद्याधनकर्कितोतरा, किं सेवते देवगुरुर्न नाकम्
॥५॥ यज्ञेयतस्तद्गुरुहस्तसिद्धि, योगाङ्गहोपीदृशशास्त्रवेत्ता ॥ किं गियोपाणीरितचू
र्णयोगा, ह्योहं न लोहोत्तमतां दधाति ॥ ६ ॥ आ प्रशस्तिमां प्रतियो धयी न
मलवाथी. केटजेक ठेकाणे अद्युदता दीगमां आवे ठे ते सज्जनो ए ह्युधारी वांचनुं.



॥ इति सप्ततिकाणामा षष्ठः कर्मग्रंथः संपूर्णः
तत्संपूर्णौ च प्रकरणरत्नाकरानिधु पुस्त
कस्य चतुर्थोऽङ्गः समाप्तः ॥

